बी0ए0 कर्मकाण्ड

द्वितीय वर्ष

द्वितीय प्रश्न पत्र

खण्ड- 1

प्रारम्भिक पूजन

इकाई-1 पूजन प्रयोजन महत्त्व एवं प्रकार

इकाई की रुप रेखा

1.1- प्रस्तावना

1.2 - उद्देश्य

1.3- पूजन प्रयोजन महत्त्व एवं प्रकार

1.4 सारांश

1.5 शब्दावली

1.6 अभ्यासार्थ प्रश्न उतर

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.8 उपयोगी पुस्तके

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. 1- प्रस्तावना

कर्मकाण्ड बी0ए0के0के-202 से सम्बिन्धत यह पहली इकाई है इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि कर्मकाण्ड की उत्पति किस प्रकार से हुई है ? कर्मकाण्ड की उत्पति अनादि काल से हुई है। तथा इन्हीं कर्मकाण्डों के माध्यम से आज सनातन धर्म की रक्षा हो रही है।

कर्मकाण्ड को जानते हुए आप पूजा के विषय में परिचित होंगे कि पूजन का प्रयोजन क्या है एवं उसका महत्त्व क्या है इन सभी का वर्णन इस इकाई में किया गया है।

प्रत्येक पूजन के प्रारम्भ में आत्मशुद्धि, गुरु स्मरण, पवित्र धारण, पृथ्वी पूजन, संकल्प, भैरव प्रणाम, दीप पूजन, शंख-घण्टा पूजन के पश्चात् ही देव पूजन करना चाहिए। व्रतोद्यापन एवं विशेश अनुष्ठानों के समय यज्ञपीठ की स्थापना का विशेश महत्त्व होता है, अतः प्रधान देवता की पीठ रचना पूर्व दिशा के मध्य में की जाये। पीठ रचना हेतु विविध रंगों के अक्षत या अन्नादि लिये जाते है। सभी व्रतोद्यापनों में सर्वतोभद्रपीठ विशेषरूप से बनाया जाता है।

पूजन के अनेक प्रकार प्रचलित है और शास्त्रों में पञ्चोपचार, षोड़शोपचार, शतोपचार आदि विविध वस्तुओं से अर्चना के विधि विधान की विस्तार से चर्चा है। श्रद्धा भक्ति के अनुसार उनका संग्रह करना चाहिए।

1.2- उदेश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप वेदशास्त्र से वर्णित कर्मकाण्ड का अध्ययन करेंगे।

1. पूजा के विषय में आप परिचित होंगे-
2. पूजा के महत्त्व के विषय में आप परिचित होंगे
3. पूजा के प्रकार के विषय में आप परिचित होंगे
4. कर्मकाण्ड के इतिहास के विषय में आप परिचित होंगे
5. कर्मकाण्ड की समाज में उपयोगिता क्या है। इसके विषय में आप परिचित होंगे

1.3 कर्मकाण्ड का प्रयोजन -

भारतीय सनातन संस्कृति पुनर्जन्म एवं मरण पर आधारित है। इस लोक में सभी जगह सुख-दुख,हानी-लाभ,जीवन-मरण,दरिद्रता-सम्पन्नता, रुग्णता -स्वस्थता, वुद्धिमत्ता-अवुद्धिमत्ता, दया-

क्रुरता और द्वेष-अद्वेश आदि वैभिन्न्य स्पष्ट रुप से दिखायी पडता है। पर यह वैभिन्न्य दृष्ट कारणों से ही होना आवश्यक नहीं,कारण की ऐसे बहुत सारे उदाहरण प्राप्त होते हैं, कि एक ही माता पिता के एक ही साथ जन्मे युग्म बालकों की शिक्षा -दीक्षा , लालन -पालन आदि समान होने पर भी व्यक्तिगत रूप से उनकी परिस्थितियां भिन्न-भिन्न होती हैं, जैसे कोई सुखी कोई दुखी, कोइ हानी कोई लाभ, कोई दरिद्र कोई सम्पन्न कोई रुग्ण कोई स्वस्थ, कोई वुद्धिमान कोई अवुद्धिमान, कोई दयावान कोई क्रुर कोई द्वेश कोई अद्वेश कोई अंगहीन तो कोई सर्वांग-सुन्दर इत्यादि। इन सभी बातों से यह स्पष्ट होता है कि जन्मान्तरीय धर्माधर्म रूप अदृष्ट भी इन भोगों का कारण है। अतः मानव - जन्म लेकर अपने कर्तव्य के पालन और स्व-धर्माचरण के प्रति प्रत्येक व्यक्ति को अत्यधिक सावधान होना चाहिये ।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ क्षण ऐसे होते हैं,जब उसकी बुद्धि निर्मल और सात्विक रहती है। तथा उन क्षणों में किये हुए कार्य कलाप शुभ कामनाओं से समन्वित एवं पुण्य वर्धन करने वाले होते हैं,पर सामान्यतः काम-क्रोध, लोभ-मोह, मद-मात्सर्य, राग-द्वेश आदि दुर्गुणों के वशीभूत मानव का अधिकतर समय पापाचरण में ही व्यतीत होता है, जिसे वह स्वयं भी नहीं समझ पाता। चौबीस घंटे का समय में यदि हमने एक घंटे का समय भगवदाराधना अथवा परोपकारादि शुभ कार्यों के निमित्त अर्पित किया तो शुभ कार्य का पुण्य हमे अवश्य प्राप्त होगा । पर साथ ही तेईस घंटे का जो समय हमने अवैध अर्थात् अशास्त्रीय भोग विलास में तथा उन भोग्य पदार्थों के साधन संचय में लगाया तो उसका पाप भी अवश्य भोगना पडेगा । इस लिये जीवनका प्रत्येक क्षण भगवद आराधना में लगाना चाहिये । जिससे मनुष्य अपने जीवन काल में भगवद् समीपता प्राप्त कर सके और पुण्य रूप से कल्याण का भागी बने। इसी लिये वेद शास्त्रों में प्रातः काल जागरण से लेकर रात्रि शयन तक तथा जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक सम्पूर्ण क्रिया कलापों का विवेचन विधि निषेध के रूप में हुआ है, जो मनुष्य के कर्तव्याकर्तव्य और धर्माधर्म का निर्णय करता है।

वैदिक सनातन धर्मशास्त्र सम्मत स्वधर्मानुष्ठान ही सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान् भगवान् की पूजा ही आवश्यक है। भगवान् की पूजा से श्रेष्ठ कोई महान कार्य नही हैं। भगवान् की पूजा से ही मानव को कल्याण प्रदान करती है। गीता में भगवान् कृष्ण ने स्वयं कहा है-

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दन्ति मानवः। इस लिये समस्त वेदादि शास्त्रों में नित्य और नैमित्तिक कर्मों को मानव के लिये परम धर्म और परम कर्तव्य कहा है । संसार में सभी मनुष्यों पर तीन प्रकार के ऋण होते हैं-देव-ऋण, पितृ-ऋण और मनुष्य(ऋषी)ऋण। नित्य कर्म करने से मनुष्य तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है-

यत्कृत्वा नृण्यमाप्नोति दैवात् पैत्र्याच्च मानुषात् ।

जो व्यक्ति श्रद्धा भक्ति से जीवनपर्यन्त प्रतिदिन विधिपूर्वक स्नान, सन्ध्या, गायत्री-जप,देवताओं का पूजन, बलीवैश्वदेव, स्व अध्ययन आदि नित्य कर्म करने से उसकी बुद्धि ज्ञानवान हो जाती है। ज्ञानवान बुद्धि हो जाने पर धीरे-धीरे मनुष्य के बुद्धि की अज्ञानता जडता विवेकहीनता अहंकार संकोच और राग द्वेश भेद-भाव समाप्त हो जाता है,उसके बाद वह मनुष्य परमात्मा के चिन्तन में निरन्तर संलग्न होकर निरन्तर पर ब्रह्म परमेश्वर की प्राप्ति के लिये ही प्रयत्न करता रहता है। इसी के कारण उसे परमानन्द की अनुभूति होने लगती है। परमानन्द की अनुभूति होने के कारण मनुष्य धीरे-धीरे दैवी गुणों से सम्पन्न होकर भगवान के समीप पहुच जाता है। भगवान के समीप होनेके करण मनुष्य को वास्तविक तत्त्व का परिज्ञान होने लगता है और पुनः वह सर्वदा के लिये जीवन से मुक्त हो जाता है तथा सत्यं ज्ञानम् अनन्तं ब्रह्म में लीन होकर आत्मोद्धार कर लेता है। यही मानव जीवन का मुख्य कारण है। मानव जीवन को सफल बनाने के लिये मानव प्राणी को नियमित रूप से नित्य कर्म आदि करना चाहिये

कर्मकाण्ड का इतिहास

कर्मकाण्ड का इतिहास यदि हम वैदिक काल से देखें तो हमें अत्यन्त संक्षेप में कर्मकाण्ड का स्वरूप देखने को मिलता है। यद्यपि ऋग्वेद के पुरुश सूक्त में देवताओं द्वारा विहित कर्मकाण्ड देखने में आता है तथापि वहा भी कर्मकाण्ड का सांगोपांग स्वरूप अत्यन्त संक्षिप्त ही है। उस काल में प्रत्येक व्यक्ति श्रद्धा और विश्वास के साथ देवताओं की उपासना करते हुए अपनी अभिलषित वस्तु देवताओं से मांगता था।

प्राचीन काल में उपासक को अभिलषित वस्तु की संख्या में भी वहुत कमी थी। आज की तरह वहुत कामनाओं का ढेर नहीं था। उस समय पुत्र रहित व्यक्ति को स्वर्ग नहीं मिलता था। यह विश्वास था। जैसा कि अथर्ववेद के गोपथ ब्राह्मण में कहा गया है-यच्च पुत्रः पुन्नामनरकमनेकशतं तारं तस्मात्त्राती पुत्रस्तत्पुत्रस्य पुत्रत्वम् । इसके आधार पर समाज में पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा बहुत अधिक थी। इस तरह कोई देवता से पुत्र मांगता था तो कोई अन्न मांगता था। कोई ब्रह्मवर्चस् कोई राष्ट की कामना करत था। कामनाओं की संख्या में आज की तरह इतना आधिक्य नहीं था। उन कामनाओं के विषय में भी ऐसा ही प्रतीत होता है कि ब्राह्मण ब्रह्मवर्चस् की कामना करता था तो क्षत्रिय राष्ट की कामना करता था। इस प्रकार यह एक भी विशेषता देखने में आती है। वैदिक समय से ही कर्म काण्ड की उपासना चली आ रही है। यह जान लेना उचित होगा कि कर्मकाण्ड में एक ही ऋत्विज की अपेक्षा रहती थी और वह कार्य यजमान स्वयं अकेला ही कर लेता था। साथ में पत्नी

भी रहती थी।

प्रत्येक पूजन के प्रारम्भ में आत्मशुद्धि, गुरु स्मरण, पवित्र धारण, पृथ्वी पूजन, संकल्प, भैरव प्रणाम, दीप पूजन, शंख-घण्टा पूजन के पश्चात् ही देव पूजन करना चाहिए। व्रतोद्यापन एवं विशेश अनुष्ठानों के समय यज्ञपीठ की स्थापना का विशेश महत्त्व होता है, अतः प्रधान देवता की पीठ रचना पूर्व दिशा के मध्य में की जाये। पीठ रचना हेतु विविध रंगों के अक्षत या अन्नादि लिये जाते है। सभी व्रतोद्यापनों में सर्वतोभद्रपीठ विशेषरूप से बनाया जाता है।

पूजन के अनेक प्रकार प्रचलित है और शास्त्रों में पञ्चोपचार, षोड़शोपचार, शतोपचार आदि विविध वस्तुओं से अर्चना के विधि विधान की विस्तार से चर्चा है। श्रद्धा भक्ति के अनुसार उनका संग्रह करना चाहिए।

देवार्चन हेतु विशिष्ट समान -

पंचामृत - घी, दूध, दही, बूरा, शहद।

पंचगव्य - गोबर, गौमूत्र, गौदुग्ध, गाय का घी, गाय का दही।

पंचरत्न - माणिक्य, पन्ना, पुखराज, प्रवाल (मूँगा), मोती।

पंचपल्लव - पीपल, आम, गूलर, बड़, अशोक

सप्तमृत्तिका - हाथी का स्थान, घोड़ा, वल्मीक, दीमक, नदी का संगम, तालाब, गौशाला़राजद्वार।

सप्तधान्य - उड़द, मूँग, गेहूँ, चना, जौ, चावल, कंगनी।

सप्तधातु - सोना, चाँदी, ताम्बा, लोहा, राँगा, सीसा, आरकुट।

अष्टमहादान - कपास, नमक, घी, सप्तधान्य, स्वर्ण, लोहा, भूमि, गौदान।

अष्टांगअर्घ्य - जल, पुष्प, कुशा का अग्रभाग, दही, चांवल, केसर (कुमकुम रोली), दूर्वा, सुपारी, दक्षिणा।

दशमहादान - गौ, भूमि, तिल, स्वर्ण, घी, वस्त्र, धान्य, गुड़, चाँदी, नमक।

पंचोपचार - गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।

पंचदेव - सूर्य, गणेश, शक्ति, शिव, विष्णु।

सात पाताल - तल, अतल, सुतल, वितल, तलातल, रसातल, पाताल।

सप्तद्वीप - जम्बु, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक, पुष्कर।

जम्बुद्वीप - इलावृत्त, भद्राश्व, हरिवर्ष, केतुमाल, रम्यक, हिरण्यमय, कुरू, किंपुरुष, भारतवर्ष।

बासी जल, पुष्प का निषेध - जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गये हों उन्हें देवताओं पर नहीं चढ़ाएँ, केवल तुलसीदल और गंगाजल कभी बासी नहीं होते हैं। तीर्थों का जल भी बासी नहीं होता

है। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषणों में भी निर्माल्यदोश नहीं लगता है। माली के घर में रखे हुए फूलों में बासी का दोश नहीं लगता है। फूल को जल में डुबोकर धोना मना है, केवल जल से इसका प्रोक्षण कर देना चाहिए। कमल की कलियों को छोड़कर दूसरी कलियों को चढ़ाना मना है। फूल, फल और पत्ते जैसे उगते है उन्हें वैसे ही चढ़ाना चाहिए। उत्पन्न होते समय इनका मुख ऊपर की ओर होता है, अतरू चढ़ाते समय इनका मुख ऊपर की ओर ही होना चाहिए। दूर्वा एवं तुलसीदल को अपनी ओर तथा बिल्वपत्र को नीचे मुख करके चढ़ाना चाहिए। इससे भिन्न पत्तों को किसी भी प्रकार से चढ़ा सकते हैं। दाहिने हाथ के करतल को उत्तान कर मध्यमा, अनामिका और अंगूठे की सहायता से फूल चढ़ाना चाहिए। चढ़े हुए फूल को अंगूठे व तर्जनी की सहायता से उतारना चाहिए।

देवताओं की पूजा तथा स्थान - पञ्चदेव (सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव, विष्णु) की पूजा सभी कार्यों में करनी चाहिए। गृहस्थी एक मूर्ति की पूजा नहीं करे, अपितु अनेक देवमूर्तियों की पूजा करे। इससे कामना पूरी होती है। घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य, तीन दुर्गा, दो गोमती चक्र और दो शालिग्राम की पूजा करने से गृहस्थी मनुष्य का कल्याण कभी नहीं होता है। शालिग्राम की प्राण प्रतिष्ठा नहीं होती है। बाण लिंग तीनों लोकों में विख्यात है, उनकी प्राण प्रतिष्ठा, संस्कार या आह्वान कुछ भी नहीं होता है। पत्थर, लकड़ी, सोना या अन्य धातुओं की मूर्तियों की प्रतिष्ठा घर या मन्दिर में करनी चाहिए। कुमकुम, केसर और कर्पूर के साथ घिसा हुआ चन्दन, पुष्प आदि हाथ में तथा चन्दन ताम्र पात्र में रखे। तृण, काष्ठ, पत्ता, पत्थर, ईंट आदि से ढके सोमसूत्र का लंघन किया जा सकता है। पूजन में जिस सामग्री का अभाव हो उसकी पूर्ति मानसिक भावना से करनी चाहिए अथवा उस सामग्री के लिए अक्षत, पुष्प या जल चढ़ा दे, तत्तद् द्रव्यं तु संकल्पस्य पुष्पैर्वापि समर्चयेत्। अर्चनेषु विहीनं यत् तत्तोयेन प्रकल्पयेत् केवल नैवेद्य चढ़ाने से अथवा केवल चन्दनपुष्प चढ़ाने से भी पूजा मान ली जाती है।

केवलनैवेद्यसमर्पणेव पूजासिद्धिरिति...।

गन्धपुष्पसमर्पणमात्रेण पूजासिद्धिरित्यपिपूवैर्ः॥

पूजा करते समय प्रयोग के लिए उपयुक्त आसन

कुश, कम्बल, मृगचर्म, व्याघ्रचर्म और रेशम का आसन जपादि के लिए उत्तम है। बाँस, मिट्टी, पत्थर, तृण, गोबर, पलाश और पीपल जिसमें लोहे की कील लगी हो ऐसे आसन पर नहीं बैठना चाहिए तथा गृहस्थ को मृगचर्म के आसन पर नहीं बैठना चाहिए। स्नान, दान, जप, होम, सन्ध्या और देवार्चन कर्म में बिना शिखा बाँधे कभी कर्म नहीं करना चाहिए।

गणेश, विष्णु, शिव, देवी के पूजन हेतु विशिष्ट नियम -

१. अंगुष्ठ से देवता का मर्दन नहीं करना चाहिए और न ही अधम पुष्पों से पूजन करना चाहिए, कुश के अग्रिम भाग से जल नही प्रोक्षण करना चाहिए, ऐसा करना वज्रपात के समान होता है।

२. अक्षत से विष्णु की, तुलसी से गणेश की, दूर्वा से दुर्गा की और विल्वपत्र से सूर्य की पूजन नहीं करनी चाहिए।

३. अधोवस्त्र में रखा हुआ तथा जल द्वारा भिगोया हुआ पुष्प निर्माल्य हो जाता है, देवता उस पुष्प को ग्रहण नहीं करते है।

४. शिव पर कुन्द, विष्णु पर धत्तूरा, देवी पर अर्क तथा सूर्य पर तगर अर्पित नहीं करना चाहिए।

५. पत्र या पुष्प उलटकर नहीं चढ़ाना चाहिए, पत्र या पुष्प जैसा ऊर्ध्व मुख उत्पन्न होता है, वैसे ही अर्पित करना चाहिए। केवलमात्र विल्वपत्र ही उलटकर अर्पित करना चाहिए।

६. पत्ते के मूलभाग को, अग्रभाग को, जीर्णपत्र को तथा शिरायुक्त को चढ़ाने पर क्रमशः व्याधि, पाप, आयुश क्षय एवं बुद्धि का नाश होता है।

७. नागरबेल के पत्ते की डण्डी व्याधि और अग्रभाग से पाप होता है, सड़ा हुआ पान आयु और शिरा बुद्धि को नष्ट करती है। अतएव डण्डी, अग्रभाग और शिरा को निकाल देवे।

८. संक्रान्ति द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार, और सन्ध्या के समय तुलसी को तोड़ना निषिद्ध है। यदि विशेश आवश्यक (भगवान विष्णु के पूजन हेतु) हो तो नीचे लिखे मन्त्र अथवा भगवान् विष्णु का स्मरण करते हुए तोड़ सकते है -

त्वदंगसम्भवेन त्वां पूजयामि यथा हरिम।
तथा नाशय विघ्नं मे ततो यान्ति परागतिम।।

चरणामृत ग्रहण (तीन बार) विधि - बायें हाथ पर दोहरा वस्त्र रखकर दाहिना हाथ रख दे, तत्पश्चात् चरणामृत लेकर पान करें। चरणामृत ग्रहण करने समय उच्चारणीय मन्त्र -

कृष्ण! कृष्ण! महाबाहो! भक्तानामार्तिनाशनम्।
सर्वपापप्रशमनं पादोदकं प्रयच्छ मे।।

चरणामृत पान करते समय उच्चारणीय मन्त्र -

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।
दुरूखदौर्भाग्यनाशाय सर्वपापक्षयाय च।
विष्णो पञ्चामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

देव पूजन में विशेश -

१. द्रोण पुष्प का महत्व - ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि को द्रोणपुष्प अत्यन्त प्रिय है। यह पुष्प दुर्गा को सर्वकामना और अर्थ की सिद्धि के लिए प्रदान करना चाहिए।

२. किस देवता की कितनी बार प्रदक्षिणा करे ? - चण्डी की एक परिक्रमा, सूर्य की सात परिक्रमा, गणेश की तीन, विष्णु की चार तथा भगवान शिव की आधी प्रदक्षिण करनी चाहिए।

३. दीप निर्वाण का दोश - देवताओं के पूजन में स्थित दीपक को शान्त (बुझाना) या हटाना नहीं चाहिए क्योंकि दीपक को हरण करे वाला व्यक्ति अन्धा हो जाता है तथा उसे बुझाने वाला व्यक्ति काणा हो जाता है।

४. देवताओं को प्रिय पत्र-पुष्प - भगवान शिव को बिल्वपत्र बहुत प्रिय है, विष्णु को तुलसी, गणेश को दूर्वा (घास), अम्बाजी को विभिन्न प्रकार के पुष्प तथा भगवान सूर्य को लाल रंग का करवीर पुष्प बहुत प्रिय है।

कर्मकाण्ड की महिमा और उसकी समाज में उपयोगिता

संसार में प्रत्येक व्यक्ति सुख की इच्छा करता है। संसार में जितने जीव जन्तु प्राणी है उन सबकी सुख की इच्छा होती है। जो इच्छा के अनुकूल है वही सुख है वह चाहे जिस रूप में हो। किसी को धन रूपी सुख की इच्छा होती है , किसी को पुत्र रूपी सुख की इच्छा होती है किसी को पत्नी रूपी सुख की इच्छा होती है तो किसी को विद्वत्ता रूपी सुख की इच्छा होती है किन्तु यह आवश्यक है कि जो भी अपनी इच्छा के अनुकूल हो वही सुख है और वही सबको चाहिये। जिस प्रकार भूखा प्राणी को भोजन चाहता है उसी प्रकार प्रत्येक प्राणी अपनी इच्छानुकूल वस्तु को चहता है अपनी इच्छानुकूल वस्तु को पाने के लिये अनेक प्रकार का प्रयत्न करता है। वह किसी की सेवा करता है, किसी से अनुराग करता है, किसी से कलह करता है , व्यापार करता है और नौकरी भी करता है। उसे जो भी आवश्यक लगता है वह अपनी शक्ति भर अपनी इच्छा की पूर्ति करने के लिये प्रयत्न करता है जिससे मनचाही वस्तु प्राप्त कर सके।

अभिलषित वस्तु को पाने के लिये अनेक मार्ग हैं। उन्हीं मार्गों में सर्वश्रेष्ठ और वेद-विहित मार्ग कर्मकाण्ड है। साधारण जन अपनी शक्ति की अपेक्षा देवता ,ऋषि मुनि और आप्तजनों की शक्ति को अधिक मानते हैं।और उस पर विश्वास भी करते हैं। मानव अपनी अभिलषित वस्तु को प्राप्त करने के लिये अपनी शक्ति भर प्रयत्न करता है और उसे जब सफलता नही मिलती है तब दैवी शक्ति की ओर दौण पडता है और वह अपने पुज्य जनों से सम्मति भी लेता है। हमारे ऋषि मुनि के पास जाकर पुछता है और दुःख निवृत्ति पूर्वक सुख की कामना करता है तब ऋषि मुनि लोग दया करके उपाय

बतलाते हैं। उसके वाद मानव को अभिलषित वस्तु की प्राप्ति होती है भारतीय धर्मशास्त्र में ऐसे अनेक प्रकार का उदाहरण प्राप्त होते हैं।

कर्मकाण्ड भी इस प्रकार के अनेक उदाहरणों से परिपूर्ण है। इसमें अनेक प्रकार के उपाय बतलाये गये हैं । यदि पुत्र की कामना हो तो पुत्रेष्टि, राष्ट, मित्र और दीर्घायुष्य की इच्छा हो तो मित्रविन्देष्टि और स्वर्ग की कामना हो तो अग्निष्टोम याग करना चाहिये। इस प्रकार अभिलषित वस्तुओं की प्राप्ति के साधनों से हमारा कर्मकाण्ड ओत-प्रोत है। संसार में सबसे बणा और महत्त्व का स्थान वही है जहा से शाश्वत सुख और शान्ति प्राप्त हो सके। यह कर्मकाण्ड से ही सम्भव है। मनुष्य जब अपने प्रयत्न से थक जाता है और निराश का अनुभव करने लगता है तब वहा जाता है जहा सुख और शान्ति मिलने का अशा रहता है। मनुष्य मात्र के लिये वह स्थान अग्नि की उपासना हैं । इसकी छाया में मनुष्य सब कुछ पा सकता है।

पूजा के प्रकार

पूजा मुख्य रूप से दो प्रकार का बताया गया है

1-पंचोपचार पूजन ।

2-षोडशोपचार पूजन ।

1-पंचोपचार पूजन

पंचोपचार पूजन में मुख्य रूप से पांच प्रकार का पूजन बताया गया है। किसी देवी या देवता को इस मन्त्र से पहले स्नान कराना।

शुद्धोदकस्नान- ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विना: श्वेतः श्येताक्षोऽरूणस्ते रूद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।

लौकिक मन्त्र- गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।

नर्मदे सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान कराये)

दूसरा वस्त्र चढाना - वैदिक मन्त्र - वस्त्र- **ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो3 मनसा देवयन्तः।**

लौकिक मन्त्र- शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेषाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र को चढावे)

तीसरा-धूप दिखाना- **ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।**

देवानामसि वह्नितम गं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ।।

लौकिक मन्त्र- वनस्पतिरसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपमाघ्रापयामि। (धूप को दिखाये)

चौथा-दीप दिखाना-

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

अग्निर्वचो ज्योतिर्वचः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वचः सहा।।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

लौकिक मन्त्र-

साज्यं च वर्तिसंयुक्त वह्निना योजितं मया ।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम् ।।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।

त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोस्तुते ।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि। (दीप को दिखाये)

पॉचवां - नैवेद्य अर्थात् वर्फी आदि का भोग लगाना।

एक किसी शुद्ध पात्र में यथोपलब्ध खाद्य वस्तु को भगवान के आगे रखकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए उसमें दूर्वा और पुष्प को छोणे।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकॉ 2 अकल्पयन्।।

लौकिक मन्त्र-

शर्करा खण्डखाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च ।

आहारं भक्ष्यभ्योज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यसमर्पयामि। (नैवेद्य को निवेदित करे)

इसी विधि को पंचोपचार पूजन कहते हैं।

2-षोडशोपचार पूजन

षोडशोपचार पूजन में मुख्य रूप से शोलह प्रकार का पूजन बताया गया है। किसी देवी या देवता को पहले मन्त्र बोलते हुए दोनो हाथ में अक्षत पुष्प लेकर दानों हाथ जोणकर ध्यान करना चाहिये।

भगवान गणेश का ध्यान-

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारूभक्षणम्।

उमासुतं शोकविनाषकारकं नमामि विघ्नेष्वरपादपंकजम्।।

भगवती गौरी का ध्यान-

नमो देव्यै महादेव्यै षिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ध्यानं समर्पयामि।

भगवान गणेश का आवाहन-

ॐ गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियजति हवामहे निधीनां त्वा निधिपति हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। एह्येहि हेरम्ब महेषपुत्र समस्तविघ्नौघविनाषदक्ष।

मांगल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।

ॐ भूर्भवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

हाथ में अक्षत लेकर गणेश जी पर चढा दे।

दूसरा- मन्त्र बोलते हुए दोनों हाथ जोड़कर आवाहन करे-

भगवती गौरी का आवाहन-

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कष्चन।

ससस्त्यष्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासीनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

तीसरा-मन्त्र बोलते हुए आसन के लिये जल चढा दे-

पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽष्विनोर्बाहुभ्यां

स्नानीय, पुराचमनीय पूष्णो हस्ताभ्याम्।। (यजु. 1।10)

एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुराचमनीयानि समर्पयामि गणेषाम्बिकाभ्यां नमः। (इतना कहकर जल चढा दे)।

चौथा-पाद्य रूप में जल गिराना। पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽष्विनोर्बाहुभ्यां स्नानीय, पुराचमनीय पूष्णो हस्ताभ्याम्।। एतानि

पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुराचमनीयानि समर्पयामि गणेषाम्बिकाभ्यां नमः। (इतना कहकर जल चढा दे)।

पॉचवां - अर्घ्य रूप में जल गिराना। पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽष्विनोर्बाहुभ्यां स्नानीय, पुराचमनीय पूष्णो हस्ताभ्याम्।। एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुराचमनीयानि समर्पयामि गणेषाम्बिकाभ्यां नमः। (इतना कहकर जल चढा दे)।

छठा- अचमनीयं जलं समर्पयामि ऐसा बोलते हुए अचमन रूप में जल चढाना।

सातवॉ - मन्त्र बोलते हुए स्नान कराना-

शुद्धोदकस्नान- ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त अष्विनाः श्वेतः श्येताक्षोऽरूणस्ते रूद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।। **लौकिक मन्त्र-** गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेषाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (षुद्ध जलसे स्नान कराये)

आठवॉ - मन्त्र बोलते हुए वस्त्र को चढावे

वस्त्र- ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो3 मनसा देवयन्तः।। (ऋग. 3|8|4)

लौकिक मन्त्र- शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेषाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र को चढावे)

नौवां- मन्त्र बोलते हुए चन्दन चढाना

चन्दन- ॐ त्वां गन्धर्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्षमादमुच्यत।।

लौकिक मन्त्र- श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेषाम्बिकाभ्यां नमः,चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दन को चढावे)

दशवां- मन्त्र बोलते हुए अगरवत्ती दिखाना-

धूप- ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।

देवानामसि वह्नितम गं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

लौकिक मन्त्र- वनस्पतिरसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपमाघ्रापयामि। (धूप को दिखाये)

ग्यारहवां- मन्त्र बोलते हुए दीपक दिखाना-

दीप- ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

अग्निर्वचो ज्योतिर्वचः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वचः सहा।।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

लौकिक मन्त्र-साज्यं च वर्तिसंयुक्त वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।

त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोस्तुते।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि। (दीप को दिखाये)

वारहवां-मन्त्र बोलते हुए नैवेद्य अर्थात् वर्फी आदि का भोग लगाना।

नैवेद्य- एक किसी शुद्ध पात्र में यथोपलब्ध खाद्य वस्तु को भगवान के आगे रखकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए उसमें दूर्वा और पुष्प को छोणे।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकॉ 2 अकल्पयन्।।

लौकिक मन्त्र- शर्करा खण्डखाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभ्योज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्स ।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यसमर्पयामि। (नैवेद्य को निवेदित करे)

नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि कहते हुए अधोलिखित वाक्य को बोलते हुए पाच बार जल को चढावे ।

तेरहवां- मन्त्र बोलते हुए लवंग,इलायची, सोपारी सहित पान का पत्ता चढाना।

ताम्बूल- ॐयत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धविः।।

लौकिक मन्त्र- पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।

एलादिचूर्णसंयुक्त ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखवासार्थं एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची,लौंग-सुपारी सहित ताम्बूल को चढाये)

चौदहवां- मन्त्र बोलते हुए दक्षिणा चढाना।

दक्षिणा-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातःपतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

लौकिक मन्त्र- हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः,कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।(द्रव्य दक्षिणा समर्पित करें।)

पन्द्रहवां - मन्त्र बोलते हाथ में फूल लेकर पुष्पांजलि अर्थात् प्रार्थना करना।

पुष्पांजलि- ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियजति हवामहे निधीनां त्वा निधिपति हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। (यजुर्वेद 23।19)

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कष्चन।

ससस्त्यष्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासीनीम्।। (षु. य. 23।18)

लौकिक मन्त्र- नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।(पुष्पांजलि अर्पित करे।)

सोलहवां -मन्त्र बोलते हुए प्रदक्षिणा करना।

प्रदक्षिणा-ॐ ये तिर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषंगिणः।

तेषा ँ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

लौकिक मन्त्र- यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।।

प्रार्थना-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय

गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

भक्तार्ति नाशनपराय गणेश्वराय

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

पिद्याधराय विकटाय च वामनाय

भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।

विश्वरूपश्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति

तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव।।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या

विश्वस्य बीजं परमासि माया।

सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्

त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रथनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।(साष्टांग नमस्कार करे।)

गणेशपूजने कर्मयन्न्यूनमधिकं कृतम्।

तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोस्तु सदा मम।।

अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम् न मम।

(ऐसा कहकर समस्त पूजनकर्म भगवान् को समर्पित कर दे तथा पुनः नमस्कार करे।)

इसी विधि को षोडशोपचार पूजन कहते हैं।

1.4-सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान चुके है कि समस्त वेदादि शास्त्रों में नित्य और नैमित्तिक कर्मों को मानव के लिये परम धर्म और परम कर्तव्य कहा है । संसार में सभी मनुष्यों पर तीन प्रकार के ऋण होते हैं-देव-ऋण, पितृ-ऋण और मनुष्य(ऋषी)ऋण। नित्य कर्म करने से मनुष्य तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है इस लिये मनुष्य अपने ऋणों से मुक्त होने के लिये कर्मकाण्ड का

अध्ययन करता है तथा अपने जीवन में इसको पालन करता है। क्योंकि अपने ऋणों से मुक्त कर्मकाण्ड के माध्यम से ही होसकता है और उसके पास दूसरा कोई रास्ता नही है। इस लिये कर्मकाण्ड का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्रों को पूजनकर्म से सम्बन्धित सभी आवश्यक कर्मों का ज्ञान हो जायेगा। पूजन के लिए उपयुक्त यज्ञकर्म हेतु भूमि का चयन, विशिष्ट नियम, आसन, पुष्प, पूजन सामग्री आदि का चयन एवं वैदिक पूजन का ज्ञान भी हो जायेगा। इसके अन्तर्गत भूमिपूजन, भूतशुद्धि, आत्मप्राण प्रतिष्ठा, भद्रसूक्त का पाठ, भूतापसारण, दीप पूजन, घण्टा व शंख पूजन, वरुण (जल) पूजन, गुरु स्मरण, तिलक, गणपति स्मरण तथा संकल्प आदि विधियों का ज्ञान मिलेगा। प्रायरू सभी पूजन पद्धतियों में यही प्रारम्भिक पूजन प्रयोग में आता है, केवलमात्र कहीं-कहीं प्रधान पूजन के अनुसार कुछ अंशो की भिन्नता पायी जाती है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र इन सभी कार्यों को करने में स्वतरू सक्षम हो जायेगा।

1.5 शब्दावली

शब्द	**अर्थ**
स्व	अपने
कर्मणा	कर्म के द्वारा
तम्	उसको
अभ्यर्च	पूजा करके
सिद्धिम्	सिद्धि को
विन्दन्ति	जानते हैं।
मानवः	मनुष्य
यच्च	और जो
पुत्रः	पुत्र ने
पुन्नाम	पुन्नाम
नरकम्	नरक को
अनेकशतम्	अधिक
प्रदक्षिणा	परिक्रमा करना

1.6 -अभ्यासार्थ प्रश्न -उत्तर

1-प्रश्न- भारतीय सनातन संस्कृति किस पर आधारित है।

उत्तर- भारतीय सनातन संस्कृति पुनर्जन्म एवं मरण पर आधारित है।

2-प्रश्न- स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दन्ति मानवः यह किसने कहा है?

उत्तर- स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दन्ति मानवः यह गीता में भगवान् कृष्ण ने स्वयं कहा है।

3-प्रश्न- पूजा मुख्य रूप से कितने प्रकार का बताया गया है?

उत्तर- पूजा मुख्य रूप से दो प्रकार का बताया गया है। 1-पंचोपचार पूजन। 2-षोडशोपचार पूजन।

4- प्रश्न- अभिलषित वस्तु को पाने के लिये कौन सा मार्ग बताया गया है?

उत्तर- - अभिलषित वस्तु को पाने के लिये सर्वश्रेष्ठ और वेद-विहित मार्ग कर्मकाण्ड बताया गया है।

5- प्रश्न-मनुष्य अपने ऋणों से मुक्त होने के लिये किसका अध्ययन करता है?

उत्तर- मनुष्य अपने ऋणों से मुक्त होने के लिये कर्मकाण्ड का अध्ययन करता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1.पूजन के प्रकार बताये हैं-

क -तीन प्रकार ख -दो प्रकार

ग -एक प्रकार घ -चार प्रकार

2.पूजन दो प्रकार बताये हैं-

क - पंचोपचार ख -षोडशोपचार पूजन।

ग - नवोपचार घ -पंचोपचार पूजन,षोडशोपचार पूजन।

3.पंचोपचार में पूजन हैं-

क - एक ख - दो

ग -पॉच घ -तीन

4.,षोडशोपचार में पूजन हैं-

क - एक ख - दो

ग - छः घ -तीन

5. भारतीय सनातन संस्कृति पुनर्जन्म एवं मरण पर आधारित है-

क - एक शक्तियों पर ख - द्वादश शक्तियों पर

ग - कर्मकसण्ड पर घ - दश शक्तियों पर

6. वेदादि शास्त्रों में कर्म बताये गये है-

क -तीन प्रकार ख -दो प्रकार

ग -एक प्रकार घ -चार प्रकार

7.वेदादि शास्त्रों में कर्म है-ख

क -नित्य कर्म ख - नित्य कर्मएवं नैमित्तिक कर्म

ग -नैमित्तिक कर्म घ -प्रायश्चित कर्म

8.नित्य और नैमित्तिक कर्मों को मानव के लिये कहा है-

क -परम धर्म ख - परम धर्म और परम कर्तव्य

ग -परम कर्तव्य घ - परम प्रायश्चित कर्म

9.संसार में सभी मनुष्यों पर ऋण होते हैं-

क -तीन प्रकार के ख -दो प्रकार के

ग -एक प्रकार के घ -चार प्रकार के

10.संसार में सभी मनुष्यों पर तीन प्रकार के ऋण होते हैं-

क - देव-ऋण, ख - मनुष्य(ऋषी)ऋण।

ग - पितृ-ऋण घ - देव-ऋण, पितृ-ऋण और मनुष्य(ऋषी)ऋण।

11. नित्य कर्म करने से मनुष्य तीनों ऋणों से हो जाता है-

क -परम धर्म ख - परम धर्म और परम कर्तव्य

ग- तीनो ऋणों से मुक्त घ - परम प्रायश्चित कर्म

12. मनष्य अपने ऋणों से मुक्त होने के लिये कर्मकाण्ड का अध्ययन करता है-

क - कर्मकाण्ड का ख - सूर्य का

ग - विष्णु का घ – गौरी का

बहुवैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर –

1. ख 2. घ 3. ग 4. ग 5. ग 6. ख 7. ख 8. ख 9. क 10. घ 11. ग 12. क

1.7-सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1-पुस्तक का नाम-दुर्गाचन पूजापद्धति

लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र

प्रकाषक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

2-पुस्तक का नाम-सर्वदेव पूजापद्धति

लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र
प्रकाषक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

3 धर्मशास्त्र का इतिहास
लेखक - डॉ. पाण्डुरङ्ग वामन काणे
प्रकाशक:- उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान।

4 नित्यकर्म पूजा प्रकाश,
लेखक:- पं. बिहारी लाल मिश्र,
प्रकाशक:- गीताप्रेस, गोरखपुर।

5 अमृतवर्षा, नित्यकर्म, प्रभुसेवा
संकलन ग्रन्थ
प्रकाशक:- मल्होत्रा प्रकाशन, दिल्ली।

6 कर्मठगुरुः
लेखक - मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य
प्रकाशक - मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

7 हवनात्मक दुर्गासप्तशती
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।

8 शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टध्यायी
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिश शोध संस्थान, जयपुर।

9 विवाह संस्कार
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - हंसा प्रकाशन, जयपुर

1.8-उपयोगी पुस्तकें

1-पुस्तक का नाम-दुर्गाचनपद्धति
लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न-पंचोपचार पूजन में मुख्य रूप से पांच प्रकार का पूजन बताया गया है। इसका वर्णन कीजिये-

उत्तर- पंचोपचार पूजन में मुख्य रूप से पांच प्रकार का पूजन बताया गया है। किसी देवी या देवता को इस मन्त्र से पहले स्नान कराना।

शुद्धोदकस्नान- ॐ शुद्धवालः सर्वषुद्धवालो मणिवालस्त अष्विनाः श्वेतः श्येताक्षोऽरूणस्ते रूद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।

लौकिक मन्त्र- गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।

नर्मदे सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान कराये)

दूसरा-वस्त्र चढाना। वस्त्र- ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो3 मनसा देवयन्तः।

लौकिक मन्त्र- शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेषाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र को चढावे)

तीसरा-धूप दिखाना- ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।देवानामसि वह्नितम गं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

लौकिक मन्त्र- वनस्पतिरसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपमाघ्रापयामि। (धूप को दिखाये)

चौथा-दीप दिखाना-

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

अग्निर्वचो ज्योतिर्वचः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वचः सहा।।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

लौकिक मन्त्र- साज्यं च वर्तिसंयुक्त वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।

त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोस्तुते।।

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि। (दीप को दिखाये)

पॉं चवां- नैवेद्य अर्थात् वर्फी आदि का भोग लगाना।

एक किसी शुद्ध पात्र में यथोपलब्ध खाद्य वस्तु को भगवान के आगे रखकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए उसमें दूर्वा और पुष्प को छोणे।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँशीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकॉ 2 अकल्पयन्।।

लौकिक मन्त्र- शर्करा खण्डखाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभ्योज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्स

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यसमर्पयामि। (नैवेद्य को निवेदित करे)

इसी विधि को पंचोपचार पूजन कहते हैं।

इकाई – 2 स्वस्तिवाचन एवं संकल्प

इकाई की रुप रेखा

2.1 - प्रस्तावना

2.2 - उद्देश्य

2.3- स्वस्त्ययन एवं संकल्प

2. 4- सारांश

2.5 - शब्दावली

2.6 -अभ्यासार्थ प्रश्न उतर

2.7- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.8 -उपयोगी पुस्तके

2.9- निबन्धात्मक प्रश्न

2. 1- प्रस्तावना

कर्मकाण्ड से सम्बन्धित यह दूसरी इकाई है इस इकाई के अध्ययन के आप बता सकते है कि कर्मकाण्ड में संकल्प की उत्पति किस प्रकार से हुई है? कर्मकाण्ड में संकल्प उत्पति अनादि काल से हुई है। तथा संकल्प के ही माध्यम से कर्मकाण्ड में जान आता है। संकल्प कर्मकाण्ड का प्राण है। कर्मकाण्ड में संकल्प यदि अच्छी प्रकार से नही हुआ तो कार्य की सिद्धि नही होती है। इस लिये कर्मकाण्ड में संकल्प की अत्यन्त आवश्यकता है।

किसी भी कार्य को करने के पहले किसी देवी देवता की मंगल पाठ करना अत्यन्त आवश्यक है कर्मकाण्ड में सबसे पहले मंगल पाछ किया गया है जिसको हम स्वस्त्ययन कहते है। इस लिये यहाॅ पर पूजन के पहले स्वस्त्ययन का पाठ किया गया है।

2.2- उदेश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप स्वस्त्ययन एवं संकल्प का अध्ययन करेंगे।

1. संकल्प के विषय में आप परिचित होंगे-
2. संकल्प दो प्रकार के होते हैं। इसके विषय में आप परिचित होंगे
3. निष्काम संकल्प के विषय में आप परिचित होंगे
4. सकाम संकल्प के विषय में आप परिचित होंगे
5. स्वस्त्ययन के के विषय में आप परिचित होंगे
6. अंगन्यास के विषय में आप परिचित होंगे

2.3-स्वस्त्ययन एवं संकल्प

देवताओं का पूजा तथा स्थान-

पंचदेव (सूर्य. गणेश. दुर्गा. शिव. विष्णु) की पूजा सभी कार्यों में करनी चाहिये। गृहस्थी को एक मूर्ति की पूजा नही करनी चाहिये , अपि तु अनेक देवमूर्तियों की पूजा करनी चाहिये। इससे मन की कामना पूरी होती है। घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य, तीन दुर्गा, तथा दो शालीग्राम की पूजा करने से गृहस्थी मनुष्य का कल्याण कभी नही होता है। शालीग्राम की प्राणप्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिये।पत्थर, लकणी, सोना या अन्य धातुओं की मूर्तियों की प्रतिष्ठा घर अथवा मन्दिर में करनी चाहिये। पूजन में जिस सामग्री का अभाव हो उसकी पूर्ति मानसिक भावना से

करनी चाहिये अथवा उस सामग्री के लिये अक्षत, पुष्प या जल चढा दे, तत्तद् द्रव्यं तु संकल्पस्य पुष्पैर्वापि समर्चयेत् । अर्चनेषु विहीनं यत् तत्तोयेन प्रकल्पयेत् ।। केवल नैवेद्य चढाने से अथवा केवल चन्दन,पुष्प चढाने से भी पूजा मान ली जाती है।

चौकी स्थापित करके उस पर पञ्चदेवों के क्रम में यथाक्रम स्थापित करे। ईशान कोण में घी का दीपक रखे और अपने दायें हाथ में पूजा सामग्री रख लेवे। शुद्ध नवीन वस्त्र पहनकर पूर्वाभिमुख बैठे। कुंकुम (रोली) का तिलक करके अपने दायें हाथ की अनामिका में सुवर्ण की अंगुठी पहनकर आचमन प्राणायाम कर पूजन आरम्भ करे ।

कलशोदकेन शरीरप्रोक्षणम्(कलश के जल से शरीर का प्रोक्षण करे) :-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा।।
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ३

आचमन (तीन बार आचमन करे):-

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

प्राणायाम:-

गोविन्दाय नमः बोलकर हाथ धोवे और यदि ज्यादा ही कर सके तो तीन बार पूरक (दायें हाथ के अंगूठे से नाक का दायाँ छेद बन्द करके बायें छेद से श्वास अन्दर लेवे), कुम्भक (दायें हाथ की छोटी अंगुली से दूसरी अंगुली द्वारा बाया छेद भी बन्द करके श्वास को अन्दर रोके), रेचक (दायें अंगूठे को धीरे-धीरे हटाकर श्वास बाहर निकाले) करे।

पवित्रीधारणम् - ॐ पवित्रेस्त्थो व्वैष्णव्यौसवितुर्व्व प्प्रसवऽउत्पन्नुनाम्यच्छिन्नद्रेण पवित्रेण सूर्य्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य त्कान्नमल पुनेतच्छन्नकेयम्।।
यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा।
त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य तथा मम पवित्रकम्।।

सपत्नीक यजमान के ललाट में स्वस्तितिलक लगाते हुए मन्त्र को बोले-

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि:पमश्वि नौव्यात्तम्।

इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण।।

त्रिपुण्डधारणम (त्रिपुण्ड़ का तिलक करे):- परम्परागतनुसार ही त्रिपुण्ड लगाना चाहिए।

त्र्यायुषञ्जमदग्रे कश्श्यपश्यत्र्यायुषम् ।

यद्देवेषु त्तयायुषन्तन्नोऽ अस्तु त्रयायुषम्।

रुद्राक्षमाला धारण (माला धारण करे):-

त्र्यम्बकँ य्यजामहे सुगन्धिम्पुष्ट्विवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्म्मृत्त्योर्म्मुक्षीय मामृताम्।

शिखा बन्धन (शिखा का बन्धन करे तथा सिर पर वस्त्र रख देवे):-

मा नस्त्तोके तनये मानऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्श्वेषु-रीरिष।

मा नो व्वीरान्त्रुदभामिनो व्वधीर्हविष्म्मन्त सदमित्त्वा हवामहे।

ग्रन्थिबन्धन (लोकाचार से यजमान का सपत्नीक ग्रन्थिबन्धन करे):-

ॐ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः।

नाकङ्गृभ्णानाः सुकृतस्यलोके तृतीयपृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

भूमिपूजन (भूमि की पूजा करे):-

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनि।

च्छा नः शर्म्म सप्रथाः।। ॐ कर्मभूम्यै नमः।। (सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि)

आसनपूजन (आसन की पूजा करे):-

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम् ।

ॐ कूर्मासनाय नमः।

ॐ अनन्तासनाय नमः।

ॐ विमलासनाय नमः। (सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि)

भूतापसारण (बायें हाथ में सरसों लेकर उसे दाहिने हाथ से ढककर निम्र मन्त्र पढ़े) -

रक्षोहणं व्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे निष्टयो ममात्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे समानोमसमानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे सबन्र्धुम सबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे सजातो मसजातो निचखानोत्कृत्याङ्क्रिामि।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।

सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।

निम्न मन्त्रों से सरसों का सभी दिशाओं में विकिरण करे:-

प्राच्यैदिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा दक्षिणायै दिशेस्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा प्प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदर्ध्वायै दिशेस्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहा व्वाच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा।

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः। दक्षिणे रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते।।

पश्चिमे वारुणो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षेद्ऐशान्ये तु गदाधरः।।

ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद्अधस्ताद्त्रिविक्रमः। एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।

भैरवनमस्कार (भैरव को नमस्कार करके पूजन की आज्ञा लेवे):-

ऊँ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।

भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुमर्हसि।।

कर्मपात्र पूजन् (ताँबे के पात्र में जलभरकर कलश को अक्षतपुञ्ज पर स्थापित करते हुए पूजन करे):-

ऊँ तत्वामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते जमानो हविर्ब्भिः।

अहेडमानो व्वरुणे हबोद्ध्युरुश समानऽ आयुः प्प्रमोषीः।। ऊँ वरुणाय नमः।

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।

पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।

मध्ये साङ्गवरुणाय नमः। सर्वोपचारार्थे चन्दन अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अंकुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्सर्वाणि तीर्थानि आवाहयेत् (दायें हाथ की मध्यमा अङ्गुली से जलपात्र में सभी तीर्थों का आवाहन करे):-

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु।।

कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।

अश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।

गायत्री चात्र सावित्री शान्तिः पुष्टिकरा तथा।

आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

गंगे च यमुने चौव गोदावरी सरस्वती।

नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निुध कुरु।।

ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।

तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर।।

ऊँ जलबिम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि। तन्नो अम्बु प्रचोदयाम्। व मूलेन अष्टवारम्भिमन्त्र्य, धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य, मत्स्यमुद्रया आच्छाद्य।

उदकेन पूजासामग्रीं स्वात्मानं च सम्प्रोक्षयेत् (पात्र के जल से पूजन सामग्री एवं स्वयं का प्रोक्षण करे):-

ऊँ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणायचक्षसे।।

योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयते हनः। उशतीरिवमातरः।।

तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ आपोजनयथाचनः।।

दीपपूजनम् (देवताओं के दाहिने तरफ घी एवं विशेश कर्मों में बायें हाथ की तरफ तेल का दीपक जलाकर पूजन करना चाहिए):-

अग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवतादित्त्या देवता मरुतो देवता विश्श्वे देवा देवता बृहस्प्पतिर्द्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता।

ऊँ दीपनाथाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सूर्य नमस्कारः (दिन में पूजन कर रहे हो तो सूर्य को नमस्कार करे):-

ऊँ तच्चक्क्षुर्द्देवहितम्पुरस्त्ताच्छुक्क्रमुच्चरत्।

पश्श्येम शरद्र शतञ्जीवेम शरद्र शत श्रृणुयाम शरद्र

शतम्प्रब्ब्रवाम शरद्र शतमदीना स्याम शरद्र शतम्भूयश्च्च शरद्र शतात्।

चन्द्र नमस्कारः (रात्रि में पूजन कर रहे हो तो चन्द्रमा को नमस्कार करे):-

ऊँ इमन्देवा ऽ असपत्न œ सुवध्वम्महते क्षत्रायमहते ज्ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।

इमममुख्य पुत्रममुख्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना œ राजा।।

प्रार्थना:- ऊँ भो दीप देवःपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।

यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव।।

शंख पूजन -

1. ॐ अग्निर्ऋषि पवमान पाञ्चजन्य पुरोहित। तमीमहेमहागयम्।

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि। तन्नोशंखः प्रचोदयात्।

ॐ भूर्भुवः स्वः शंखस्थ देवतायै नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

घण्टा पूजन -

आगमनार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।

घण्टानादं प्रकुर्वीत् तस्मात्घण्टां प्रपूजयेत्।

ॐ सुपर्ण्णासि गरुत्क्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्र्ञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ।

स्तोमऽ आत्माच्छन्दाœ स्यङ्ग्नि जूœ षिनाम ।

साम ते तनूर्व्वामदेव्यँज्ञा यज्ञियं पुच्छन्धिष्ण्या शफा।

सुपर्ण्णासि गरुत्क्मान्दिवङ्ग्च्छस्त्र पत। २। ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टस्थ गरुड़ाय नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा (हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करे):-

ॐ आनो भद्र्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतो दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे॥१॥ देवानां भद्र्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना रातिरभिनोनिवर्त्तताम्। देवाना सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयं देवानऽआयुः प्प्रतिरन्तुजीवसे॥२॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिं दक्षमस्रिधर्म्। अमणं व्वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्॥३॥ तन्नोव्वातो मयो भुव्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्॥४॥ तामीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पति-न्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥५॥ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्व्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनोदेवाऽअवसा गमन्निह॥७॥ भद्र्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्र्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा œ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः॥८॥ शतमिन्नुशरदो ऽ अन्ति देवा त्रा नश्चक्रा जरसंतनूनाम्। पुत्रासो त्र पितरो भवन्ति मानो मद्ध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥ अदितिर्द्यो रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा ऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्॥१०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष œ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व œ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि॥११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाब्भ्योभयन्नः

पशुभ्यः॥१२॥ सुशान्तिर्भवतु॥

शिरसाभिवन्द्य गणपतिमण्डलोऽपरि अक्षतपुष्पाणि अर्पयेत्। (अक्षत-पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करे)

गणपत्यादि देवानां स्मरणम्(गणेशादि देवों का स्मरण करे):-

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजगर्णकः। लम्बोदरश्च विकटोविघ्ननाशो विनायकः। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चौव विघ्नस्तस्य न जायते। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये। अभीप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः। सर्वमङ्ग्ल माङ्ग्ल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते। सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममङ्ग्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः। तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्िघ्रयुगं स्मरामि। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम। सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गा भवानी मणिकर्णिकाम्। विनायकं गुरुभानुं ब्रह्मिविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये।ऊँ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ऊँ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ऊँ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ऊँ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ऊँ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ऊँ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। ऊँ सर्वपितृदेवताभ्यो नमः। ऊँ इष्टदेवताभ्यो नमः। ऊँ कुलदेवताभ्यो नमः। ऊँ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ऊँ स्थानदेवताभ्यो नमः। ऊँ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ऊँ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ऊँ गुरवे नमः। ऊँ परमगुरवे नमः। ऊँ परात्परगुरवे नमः। ऊँ परमेष्ठिगुरवे नमः।

गुरुः ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीः गुरवे नमः॥
ऊँ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः।

(क) निष्काम संकल्प

दाहिने हाथमें जल, अक्षत और द्रव्य लेकर संकल्प करे।

ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अखिलब्रह्मण्डान्तर्गत भूमण्डल मध्ये सप्तद्वीप मध्यवर्तिनी जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैकदेशे गंगायमुनयोः पश्चिमभागे नर्मदाया उत्तरे भागे तीर्थ क्षेत्रे उत्तराखण्ड प्रदेशे हल्द्वानि उपक्षेत्रे अस्मिन्

देवालये (गृहे) देव-ब्राह्मणानां सन्निधौ ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्ट्मे श्रीश्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे बौद्धावतारे प्रभवादि षष्ट्सिम्वत्सराणां मध्येऽस्मिन वर्तमाने अमुकनाम्नि सम्वत्सरे अमुकवैक्रमाब्दे विक्रमादित्यराज्यात शालिवाहनशके अमुकायने अमुकऋर्ता अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्य बेलायां अमुकगोत्रः (शर्मा/वर्मा/गुप्त/दास) अमुकोऽहं ममात्मनः ममोपादुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेष्वरप्रीत्यर्थं. . . .देवस्य पूजनं करिष्ये।

(ख) सकाम संकल्प

इसके बाद दाहिने हाथमें जल, अक्षत और द्रव्य लेकर संकल्प करे।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अखिलब्रह्माण्डान्तर्गत भूमण्डल मध्ये सप्तद्वीप मध्यवर्तिनी जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैकदेशे गंगायमुनयोः पश्चिमभागे नर्मदाया उत्तरे भागे तीर्थ क्षेत्रे उत्तराखण्ड प्रदेशे हल्द्वानि उपक्षेत्रे अस्मिन् देवालये (गृहे) देव-ब्राह्मणानां सन्निधौ ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्ट्मे श्रीश्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्ट्विंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे बौद्धावतारे प्रभवादि षष्ट्सिम्वत्सराणां मध्येऽस्मिन् वर्तमाने अमुकनाम्नि सम्वत्सरे अमुकवैक्रमाब्दे विक्रमादित्यराज्यात् शालिवाहनशके अमुकायने अमुकऋर्ता अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्य बेलायां अमुकगोत्रः (शर्मा/वर्मा/गुप्त/दास) अमुकोऽहं ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल प्राप्त्यर्थं ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं अप्राप्तलक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकलमनईप्सित कामना संसिध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि प्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य समस्तभयव्याधि जरापीड़ा-मृत्यु परिहार द्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं मम जन्मराशेः नामराशेः वा सकाशाद्ये केचिद्विरुद्धचतुर्थाष्ट्मद्वादशस्थानस्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्ट्ं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थान-स्थितवच्छुभफल प्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादि सन्ततेरविच्छिन्न वृद्ध्यर्थं आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिध्यर्थं त्रिविधतापोपशमनार्थं चतुर्विध पुरुषार्थ सिध्यर्थं पञ्चदेवपूजनं (सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव तथा विष्णु) करिष्ये।

तत्पश्चात्पञ्चदेवों के अन्तर्गत गणपति आदि देवताओं का पूजन करे।

अंगन्यास

संकल्पके पष्चात् न्यास करे। मन्त्र बोलते हुए दाहिने हाथसे कोष्ठमें निर्दिष्ट अंगोका स्पर्श करे।

इसमन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथ से बायाँ हाथ को स्पर्श करे-

सहस्त्रषीर्षा पुरूषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।

स भूमि सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दषांगुलम्।।

इसमन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे करे। दाहिना हाथ को स्पर्श करे-

पुरूष एवेद सर्वं यभ्दूतं यच्च भाव्यम्।

उतामृतत्वस्येषानो यदन्नेनातिरोहति।।

इसमन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे बायाँ पैर को स्पर्श करे-

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँष्च पूरूषः।

पादोऽस्य विष्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे दाहिना पैर को स्पर्श करे-

ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साषनानषने अभि।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे वाम जानु को स्पर्श करे-

ततो विराडजायत विराजो अधि पुरूषः।

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाभ्दूमिमथो पुरः।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे दहिना जानु
को स्पर्श करे-

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।

पशूँस्ताँष्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याष्च ये।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे वाम कटिभाग को स्पर्श करे-

तस्माद्यज्ञात् सर्वहतु ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दा सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे दाहिना कटिभाग को स्पर्श करे-

तस्मादष्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे नाभि को स्पर्श करे-

तं यज्ञं बर्हिषि पौक्षन् पुरूषं जातमग्रतः।

तेन देवा अजयन्त साध्या ऋषयष्च ये।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे हृदय को स्पर्श करे-

यत्पुरूषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्यासीत् किं बाहु किमूरू पादा उच्यते।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे वाम बाहु को स्पर्श करे-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।

उरू तदस्य यद्वैष्यः पद्भ्या शूद्रो अजायत।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे दक्षिण बाहु को स्पर्श करे-

चन्द्रमा मनसो जातष्चक्षोः सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुष्च प्राणष्च मुखादग्निरजायत।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे कण्ठ को स्पर्श करे-

नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिषः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे मुख
को स्पर्श करे-

यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे आँख को स्पर्श करे-

सप्तास्यासन परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरूषं पशुम्।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे मूर्धा को स्पर्श करे

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

पंचअंगन्यास

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे हृदय को स्पर्श करे

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विष्वकर्मणः समवर्तताग्रे।

तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजनमग्रे।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे सिर को स्पर्श करे

वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे शिखा को स्पर्श करे

प्रजापतिष्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते।

तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विष्वा।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे कवचाय हुम्, दोनो कंधो को स्पर्श करे

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः।

पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रूचाय ब्राह्मये।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे अस्त्राय फट्, बायीं हथेली पर ताली बजाये को स्पर्श करे

रूचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्।

यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वषे।।

करन्यास

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हॉथ से दोनों अंगूठोका स्पर्श करे

ब्राह्मणोऽस्य मुखीमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।

उरू तदस्य यद्वैष्यः पभ्दया शूद्रो अजायत।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे दोनों तर्जनियों का स्पर्श करे अंगुष्ठाभ्यां नमः

चन्द्रमा मनसो जातष्चक्षोः सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुष्च प्राणष्च मुखादग्निरजायत।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे दोनों मध्यमाओं का स्पर्श करे

नाभ्यो आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिषः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे दोनों अनामिकाओं का स्पर्श करे मध्यमाभ्यां नमः।

यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे दोनों कनिष्ठिकाओं का स्पर्श करे

सप्तास्यास्न परिधयस्त्रिः सप्त समधिः कृताः।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरूषं पशुम्।। कनिष्ठिकाभ्यां नमः

इस मन्त्र को बोलते हुए दाहिने हाथसे दोनों करतल और करपृष्ठोंका स्पर्श करे

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

2.4-सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्रों को गणपति पूजन की विधि का ज्ञान मिलेगा। इसके अन्तर्गत गणपति पूजन का मुहूर्त विविध मन्त्रों का ज्ञान, नूतन गणपति मूर्ति का स्थापन-विधि, प्राण-प्रतिष्ठा, अंगपूजन, अथर्वशीर्ष का पाठाभ्यास, षड्विनायक पूजन सहित गणपति की सम्पूर्ण पूजन विधि का ज्ञान छात्रों को मिलेगा। गणपति को प्रथमपूज्य का आशीर्वाद सभी देवताओं से प्राप्त है अतएव कोई भी मांगलिक कार्य इनकी पूजन के बिना पूर्णता को प्राप्त नहीं होता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान चुके है कि समस्त वेदादि शास्त्रों में नित्य और नैमित्तिक कर्मो को मानव के लिये परम धर्म और परम कर्तव्य कहा है । इस लिये नित्य नैमित्तिक कर्म करने के लिये कर्मकाण्ड में स्वस्तिन अर्थात् मंगल पाठ करने का अत्यन्त महत्त्व बताया गया है। मंगल पाठ करने के वाद संकल्प का विधान बताया गया है। इसके वाद अंगों के न्यास करने का विधान बताया गया है।

2.5 शब्दावली

शब्द	**अर्थ**
हृषीकेषाय नमः	हृषीकेश के लिये नमस्कार है।
नारायणाय नमः	नारायण के लिये नमस्कार है।
गोविन्दाय नमः	गोविन्द के लिये नमस्कार है।
महागणाधिपतये नमः	महा गणाधिपति के लिये नमस्कार है।
लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः	लक्ष्मी नारायण के लिये नमस्कार है।
उमा-महेष्वराभ्यां नमः	उमामहेश्वर के लिये नमस्कार है।

मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः	माता पिता के चरण कमलों को नमस्कार है।
इष्टदेवताभ्यो नमः	इष्ट देवताओं को नमस्कार है।
कुलदेवताभ्यो नमः	कुलदेवताओं को को नमस्कार है।
ग्रामदेवताभ्यो नमः	ग्रामदेवताओं को नमस्कार है।
वास्तुदेवताभ्यो नमः	वास्तुदेवताओं को नमस्कार है।
स्थानदेवताभ्यो नमः	स्थानदेवताओं को नमस्कार है।
सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः	सभी देवों को नमस्कार है।
सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः	सभी ब्राह्मणों को नमस्कार है।

2.6 -अभ्यासार्थ प्रश्न -उत्तर

1-प्रश्न-किसी कार्य को करने के पूर्व क्या किया जता है?

उत्तर- किसी कार्य को करने के पूर्व मंगल पाठ किया जता है।

2-प्रश्न-आचमन किस मन्त्र से किया जाता है?

उत्तर-ऊँ हृषीकेशाय नमः,'ऊँ नारायणाय नमः, ऊँ गोविन्दाय नमः' इस मन्त्र से किया जाता है?

'3-प्रश्न-पवित्री धारण किस मन्त्र से किया जाता है?

उत्तर-ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रष्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।'' इस मन्त्र से किया जाता है?

4- प्रश्न- पवित्र किस मन्त्र से किया जाता है?

उत्तर- ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

5-प्रश्न-संकल्प कितने प्रकार के होते है?

उत्तर-संकल्प दो प्रकार के होते हैं।

6.प्रश्न-किस मन्त्र से त्रिपुण्डधारणम (त्रिपुण्ड़ का तिलक) किया जाता है?

उत्तर-त्र्यायुषञ्जमदग्रे कश्श्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽ अस्तु त्र्यायुषम्।

7.प्रश्न-किस मन्त्र से रुद्राक्षमाला धारण (माला धारण) किया जाताहै ?

उत्तर-त्र्यम्बकँ य्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृताम्।

8.प्रश्न-किस मन्त्र से शिखा बन्धन (शिखा का बन्धन)किया जाता है?

उत्तर-मा नस्तोके तनये मानऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्श्वेषु-रीरिष।

मा नो व्वीरान्नुदर्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्त सदमित्त्वा हवामहे।

9.प्रश्न-ग्रन्थिबन्धन (लोकाचार से यजमान का सपत्नीक ग्रन्थिबन्धन) किया जाता है?

उत्तर-ऊँ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः।

नाकङ्गृभ्ण्णानाः सुकृतस्यलोके तृतीयपृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

10.प्रश्न-किस मन्त्र से भूमिपूजन (भूमि की पूजा)किया जाता है?

उत्तर-ऊँ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनि।

च्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।। ऊँ कर्मभूम्यै नमः।। (सर्वापचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि)

11.प्रश्न-किस मन्त्र से आसनपूजन (आसन की पूजा) किया जाताहै?

उत्तर-ऊँ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम् ।(सर्वापचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि)

12.प्रश्न-कर्मपात्र पूजन किसे कहते है?

उत्तर-कर्मपात्र ताँबे के पात्र में जलभरकर कलश को अक्षतपुञ्ज पर स्थापित करते हुए पूजन किया जाता है।

12.प्रश्न-कर्मपात्र पूजन का मन्त्र किसे कहते है?

उत्तर- ऊँ तत्वामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते जमानो हविर्ब्भिः।

अहेडमानो व्वरुणे हबोद्ध्युरुश समानऽ आयुः प्प्रमोषीः।। ऊँ वरुणाय नमः।

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।

पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।

मध्ये साङ्गवरुणाय नमः। सर्वोपचारार्थे चन्दन अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. पंचदेव हैं- ग

क -सूर्य. गणेश. दुर्गा. हरि. विष्णु ख - सूर्य. गणेश. पार्वती. शिव. विष्णु

ग - सूर्य. गणेश. दुर्गा. शिव. विष्णु घ - सूर्य. गणेश. दुर्गा. शिव. हनुमान 2. गृहस्थी को सभी कार्यों में पूजा नही करनी चाहिये-क

क - एक मूर्ति की पूजा ख - पार्वती की पूजा

ग -शिव की पूजा घ -हनुमान की पूजा

3. अनेक देवमूर्तियों की पूजा करने से पूरी होती हैं- क

क - मन की कामना ख - जीवन की कामना

ग - भविष्य की कामना घ - अपनी की कामना

4. घर में शिवलिंग,रखनी चाहिये - क

क - एक ख - दो

ग - अर्द्ध घ -तीन

5. घर में गणेश मूर्ति,रखनी चाहिये - ग

क - चार ख - दो

ग - एक घ -तीन

6. घर में शंख,रखनी चाहिये - ग

क - चार ख - दो

ग - एक घ -तीन

7. घर में शालीग्राम,रखनी चाहिये - ग

क - चार ख - दो

ग - एक घ -तीन

8.घी का दीपक रखनी चाहिये-क

क -ईशान कोण में ख - नैर्ऋत्य कोण में

ग -वायव्य कोण में घ -अग्नि कोण में

9. शुद्ध नवीन वस्त्र पहनकर पूजा में बैठना चाहिये-

क -ईशान कोण में ख - नैर्ऋत्य कोण में

ग - पूर्वाभिमुख घ -अग्नि कोण में

10. सहस्त्रषीर्षा पुरूषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।

स भूमि सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दषांगुलम्।। इस मन्त्र को बोलते हुए स्पर्श किया जाता है-ख

क - दाहिने हाथ से दोनो कानों को ख - दाहिने हाथ से बायाँ हाथ को

ग - दाहिने हाथ से बायाँ पैर को घ -- दाहिने हाथ से दोनो नेत्रो को

11. ततो विराडजायत विराजो अधि पुरूषः।

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाभ्दूमिमथो पुरः।।इस मन्त्र को बोलते हुए स्पर्श किया जाता है-ख

क - दाहिने हाथ से दोनो कानों को ख - दाहिने हाथसे वाम जानु को

ग - दाहिने हाथ से बायाँ पैर को घ -- दाहिने हाथ से दोनो नेत्रो को

12. तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दा सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।इस मन्त्र को बोलते हुए स्पर्श किया जाता है-घ

क - दाहिने हाथ से दोनो कानों को ख - दाहिने हाथसे वाम जानु को

ग - दाहिने हाथ से बायाँ पैर को घ - दाहिने हाथसे वाम कटिभाग

13. तं यज्ञं बर्हिषि पौक्षन् पुरूषं जातमग्रतः।

तेन देवा अजयन्त साध्या ऋषयष्च ये।।इस मन्त्र को बोलते हुए स्पर्श किया जाता है-ग

क - दाहिने हाथ से दोनो कानों को ख - दाहिने हाथसे वाम जानु को

ग - दाहिने हाथसे नाभि को घ - दाहिने हाथसे वाम कटिभाग

14.तं पुरूषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्यासीत् किं बाहु किमूरू पादा उच्यते। इस मन्त्र को बोलते हुए स्पर्श किया जाता है-क

क - दाहिने हाथसे हृदय को ख - दाहिने हाथसे वाम जानु को

ग - दाहिने हाथसे नाभि को घ - दाहिने हाथसे वाम कटिभाग

15. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।

उरू तदस्य यद्वैष्यः पद्भ्या शूद्रो अजायत।। इस मन्त्र को बोलते हुए स्पर्श किया जाता है-ख

क - दाहिने हाथसे हृदय को ख - दाहिने हाथसे वाम बाहु को

ग - दाहिने हाथसे नाभि को घ - दाहिने हाथसे वाम कटिभाग

16. नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिषः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।। इस मन्त्र को बोलते हुए स्पर्श किया जाता है-घ

क - दाहिने हाथसे हृदय को ख - दाहिने हाथसे वाम बाहु को

ग - दाहिने हाथसे नाभि को घ - दाहिने हाथसे कण्ठ को

17. यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। इस मन्त्र को बोलते हुए स्पर्श किया जाता है-ग

क - दाहिने हाथसे हृदय को ख - दाहिने हाथसे वाम बाहु को

ग -दाहिने हाथसे मुख को घ - दाहिने हाथसे कण्ठ को

18. सप्तास्यासन परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरूषं पशुम्।। इस मन्त्र को बोलते हुए स्पर्श किया जाता है-ग

क - दाहिने हाथसे हृदय को ख - दाहिने हाथसे वाम बाहु को

ग -दाहिने हाथसे आख को घ - दाहिने हाथसे कण्ठ को

19.यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। इस मन्त्र को बोलते हुए स्पर्श किया जाता है- ग

क - दाहिने हाथसे हृदय को ख - दाहिने हाथसे वाम बाहु को

ग -दाहिने हाथसे आख को घ - दाहिने हाथसे मूर्धा को

20. संकल्प होते है - ख

क - चार प्रकार ख - दो प्रकार

ग - एक प्रकार घ -तीन प्रकार

2.7-सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1-पुस्तक का नाम-दुर्गाचन पूजापद्धति

लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र

प्रकाषक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

2-पुस्तक का नाम-सर्वदेव पूजापद्धति

लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र

प्रकाषक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

3 धर्मशास्त्र का इतिहास

लेखक - डॉ. पाण्डुरङ्ग वामन काणे

प्रकाशक:- उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान।

4 नित्यकर्म पूजा प्रकाश,

लेखक:- पं. बिहारी लाल मिश्र,

प्रकाशक:- गीताप्रेस, गोरखपुर।

5 अमृतवर्षा, नित्यकर्म, प्रभुसेवा

संकलन ग्रन्थ

प्रकाशक:- मल्होत्रा प्रकाशन, दिल्ली।

6 कर्मठगुरुः

लेखक - मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक - मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

7 हवनात्मक दुर्गासप्तशती
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।

8 शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टध्यायी
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिश शोध संस्थान, जयपुर।

9 विवाह संस्कार
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - हंसा प्रकाशन, जयपुर

2.8-उपयोगी पुस्तकें

1-पुस्तक का नाम-दुर्गाचनपद्धति
लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.प्रश्न- निष्काम संकल्प का वर्णन करे-

उत्तर-ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अखिलब्रह्मण्डान्तर्गत भूमण्डल मध्ये सप्तद्वीप मध्यवर्तिनी जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैकदेशे गंगायमुनयोः पश्चिमभागे नर्मदाया उत्तरे भागे तीर्थ क्षेत्रे उत्तराखण्ड प्रदेशे हल्द्वानि उपक्षेत्रे अस्मिन् देवालये (गृहे) देव-ब्राह्मणानां सन्निधौ ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्रीश्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे बौद्धावतारे प्रभवादि षष्ट्सिम्वत्सराणां मध्येऽस्मिनवर्तमाने अमुकनाम्नि सम्वत्सरे अमुकवैक्रमाब्दे विक्रमादित्यराज्यात् शालिवाहनशके अमुकायने अमुकऋर्ता अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्य बेलायां अमुकगोत्रः (शर्मा/वर्मा/गुप्त/दास) अमुकोऽहं ममात्मनः ममोपादुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेष्वरप्रीत्यर्थं. . . .देवस्य पूजनं

करिष्ये।

2.प्रश्न- भूतापसारण का वर्णन करे-

उत्तर-भूतापसारण (बायें हाथ में सरसों लेकर उसे दाहिने हाथ से ढककर निम्न मन्त्र पढ़े) -

रक्षोहणं व्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे निष्ट्यो ममात्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे समानोमसमानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे सबन्धुंम सबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि म्मे सजातो मसजातो निचखानोत्कृत्याङ्क्रिामि।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

निम्न मन्त्रों से सरसों का सभी दिशाओं में विकिरण करे:-

प्राच्यैदिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा दक्षिणायै दिशेस्वाहार्व्वाच्यै दिशेस्वाहा प्प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदर्ध्वायै दिशेस्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहा व्वाच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा।

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः। दक्षिणे रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते।।
पश्चिमे वारुणो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षेद्ऐशान्ये तु गदाधरः।।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद्अधस्ताद्त्रिविक्रमः। एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।

इकाई - 3 गणेशाम्बिका पूजन

इकाई की रुप रेखा

3.1 - प्रस्तावना

3.2 - उद्देश्य

3.3- गणेशाम्बिका पूजन

3. 4- सारांश

3.5 - शब्दावली

3.6 -अभ्यासार्थ प्रश्न उतर

3.7- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.8 -उपयोगी पुस्तके

3.9- निबन्धात्मक प्रश्न

3.1- प्रस्तावना

कर्मकाण्ड से सम्बन्धित यह तीसरी इकाई है इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि गणेशाम्बिका की पूजन की आवश्यकता क्या है इसके विषय में विशेश रूप से वर्णन किया जा रहा है। किसी भी यज्ञादि महोत्सवों, पूजा-अनुष्ठानों अथवा नवरात्र-पूजन शिवरात्रि में शिव-पूजन, पार्थिव-पूजन, रूद्राभिषेक, सत्यनारायण-पूजन, दिवाली-पूजन आदि कर्मो में प्रारम्भ में स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, गणेश-कलश-नवग्रह तथा रक्षा-विधान आदि कर्म सम्पन्न किये जाते हैं, इसके अनन्तर प्रधान रूप से गणेश पूजा की जाती है। इसी लिये सभी पूजाओं में प्रधान रूप से गणेश की पूजा की जाती है। क्योंकि सभी देवताओं में प्रधान रूप से गणेश को अग्रगण्य माना गया है। इसका वर्णन शिव महापुराण विशेष रूप से किया गया है।

3.2- उदेश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप वेद शास्त्र से वर्णित कर्मकाण्ड का अध्ययन करेगें।

1. गणेश के विषय में आप परिचित होंगे-
2. अम्बिका के विषय में आप परिचित होंगे
3. गणेश अम्बिका के ध्यान के विषय में आप परिचित होंगे
4. गणेश अम्बिका के अवाहन के विषय में आप परिचित होंगे
5. गणेश अम्बिका के प्रतिष्ठा के विषय में आप परिचित होंगे
6. गणेश अम्बिका के पूजन के विषय में आप परिचित होंगे।

3.3-गणेशाम्बिका पूजन

ऋषियों ने मंगलकामना के लिए किये जाने वाले प्रत्येक देवपूजा कर्म के आरम्भ में गणेशार्चन का अनिवार्य रूप से संयोजित करने का निर्देश दिया हैं। गणेश पूजन का विधान पुरातन हैं। शुक्ल यजुर्वेद संहिता के गणानान्त्वा गणपति ठ हवामहे मैत्रायणीय संहिता के 'तत्कराटाय विद्महे हस्तीमुखाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।। एवं तैत्तरीय आरण्यक अन्तर्गत नारायणोपनिषद के तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात।। आदि मन्त्र इस परम्परा के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं अतैव यह निर्विवाद सिद्ध हैं कि नित्य नैमित्तिक एवं काम्य गणेश उपासना के आचरण में ही मानवमात्र का हित निहित हैं।

किसी देवता की उपासना को सांगोपांग, यथासमय एवं ग्रहानुकूलतापूर्वक सम्पादित करना ही उसकी सार्थकता का साधक हैं, एतद्विषयक विषद ज्ञाननिधि एकमात्र ज्योतिर्विज्ञान में ही संचित हैं तथा वेदों के छरू अंगों में इसे मूर्धन्य (नेत्ररूप) माना गया हैं। अतरू गणेशोपासना विषयक कुछ उपयोगी तथ्यों को त्रिस्कन्धात्मक ज्योतिर्ग्रन्थों से एकत्रित करके यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा हैं। ज्योतिश शास्त्र के संहिता ग्रन्थों में वर्णित गणपति प्रतिष्ठोपयुक्त काल इस प्रकार हैं।

मास - वैशाख, ज्येष्ठ तथा फाल्गुनादि उत्तरायण गत सूर्य के मास। भाद्रपद मास में कृष्णपक्ष की गणेश चतुर्थी भी ग्राह्य हैं।

तिथि - उपर्युक्त मासों की शुक्लपक्षीय २-३-४-५-६-७-८-१०-११-१२

वार - रवि, मंगल, शुक्र व शनि। मतान्तरेण बुधवार भी स्वीकृत हैं।

नक्षत्र - सामान्य रूप से सर्वदेव प्रतिष्ठा में ग्रहण किये हुए नक्षत्रों के साथ ही गणेश प्रतिष्ठा आर्द्रा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी तथा रेवती में विशेश रूप से कही गयी हैं।

लग्न - मिथुन, सिंह तथा कुम्भ राशि लग्न स्वाधिपति एवं शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर। पुनश्च केन्द्र, त्रिकोण में शुभग्रह षष्ठ में पापग्रह, ३-११ में कोई ग्रह तथा अष्टम एवं द्वादश में ग्रहों का अभाव अपेक्षित हैं।

विशेष - प्रतिष्ठापक के चन्द्रबल के साथ अन्यशुभ योग प्रतिष्ठा की सार्थकता के द्योतक हैं ,किन्तु देवशयन, मलमास, गुरु-शुक्रास्त, भ्रदा, पात, तारा का निर्बलत्व, तिथिक्षय, तिथिवृद्धि, प्राकृतिक प्रकोप, मासान्त एवं जन्म-मरण अशौच की विद्यमानता प्रतिष्ठा को निष्फल करते हैं।

गणेशोपसना का मुहूर्त - संकट, निवारण, अर्थोपार्जन, आरोग्यता-प्राप्ति, वंशवृद्धि और स्वार्थ सिद्धि आदि किसी भी उद्देश्य की पूर्ति हेतु करिष्यमान गणेश की अराधना का शुभारम्भ निम्नलिखित कालशुद्धि मे वांछित एवं फलद है।

मास - चौत्र (मेषार्क एवं शुक्ल पक्ष से संयुक्त) वैशाख, श्रावण, आश्विन (शुक्ल) माघ तथा फाल्गुन गुरु शुक्र का उदित होना आवश्यक है।

तिथि - भद्रा आदि कुयोग वर्जित शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १३

वार - रवि, चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र।

नक्षत्र - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुर्नवसु, पुष्य, उत्तराफालगुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, हस्त, स्वाती, अनुराधा श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा एवं रेवती तथा ग्रहणयुक्त नक्षत्र त्याज्य है।

लग्नः- वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुम्भ, मीन आदि किसी राशि के उदित होने पर जब केन्द्र त्रिकोण मे सौम्य ग्रह ३,६,११ व पाप ग्रह तथा ८,१२ ग्रह ग्रह-विहीन हो। पुनश्च, नवमभाव शुभ

ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तथा भाग्येश निष्कलंक एवं मित्र क्षेत्रीय हो।

विशेश - गणेश चतुर्थी विशिष्ट ग्राह्य हैं तथा उपासना का बल हीन चन्द्र सर्वथा त्याज्य है। पूर्व निश्चित मुहुर्त के दिन यदि कोई बाधा रोग, उत्पात अथवा कोई अप्रिय घटना उपस्थित हो जाए तो उपासना स्थगित कर दे। भद्रा में गणपति पूजन का विशेश महत्त्व है।

श्रीगणेश के विविध मन्त्र -

श्री महागणपतिस्वरूप प्रणव मन्त्र - ऊँ

श्री महागणपति का प्रणव सम्पुटित बीज मन्त्र - ऊँ गं ऊँ

सबीज गणपति मन्त्र - गं गणपतये नमः

प्रणवादि सबीज गणपति मन्त्र - ऊँ गं गणपतये नमः

नाम मन्त्र -

ऊँ नमो भगवते गजाननाय :- १२ अक्षरों का मन्त्र

श्रीगणेशाय नमः:- ०७ अक्षरों का मन्त्र

ऊँ श्रीगणेशाय नमः:- ०८ अक्षरों का मन्त्र

उच्छिष्टगणपति नर्वाण मन्त्र - ऊँ हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।

विनियोग - ऊँ अस्य श्रीउच्छिष्टगणेशनवार्णमन्त्रस्य कंकोल ऋषिः, विराट छनदः, उच्छिष्टगणपतिर्देवता, अखिलावाप्तये जपे विनियोगः। (हाथ में जल लेकर गिराये)

द्वादशाक्षर उच्छिष्टगणपति मन्त्र - ऊँ ह्रीं गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।

विनियोग - ऊँ अस्य श्रीरद्वादशाक्षरोच्छिष्टगणपति मन्त्रस्य मनुः ऋषिः, विराट छनदः, उच्छिष्ट गणपतिर्देवता, गं बीजम् स्वाहा शक्तिः, ह्रीं कीलकम् अखिलावाप्तये जपे विनियोगः। (हाथ में जल लेकर गिराये)

एकोनविंशत्यक्षरोच्छिष्टगणपतिमन्त्र - ऊँ नम उच्छिष्टगणेशाय हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।

विनियोग - ऊँ अस्य श्रीउच्छिष्टगणेशमन्त्रस्य कंकोल ऋषिः, विराट छनदः, उच्छिष्टगणपतिर्देवता, अखिलावाप्तये जपे विनियोगः। (हाथ में जल लेकर गिराये)

३७ अक्षरों का उष्छिष्टगणपति मन्त्र -

ऊँ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने आं क्रीं ह्रीं गं थे थे स्वाहा।

विनियोग - ऊँ अस्य श्रीउच्छिष्टगणेशमन्त्रस्य गणक ऋषिः, गायत्रीच्छन्दरू, उच्छिष्टगणपतिर्देवता, गं बीजम, ह्रीं शक्तिरू, आं क्रों कीलकम् ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगरू।। (हाथ में जल लेकर गिराये)

३२ अक्षरों का हरिद्रागणेश मन्त्र -

ऊँ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वर वरद सर्वजन हृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा।

विनियोग - अस्य श्रीहरिद्रागणनायकमन्त्रस्य मदन ऋषि, अनुष्टुप छनदः, हरिद्रागणनायको देवता, ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः। (हाथ में जल लेकर गिराये)

०६ अक्षरों का वक्रतुण्ड मन्त्र - ऊँ वक्रतुण्डाय हुम्।

विनियोग - ऊँ अस्य श्रीगणेशमन्त्रस्य भार्गव ऋषिरू, निचृत अनुष्टुप छनदः, विघ्नेशो देवता, वं बीजम, यं शक्तिः, ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः। (हाथ में जल लेकर गिराये)

३१ अक्षरों का वक्रतुण्ड मन्त्र -

रायस्पोषस्य दाता निधिदातान्नदो मतः। रक्षोहणो वो बलगहनो वक्रतुण्डाय हुम्।।

विनियोग - ऊँ अस्य श्रीवक्रतुण्डगणेशमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छनदः, विघ्नेशो देवता, वं बीजम्, यं शक्तिः, ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः। (हाथ में जल लेकर गिराये)

शक्तिविनायक ०४ अक्षरों का मन्त्र - ऊँ ह्रीं ग्रीं ह्रीं

विनियोग - अस्य शक्ति विनायक मन्त्रस्य (शक्तिगणाधिपमन्त्रस्य वा) भार्गव ऋषिः विराट छन्दरू शक्तिगणाधिपो देवता (शक्तिविनायको देवता वा) ग्रीं बीजम ह्रीं शक्तिरू ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगरू। (हाथ में जल लेकर गिराये)

२८ अक्षरों का लक्ष्मीविनायक मन्त्र - ऊँ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।।

विनियोग - ऊँ अस्य श्रीलक्ष्मीविनायकमन्त्रस्य अन्तर्यामी ऋषिरू, गायत्री छन्दरू, लक्ष्मीविनायको देवता श्रीं बीजम स्वाहा शक्तिरू ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगरू। (हाथ में जल लेकर गिराये)

३३ अक्षरों का त्रैलोक्यमोहनकर गणेश मन्त्र - वक्रतुण्डैकंदष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपते वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

विनियोग - ऊँ अस्य श्रीत्रैलोक्यमोहन कर गणेशमन्त्रस्य गणक ऋषिरू गायत्रीच्छन्दरू त्रैलोक्यमोहन करो गणेशो देवता ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगरू। (हाथ में जल लेकर गिराये)

सिद्धिविनायक मन्त्र - ऊँ नमो सिद्धिविनायकाय सर्वकार्यकर्त्रे सर्वविघ्नप्रशमनाय सर्वराज्य वशकरणाय सर्वजनसर्वस्त्रीपुरूषाकर्षणाय श्री ऊँ स्वाहा।

ऋणहर्तृगणेशमन्त्र -

ऊँ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्य हुं नमरू फट्।

ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं गौं गरू श्रीमन्महागणाधिपये नमः।

ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं गौं वरदमूर्तये नमरू।

ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवते गजाननाय।

ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं गणेशाय नमरू ब्रह्मरूपाय चारवे।

सर्वसिद्धप्रदेशाय विघ्नेशाय नमो नमः।।

बीजाय भालचन्द्राय गणेश परमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय हेरम्बाय नमो नमः।।

आपदामपहर्तारं दातारं सुखसम्पदाम्। क्षिप्रप्रसादनं देवं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।

नमो गणपते तुभ्यं हेरम्बायैकदन्तिने। स्वानन्दवासिने तुभ्यं ब्रह्मणस्पतये नमः।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं शशिसूर्यनिभाननम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

नमस्तस्मै गणेशाय ब्रह्मविद्याप्रदायिने यस्यागस्त्यायते नाम विघ्नसागरशोषणे।।

यद् भूरणप्रणिहितां लक्ष्मीं लभन्ते भक्तकोटय। स्वतन्त्रमेकं नेतारं विघ्नराजं नमाम्यहम्।।

श्री गजानन जय गजानन।

श्री गजानन जय गजानन जय जय गजानन।

ह्रीं गं ह्रीं गणपतये नमः ऊँ वक्रतुण्डाय नमः।

श्री गणेश गायत्री - महाकर्णाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात।

मानसिक शुद्धि हेतु मन्त्रः-

ओम अपवितत्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ओम पुण्डरीकाक्षः पुनातु ऐसा तीन बार उच्चारण करें।

किसी कार्य को करने के पहले किसी देवी देवता का प्रार्थना किया जाता है। यहा पर गणेश पूजन करने के पहले कुछ अभिष्ट देवों की प्रार्थना की जा रही है।

स्मरण हेतु मंगलश्लोकः-

गणेश स्मरणः-

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं,

सिन्दूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम्।

उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्ड-

माखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम्।।

समूह के मुखिया अनाथो के बन्धु, सिन्दुर से शोभायमान दोनों गण्डस्थल वाले, प्रबल विघ्न का नाश करने में समर्थ एवं इन्द्रादि देवों से नमस्कृत श्रीगणेश को मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

विष्णुस्मरण:-

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिनाशं,
नारायणं गरूड़वाहनमब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं,
चक्रायुधं तरूणवारिजपत्रनेत्रम्।।

संसार से भयरूपी महान् दुःख को नष्ट करने वाले, ग्राह से गजराज को मुक्त कराने वाले, चक्रधारी एवं नवीन कमलदल के समान नेत्रवाले प‌नाभ गरूड़वाहन भगवान् श्रीनारायण का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

शिवस्मरण:-

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं,
गंगाधरंवृषभवाहनमम्बिकेशम्।
खट्वांगशूलवरदाभयहस्तमीशं,
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्।।

संसार के भय को नष्ट करने वाले, देवेश, गंगाधर, वृषभवाहन, उमापति, हाथ में खट्वांग एवं त्रिशूल लिये और संसाररूपी रोग का नाश करने के लिए अद्वितीय औषध-स्वरूप, अभय एंव वरद मुद्रायुक्त हस्तवाले भगवान् शिव को मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

देवीस्मरण:-

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्जवलाभां,
सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहाभूषाम्।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां,
रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम्।।

शरत्कालीन चन्द्रमा के समान उज्जवल आभायुक्त, उत्तम रत्नों से जटिल मकरकुण्ड तथा हारों से सुशोभित, दिव्यायुधों से दीप्त सुन्दर नीले हजारों हाथों वाली, लाल कमल की आभायुक्त चरणों वाली भगवती दुर्गा देवी का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

सूर्यस्मरण:-

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं,
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि।
सामानि सस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं,
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम्।।

सूर्य का वह प्रशस्त रूप, जिसका मण्ड ऋग्वेद, कलेवर यजुर्वेद तथा किरणों में सामवेद है। जो सृष्टि आदि के कारण हैं, ब्रह्मा और शिव के स्वरूप हैं तथा जिनका रूप अचिन्त्य और अलक्ष्य हैं, प्रातः काल मैं उनका स्मरण करता हूँ।

त्रिदेवों के साथ नवग्रह का स्मरण:-

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतोबुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु व केतु - ये सभी मेरे प्रातः काल को मंगलमय करे।

ऋषिस्मरण:-

भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरंगिराश्च, मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यों मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

भृगु, वसिष्ठ, क्रतु, अंगिरा, मनु, पुलस्त्य, पुलह, गौतम, रैभ्य, मरीचि, च्यवन और दक्ष - ये समस्त मुनिगण मेरे प्रातः काल को मंगलमय करे।

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिंगलौच।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।
सप्तावर्णाः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

ये ऋषिगण - सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन, आसुरि और पिंगल

ये सप्तस्वर - षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पश्पंचम, धैवत तथा निषाद

ये सात अधोलोक - अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल तथा पाताल

उपर्युक्त सभी मेरे प्रातः काल को मंगलमय करे। सातों समुद्र, सातों कुलपर्वत, सप्तर्षिगण, सातों वन तथा सातों द्वीप, भूर्लोक, भुवर्लोक आदि सातों सभी मेरे प्रातः काल को मंगलमय करे।

प्रकृतिस्मरण:-

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः, स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः।

नभः सशब्दं महता सहैव, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

गन्धयुक्त पृथ्वी, रसयुक्त जल, स्पर्शयुक्त वायु, प्रज्वलित तेज, शब्दसहित आकाश एवं महत्तत्व - ये सभी मेरे प्रातःकाल को मंगलमय करे।

इत्थं प्रभाते परम पवितं पठेत् स्मरेद्वा श्रृणुयाच्च भक्त्या।

दुःस्वप्ननाशस्विह सुप्रभातं भवेच्च नित्यं भगवत्प्रसादात्।।

इस प्रकार उपर्युक्त इन प्रातः स्मरणीय परमपवित्र श्लोकों का जो भी व्यक्ति भक्तिपूर्वक प्रातः काल पाठ करता है, स्मरण करता है अथवा श्रवण करता है, भगवद्दया से उसके दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है और उसका प्रभाग मंगलमय हो जाता है।

पूजा में जो वस्तु विद्यमान न हो उसके लिये 'मनसा परिकल्प्य समर्पयामि' कहे। जैसे, आभूषणके लिये 'आभूषणं मनसा परिकल्प्य समर्पयामि'।)

गणपति पञ्चायतन पूजन

एक लकड़ी की चौकी के ऊपर गणेश, षोडशमातृका, सप्तमातृका स्थापित करे। दूसरी चौकी पर नवग्रह, पञ्चलोकपाल आदि स्थापति करे। तीसरी चौकी को बीच में स्थापित करके उस पर प्रधान देवता को स्थापित करे। ईशान कोण में घी का दीपक रखे और अपने दायें हाथ में पूजा सामग्री रख लेवे। शुद्ध नवीन वस्त्र पहनकर पूर्वाभिमुख बैठे। कुंकुम (रोली) का तिलक करके अपने दायें हाथ की अनामिका में सुवर्ण की अंगुठी पहनकर आचमन प्राणायाम कर पूजन आरम्भ करे।

भूमिपरीक्षण -

स्वयं की भूमि पर ही यज्ञादि कर्म करने चाहिए तथापि अन्य तीर्थ अथवा अन्य किसी स्थान पर यज्ञादि कर्म कर रहे है तो उस भूमि का उचित शुक्ल भूस्वामी को दे देना चाहिए अन्यथा यज्ञादि का फल भूस्वामी को ही मिलता है ।

भूमि का परीक्षण करने हेतु चयनित भूमि में एक वर्ग-हाथ का चतुष्कोण खात बनाकर उस गर्त को सूर्यास्त के समय जल से भर देना चाहिए। यदि दूसरे दिन प्रातरू काल उस गड्ढे में जल शेश रह जाये अथवा वह भूमि गीली रह जाये तो वह शुभलक्षण होता है। यदि कीचड़युक्त भूमि रहे तो मध्यफलदायी होता है। यदि उसका जल पूर्णरूप से सूख जाये तो उसमें दरारे पड़ जाये तो उस भूमि को अशुभ फलदायी कहा जाता है। यथा -

श्वभ्रं हस्तमितं खनेदिह जलं पूर्णं निशास्ये न्यसेत्।

प्रातर्दृष्टजलं स्थलं सदजलं मध्यं त्वसत्स्फाटितम्।।

नोट - रेगिस्तान वाले प्रदेशों में यह विधि उपयोगी नही हैं, अतरू क्षेत्रविशेश का ध्यान रखे।

यज्ञकर्म हेतु मण्डप -निर्माण हेतु शुभ भूमि के लक्षण रू-

सुगन्ध युक्त भूमि ब्राह्मणी, रक्तगन्ध वाली भूमि क्षत्रिया, मधुगन्ध वाली भूमि वैश्या, मद्यगन्ध वाली भूमि शूद्राभूमि कही गयी है, अम्लरस युक्त वैश्या, तिक्त रस युक्त शूद्रा, मधुरसयुक्त भूमि ब्राह्मणी और कड़वी गन्ध वाली भूमि क्षत्रियवर्णा होती है।

ब्राह्मणी भूमि सुखकारी, क्षत्रिया राज्यसुख प्रदाता, वैश्याभूमि धनधान्य देने वाली और शूद्रा भूमि त्याज्य होती है।

ब्राह्मण को सफेद भूमि, क्षत्रिय को लालभूमि, वैश्य को पीली, शूद्र को काली भूमि एवं अन्यवर्णों के लिए मिश्रित रङ्ग की भूमि शुभ होती है।

ब्राह्मण आदि चारों वर्णों के लिए क्रम से घी, रक्त, अन्न और मद्यगन्ध वाली भूमि शुभ होती है।

पूर्व दिशा की ओर भूमि ढालदार हो तो धनप्राप्ति, अग्रिकोण में अग्निभय, दक्षिण में मृत्यु, नैऋर्त्य में धनहानि, पश्चिम में पुत्रहानि, वायव्य में परदेश में निवास, उत्तर में धनप्राप्ति, ईशान में विद्यालाभ होता है। भूमि में बीच में गड्ढा हो तो वह भूमि कष्टदायक होती है।

ईशान कोण में भूमि ढालदार हो तो यज्ञकर्ता को धन, सुख की प्राप्ति, पूर्व में हो तो वृद्धि, उत्तर में हो तो धन लाभ, अग्रिकोण में हो तो मृत्यु तथा शोक, दक्षिण में हो तो गृहनाश, नैऋर्त्य में धनहानि, पश्चिम में मानहानि, वायव्य में मानसिक उद्वेग होता है।

ब्राह्मण को उत्तर, क्षत्रिय को पूर्व, वैश्य को दक्षिण और शूद्र को पश्चिम की ओर ढालयुक्त भूमि शुभ होती है। मतान्तर से ब्राह्मणों के लिए सभी प्रकार की ढ़ालयुक्त भूमि शुभ होती है। अन्य वर्णों के कोई नियम नहीं है।

पूर्व दिशा में ऊँची भूमि पुत्र का नाश करती है। अग्रिकोण में ऊँची भूमि धन देती है। अग्रिकोण में नीची भूमि धन की हानि करती है। दक्षिणदिशा में ऊँची भूमि स्वास्थ्यप्रद होती है। नैऋर्त्यकोण में ऊँची भूमि लक्ष्मीदायक होती है। पश्चिम में ऊँची भूमि पुत्रप्रद होती है। वायव्यकोण में ऊँची भूमि द्रव्य की हानि करती है। उत्तरदिशा में ऊँची भूमि स्वास्थ्यप्रद तथा ईशानकोण में ऊँची भूमि महाक्लेशकारक होती है।

हल के फाल से भूमि को खोदने पर यदि लकड़ी मिले तो अग्रिभय, ईंट मिले तो धनप्राप्ति, भूसा मिले तो धनहानि, कोयला मिले तो रोग, पत्थर मिले तो कल्याणकारी, हड्डी मिले तो कुलनाश, सर्प या बिच्छू आदि जीव मिले तो वे स्वयं ही भय का पर्याय है।

हल के फाल से भूमि को खोदने पर यदि लकड़ी मिले तो अग्निभय, ईंट मिले तो धनप्राप्ति, भूसा मिले तो धनहानि, कोयला मिले तो रोग, पत्थर मिले तो कल्याणकारी, हड्डी मिले तो कुलनाश, सर्प या बिच्छू आदि जीव मिले तो वे स्वयं ही भय का पर्याय है।

११. फटी हुई से मृत्यु, ऊषर भूमि से धननाश, हड्डीयुक्त भूमि से सदा क्लेश, ऊँची-नीची भूमि से शत्रुवृद्धि, श्मशान जैसी भूमि से भय, दीमकों से युक्त भूमि से संकट, गड्ढों वाली भूमि से विनाश और कूर्माकार अर्थात् बीच में से ऊँची भूमि से धनहानि होती है।

आयताकार भूमि (जिसकी दोनों भुजाएँ बराबर एवं चारों कोण सम हो) पर निवास सर्वसिद्धिदायक, चतुरस्रभूमि (जिसकी लम्बाई चौड़ाई समान हो) पर यज्ञादि शुभकर्म करने से धन का लाभ, गोलाकार भूमि पर यज्ञादि शुभकर्म करने से बुद्धिबल की वृद्धि, भद्रासन भूमि पर सभी प्रकार का कल्याण, चक्राकार भूमि पर दरिद्रता, विषम भूमि पर शोक, त्रिकोणाकार भूमि पर राजभय, शकट अर्थात् वाहन सदृश भूमि पर धनहानि, दण्डाकार भूमि पर पशुओं का नाश, सूप के आकार की भूमि पर गायों का नाश, जहाँ कभी गाय या हाथी बंधते हो वहाँ निवास करने से पीड़ा तथा धनुषाकार भूमि पर निवास करने घोर सङ्कट आता है।

भूमि खोदते समय यदि वहाँ पत्थर मिल जाये तो धन एवं आयु की वृद्धि होती है, यदि ईंट मिले तो धनागम होता है। कपाल, हड्डी, कोयला, बाल आदि मिले तो रोग एवं पीड़ा होती है।

यदि गड्ढे में से पत्थर मिले तो स्वर्णप्राप्ति, ईंट मिले तो समृद्धि, द्रव्य से सुख तथा ताम्रादि धातु मिले तो सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है।

भूमि खोदने पर चिऊँटी अर्थात् दीमक, अजगर (अजगर की १६ पक्ष की निद्रा होती है) निकले तो उस भूमि पर निवास नहीं करे। यदि वस्त्र, हड्डी, भूसा, भस्म, अण्डे, सर्प निकले तो गृहस्वामी की मृत्यु होती है। कौड़ी निकले तो दुरूख और झगड़ा होता है, रुई विशेश कष्टकारक है। जली हुई लकड़ी निकले तो रोगकारक होती है, खप्पर से कलहप्राप्ति, लोहा निकले तो गृहस्वामी की मृत्यु होती है, इसीलिए कुप्रभावों से बचने के लिए इन सभी पक्षों पर विचार करना चाहिए।

गणेश पंचायतन में ईशानकोण में विष्णु, अग्निकोण में शिव, नैर्ऋत्यकोण में सूर्य तथ वायव्य कोण में देवी की स्थापना करते मध्य में प्रधानःप में गणपति की स्थापना करते हुए यथोपचार पूजन करना चाहिए।

मं मण्डूकाय नमः। आं आधारशक्त्यै नमः। मूं मूलप्रकृत्यै नमः। कं कालाग्निरुद्राय नमः। आं आदिकूर्माय नमः। अं अनन्ताय नमः। आं आदिवराहाय नमः। पं पृथिव्यै नम‘। इक्षु अर्णवाय नमः। रं रत्नद्वीपाय नमः। हं हेमगिरये नमः। नं नन्दनोद्यानाय नमः। कं कल्पवृक्षाय नमः। मं मणिभूतलाय नमरू।

दं दिव्यमण्डपाय नमः। सं स्वर्णवेदिकायै नमः। रं रत्नसिंहासनाय नमः। धं धर्माय नमः। ज्ञां ज्ञानाय नमः। वैं वैराग्याय नमः। ऐं ऐश्वर्याय नमः। सं सत्त्वाय नमः। प्रं प्रबोधात्मने नमः। रं रजसे नमः। प्रं प्रकृत्यात्मने नमः। तं तमसे नमः। मं मोहात्मने नमः। सों सोममण्डलाय नमः। सं सूर्यमण्डलाय नमः। वं वह्निड्ढमण्डलाय नमः। मां मायातत्त्वाय नमः। विं विद्यातत्त्वाय नमः। शं शिवतत्त्वाय नमः। ब्रं ब्रह्मणे नमः। मं महेश्वराय नमः। आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। जं जीवात्मने नमः। ज्ञं ज्ञानात्मने नमः। कं कन्दाय नमः। नं नीलाय नमः। पं पद्माय नमः। मं महापद्माय नमः। रं रत्नेभ्यः नमः। कें केसरेभ्यः नमः। कं कर्णिकायैनमः।

ॐ मण्डूकादिपीठदेवताभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। (हाथ में अक्षत लेकर मंत्र बोलते हुए छोड़े)

नवशक्ति पूजनम्:- ॐ तीव्रायै नमः। ॐ ज्वालिन्यै नमः। ॐ नन्दायै नमः। ॐ मोदायै नमः। ॐ कामरूपिण्यै नमः। ॐ उग्रायै नमः। ॐ तेजोवत्यै नमः। ॐ सत्यायै नमः। ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। (हाथ में अक्षत लेकर मंत्र बोलते हुए छोड़े)

१. विष्णुः- (बाये हाथ में अक्षत लेकर प्रत्येक देव के आवाहन का मंत्र उच्चारित कर उसके स्थान पर छोड़े।)

क्रमात्कौमोदकी पद्मशङ्कचक्रधरं विभुम् ।

भक्तकल्पद्रुमं शान्तं विष्णुमावाहयाम्यहम् ।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्। समूढमस्यपा œ सुरे स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

२. शिवः-

पञ्चवक्त्रं वृषाःढं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनम् ।

खट्वा‘धारिणं वन्द्यं शिवमावाहयाम्यहम् ।।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय शिवतराय च।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शिवाय नमः, शिवमावहयामि स्थापयामि।

३. सूर्यः-

जपाकुसुमसकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।

तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम् ।।

ॐ आकृष्णेनरजसा व्वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मत्र्यञ्च ।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

4 देवी : -

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।

नानाजाति कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम।।

ॐ अम्बेऽअम्बिके म्बालिकेनमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गादैव्यै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

५. गणेशः-

ॐ मण्डूकादिपीठदेवताभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

नवशक्ति पूजनम्:- ॐ तीव्रायै नमः। ॐ ज्वालिन्यै नमः। ॐ नन्दायै नमः। ॐ मोदायै नमः। ॐ कामःपिण्यै नमः। ॐ उग्रायै नमः। ॐ तेजोवत्यै नमः। ॐ सत्यायै नमः। ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ततः कलशस्थापनम् (मण्डल पर कलश की स्थापना करें) -

ॐ तत्वायामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते जमानो हविर्ब्भिः। अहेडमानो व्वरुणे हबोद्ध्युरुश œ समानऽ आयुः प्प्रमोषीः।।

ततः ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अस्मिन् कलशे सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तुः। गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्यैः सम्पूज्य।

अग्न्युत्तारणम्

देशकालौ संकीर्त्य अस्य गणपतिदेवता नूतन स्वर्ण-पाषाण-मृदादि यन्त्र-मूर्ति अग्नितपनताडन अवघातादि दोषपरिहारार्थमग्न्युत्तारणं करिष्ये।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

ततः स्वर्णादिप्रतिमां करेण संस्पृश्य प्राणस्थापनमाचरेत्:- ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं अस्यां मूर्तौ प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों अस्यां मूर्तौ सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणि पादपायूपस्थानि, इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।। ॐ गं गणपतये नमः(दशधाध्पञ्चदश मूलमन्त्रं जपेत्)।

गणपति ध्यानम्

द्वे भार्ये सिद्धिबुद्धि तदनुसहचरौ वृद्धिसिद्धिप्रियौ च,

द्वौ पुत्रौ लक्षलाभौ वसुदलरचिते मण्डले कल्पवृक्षः।

गेहे यस्य प्रभूता मृगमदतिलकाः सिद्धयः प्रोल्लसन्ति,

भूयात् भूत्यै गणेशः कलिवनदहनो विघ्नविच्छेदको नः।।

१. गणपतिः-

ॐ गणानान्त्वा गणपति हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति हवामहे व्वसोमम । आहम् जानिगर्ब्भधमा त्त्वमजासिगर्ब्भधम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापनम्ः- (हाथ की अञ्जलि में अक्षत पुष्प लेवे)

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पर्तिज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टं ज्ञ œ समिमन्दधातु।

विश्वेदवा स ऽ इह मादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि पञ्चदेवताभ्यो नमः।

आसनम् -

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।

आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वरः।।

ॐ पुरुश ऽ एवेद œ सर्व्वंद्भूतँच्च भाव्व्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पाद्यम् -

गौरीसुत नमस्तेस्तु श‘रप्रियसूनवे।

पाद्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः फलैः।।

ॐ एतावानस्य महिमातोज्ज्याँश्चपूरुषः।

पादोस्य व्विश्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० पादप्रक्षालनार्थं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम् -

ताम्रपात्रस्थितं तोयं गन्धपुष्पफलान्वितम्।

सहिरण्यं ददाम्यर्घं गृहाण परमेश्वरः।।

ऊँ धामन्तेव्विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्त रायुषि।

अपामनीकेसमिथेय ऽ आभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽ ऊर्मिम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम् -

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम्।

आचम्यार्थं मया दत्तं गृहाण गणनायक।।

ऊँ इमम्मेव्वरुणŸशुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

जलस्नानम् -

कावेरी नर्मदा वेणी तु‘भद्रा सरस्वती।

गंगा च यमुनातोयं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्य ऽ ऋतसदन्यसि

वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० स्नानार्थे जलं समर्पयामि।।

पञ्चामृत स्नानम् -

पयो दधिघृतं चौव मधुं च शर्करायुतम्।

पंचामृतं मयादत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तसस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधासो देशेभवत्सरित्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानम् -

स्नानार्थे तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तम् ।

तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाण गणनायक ।।

ऊँ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनाः श्येतः

श्येताक्षो रुणस्तेरुद्रायपशुपतये कर्ण्णायामा अवलिप्ता रौद्रानभोःपाः पार्ज्जन्याः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

अभिषेकः (गन्धादिभिः सम्पूज्य) -

शुद्धोदकस्नानम।

वस्त्रोपवस्त्रम्-

रक्तवस्त्रमिदं देव देवा‘सदृश प्रभो।

सर्वप्रदं गृहाण त्वं लम्बोदर हरात्मज।।

ऊँ सुजातोज्ज्योतिषा सहशर्म्म व्वरुथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽ अग्रे विश्वःप œ सँव्ययस्वव्विभावसो।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम् -

‘‘यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

ऊँ ब्रह्मज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः।

सबुद्ध्न्याऽउपमा अस्यव्विष्ठ्ाः सतश्च्चयोनिमसतश्चव्विवः।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दनम् -

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ अ œ शुना ते अ œ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽअच्युतः।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० चन्दनकुंकुमञ्च समर्पयामि।

अक्षताः -

रक्ताक्षतांश्च देवेश गृहाण द्विरदानन।

ललाटपटले चन्द्रस्तस्योपर्यवधार्यताम।।

ऊँ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्प्रियाऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा नविष्ठ्यामतीयोजान्विन्द्रते हरी।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० अलङ्करणार्थम् अक्षतान् समपर्यामि।

पुष्पाणि (पुष्पमालां) -

सुगन्धीनि च पुष्पाणि धत्तूरादीनि च प्रभो।

विनायक नमस्तुभ्यं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ ओषधिः प्रतिमोददध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽ इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० पुष्पाणि समर्पयामि।

अथ गणेशाङ्गपूजनम् -

ह्रीं गणेश्वराय नमः पादौ पूजयामि। ह्रीं विघ्नराजाय नमः जानुनीं पूजयामि । ह्रीं आखुवाहनाय नमः ऊरु पूजयामि। ह्रीं हेरम्बाय नमः कटीं पूजयामि। ह्रीं कामारिसूनवे नमः नाभिं पूजयामि। ह्रीं लम्बोदराय नमः उदरं पूजयामि। ह्रीं गौरीसुताय नमः स्तनौ पूजयामि। ह्रीं गणनायकाय नमः हृदयं पूजयामि। ह्रीं स्थूलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। ह्रीं स्कन्दाग्रजाय नमः स्कन्धौ पूजयामि। ह्रीं पाशहस्ताय नमः हस्तौ पूजयामि। ह्रीं गजवक्त्राय नमः वक्त्रं पूजयामि। ह्रीं विघ्नहर्त्रे नमः ललाटं पूजयामि। ह्रीं सर्वेश्वराय नमः शिरः पूजयामि। ह्रीं गणाधिपाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

दुर्वाङ्कुरम् -

दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान्मलप्रदान् ।

आनीताँस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ।।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० दूर्वाङ्कुराणि समर्पयामि।

बिल्वपत्रम् -

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अछिद्रैः कोमलैः शुभैः।

तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर।।

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च व्वःथिने च नमः

श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम् -

स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वर दयानिधे।

भक्त्या दत्तं मयादेव स्नेहं ते प्रतिगृह्यताम।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

सिन्दूरम् -

उद्यद्भास्करसंकाशं सन्ध्यावदरुण प्रभो ।

वीराल‘णं दिव्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम।।

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति ह्वाः।

घृतस्य धारा ऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि -

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।

अबीरेणार्चितो देव अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ अहिरिव भोगैः र्प्येति बाहुञ्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्वाव्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमा œ सम्परिपातुव्विश्वतः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० परिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

धूपम् -

दशा गुग्गुलं धूपमुत्तमं गणनायक।

गृहाण सर्वं देवेश उमापुत्र नमोस्तु ते।।

धूरसि धूर्व्वधूर्व्वन्तं धूर्व्व तंस्म्मान् धूर्वतितन्धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम œ सस्न्नितमं पप्प्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० धूपम् आघ्रापयामि।

दीपम् -

सर्वज्ञ सर्वलोकेश सर्वेषान्तिमिरापह।

गृहाण म‘लं दीपं रुद्रप्रिय नमोस्तु ते।।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योर्तिरग्निः स्वाहा र्सूर्यो ज्योतिर्ज्योर्तिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्चाज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहार्सूर्व्वर्च्चाज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्यः र्सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० दीपकं दर्शयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य।

नैवेद्यम् -

नमो मोदकहस्ताय भालचन्द्राय ते नमः।

नैवेद्यं गृह्यतां देव सटं मे निवारय।।

नैवेद्यपात्र पुरतो निधाय चन्दनपुष्पाभ्यां समभ्यर्च्च्य। धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य देवस्य अग्रे दक्षिण भागे वा निधाय ग्रासमुद्रां प्रदर्शयेत् - ऊँ प्राणाय स्वाहा। ऊँ अपानाय स्वाहा। ऊँ व्यानाय स्वाहा। ऊँ उदानाय स्वाहा। ऊँ समानाय स्वाहा।

ऊँ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष œ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ऽ अकल्पयन्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये जलं निवेदयामि।

ऋतुफलम् -

नारिकेलञ्च नार कदम्बं मातुलि‘कम्।

द्राक्षाखर्जूरदाडिम्बं गृहाण गणनायक।।

ऊँ याः फलीर्नीया ऽ अफला ऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व œ हसः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० फलं निवेदयामि। पुनः आचमनीयं निवेदयामि।

ताम्बूलम् -

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम।।

एलादिचूण्र संयुक्तं ताम्बूंल प्रतिगृहाताम्।।

ऊँ उतस्म्मास्यद्द्रवतस्तुरण्यतः पर्ण्णन्नवेरनुवाति प्प्रगर्द्धिनः।

श्येनस्ये वद्ध्रजतो ऽ अङ्क सम्परिदधिक्राब्ण्णः सर्हो तरित्रतः स्वाहा।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा -

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

तेन प्रीतो गणाध्यक्ष भव सर्वफलप्रद।।

ऊँ द्दत्तँपरादानँ त्पूर्त्ताश्चदक्षिणाः।

तदग्रिर्व्वैश्वकर्म्मणः स्वर्द्देवेषु नो दधत्।ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशादि० दक्षिणां समर्पयामि।

नमस्कार -

विनायको योऽखिललोकनायकः, यो विघ्नराजोऽपिहि विघ्ननाशकः।

अनेक दन्तार्चित पादयुग्मकं, तमेकदन्तं प्रणमामि सन्ततम्।।

विशेषार्घम् -

रक्ष रक्ष गणाध्यक्षो रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात्।।

द्वैमातुरकृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो। वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।

गृहाणार्घ्यमिमं देव सर्वदेव नमस्कृतः। अनेन सफलार्घ्येन फलदोऽस्तु सदा मम।।

अनेन कृताऽर्चनेन श्रीगणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।

गणेश जी की आरती -

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।

माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।

लड्डुअन को भोग लगे सन्त करे सेवा।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।

एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी।

मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी। जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।

अन्धन को आँख देत कोढिन्न को काया ।

बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया। जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।

पान चढ़े फूलचढ़े और चढ़े मेवा।

सभी कार्य सिद्ध करे श्री गणेश देवा। जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।

पुष्पाञ्जलि -

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या प्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव।।१।।

श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः,

क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम्।

दोर्भिः पाशाङ्कुशाब्जाभयवरदधतं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं,

ध्याये शान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिव पञ्चायतन पूजन

शिव पञ्चायतन पूजन में ईशानकोण में विष्णु, अग्निकोण में सूर्य, नैर्ऋत्यकोण में गणेश, वायव्यकोण में देवी तथा मध्य में प्रधानःप में शिव की स्थापन करते हुए पूजन करना चाहिए। हाथ में अक्षत लेकर ही प्रत्येक देवता का आवाहन करना चाहिए।

१. विष्णुः-

क्रमात्कौमोदकी पद्मशङ्कचक्रधरं विभुम।
भक्तकल्पद्रुमं शान्तं विष्णुमावाहयाम्यहम।।
ऊँ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्। समूढमस्यपा œ सुरे स्वाहा।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

२. सूर्यः-

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम।।
ऊँ आकृष्णेनरजसा व्वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मत्र्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः, मध्ये सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

३. गणेशः-

गजास्य गणनाथत्त्वं सर्वविघ्नविनाशनम।
लम्बोदरं त्रिनेत्राढ्यं आगच्छ गणनायकम।।

ऊँ गणानान्त्वा गणपति हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति हवामहे व्वसोमम । आहम् जानिगर्ब्भधमा त्त्वमजासिगर्ब्भधम्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

४. देवीः-

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे ।
नानाजाति कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम।।
ऊँ अम्बेऽअम्बिके म्बालिकेनमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः दुर्गादैव्यै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

५. शिवः-

ऊँ मण्डूकादिपीठदेवताभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

नवशक्ति पूजनः- ऊँ विमलायै नमः, ऊँ उत्कर्षिण्यै नमः, ऊँ ज्ञानायै नमः, ऊँ त्रियायै नमः, ऊँ योगायै नमः, ऊँ प्रभव्यै नमः, ऊँ सत्यायै नमः, ऊँ ईशानायै नमः, ऊँ अनुग्रहायै नमः। (गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन करे)

तत्पश्चात्गणपति पञ्चायनत देव की भांति कलश स्थापन से प्रारम्भ करते हुए प्राणप्रतिष्ठा तक पूजन करे।

क्रमात्कौमोदकी पद्मशङ्कचक्रधरं विभुम्।
भक्तकल्पद्रुमं शान्तं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ऊँ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्। समूढमस्यपा œ सुरे स्वाहा।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

पूजनं कुर्यात् (उपलब्ध सामग्री के अनुसार गणपति की भांति ही आसनपाद्यादि से मन्त्र पुष्पाञ्जलि तक पूजन करे।) -

आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। मुखे आचमनं समर्पयामि। सर्वांगे स्नानं समर्पयामि। मिलितपंचामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

अभिषेकः (गन्धादिभिः सम्पूज्य) -

ऊँ अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति। नारायणात्प्राणो जायते मनः सर्वेन्द्रियाणि च। खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी। नारायणाद्ब्रह्मा जायते। नारायणाद्रुदो जायते। नारायणादिन्द्रो जायते। नारायणात्प्रजापतिः प्रजायते। नारायणाद्द्वादशादित्या रुद्रा वसवः सर्वाणि छन्दांसि नारायणादेव समुत्पद्यन्ते। नारायणात्प्रवर्तन्ते। नारायणे प्रलीयन्ते। एतदृग्वेदशिरोऽधीते।।१।। अथ नित्यो नारायणः। ब्रह्मा नारायणः। शिवश्च नारायणः। शक्रश्च नारायणः। कालश्च नारायणः। दिशश्च नारायणः। विदिशश्च नारायणः। ऊर्ध्वं च नारायणः। अधश्च नारायणः। अन्तर्बहिश्च नारायणः। नारायण एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। निष्कलङ्को निरञ्जनो निर्विकल्पो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणो न द्वितीयोऽस्ति कश्चित्। य एवं वेद स विष्णुरेव भवति स विष्णुरेव भवति। एतद्यजुर्वेदशिरोऽधीते।।२।।

ओमित्यग्रे व्याहरेत्। नम इति पश्चात्। नारायणायेत्युपरिष्टात्। ओमित्येकाक्षरम्। नम इति द्वे अक्षरे। नारायणायेति पञ्चाक्षराणि। एतद्वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदम्। यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदमध्येति।

अनपब्रुवः सर्वमायुरेति। विन्दते प्राजापत्यं रायस्पोषं गौपत्यं ततोऽमृतत्वमश्नुते ततोऽमृतत्वमश्नुत इति। एतत्सामवेदशिरोऽधीते।।३।।

प्रत्यगानन्दं ब्रह्मपुरुषं प्रणवस्वःपम्। अकार उकारो मकर इति। ता अनेकधा समभवत्तदेतदोमिति। यमुक्त्वा मुच्यते योगी जन्मसंसारबन्धनात्। ॐ नमो नारायणायेति मन्त्रोपासको वैकुण्ठभुवनं गमिष्यति। तदिदं पुण्डरीकं विज्ञानघनं तस्मात्तडिदाभमात्रम्। ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनः। ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षो ब्रह्मण्यो विष्णुरच्युत इति। सर्वभूतस्थमेकं वै नारायणं कारणपुरुषमकारणं परं ब्रह्मोम्। एतदथर्वशिरोऽधीते।।४।।

प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। तत्सायं प्रातरधीयानः पापोऽपापो भवति। मध्यन्दिनमादित्याभिमुखोऽधीयानः पञ्चमहापातकोपपातकात्प्रमुच्यते। सर्ववेदपारायणपुण्यं लभते। नारायणसायुज्यमवाप्नोति श्रीमन्नारायणसायुज्यमवाप्नोति य एवं वेद।।५।। इति।।

तत्पश्चात्पुरुषसूक्त के षोड़श मन्त्रों से भी अभिषेक अथवा पूजन किया जा सकता है।

। हरिः ॐ । सहस्रशीर्षा पुरुश सहस्राक्ष सहस्रपात्। सभूमि सर्व्वत स्पृत्त्वात्त्यतिष्-द्दशाङ्ग्ुलम्। १। पुरुषऽएवेद सर्वं य्यद्भूतँ य्यच्च भाव्व्यम् । उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति। २। एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च्च पूरुश । पादोस्य व्विश्श्वाभूतानि त्त्रिपादस्यामृतन्दिवि। ३। त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुश पादोस्येहाभवत्त्पुन । ततो व्विष्ष्वङ्ङ्व्यक्क्रामत्त्साशनानशनेऽअभि। ४। ततो व्विराडजायत व्विराजोऽअधिपूरुष। सजातो ऽअत्त्यरिच्च्यत पश्च्चाद्भूमिमथो पुर । ५। तस्म्माद्य्यज्ञात्त्सर्व्वहुत सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्क्रे व्वायव्व्यानारण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च ये। ६। तस्म्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतऽऋच सामानि जज्ञिरे। छन्दाœ सिजज्ञिरे तस्म्माद्य्यजुस्त्तस्म्मादजायत। ७। तस्म्मादश्श्वाऽअजायन्त ये के चोभयादत। गावो ह जज्ञिरे तस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽ अजावय़ । ८। तँय्यज्ञम्बर्हिषि प्प्रौक्क्षन्न्पुरुषञ्जातमग्ग्रत। तेन देवाऽअयजन्त साद्ध्याऽऋषयश्च्च ये। ९। यत्त्पुरुषँ व्व्यदधु कतिधा व्व्यकल्प्पयन्। मुखङ्किमस्यासी त्त्किम्बाहू किमूः पादाऽउच्च्येते। १०। ब्राह्म्णोस्य मुखमासीद्बाहू राजन्न्य़ कृत । ऊः तदस्य य्द्वैश्श्य़ पद्भ्याœ शूद्द्रोऽ अजायत।११। चन्द्रमा मनसो जातश्च्चक्षो सूर्योऽ अजायत। श्रोत्र्त्राद्वायुश्च्च प्प्राणश्च्च मुखादग्ग्रिरजायत। १२। नाभ्भ्याऽ आसीदन्तरिक्ष शीर्षणो द्यौ समवर्त्तत। पद्भ्या म्भूमिर्द्दिश श्रोत्र्त्रात्तथा लोका २ । ऽअकल्प्पयन्।१३। यत्त्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्व्वत। व्वसन्तो स्यासी दाज्ज्यङ्ग्रीष्म्मऽइध्ध्म शरद्धवि ।१४।

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रि सप्तसमिधःकृता। देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽ अबध्नन्पुरुषम्पशुम्।१५। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन्। तेहनाकम्महिमान सचन्त यत्रपूर्व्वे साद्ध्या सन्ति देवा। १६।

वस्त्रं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं। वस्त्रयज्ञोपवीतान्ते आचमनं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान्समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि।

अङ्गपूजनम् (गन्धाक्षतपुष्पैः) -

ऊँ दामोदरायै नमः पादौ पूजयामि, ऊँ माधवाय नमः जानुनिं पूजयामि, ऊँ कामपतये नमः गुह्यं पूजयामि, ऊँ वामनाय नमः कटिं पूजयामि, ऊँ पद्मनाभाय नमः नाभिं पूजयामि, ऊँ विश्वमूर्त्तये नमः उदरं पूजयामि, ऊँ ज्ञानगम्याय नमः हृदयं पूजयामि, ऊँ श्रीकण्ठं नमः कण्ठं पूजयामि, ऊँ सहस्रबाहवे नमः बाहौ पूजयामि, ऊँ योगिने नमः नेत्रं पूजयामि, ऊँ उरगाय नमः ललाट पूजयामि, ऊँ सुरेश्वराय नमः नासिका पूजयामि, श्रवणेशाय नमः कर्णा पूजयामि, ऊँ सर्वकर्मप्रदाय नमः शिखा पूजयामि, ऊँ सहस्रशीर्षे नमः शिरः पूजयामि, ऊँ सर्वस्वःपिणे नमः सर्वाङ्ग पूजयामि। (गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन करे)

परिमलद्रव्याणि समर्पयामि। सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि। धूपं आघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये आचमनं समर्पयामि। फलं समर्पयामि। पुनः आचमनं समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

आरतिः-

ऊँ जय जगदीश हरे प्रभु! जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के सङ्कट क्षण में दूर करे। ऊँ।
जो ध्यावे फलपावै, दुःख विनसै मनका। प्रभु।
सुख सम्पत्तिघर आवे, कष्टमिटे तन का। ऊँ।
मात-पिता तुम मेरे, शरणगहूँ किसकी। प्रभु।
तुमबिन और न दूजा, आस करुँ मैं किसकी। ऊँ।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। प्रभु।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी। ऊँ।
तुम करूणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता। प्रभु।

मैं मूरख खलकामी, कृपाकरो भर्त्ता । ऊँ।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति । प्रभु।

किसविधि मिलूँ दयामय! तुमको मै कुमति । ऊँ।

दीनबन्धु दुःखहर्त्ता तुम ठाकुर मेरे । प्रभु।

अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे । ऊँ।

विषय विकार मिटाओ, पापहरो देवा । प्रभु।

श्रद्धाभक्ति बढ़ाओ, सन्तनपद सेवा । ऊँ।

तन, मन, धन सबकुछ है तेरा ।

तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा । ऊँ।

श्रीजगदीशस्वामीकी आरती जो कोई नर गावे,

कहत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित फलपावै । ऊँ।

पुष्पाञ्जलिः-

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्,

विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्,

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

इस प्रकार सभी देवताओं का पूजन करके अक्षत पुष्प हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करेः-

पत्रं पुष्पं फलं तोयं, रत्नानिविविधानि च। गृहाणार्घ्यं मयादत्तं देहि मे वाञ्छितं फलं।ःपं देहि जयं देहि, भाग्यं भगवन् देहि मे। पुत्रान देहि धनं देहि, सर्वान् कामांश्च देहि मे। फलेन फलितं सर्वं त्रैलाक्यं सचराचरम्। फलस्यार्घ्यप्रदानेन सफलाः सन्तु मनोरथाः।

निम्न मन्त्रों से अक्षप पुष्प समर्पित करेः-

ऊँ साङ्गाय सायुधाय सावाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय। ऊँ नमो .... नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाः- यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे। (भगवान्शिव की आधी परिक्रमा, देवी की एक परिक्रमा, विनायक की तीन परिक्रमा, विष्णु की चार तथा सूर्य की सात परिक्रमा करनी चाहिए।)

तत्पश्चात्देवताओं को पञ्चाङ्ग-प्रणाम करते हुए उनका विसर्जन करेः-

विसर्जन:- यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकाम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च लक्ष्मी कुबेरौ विहाय।

इसके बाद अपने परिवार वालों के साथ निम्न मन्त्र द्वारा भगवान को नमस्कार करें -

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।

3.4-सारांश

इस इकाई में गणेश पूजन का विशेश रूप से वर्णन किया गया है। देवपूजन में वेद-मन्त्र, फिर आगम-मन्त्र और बाद में नाम-मन्त्र का उच्चारण किया जाता है। यहाँ इसी क्रम का आधार लिया गया है। जिन्हें वेद-मन्त्र न आता हो, उन्हें आगम मन्त्रो का प्रयोग करना चाहिये और जो इनका भी शुद्ध उच्चारण न कर सकें, उनको नाम-मन्त्रों से पूजन करना

3.5 शब्दावली

शब्द	**अर्थ**
गजाननम्	हाथी के समान मुख
भूतगणादि	भूत गण आदि
सेवितम्	सेवित है
कपित्थः	वानर
जम्बूफलम्	जम्बू फल
भक्षणम्	खाते है।
उमासुतम्	उमा के पुत्र
शोकविनाषकारकम्	शंकट को समाप्त करने वाले
नमामि	प्रणाम करता हूँ।
नमो देव्यै	देवी को नमस्कार है
महादेव्यै	महादेवी के लिये
षिवायै सततं नमः	पार्वती कोवार वार नमस्कार है
नमः प्रकृत्यै	प्रकृति को नमस्कार है
भद्रायै	कल्याण के लिये

ध्यानम्	ध्यान को
समर्पयामि	समर्पण करता हूँ
पञ्च	पाँच
आवाहन	देवों का पूजन में आवाहन
पञ्चायतन	समूह के पाँच देवता
अग्न्युत्तारण	मूर्ति को अग्नि में तपाना
अभिषेक	देवप्रतिमा को स्नान कराना
ताम्बूल	पान

3.6 -अभ्यासार्थ प्रश्न -उत्तर

अतिलघूत्तरीय- प्रश्न

1. प्रश्न-ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतोबुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।। इस श्लोक से किसका स्मरण किया
जाता है?

उत्तर-इस श्लोक से त्रिदेवों के साथ नवग्रह का स्मरण किया जाता है

प्रश्न - : पञ्चदेवों के नाम बताईये ?

उत्तरः सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव और विष्णु।

3-प्रश्न - : गणपति पञ्चायन में किस देव की किस दिशा में स्थापना होती है ?

उत्तरः गणेश पंचायतन में ईशानकोण में विष्णु, अग्रिकोण में शिव, नैर्ऋत्यकोण में सूर्य तथ वायव्य कोण में देवी की स्थापना करते मध्य में प्रधानः में गणपति की स्थापना करते हुए यथोपचार पूजन करना चाहिए।

4-प्रश्न - गणेश के पूजन में किस अथर्वशीर्ष का पाठ करना चाहिए् ?

उत्तरः देवी के पूजन में गणेशाथर्वशीर्ष का पाठ करना चाहिए।

5-प्रश्न - शिव पञ्चायन में किस देव की किस दिशा में स्थापना होती है ?

उत्तरः शिव पञ्चायतन पूजन में ईशानकोण में विष्णु, अग्निकोण में सूर्य, नैर्ऋत्यकोण में गणेश, वायव्यकोण में देवी तथा मध्य में प्रधानःप में शिव की स्थापन करते हुए पूजन करना चाहिए।

6-प्रश्न-भगवान् गणेश का ध्यान किस मन्त्र से किया जाता है?

उत्तर-गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारूभक्षणम्।

उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।

7-प्रश्न -भगवती गौरी का ध्यान किस मन्त्र से किया जाता है?

उत्तर-नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

8-प्रश्न-ऋतुफल किस मन्त्र से चढाया जाता है?

उत्तर-ॐ याःफलनिर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त गं हसः।।

9-प्रश्न-ताम्बूल किस मन्त्र से चढाया जाता है?

उत्तर-ॐयत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धविः।।

10-प्रश्न-पुष्पांजलि किस मन्त्र से किया जाता है?

उत्तर-ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

11-प्रश्न-भगवान् गणेश का ध्यान किस मन्त्र से किया जाता है?

उत्तर-गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारूभक्षणम्।

उमासुतं शोकविनाषकारकं नमामि विघ्नेष्वरपादपंकजम्।।

12-प्रश्न -भगवती गौरी का ध्यान किस मन्त्र से किया जाता है?

उत्तर-नमो देव्यै महादेव्यै षिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

13-प्रश्न-ऋतुफल किस मन्त्र से चढाया जाता है?

उत्तर-ॐ याःफलनिर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त गं हसः।।

14-प्रश्न-ताम्बूल किस मन्त्र से चढाया जाता है?

उत्तर-ॐयत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धविः।।

15-प्रश्न-पुष्पांजलि किस मन्त्र से किया जाता है?

उत्तर-ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

16-प्रश्न-पञ्चामृत के द्रव्य लिखिये ?

उत्तर - पञ्चामृत के द्रव्य - दूध, दही, घी, शहद, बूरा।

17-प्रश्न - पञ्चगव्य के द्रव्य लिखिये ?

उत्तर - पञ्चगव्य के द्रव्य - गाय का गोबर, गौमूत्र, गौदुग्ध, गाय का घी, गाय का दही।

18-प्रश्न - तुलसीदल किस देवता की पूजन में वर्जित तथा किस देवता को प्रिय है ?

उत्तर -तुलसीदल गणपति-पूजन में वर्जित तथा भगवानड्ढ् विष्णु को प्रिय है।

19-प्रश्न - भगवान शिव की कितनी प्रदक्षिणा करनी चाहिए ?

उत्तर - भगवान शिव की अर्द्ध-प्रदक्षिणा करनी चाहिए ?

20-प्रश्न- पूजन के पूर्व कितने आचमन किये जाते है ?

उत्तर - पूजन के पूर्व तीन बार आचमन किया जाता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. पंचामृत है-

क - घी, दूध, दही, बूरा, जल   ख - फल, दूध, दही, बूरा, शहद

ग - घी, दूध, दही, बूरा, शहद   घ -घी, दूध, इत्र, बूरा, शहद

2. पंचगव्य हैं-

क -गोबर,गौमूत्र,गौदुग्ध,घी,दही   ख - गोबर,गौमूत्र,शहद,घी,दही

ग - गोबर,गौमूत्र,गौदुग्ध,घी,जल   घ - गोबर,गौमूत्र,गौदुग्ध,इत्र,दही

3. पंचपल्लव हैं-

क - पीपल, आम, गूलर, बड़, अशोक   ख - पीपल, आम, गूलर, बड़, विल्व

ग - पीपल, आम, गूलर, बड़, अमरुद   घ - पीपल, आम, गूलर, नेवू, अशोक

4. पंचोपचार हैं-

क - गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य   ख - गन्ध, पुष्प, धूप, फल, नैवेद्य

ग - गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, इत्र   घ - वस्त्र, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य

5. पंचदेव हैं-

क - सूर्य, गणेश, शक्ति, शिव, हनुमान   ख - रुद्र, गणेश, शक्ति, शिव, विष्णु

ग - सूर्य, गणेश, शक्ति, शिव, विष्णु   घ - सूर्य, गणेश, शक्ति, पार्वती, विष्णु

6. भगवान् शिव की प्रदक्षिणा होती है-

क - एक ख - दो

ग - अर्द्ध घ -तीन

7. पूजन के पूर्व आचमन किये जाते हैं-

क -तीन बार ख -दो बार

ग -एक बार घ -चार बार

8. श्री महागणपतिस्वरूप प्रणव मन्त्र है-

क -गं गणपतये ख -गं

ग - गं गणपतये नमः घ - ऊँ

9. श्री महागणपति का प्रणव सम्पुटित बीज मन्त्र है-

क -गं गणपतये ख - ऊँ गं ऊँ

ग - गं गणपतये नमः घ - ऊँ

10. सबीज गणपति मन्त्र है-

क -गं गणपतये ख - ऊँ गं ऊँ

ग - गं गणपतये नमः घ - ऊँ

11. प्रणवादि सबीज गणपति मन्त्र है-

क -गं गणपतये ख - ऊँ गं ऊँ

ग - ऊँ गं गणपतये नमः घ - ऊँ

12. ऊँ नमो भगवते गजाननाय मन्त्र में अक्षरों की संख्या है-

क -दो ख -तीन

ग -बारह घ - चार

13. श्री गणेशाय नमः मन्त्र में अक्षरों की संख्या है-

क -सात ख -तीन

ग -बारह घ - चार

14. शक्तिविनायक मन्त्र है-

क -गं गणपतये ख - ऊँ गं ऊँ

ग - गं गणपतये नमः घ - ऊँ ह्रीं ग्रीं ह्रीं

15. शक्तिविनायक मन्त्र में अक्षरों की संख्या है-

क -सात ख -तीन

ग -बारह घ - चार

16. वक्रतुण्ड मन्त्र है-

क -गं गणपतये ख - ऊँ वक्रतुण्डाय हुम्

ग - गं गणपतये नमः घ - ऊँ ह्रीं ग्रीं ह्रीं

17. वक्रतुण्ड मन्त्र में अक्षरों की संख्या है-

क -सात ख -तीन

ग -बारह घ - छः

18. भाद्रपद मास में कृष्णपक्ष की चतुर्थी को मनायी जाती है। है-

क - गणेश चतुर्थी ख -तीज

ग -अष्टमी घ - नवमी

19. गणपति की शक्तियों का पूजन प्रारम्भ में किया जाता है-

क - एक शक्तियों का ख - द्वादश शक्तियों का

ग - नव शक्तियों का घ - दश शक्तियों का

20. गणपति पूजन में अथर्वशीर्ष का पाठ किया जाता है -

क - दुर्गा -अथर्वशीर्ष ख - सूर्य-अथर्वशीर्ष

ग - विष्णु-अथर्वशीर्ष घ - गणपति-अथर्वशीर्ष

21. गणपति के साथ पूजन किया जाता है -

क - दुर्गा ख - सूर्य

ग - विष्णु घ - गौरी

22. भद्रा में पूजन का विशेश महत्त्व है-

क - दुर्गा ख - सूर्य

ग - विष्णु घ – गणपति

उत्तर –

1. ग 2. क 3. क 4. क 5. ग 6. ग 7. क 8. घ 9. घ 10. ग 11. ग 12. ग 13. क 14. घ 15. घ 16. घ 17. घ 18. क 19. क 20. घ 21. घ 22. घ

3.7-सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1-पुस्तक का नाम-दुर्गाचन पूजापद्धति

लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र

प्रकाषक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

2-पुस्तक का नाम-सर्वदेव पूजापद्धति

लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र

प्रकाशक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

3धर्मशास्त्र का इतिहास

लेखक - डॉ. पाण्डुरङ्ग वामन काणे

प्रकाशक:- उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान।

4 नित्यकर्म पूजा प्रकाश,
लेखक:- पं. बिहारी लाल मिश्र,
प्रकाशक:- गीताप्रेस, गोरखपुर।

5 अमृतवर्षा, नित्यकर्म, प्रभुसेवा
संकलन ग्रन्थ
प्रकाशक:- मल्होत्रा प्रकाशन, दिल्ली।

6 कर्मठगुरुः
लेखक - मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य
प्रकाशक - मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

7 हवनात्मक दुर्गासप्तशती
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।

8 शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टध्यायी
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिश शोध संस्थान, जयपुर।

9 विवाह संस्कार
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - हंसा प्रकाशन, जयपुर

3.8- सहायक पुस्तकें

1-पुस्तक का नाम-दुर्गाचनपद्धति

लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र

प्रकाशक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1-प्रश्न - पुष्पाञ्जलि किस मन्त्र से किया जाता है इसका वर्णन करे-

उत्तर-

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्,
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

इस प्रकार सभी देवताओं का पूजन करके अक्षत पुष्प हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करेः-

पत्रं पुष्पं फलं तोयं, रत्नानिविविधानि च। गृहाणार्घ्यं मयादत्तं देहि मे वाञ्छितं फलं।:पं देहि जयं देहि, भाग्यं भगवन् देहि मे। पुत्रान देहि धनं देहि, सर्वान् कामांश्च देहि मे। फलेन फलितं सर्वं त्रैलाक्यं सचराचरम्। फलस्यार्घ्यप्रदानेन सफलाः सन्तु मनोरथाः।

निम्न मन्त्रों से अक्षप पुष्प समर्पित करेः-

ॐ साङ्गाय सायुधाय सावाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय। ॐ नमो .... नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

2-प्रश्न - प्रदक्षिणा किस मन्त्र से किया जाता है इसका वर्णन करे-

उत्तर-यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे। (भगवान्शिव की आधी परिक्रमा, देवी की एक परिक्रमा, विनायक की तीन परिक्रमा, विष्णु की चार तथा सूर्य की सात परिक्रमा करनी चाहिए।)

तत्पश्चात्देवताओं को पञ्चाङ्ग-प्रणाम करते हुए उनका विसर्जन करेः-

3-प्रश्न -विसर्जन किस मन्त्र से किया जाता है इसका वर्णन करे-

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकाम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च लक्ष्मी कुबेरौ विहाय।

इसके बाद अपने परिवार वालों के साथ निम्न मन्त्र द्वारा भगवान को नमस्कार करें -

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।

इकाई – 4 श्री गणपत्यथर्वशीर्षम्

इकाई की रुप रेखा

4.1 - प्रस्तावना

4.2 - उद्देश्य

4.3- श्री गणपत्यथर्वशीर्षम्

4.4- सारांश

4.5 - शब्दावली

4.6 -अभ्यासार्थ प्रश्न- उतर

4.7- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.8 -उपयोगी पुस्तके

4.9- निबन्धात्मक प्रश्न

4.1- प्रस्तावना

कर्मकाण्ड से सम्बन्धित यह चौथी इकाई है इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि श्री गणपत्यथर्वशीर्षम् की पूजन की आवश्यकता क्या है इसके विषय में विशेश रूप से वर्णन किया जा रहा है।

किसी भी यज्ञादि महोत्सवों, पूजा-अनुष्ठानों अथवा नवरात्र-पूजन शिवरात्रि में शिव-पूजन, पार्थिव-पूजन, रूद्राभिषेक, सत्यनारायण-पूजन, दिवाली-पूजन आदि कर्मो में प्रारम्भ में स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, गणेश-कलश-नवग्रह तथा रक्षा-विधान आदि कर्म सम्पन्न किये जाते हैं, इसके अनन्तर प्रधान रूप से श्री गणपत्यथर्वशीर्षम् की पूजा की जाती है।

4.2- उदेश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप वेदशास्त्र में वर्णित श्री गणपत्यथर्वशीर्षम् का अध्ययन करेंगे।

1. श्रीसङ्कष्टनाशनगणेशस्तोत्र के विषय में आप परिचित होंगे-
2. ॐगं गणपतये नमः इस मन्त्र के विषय में आप परिचित होंगे
3. श्री गणपत्यथर्वशीर्षम् के विषय में आप परिचित होंगे
4. ओंकार के विषय में आप परिचित होंगे
5. गं के विषय में आप परिचित होंगे

4.3 गणपतिऽथर्वशीर्ष -

मानव आरम्भ से ही चिन्तन, मनन व अन्वेषण का अभ्यस्त रहा है, वह केवल स्थूल जगत की चमक-दमक से सन्तुष्ट नहीं हैं, सूक्ष्म जगत के अन्तस्तल तक के रहस्यों को प्रकाश में लाने के लिए कृतसंकल्प रहता आया है। अनन्तकाल से अनुसन्धान करते करते वह कई उपयोगी तथ्यों को प्राप्त कर चुका हैं, जो प्रत्यक्ष जगत में कार्यान्वित होने वाली घटनाओं के कारण रूप हैं। इन उपलब्धियों में मानव जीवन पर ग्रह-प्रभाव की अवगति सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। दार्शनिकों ने यह सिद्ध कर दिया हैं। यथा पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे अर्थात् ब्रह्माण्डस्थ ग्रहों की प्रतिकृतियां प्राणीमात्र के शरीर में भी विद्यमान हैं। दोनों के संचार-नियमन में एकरूपता होने के कारण मानव की विविध गतिविधियाँ भी ग्रहों के द्वारा नियन्त्रित होती हैं, किन्तु प्रश्न उठता हैं कि श्क्या ग्रह स्वेच्छानुसार

मनुष्य के भविष्य का विधान निर्धारित करते हैं ? नहीं, सम्पूर्ण, स्थूल एवं सूक्ष्म जगत के अधिष्ठाता परमपिता परमात्मा के निर्देशानुसार प्राणी के प्रारब्धों से होने वाली भाग्य की व्यूह रचना का प्रतिनिधित्व ही जन्मकालिक ग्रहस्थिति करती हैं। अतः ग्रहाः वै कर्मसूचकाः ग्रह तो केवल कर्माधीन भवितव्य की सूचना देते हैं। सभी देवताओं में गणपति सर्वप्रथम है, इनका पूजन सभी मांगलिक कार्यो में गणपति अथर्वशीर्ष का पाठ करना चाहिए।

अथर्वशीर्ष की परम्परा में गणपति अथर्वशीर्ष का विशेश महत्त्व है । प्रायः सभी मांगलिक कार्यों में गणपति पूजा के बाद प्रार्थना के रूप में इसके पाठ की परम्परा अत्यन्त आवश्यक है।यह अथर्वशीर्ष भगवान गणेश का वैदिक प्रार्थना है। गणेश जी का महामन्त्र है-ओं गं गणपतये नमः एवं गणेश गायत्री मन्त्र का भी इसके अन्तर्गत माहात्म्य सहित समावेश है। कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकारके विघ्न बाधा से परेशान हो तो इसका पाठ करने उसका विघ्न बाधा समाप्त हो जाता है तथा किसी प्रकार का विघ्न बाधा न होते हुए भी महापातकों से मुक्त हो जाता है। इस अथर्वशीर्ष का पाठ करने वाला व्यक्ति धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चारो प्रकार के पुरुषार्थों का प्राप्त करता है।

आ नो भद्रं कर्णेभिःश्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टु सस्तनूभिव्यशेम देवहितं यदायुः।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः?

अर्थ- हे देवगण ! हम भगवान का पुजन आरधना करते हुए कानो से कल्याणमय वचन सुनें। नेत्रों से कल्याण ही देखें। सुदृण अंगो एवं शरीर से भगवान की स्तुति करते हुए हम लोग जो आयु आराध्य देव परमात्मा के काम आ सके उसका उपभोग करें। सब ओर फैले हुए सुयश वाले इन्द्र हमारे लिये कल्याण का पोषण करें। सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान रखने वाले पूषा हमारे लिये कल्याण का पोयाण करें। अरिष्टों को मिटाने के लिये चक्रसदृश शक्तिशाली गरुडदेव हमारे लिये कल्याण का पोषण करें। तथा बुद्धि के स्वामी बृहस्पति भी हमारे लिये कल्याण की पुष्टि करें। परमात्मा हमारे लिये त्रिविध ताप की शान्ति हो।

स्तुति-प्रकरण

श्रीसङ्कष्टनाशनगणेशस्तोम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्! भक्तवासं स्मरेन्नियमायुष्कामार्थसिद्धये!!1

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्! तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्!!2

लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च! सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम्!!3

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्! एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्!!4

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः! न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्!!5

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्! पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्!!6

जपेद् गणपतिस्तोतं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्! संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः!!7

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यःसमर्पयेत्! तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः!!8

!! श्रीनारदपुराणे सङ्कष्टनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्!!

श्री गणपत्यथर्वशीर्षम्

ओम् भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः .... ।

हरिः ओम!!नमस्ते गणपतये! त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि! त्वमेव केवलं कर्तासि! त्वमेव केवलं धर्तासि! त्वमेव केवलं हर्तासि! त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रहमासि! त्वं साक्षादात्मासि नित्यम!।1।

अर्थ-गणपति को नमस्कार है, तुम्हीं प्रत्यक्ष तत्त्व हो, तुम्हीं केवल कर्ता हो, तुम्हीं केवल धारणकर्ता और तुम्हीं केवल समस्त विश्वरूप ब्रह्म हो और तुम्हीं साक्षत् नित्य आत्मा हो ।1।

ऋतं वच्मि! सत्यं वच्मि!।2।

अर्थ-यथार्थ कहता हूँ। सत्य कहता हूँ।2।

अव त्वं माम्। अव वत्कारम्! अव श्रीतारम्! अव दातारम्! अव धाताराम! अवानूचानमव शिष्यम्! अव पश्चात्तात्! अव पुरस्तात्! अव चोत्तरात्तात्! अव दक्षिणात्तात्! अव चोर्ध्वात्तात्! अवाधस्तात्! सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्।3।

अर्थ-तुम मेरी रक्षा करो। वक्ता की रक्षा करो। श्रोता की रक्षाकरो। दाता की रक्षा करो।षडंग वेदविद आचार्य की रक्षा करो। शिष्य की रक्षा करो। पीछे से रक्षा करो। आगे से रक्षा करो। उत्तर भाग की रक्षा करो। दक्षिण भाग की रक्षा करो। उपर से रक्षा करो। नीचे की ओर से रक्षा करो। सर्वतो भाव से मेरी रक्षा करो। सब दिशाओं से मेरी रक्षा करो।3।

त्वं वाड़मयस्त्वं चिन्मयः! त्वमानन्द-मयस्त्वं ब्रह्मयः! त्वं सच्चिदानन्दद्वितीयोडसि! त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि! त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोडसि।4।

अर्थ-तुम वाङ्मय हो, तुम चिन्मय हो। तुम आनन्दमय हो, तुम ब्रह्ममय हो। तुम सच्चिदानन्द अद्वितीय परमात्मा हो।तुम प्रत्यक्ष ब्रह्म हो तुम ज्ञानमय हो, तुम विज्ञानमय हो।4।

सर्व जगदिदं त्वत्तो जायते! सर्व जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठिति! सर्व जगदिदं त्वयि लयमेष्यति! सर्व जगदिदं त्वयि प्रत्येति! त्वं भूमिरापोडनलोडनिलो नभः! त्वं चत्वारि वाक्पदानि।5।

अर्थ-यह सारा जगत् तुमसे उत्पन्न होता है। यह सारा जगत् सुरक्षित रहता है।यह सारा जगत् तुम में लीन रहता है। यह अखिल विश्व तुम में ही प्रतीत होता है। तुम्हीं भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश हो। तुम्हीं परा,पश्यन्ति, मध्यमा और वैखरी चतुर्विध वाणी हो।5।

त्वं गुणत्रयातीतः! त्वं कालत्रयातीतः! त्वं देहत्रयातीतः! त्वं मूलाधार-स्थितोडसि नित्यम्! त्वं शक्तित्रयात्मकः! त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम! त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्।6।

अर्थ-तुम सत्त्व-रज-तम इन तीनों गुणों से परे हो। तुम भूत-भविष्यत्-वर्तमान इन तीनों कालों से परे हो। तुम स्थूल ,सूक्ष्म और कारण-इन तीनों देहों से परे हो। तुम नित्य मूलाधारचक्र में स्थित हो। तुम प्रभु-शक्ति, उत्साह -शक्ति और मन्त्र-शक्ति इन तीनों शक्तियों से संयुक्त हो। योगिजन नित्य तुम्हारा ध्यान करते है। तुम ब्रह्मा हो, तुम विष्णु हो, तुम रुद्र हो, तुम इन्द्र हो, तुम अग्नि हो, तुम वायु, तुम सूर्य हो, तुम चन्द्रमा हो, तुम सगुण ब्रह्म हो, तुम निर्गुण त्रिपाद भूः भुवःस्वः एवं प्रणव हो 6।

गणादिं पुर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्! अनुस्वारः परतरः! अर्धेन्दुलसितम्!! तारेण रुद्धम्! एतत्तव मनुस्वरूपम्! गकारः पूर्वरूपम्! अकारो मध्यमरूपम्! अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्! बिन्दुरुत्तररूपम्! नादः सन्धानाम्! संहिता सन्धिः! सैषा गणेशविधा! गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः! श्रीमहागणपति-र्देवता! ओम गं गणपतये नमः।7।

अर्थ-गण शब्द के आदि अक्षर गकार का पहले उच्चारण करके अनन्तर आदि वर्ण अकार का उच्चारण करें। उसके बाद अनुस्वार रहे। इस प्रकार अर्ध चन्द्र से पहले शोभित जो गं है, वह ओंकार के द्वारा रुद्ध हो अर्थात् उसके पहले और पीछे भी ओंकार हो। यही तुम्हारे मन्त्र का स्वरूप है। गकार पूर्वरूप है। अकार मध्यम रूपा है। अनुस्वार अन्त्यरूप है। विन्दु उत्तर रूप है नाद संसाधन है। संहिता सन्धि है। ऐसी यह गणेश विद्या हैं इस विद्या के गणक ऋषि है। निचृद् गायत्री छन्द है। और गणपति देवता हैं। मन्त्र है-ओं गं गणपतये नमः।7।

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।8।

अर्थ-एकदन्त को हम जानते है, वक्रतुण्ड का हम ध्यान करते हैं। दन्ति हमको उस ज्ञान और ध्यान में प्रेरित करें।8।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमड़क्श-धारिणम्! अभयं वरदं हस्तैर्ब्रिभ्राणं मूषकध्वजम्!! रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्! रक्तगन्धानुलिप्राडं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्!! भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्! आविर्भूतं च सृष्टचादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्!! एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।9।

अर्थ-गणपतिदेव एकदन्त और चतुर्बाहु हैं। वे अपने चार हाथों में पाश, अंकुश, दन्त, और वरमुद्रा धारण करते हैं। उनके ध्वज में मूषक का चिन्ह है। वे रक्तवर्ण, लम्बोदर, शूर्पकर्ण तथा रक्त वस्त्रधारी हैं। रक्त चन्दन के द्वारा उनके अंग अनुलिप्त हैं। वह रक्त पुष्पों द्वारा सुपूजित हैं। भक्तों की कामना पूर्ण करने वाले ज्योतिर्मय जगत के कारण अच्युत तथा प्रकृति और पुरुश सा परे विद्यमान वे पुरुषोत्तम सृष्टि के आदि में आविर्भूत हुए। इनका जोइस प्रकार नित्य ध्यान करता है वह योगी योगियों में श्रेष्ठ हैं।9।

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेडस्तु लम्बोद-रायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।10।

अर्थ-व्रातपति को नमस्कार ,गणपति को नमस्कार , लम्बोदर , एकदन्त, विघ्न नाशक, शिवतनय श्रीवरदमूर्ति को नमस्कार है।10।

एतदथर्वशिरो योडधीते सब्रह्मभूयाय कल्पते! स सर्वघ्नैर्न बाध्यते! स सर्वतः सुखमेधते! स पंचमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते! सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति! प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति! सायं प्रातः प्रयुंजानोडपपपो भवति! धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति! इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्! यो यदि मोहाद्यास्यति स पापीयान् भवति! सहस्त्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्।11।

अर्थ-इस अथर्वशीर्ष का जो पाठ करता है, वह ब्रह्मीभूत होता है।, वह किसी प्रकार के विघ्नों से बाधित नहीं होता, वह सर्वतोभावेन सुखी होता है,वह पंच महापापों से मुक्त हो जाता है। सायंकाल इसका पाठ करने वाला दिनमें किये हुए पापोंका नाश करता है, प्रातःकाल पाठ करनेवाला रात्रिमें किये हुए पापों का नाश करता है। सायं और प्रातःकाल पाठ करनेवाला निष्पाप हो जाता है।(सदा)सर्वत्र पाठ करने वाला सभी विघ्नों से मुक्त हो जाता है एवं धर्म,अर्थ, काम तथा मोक्ष-इन चारों पुरूषार्थों को प्राप्त करता है। यह अथर्वशीर्ष उसको नहीं देना चाहिये,जो शिष्य न हो। जो

मोहवश अशिष्यको उपदेश देगा, वह महापापी होगा। इसकी एक हजार आवृत्ति करनेसे उपासक जो कामना करेगा, इसके द्वारा उसे सिद्ध कर लेगा।11।

अनेन गणपतिमभिषिंचति स वाग्मी भवति! चतुर्थ्यामनश्नंपति स विद्यवान् भवति! इत्यथर्वणवाक्यम्! ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्! न बिभेति कदाचनेति।12।

अर्थ-जो इस मन्त्रके द्वारा श्रीगणपतिका अभिषेक करता है, वह वाग्मी हो जाता है। जो चतुर्थी तिथिमें उपवासकर जप करता है, वह विद्यावान्(अध्यात्मविद्याविशिष्ट)हो जाता है। यह अथर्वण-वाक्य है।जो ब्रह्मादि आवरणको जानता है, वह कभी भयभीत नहीं होता।12।

यो दूर्वाड्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति! स मेधावान् भवति! यो मोदकसहस्त्रेण यजति स वांछितफलमवाप्नोति! यः साज्यसमिभ्दिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते।13।

अर्थ-जो दूर्वांकुरों द्वारा यजन करता है, वह कुबेर के समान हो जाता है। जो राजाके द्वारा यजन करता है,वह यशस्वी होता है,वह मेधावान् होता है। जो सहस्त्र मोदकों के द्वारा यजन करता है,वह मनोवांछित फल प्राप्त करता है। जो घृताक्त समिधा के द्वारा हवन करता है,वह सब कुछ प्राप्त करता है।13।

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति! सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति! महाविघ्नात् प्रमुच्यते! महापापात् प्रमुच्यते! महादोषात् प्रमुच्यते! स सर्वविभ्दवति! स सर्वविभ्दवति! य एवं वेद!! ओम् भद्ररू्कर्णेभिरिति शान्तिः।14।

अर्थ-जो आठ ब्राह्मणों को इस उपनिषद् का सम्यक् ग्रहण करा देता है,वह सूर्यके समान तेजःसम्पन्न होता है। सूर्यग्रहण के समय महा नदी में अथवा प्रतिमाके निकट इस उपनिषद्का जप करके साधक सिद्धमन्त्र हो जाता है। सम्पूर्ण महाविघ्नोंसे मुक्त हो जाता है।महापापोंसे मुक्त हो जाता है। महादोषोंसे मुक्त हो जाता है। वह सर्वविद् हो जाता है-जो इस प्रकार जानता है।इस प्रकार यह ब्रह्मविद्या है।14।

इति एवं धर्म,अर्थ, काम तथा मोक्ष-इन चारों पुरूषार्थों को प्राप्त करताहै।

इति श्री गणपत्यथर्वशीर्षम् ।।

शिव अथर्वशीर्षम्

ऊँ देवा ह वै स्वर्गं लोकमायँस्ते रुद्रमपृच्छन्को भवानिति। सोऽब्रवीदहमेकः प्रथममासवर्तामि च भविष्यामि च नान्यः कश्चिन्मत्तो व्यतिरिक्त इति। सोऽन्तरादन्तरं प्राविशत्दिशश्चान्तरं प्राविशत्सोऽहं दक्षिणाञ्च उदञ्चोहं अधश्चोर्ध्वं चाहं दिशश्च प्रतिदिशश्चाहं पुमानपुमान्स्त्रियश्चाहं गायत्र्हं सावित्र्यहं त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्चाहं छन्दोऽहं गार्हपत्यो दक्षिणाग्निराहवनीयोऽहं सत्योऽहं गौरहं गौर्यहमृगहं यजुरहं सामाहमथर्वाङ्गिरसोऽहं ज्येष्ठोऽहं श्रेष्ठोऽहं वरिष्ठोऽहमापोऽहं तेजोऽहं गुह्योऽहमरण्योऽहमक्षरमहं क्षरमहं पुष्करमहं पवित्रमहमुग्रं च मध्यं च बहिश्च पुरस्ताज्ज्योतिरित्यहमेव सर्वेभ्यो मामेव स सर्वः स मां यो मां वेद स सर्वान्देवान्वेद सर्वांश्च वेदान्साङ्गानपि ब्रह्म ब्राह्मणैश्च गां गोभिर्ब्राह्मणान्ब्राह्मणेन हविर्हविषा आयुरायुषा सत्येन सत्यं धर्मेण धर्मं तर्पयामि स्वेन तेजसाद्ध ततो ह वै ते देवा रुद्रमपृच्छन्ते देवा रुद्रमपश्यन्। ते देवा रुद्रमध्यायन्ततो देवा ऊर्ध्वबाहवो रुद्रं स्तुवन्ति॥१॥

ऊँ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः॥१॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च विष्णुस्तस्मै वै नमो नमः॥२॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च स्कन्दस्तस्मै वै नमो नमः॥३॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च यश्चेन्द्रस्तस्मै वै नमो नमः॥४॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्चाग्निस्तस्मै वै नमो नमः॥५॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च वायुस्तस्मै वै नमो नमः॥६॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च सूर्यस्तस्मै वै नमो नमः॥७॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च सोमस्तस्मै वै नमो नमः॥८॥ यो वै रुद्रः स भगवान्ये चाष्टौ ग्रहास्तस्मै वै नमो नमः॥९॥ यो वै रुद्रः स भगवान्ये चाष्टौ प्रतिग्रहास्तस्मै वै नमो नमः॥१०॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च भूस्तस्मै वै नमो नमः॥११॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च भुवस्तस्मै वै नमो नमः॥१२॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥१३॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च महस्तस्मै वै नमो नमः॥१४॥ यो वै रुद्रः स भगवान्या च पृथिवी तस्मै वै नमो नमः॥१५॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्चान्तरिक्षं तस्मै वै नमो नमः॥१६॥ यो वै रुद्रः स भगवान्या च द्यौस्तस्मै वै नमो नमः॥१७॥ यो वै रुद्रः स भगवान्याश्चापस्तस्मै वै नमो नमः॥१८॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च तेजस्तस्मै वै नमो नमः॥१९॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च कालस्तस्मै वै नमो नमः॥२०॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च यमस्तस्मै वै नमो नमः॥२१॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च मृत्युस्तस्मै वै नमो नमः॥२२॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्चामृतं तस्मै वै नमो नमः॥२३॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्चाकाशं तस्मै वै नमो नमः॥२४॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च विश्वं तस्मै वै नमो नमः॥२५॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च स्थूलं तस्मै वै नमो नमः॥२६॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च सूक्ष्मं तस्मै वै नमो नमः॥२७॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च शुक्लं तस्मै वै नमो नमः॥२८॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च कृष्णं तस्मै वै नमो नमः॥२९॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च कृत्स्नं तस्मै वै नमो नमः॥३०॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च सत्यं तस्मै वै नमो नमः॥३१॥ यो वै रुद्रः स भगवान्यच्च सर्वं तस्मै वै नमो नमः॥३२॥ ॥२॥

भूस्ते आदिर्मध्यं भुवस्ते स्वस्ते शीर्षं विश्वःपोऽसि ब्रह्मैकस्त्वं द्विधा त्रिधा वृद्धिस्त्वं शान्तिस्त्वं पुष्टिस्त्वं हुतमहुतं दत्तमदत्तं सर्वमसर्वं विश्वमविश्वं कृतमकृतं परमपरं परायणं च त्वम्। अपाम सोमममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम देवान्। किं नूनमस्मान्कृणवदरातिः किमु धूर्तिरमृतं मात्र्यस्य। सोमसूर्यपुरस्तात्सूक्ष्मः पुरुषः। सर्वं जगद्धितं वा एतदक्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं पुरुषं ग्राह्यमग्राह्येण भावं भावेन सौम्यं सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण वायव्यं वायव्येन ग्रसति तस्मै महाग्रासाय वै नमो नमः। हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणाः प्रतिष्ठिताः। हृदि त्वमसि यो नित्यं तिस्रो मात्राः परस्तु सः। तस्योत्तरतः शिरो दक्षिणतः पादौ य उत्तरतः स ओङ्कारः य ओङ्कारः स प्रणवः स सर्वव्यापी यः सर्वव्यापी सोऽनन्तः योऽनन्तस्तत्तारं यत्तारं तच्छुक्लं यच्छुक्लं तत्सूक्ष्मं यत्सूक्ष्मं तद्वैद्युतं यद्वैद्युतं तत्परं ब्रह्म यत्परं ब्रह्म स एकः य एकः स रुद्रः यो रुद्रः स ईशानः य ईशानः स भगवान्महेश्वरः।।३।।

अथ कस्मादुच्यत ओङ्कारो यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्वमुत्क्रामयति तस्मादुच्यते ओङ्कारः। अथ कस्मादुच्यते प्रणवः यस्मादुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुः सामाथर्वाङ्गिरसं ब्रह्म ब्राह्मणेभ्यः प्रणामयति नामयति च तस्मादुच्यते प्रणवः। अथ कस्मादुच्यते सर्वव्यापी यस्मादुच्चार्यमाण एव सर्वान्लोकान्व्याप्नोति स्नेहो यथा पललपिण्ड़मिव शान्तःपमोतप्रोतमनुप्राप्तो व्यतिषक्तश्च तस्मादुच्यते सर्वव्यापी। अथ कस्मादुच्यतेऽनन्तो यस्मादुच्चार्यमाण एव तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्चास्यान्तो नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्तः। अथ कस्मादुच्यते तारं यस्मादुच्चार्यमाण एव गर्भजन्मव्याधिजरामरणसंसारमहाभयात्तारयति त्रायते च तस्मादुच्यते तारम्। अथ कस्मादुच्यते शुक्लं यस्मादुच्चार्यमाण एव क्लन्दते क्लामयति च तस्मादुच्यते शुक्लम्। अथ कस्मादुच्यते सूक्ष्मं यस्मादुच्चार्यमाण एव सूक्ष्मो भूत्वा शरीराण्यधितिष्ठति सर्वाणि चाङ्गान्यभिमृशति तस्मादुच्यते सूक्ष्मम्। अथ कस्मादुच्यते वैद्युतं यस्मादुच्चार्यमाण एव व्यक्ते महति तमसि द्योतयति तस्मादुच्यते वैद्युतम्। अथ कस्मादुच्यते परं ब्रह्म यस्मात्परमपरं परायणं च बृहद्बृहत्या बृहंयति तस्मादुच्यते परं ब्रह्म। अथ कस्मादुच्यते एकः यः सर्वान्प्राणान्सम्भक्ष्य सम्भक्षणेनाजः संसृजति विसृजति तीर्थमेके व्रजन्ति तीर्थमेके दक्षिणाः प्रत्यञ्च उदञ्च प्राञ्चोऽभिव्रजन्त्येके तेषां सर्वेषामिह सङ्गति। साकं स एको भूतश्चरति प्रजानां तस्मादुच्यत एकः। अथ कस्मादुच्यते रुद्रः यस्मादृषिभिर्नान्यैर्भक्तैर्द्रुतमस्य:पमुपलभ्यते तस्मादुच्यते रुद्रः। अथ कस्मादुच्यते ईशानः यः सर्वान्देवानीशते ईशानीभिर्जननीभिश्च शक्तिभिः। अभित्वा शूर नोनुमो दुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुश इति तस्मादुच्यते ईशानः। अथ कस्मादुच्यते भवागन्महेश्वरः यस्माद्भक्ताञ्ज्ञानेन भजत्यनुगृöति च वाचं संसृजति विसृजति च सर्वान्भावान्परित्यज्यात्मज्ञानेन योगैश्वर्येण महति महीयते तस्मादुच्यते भगवान्महेश्वरः। तदेतद्रुद्रचरितम्।।४।।

एषो ह देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः। स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः। एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै य इमाँल्लोकानीशत ईशनीभिः। प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सञ्चुकोचान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोप्ता। यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको येनेदं सर्वं विचरति सर्वम्। तमीशानं वरदं देवमीड्यं निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति। क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे रुद्रमेकत्वमाहुः। शाश्वतं वै पुराणमिषमूर्जेण पशवोऽनुनामयन्तं मृत्युपाशान्। तदेतेनात्मन्नेतेनार्धचतुर्थेन मात्रेण शान्तिं संसृजति पशुपाशविमोक्षणम्। या सा प्रथमा ब्रह्मदेवत्या रक्ता वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेद्ब्रह्मपदम्। या सा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या कृष्णा वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेद्वैष्णवं पदम्। या सा तृतीया मात्रा ईशानदेवत्या कपिला वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेदैशानं पदम्। या सार्धचतुर्थी मात्रा सर्वदेवतयाऽव्यक्तीभूता खं विचरति शुद्धस्फटिकसन्निभा वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेत्पदमनामयम्। तदेतदुपासीत मुनयो वाग्वदन्ति न तस्य ग्रहणमयं पन्था विहित उत्तरेण येन देवा यान्ति येन पितरो येन ऋषयः परमपरं परायणं चेति। वालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वं देवं जातःपं वरेण्यम्। तमात्मस्थं ये नु पश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्भवति नेतरेषाम्। यस्मिन्क्रोधं यां च तृष्णां क्षमां चाक्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे रुद्रमेकत्वमाहुः। रुद्रो हि शाश्वतेन वै पुराणेनेषमूर्जेण तपसा नियन्ता। अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्व ँ ह वा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि यस्माद्व्रतमिदं पाशुपतं यद्भस्म नाङ्गानि संस्पृशेत्तस्माद्ब्रह्म तदेतत्पाशुपतं पशुपाशविमोक्षणाय॥५॥

योऽग्नौ रुद्रो योऽप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश। य इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये। यो रुद्रोऽग्नौ यो रुद्रोऽप्स्वन्तर्या रुद्र ओषधीर्वीरुध आविवेश। यो रुद्र इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय वै नमो नमः। यो रुद्रोऽप्सु यो रुद्र ओषधीषु यो रुद्रो वस्पतिषु येन रुद्रेण जगदूर्ध्वं धारितं पृथिवी द्विधा त्रिधा धर्ता धारिता नागा येऽन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय वै नमो नमः।

मूर्धानमस्य संसेव्याप्यथर्वा हृदयं च यत्। मस्तिष्कादूर्ध्वं प्रेरयत्यवमानोऽधिशीर्षतः। तद्वा अथर्वणः शिरो देवकोशः समुज्झितः। तत्प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्तमथो मनः। न च दिवो देवजनेन गुप्ता न चान्तरिक्षाणि न च भूम इमाः। यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोतं तस्मादन्यन्न परं किञ्चनास्ति। न तस्मात्पूर्वं न परं तदस्ति न भूतं नोत भव्यं यदासीत्। सहस्रपादेकमूर्ध्ना व्याप्तं स एवेदमावरीवर्ति भूतम्। अक्षरात्सञ्जायते कालः कालाद्व्यापक उच्यते। व्यापको हि भगवान्रुद्रो भोगायमानो यदा शेते रुद्रस्तदा संहार्यते प्रजाः। उच्छवसिते तमो भवति तमस आपोऽप्स्वङ्गुल्या मथिते मथितं शिशिरे

शिशिरं मथ्यमानं फेनं भवति फेनादण्डं भवत्यण्डाद्ब्रह्मा भवति ब्रह्मणो वायुः वायोरोङ्कार ऊँकारात्सावित्री सावित्र्या गायत्री गायत्र्या लोका भवन्ति। अर्चयन्ति तपः सत्यं मधु क्षरन्ति यद्ध्रुवम्। एतद्धि परमं तपः आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों नम इति।।६।।

य इदमथर्वशिरो ब्राह्मणोऽधीते अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति अनुपनीत उपनीतो भवति सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो भवति स सूर्यपूतो भवति स सोमपूतो भवति स सत्यपूतो भवति स सर्वपूतो भवति स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति स सर्वैर्वेदैरनुध्यातो भवति स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति गायत्र्याः षष्टिसहस्राणि जप्तानि भवन्ति इतिहासपुराणानां रुद्राणां शतसहस्राणि जप्तानि भवन्ति। प्रणवानामयुतं जप्तं भवति। स चक्षुषः पङ्क्तिं पुनाति। आ सप्तमात्पुरुषयुगान्पुनातीत्याह भगवानथर्वशिरः सकृज्जप्त्वैव शुचिः स पूतः कर्मण्यो भवति। द्वितीयं जप्त्वा गणाधिपत्यमवाप्नोति। तृतीयं जप्त्वैवमेवानुप्रविशत्यों सत्यमों सत्यमों सत्यम्।।७।। ।। इति ।।

तत्पश्चात्रुद्र सूक्त के षोड़श मन्त्रों से भी अभिषेक अथवा पूजन किया जा सकता है।

। हरिः ऊँ । भूर्भुव स्व्र। नमस्ते रूद्र मन्न्यवऽउतोतऽइषवे नम्। बाहुब्भ्यामुतते नम्। १। या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी । तया नस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि। २। यामिषुङ्ग्रि िशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्ग्रित्र ताङ्क्रुमा हि सी पुरुषञ्जगत्। ३। शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा न सर्व्व मिज्जगदयक्ष्म सुमनाऽअसत्। ४। अदृध्यवोचदधिवक्क्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक्। अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च्च यातुधान्न्योधराची परासुव।५। असौ यस्ताम्म्रोऽअरुणऽउत बब्भ्रु सुमङ्ग्ल। ये चौन रुद्राऽअ भितो दिक्क्षुश्रिता सहस्रशोवैषाœ हेडऽईमहे।६। असौ योवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहित। उतैनङ्ग्पाऽअदृ श्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्य स दृष्ट्ट मृडयाति न। ७। नमोस्त्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्क्षाय मीढुषे। अथो येऽअस्य सत्त्वानो हन्तेब्भ्यो करन्नम्। ८। प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्योज्ज्याम्। याश्च्चते हस्त्तऽइषव परा ता भगवो व्वप। ९। व्विज्ज्यन्धनु कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवा२ ँ।ऽउत। अनेश न्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्ग्धि। १०। या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टम हस्त्ते बभूव ते धनु। तयास्म्मा न्विश्श्वत स्त्वमयक्ष्मया परिभुज। ११। परि ते धन्न्वनो हेतिरस्म्मान्न्वृणक्त्तु व्विश्श्वत। अथो यऽइषुधिस्त्तवारेऽ अस्म्मन्निधेहि तम्। १२। अवतत्त्य धनुष्ट्ट्व सहस्राक्क्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्ल्या नाम्मुखा शिवो न्न सुमना भव। १३। नमस्त्तऽ आयुधायानातताय धृष्ण्णवे। उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने। १४। मा नो महान्तमुतमानोऽ अर्ब्भकम्मा नऽउक्क्षन्तमुत मा नऽउक्क्षितम्। मा नो व्वधी पितरम्मोत मातरम्मा न्न

प्रियास्त्तन्वो रुद्र रीरिष। १५। मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मानोऽअश्वे षुरीरिष। मा नो व्वीरान्त्रुदर्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्त सदमित्त्वा हवामहे। १६।

4.4-सारांश

अथर्वशीर्ष की परम्परा में गणपति अथर्वशीर्ष का विशेश महत्त्व है । प्रायः सभी मांगलिक कार्यों में गणपति पूजा के बाद प्रार्थना के रूप में इसके पाठ की परम्परा अत्यन्त आवश्यक है।यह अथर्वशीर्ष भगवान गणेश का वैदिक प्रार्थना है। इस अथर्वशीर्ष का पाठ करने वाला व्यक्ति धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चारो प्रकार के पुरुषार्थों का प्राप्त करता है।

4.5 शब्दावली

शब्द	**अर्थ**
नमस्ते गणपतये	गणपति को नमस्कार है,
त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि	गणपति को नमस्कार है,
त्वमेव केवलं कर्तासि!	तुम्हीं केवल कर्ता हो,
त्वमेव केवलं धर्तासि	तुम्हीं केवल धारणकर्ता हो
त्वमेव केवलं हर्तासि	तुम्हीं केवल हरणकर्ता हो
त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रहमासि	तुम्हीं केवल समस्त विश्वरूप ब्रह्म हो
त्वं साक्षादात्मासि नित्यम	तुम्हीं साक्षत् नित्य आत्मा हो
ऋतं वच्मि	यथार्थ कहता हूँ
सत्यं वच्मि	सत्य कहता हूँ
त्वं वाड़मयः	तुम वाङ्मय हो,
त्वं चिन्मयः	तुम चिन्मय हो।
त्वमानन्दमयः	तुम आनन्दमय हो
त्वं ब्रह्ममयः	तुम ब्रह्ममय हो
त्वं सच्चिदानन्दद्वितीयोऽसि	तुम सच्चिदानन्द अद्वितीय परमात्मा हो
त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि	तुम प्रत्यक्ष ब्रह्म हो
त्वं ज्ञानमयः	तुम ज्ञानमय हो

विज्ञानमयोऽसि तुम विज्ञानमय हो

4.6 -अभ्यासार्थ प्रश्न -उत्तर

1-प्रश्न-श्रीसङ्कष्टनाशनगणेशस्तो में कितने मन्त्र है?

उत्तर- श्रीसङ्कष्टनाशनगणेशस्तो में आठ मन्त्र है

2-प्रश्न-श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष कितने मन्त्र है?

उत्तर- श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष चौदह मन्त्र है

3-प्रश्न- गणपतिदेव क्या है?

उत्तर- गणपतिदेव एकदन्त और चतुर्बाहु हैं।

4-प्रश्न- श्रीगणपत्यथर्वशीर्षका पाठ करने से क्या होता है?

उत्तर- श्रीगणपत्यथर्वशीर्षका पाठ करने से धर्म,अर्थ, काम तथा मोक्ष-इन चारों पुरूषार्थों की प्राप्ती हाती है।

5-प्रश्न- श्रीगणपत्यथर्वशीर्षका जो चतुर्थी तिथिमें उपवासकर जप करता है, वह क्या होजाता है

उत्तर-विद्यावान्(अध्यात्मविद्याविशिष्ट)हो जाता है।

6.प्रश्न- जो आठ ब्राह्मणों को इस उपनिषद् का सम्यक् ग्रहण करा देता है,वह किसके समान हो जाता है?

उत्तर-जो आठ ब्राह्मणों को इस उपनिषद् का सम्यक् ग्रहण करा देता है, वह सूर्यके समान तेजःसम्पन्न हो जाता है।सूर्यग्रहण के समय महा नदी में अथवा प्रतिमाके निकट इस उपनिषद्का जप करके साधक सिद्धमन्त्र हो जाता है। सम्पूर्ण महाविघ्नोंसे मुक्त हो जाता है।महापापोंसे मुक्त हो जाता है। महादोषोंसे मुक्त हो जाता है। वह सर्वविद् हो जाता है इस प्रकार यह ब्रह्मविद्या है। इति एवं धर्म,अर्थ, काम तथा मोक्ष-इन चारों पुरूषार्थों को प्राप्त करताहै।

7.प्रश्न- पुरुषार्थ कितने प्रकार का होता है?

उत्तर- धर्म,अर्थ, काम तथा मोक्ष ये चार प्रकार का पुरुषार्थ होता है

4.7-सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1-पुस्तक का नाम-दुर्गाचन पूजापद्धति

लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र

प्रकाषक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

2-पुस्तक का नाम-सर्वदेव पूजापद्धति

लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र
प्रकाषक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी
3. धर्मशास्त्र का इतिहास
लेखक - डॉ. पाण्डुरङ्ग वामन काणे
प्रकाशक:- उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान।
4 नित्यकर्म पूजा प्रकाश,
लेखक:- पं. बिहारी लाल मिश्र,
प्रकाशक:- गीताप्रेस, गोरखपुर।
5 अमृतवर्षा, नित्यकर्म, प्रभुसेवा
संकलन ग्रन्थ
प्रकाशक:- मल्होत्रा प्रकाशन, दिल्ली।
6 कर्मठगुरुः
लेखक - मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य
प्रकाशक - मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
7 हवनात्मक दुर्गासप्तशती
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।
8 शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टध्यायी
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिश शोध संस्थान, जयपुर।
9 विवाह संस्कार
सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा
प्रकाशक - हंसा प्रकाशन, जयपुर

4.8-उपयोगी पुस्तकें

1-पुस्तक का नाम-दुर्गाचनपद्धति
लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1-प्रश्न- स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः? इस मन्त्र का अर्थ लिखे-

उत्तर- हे देवगण ! हम भगवान का पुजन आरधना करते हुए कानो से कल्याणमय वचन सुनें। नेत्रों से कल्याण ही देखें। सुदृण अंगो एवं शरीर से भगवान की स्तुति करते हुए हम लोग जो आयु आराध्य देव परमात्मा के काम आ सके उसका उपभोग करें। सब ओर फैले हुए सुयश वाले इन्द्र हमारे लिये कल्याण का पोषण करें। सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान रखने वाले पूषा हमारे लिये कल्याण का पोयाण करें। अरिष्टों को मिटाने के लिये चक्रसदृश शक्तिशाली गरुडदेव हमारे लिये कल्याण का पोषण करें। तथा बुद्धि के स्वामी बृहस्पति भी हमारे लिये कल्याण की पुष्टि करें। परमात्मा हमारे लिये त्रिविध ताप की शान्ति हो।

2-प्रश्न- श्री सङ्कष्टनाशन गणेश स्तोत्र में कितने मन्त्र है उसका वर्णन करे

उत्तर-प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्! भक्तवासं स्मरेन्नियमायुष्कामार्थसिद्धये!!1

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्! तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्!!2

लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च! सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम्!!3

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्! एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्!!4

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः! न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्!!5

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्! पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्!!6

जपेद् गणपतिस्तोतं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्! संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः!!7

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यःसमर्पयेत्! तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः!!8

प्रश्न-एतदथर्वशिरो योऽधीते सब्रह्मभूयाय कल्पते! स सर्वघ्नैर्न बाध्यते! स सर्वतः सुखमेधते! स पंचमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते! सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति! प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति! सायं प्रातः प्रयुंजानोडपपपो भवति! धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति! इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्! यो यदि मोहाद्यास्यति स पापीयान् भवति! सहस्त्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। इस मन्त्र का अर्थ लिखिये-

उत्तर-इस अथर्वशीर्ष का जो पाठ करता है, वह ब्रह्मीभूत होता है।, वह किसी प्रकार के विघ्नों से बाधित नहीं होता, वह सर्वतोभावेन सुखी होता है,वह पंच महापापों से मुक्त हो जाता है। सायंकाल इसका पाठ करने वाला दिनमें किये हुए पापोंका नाश करता है, प्रातःकाल पाठ करनेवाला रात्रिमें किये हुए पापों का नाश करता है। सायं और प्रातःकाल पाठ करनेवाला निष्पाप हो जाता

है।(सदा)सर्वत्र पाठ करने वाला सभी विघ्नों से मुक्त हो जाता है एवं धर्म,अर्थ, काम तथा मोक्ष-इन चारों पुरूषार्थों को प्राप्त करता है। यह अथर्वशीर्ष उसको नहीं देना चाहिये,जो शिष्य न हो। जो मोहवश अशिष्यको उपदेश देगा, वह महापापी होगा। इसकी एक हजार आवृत्ति करनेसे उपासक जो कामना करेगा, इसके द्वारा उसे सिद्ध कर लेगा।

खण्ड - 2

कलश स्थापन एवं पूजन

इकाई – 1 कलशादि स्वरूप विवेचन

इकाई की रूप रेखा

1.1 - प्रस्तावना

1.2 - उद्देश्य

1.3- कलशादिस्वरूप विवेचन

1.3.1 कलश प्रकार एवं परिमाण

1.3.2 कलश पर नारियल रखने की विधि

1.4- सारांश

1.5 - शब्दावली

1.6 -अभ्यासार्थ प्रश्न- उतर

1.7- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.8 -उपयोगी पुस्तके

1.9- निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

इस इकाई से पूर्व की इकाई के प्रथमखण्ड में आपको पूजन प्रयोजन, महत्त्व तथा पूजन विधि (प्रकार) का अध्ययन कराया गया, साथ ही स्वस्तिवाचन एवं संकल्प के साथ श्री गणेशाम्बिका का पूजन तथा स्तोत्रपाठ की विधि भी बतायी गई, जो प्रत्येक पूजन के प्रारम्भ में अनिवार्य रूप से आचार्यों द्वारा सम्पन्न करायी जाती है।

प्रस्तुत इस खण्ड में कलश पूजन के प्रयोजन एवं महत्त्व का आप अध्ययन करेंगे जो गणेश पूजन का अनिवार्य अंग है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप कलश पूजन का महत्त्व एवं प्रकार के विषय मे अच्छी जानकारी प्राप्त कर लेंगे। इसके साथ ही पुण्याहवाचन क्यों? तथा कैसे सम्पन्न होता है ? इस विधि को भी अगली इकाई में अच्छी तरह आप जानेंगे। अन्त में अभिषेक की प्रक्रिया क्या है? तथा कैसे सम्पन्न होगा? इन सभी बातों को आप अच्छी तरह समझ जायेंगे तथा वर्तमान समाज के लिए धार्मिक दिषा प्रेरक के रूप में आप अत्यन्त उपकारी सिद्ध होंगे।

1.3 कलशादिस्वरूपविवेचन

मुख्य खण्ड -1

भारतीय संस्कृति में ‘मंगल कलश’ का सर्वोच्च स्थान है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सभी धार्मिक कार्यों का शुभारम्भ मंगलकलश स्थापन से ही होता है। ‘आप देखते हैं कि छोटे अनुष्ठानों से लेकर बड़े बड़े यज्ञों में भी सबसे पहले मंगलकलश यात्रा (जलयात्रा) निकलती है, जिसमें सौभाग्यसम्पन्न महिलाएँ तथा कन्यायें सम्मिलित होकर मंगलकलश को अपने सिर पर रखकर मंगलगीत गाते हुए मगलवाद्यों के साथ सोल्लास किसी नदी के तटपर जाती हैं तथा वहाँ आचार्यों के द्वारा वरुण पूजन (जलपूजन) सम्पन्न कराया जाता है जिसके बाद उस पवित्र जल से कलश को भरकर (पूर्णकर) उसे आम्रपल्लव (आम्र वृक्ष का पत्ता) आदि से सुषोभित कर यज्ञस्थल पर महिलाएँ लाती हैं। इसके बाद ही यज्ञ का शुभारम्भ होता है। यही नहीं आप देखते होंगे कि बड़े बड़े मन्दिरों के ऊपर भी मंगल कलश (धातु निर्मित) स्थापित रहते हैं। आपके मन में यह जिज्ञासा जरुर होगी कि

वास्तव में इसका महत्त्व इतना क्यों है? इसका ऐतिहासिक स्वरूप क्या है? आदि आदि। इसी बात को सरलरूप से बताने के लिए यह छोटा सा प्रयास किया जा रहा है जो कि अत्यन्त आवश्यक है।

सर्वप्रथम आप यह जानते हैं कि कलश का अर्थ घट (घड़ा) होता है। फिर जिज्ञासा होगी कि इसे कलश क्यों कहते हैं, तो आइये हम बताते हैं-

कलश शब्द का अर्थ करते हुए महर्षि यास्क ने कहा है-

'कलश: कस्मात् ? कला अस्मिन् शेरते इति' अर्थात् देवताओं की कलायें (दिव्य तत्त्व या दिव्य अंश) जिसमें निवास करें वही कलश है । इसका तात्पर्य यह है कि देवताओं के दिव्य अंश को मन्त्र पढकर हम इस कलश में आवाहन करते हैं तथा वे तत्त्व इस कलश में अनुष्ठान पूर्ण होने तक सुरक्षित रहते हैं जिनका दर्शन हमें दिव्य जल के रूप में होता है। इसीलिए कलशपूजन के समय - ''यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव''' ऐसा कहते हैं। अस्तु !

इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि देवताओं की दिव्य कलाओं का जिसमें आवाहन किया जाय तथा अनुष्ठानपूर्ण होने तक जिसमें उन दिव्यतत्त्वों को सुरक्षित रखा जाय उसी का नाम कलश है। संभवतः इसीलिए कलशपूजन के क्रम में यह प्रसिद्ध श्लोक भी पढ़ा जाता है।

''कला कला हि देवानां दानवानां कला: कला:
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते।''

अब हम आपसे इसके ऐतिहासिक स्वरूप की भी कुछ चर्चा संक्षेप में करेंगे जो यहाँ अनिवार्य है जिसे शायद आप जानते भी होंगे।

पौराणिक दृष्टि से इस कलश का प्रादुर्भाव समुद्र से होता है क्योंकि जब अमृत प्राप्ति के लिए समुद्र-मन्थन हो रहा था, तब उसमें से 14 रत्न निकले जिसमें स्वयं भगवान् धन्वन्तरि अमृत से भरे हुए कलश को लेकर प्रकट हुए । ये चौदह रत्न निम्नलिखित हैं -

1. लक्ष्मी,
2. मणि,
3. रम्भा,
4. वारुणी (मदिरा),
5. अमिय (अमृत),
6. शंख,
7. गजराज (ऐरावत हाथी),
8. कल्पद्रुम

9. चन्द्रमा

10. कामधेनु,

11. धन,

12. धन्वन्तरि (वैद्य),

13. विष,

14. उच्चैःश्रवा (घोड़ा)।

इसे याद रखने के लिए एक हिन्दी का प्रसिद्ध दोहा है जिसे मैं आपको बताने जा रहा हूँ।

श्रीमणिरम्भावारुणी अमियषंखगजराज।

कल्पद्रुमशशिधेनुधन धन्वन्तरिविषवाजि ।।

यह पूरा प्रसंग श्रीमद्भागवत के अष्टम-स्कन्ध में वर्णित है। प्रसंगवश इसे मैने बताया। इसे विषयान्तर न समझें। इसी का संकेत कलषपूजन के समय वरुण-प्रार्थना के रूप में किया गया है।

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।

उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।

इसके आगे के श्लोकों की चर्चा प्रसंग आने पर हम आपसे करेंगे।

यह कलश उसी समुद्रमन्थन का प्रतीक आज भी है। इसमें भरा हुआ जल ही अमृत है। जटाओं से युक्त ऊँचा नारियल ही मानो मन्दराचल है। कलश की ग्रीवा में लपेटे गये रक्षासूत्र ही वासुकि है। मन्थन करने वाले यजमान एवं पुरोहित हैं।

यदि इस कलश को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय तो इस पृथिवी को ही कलश के रूप में स्थापित किया जाता है। चूँकि पृथिवी एक कलश की भाँति है जो जल को सम्भालकर लगातार वृत्ताकार में घूम रही है।

दूसरी बात यह है कि ब्रह्मा द्वारा निर्मित जगत् की पहली सृष्टि जल है (अप एव ससर्जादौ) जिसके देवता वरुण है। इसलिए भी आदि सृष्टि के प्रतीक के रूप में हम कलश स्थापन करते हैं।

यही नहीं और भी देखें, किसी भी अनुष्ठान के षुभारम्भ में हम आचमन जल से ही करते हैं, ऐसा क्यों? इसका समाधान देते हुए षतपथब्राह्मण ग्रन्थ में कहा गया है कि जल पवित्रतम होता है तथा उपासक या अनुष्ठान करने वाला व्यक्ति (अमेध्य) अपवित्र होता है क्योंकि वह स्वभावतः मिथ्या (झूठ) बोलता रहता है। अतः इस जल के आचमन से वह (उपासक) पवित्र हो जाता है, यही रहस्य आचमन का है। जिसका मूल-वचन भी प्रमाण के रूप में आपके सामने रखा जा रहा है। 'तद्यदप उपष्पृषति - अमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति तेन पूतिरन्तरतः। मेध्या वा आपः। मेध्यो भूत्वा

व्रतमुपायानीति। पवित्रं वा आपः। पवित्रपूतो व्रतमुपायानीति तस्माद्वा अप उपस्पृषति।

इसका प्रसंग भी संक्षेप में आपको बताया जा रहा है - यह एक वैदिक यज्ञ है जिसका नाम दर्शपूर्णमास है। इसे करने के लिए उद्यत यजमान आहवनीय एवं गार्हपत्य अग्नि के बीच (मध्य) में पूर्वाभिमुख खड़े होकर व्रतग्रहण के लिए जल से आचमन करता है। तथा व्रत करने के लिये संकल्प लेता है। यही आचमन का प्रयोजन बताया गया है। अर्थात् जल अत्यन्त पवित्र होता है, मनुष्य उसे अनुष्ठानकाल में पीकर भीतर एवं बाहर से पवित्र होता है।

अतः यहाँ भी कलषस्थित जल परम पवित्र है, क्योंकि इसमें सभी वेदों, नदियों तथा पवित्र तीर्थों का आवाहन होता है, जिसे कलशपूजन विधि के प्रसंग में हम आपको आगे बतायेंगे।

इस प्रकार यहाँ हमें विश्वास है कि आप कलश स्थापन के महत्त्व को अच्छी तरह समझ गये होंगे। अब यहाँ कुछ बोध प्रश्न दिये जा रहे हैं आपके लिए-

बोधप्रश्न -

1. गणेश पूजन के बाद किसका पूजन होता है?
2. जल के प्रधान देवता कौन है?
3. अनुष्ठान के प्रारम्भ में व्यक्ति जल से ही आचमन क्यों करता है?
4. समुद्रमन्थन से कितने रत्न निकले थे?
5. पौराणिक दृष्टि से कलश की उत्पत्ति कहाँ से हुई है?
6. समुद्र से अमृतकलश लिए किसका प्राकट्य हुआ था?

1.3.1 कलश प्रकार एवं परिमाण

उपखण्ड - 1

अब हम इस प्रसंग में कलश के प्रकार एवं परिमाण की चर्चा आपसे करेगे। क्योंकि कलश पूजन का महत्त्व जानने के बाद यह स्वाभाविक जिज्ञासा होगी कि वह कलश किससे बना हुआ होता है। तथा कितना बड़ा या छोटा, अर्थात् उसका परिमाण कितना होगा। इसके विषय में शास्त्रों में निर्देश यह मिलता है कि-

स्वर्णं वा राजतं वापि ताम्रं मृन्मयजं तु वा।
अकालमव्रणं चैव सर्वलक्षणसंयुतम्।।

अर्थात् कलश सोने का, चाँदी का, ताम्बे का एवं मिट्टी का भी बना होता है। ये जो भेद देखा जा रहा है वह अधिकारी भेद से है। अर्थात् बड़े-बड़े राजाओं के यहाँ पूजन में सोने के कलश आते थे। इसके बाद सामर्थ्य न होने पर चाँदी के कलश का भी पूजन में प्रयोग होता है। आप वर्तमान में भी देखते होंगे कि बड़े-बड़े मठाधीषों सन्तों महात्माओं तथा श्री विद्या आदि के परम उपासको के पास आज भी हम देखते हैं कि पूजन के सभी पात्र कलश आदि चाँदी के बने रहते हैं जिनसे वे नित्य पूजन करते हैं। इसके बाद बड़े-बड़े शहरों में विभिन्न अवसरों पर जो धार्मिक यज्ञ आयोजित किये जाते हैं, उसमें हम देखते हैं कि चारों वेदियों पर रखने के लिए बड़े-बड़े ताम्र कलश आज भी उपयुक्त होते हैं। हमलोग भी प्रायः नवरात्र आदि के अवसरों पर घर में ताम्रकलश स्थापित करते हैं। फिर भी आज के मँहगाई के समय में जिनका अधिक सामर्थ्य नहीं है वे मिट्टी के बने कलश को बाजार से लाकर अपने अपने घरों में अनुष्ठान के समय धार्मिक अवसरों पर उपयोग में लाते हैं।

अब यहाँ जिज्ञासा होगी कि क्या स्वर्ण या चाँदी के बनाये गये कलशों से अधिक पुण्य होता है, तो ऐसी बात नहीं है। परमात्मा के द्वारा जिसका जैसा सामर्थ्य मिला है उसे वैसा प्रयोग करना चाहिए, पुण्य सबका समान है। हाँ यह बात जरुर है कि धन रहते हुए जो धार्मिक अनुष्ठानों में कृपणता करता है वह उससे भी अधिक दरिद्र अगले जन्म में होता है। अतः सामर्थ्य का ईमानदारी से अनुपालन ईष्वर के सामने करना चाहिए। क्योंकि जिसने आपको दिया है वह आपका सामर्थ्य अच्छी तरह जानता है।

यदि आप सामर्थ्यानुसार मिट्टी के कलश का प्रयोग करते हैं तो आगे परमात्मा स्वर्ण कलश प्रयोग तक अवष्य ही आपको सामर्थ्य देगा यह लेखक का विष्वास है। अस्तु।

अब हम कलश के प्रकार के बाद परिमाण (माप) की भी चर्चा करेंगे। जैसा कि शास्त्रों में निर्दिष्ट है-

पंचाशांगुल्य वैपुल्यमुत्सेधे षोडशांगुलम्।
द्वादशांगुलकं मूलं मुखमष्टांगुलं भवेत्।।

अर्थात् कलश 15 अंगुल बड़ा, इसकी ऊँचाई 16 अंगुल, 12 अंगुल गहरा तथा इसका मुख भाग (ऊपर का भाग) आठ अंगुल का होना चाहिए।

यहाँ एक बात और ध्यान दीजिए कि मूल श्लोक में पंचाश शब्द आया है, इसका मतलब 50 अंगुल नहीं है। इसका संस्कृत में विग्रह ''पंच च आशा च'' अर्थात् आशा का अर्थ यहाँ दिशा से है जिसकी संख्या 10 है। कुल मिलाकर 15 हुई । ये इस श्लोक का रहस्य है ।

दूसरी बात यह है कि इसके पूर्व के श्लोक में - '**अकालमव्रणं चैव सर्वलक्षण संयुतम्**' का अर्थ रह गया था, उसे हम आपको बता रहे हैं। अकाल का अर्थ, कृष्णवर्ण रहित है, कलश कृष्णवर्ण रहित हो। अर्थात् काले रंग का न हो, तथा पुराना न हो, नया कलश हो। इसकी व्युत्पत्ति भी जान लीजिए - नास्ति कालः = कृष्णवर्णः। तथा अकालं का एक अर्थ यह भी है - अल्पः कालः यस्य अर्थात् अप्राचीनः।

इसका तात्पर्य यह हुआ कि पूजन का कलश काले रंग का न हो, तथा पुराना न हो। अव्रणं का अर्थ है टूटा फूटा या उसमें कही कोई विकृत चिन्ह आदि न हो। यदि टूटा रहेगा तो जल उसमें स्थिर ही नहीं रह सकता। अस्तु।

''काल का कृष्णवर्ण'' यह अर्थ मेदिनी कोश मे आया है-'कालो मृत्यो महाकाले समये यम कृष्णयोः।' इस प्रकार अकाल शब्द का अर्थ कृष्ण वर्ण रहित, ऐसा कलश हो।

अब आप कलश से सम्बन्धित विशेष बातों को भी जान गये है जिन्हें बड़े बड़े आचार्यों को भी ज्ञात नहीं होता है, क्योकि उन्हे तो मात्र कलश पूजन कराने से अभिप्राय है शब्दार्थ में उन्हें कोई विषेश आस्था नहीं होती है। ये वाक्य केवल आपके उत्साह को बढ़ाने के लिए ही है आचार्यों की निन्दा से तात्पर्य मेरा नहीं है। अस्तु।

1.3.2 कलश पर नारियल रखने की विधि

उपखण्ड-2

यहाँ एक बात और आपको बताने जा रहा हूँ जो अत्यावष्यक है। हम प्रायः देखते हैं कि कलश के ऊपर नारियल खड़ा करके रखा जाता है। या गलत तरीके से रखा जाता है, देखिये अनुष्ठानादि में जो विधियाँ हमें षास्त्रों मे बताई गई है उनका ही अनुपालन हमें करना चाहिए। अपने मन से या सुन्दर लगने की भावना से नहीं। इसमें षास्त्र, भगवान् की आज्ञा स्वरूप होते है। अतः षास्त्रानुमोदित ही कार्य करना चाहिए। इसी बात को श्रीमद्भगवद्गीता में भी भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं-

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।

ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्मकर्तुमिहार्हसि।।

अर्थात् जो शास्त्रोक्त विधि को छोड़कर मनमाना बर्ताव (व्यवहार) करता है, उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न ही उत्तम गति मिलती है। इसलिए कर्तव्य अकर्तव्य का निर्णय करने के लिए तुम्हें शास्त्रों को ही प्रमाण मानना चाहिए। एवं शास्त्रों में जो कुछ कहा है उसको समझकर तदनुसार इस लोक में कर्म करना चाहिए।

यह श्लोक प्रसंगवश मैंने आपको बताया। संभवतः आप इसे जानते भी होगे। अब हम आपको कलश के ऊपर नारियल रखने की विधि को बताते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि-

अधोमुखं शत्रुविवर्धनाय
ऊर्ध्वस्य वक्त्रं बहुरोगवृध्यै।
प्राचीमुखं वित्तविनाशनाय
तस्माच्छुभं सम्मुखनारिकेलम्।।

अर्थात् कलश पर नारियल को अधोमुख (नीचे की ओर मुख) रखने से अपने षत्रुओं की वृद्धि होती है। ऊपर की ओर मुख करके रखने से घर में रोग की वृद्धि होती है। पूर्व की ओर मुख करके रखने से धन का नाश होता है। इसलिए हमें अनुष्ठान करते या कराते समय कलश पर नारियल को अपने सम्मुख (सामने) रखना चाहिए। अर्थात् जटावाला भाग अपने सामने करने लिटाकर रखना चाहिए। दूसरी बात यह भी है कि सूखा नारियल कभी भी कलश पर नहीं रखना चाहिए। जलदार ही रखना चाहिए। सूखे नारियल का उपयोग पूर्णाहुति में किया जाता है।

आशा है, आप अब कलश के विषय मे बहुत कुछ जान गये होगे। अब आपके सामने इस खण्ड से कुछ बोध प्रष्न रखे जायेंगे जो निम्नलिखित है।

बोधात्मक प्रश्न - 2

1. मृन्मयजं शब्द का क्या अर्थ है?
2. कलश का मुख भाग कितने अंगुल का होना चाहिए?
3. पूजन में किस वर्ण का कलश नहीं रखना चाहिए?
4. उत्सेध शब्द का क्या अर्थ होगा?
5. कलश पर अधोमुख नारियल रखने से क्या होता है?
6. सूखे नारियल का उपयोग कहाँ होता है?

1.4 सारांश

प्रस्तुत ''**कलशादि-स्वरूप-विवेचन**'' नामक इकाई में कलश का महत्त्व उसका ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक स्वरूप प्रमाण सहित आपको बताया गया। कलश की उत्पत्ति के पौराणिक स्वरूप पर दृष्टिपात करते हुए वैज्ञानिक दृष्टि से भी कलश का स्वरूप बताया गया। प्रसंगतः जल के वैशिष्ट्य को बताते हुए आचमन क्यों किया जाता है, यह प्रसंग, शतपथ-ब्राह्मण के माध्यम से आपके सामने रखा गया। इसके साथ ही कलश के प्रकार एवं परिमाण की भी चर्चा की गई तथा मुख्य बात कलश पर नारियल, शास्त्रीय विधि से कैसे रखा जाता है, वैसे न रखने से क्या दुष्परिणाम होता है आदि बातों की चर्चा आपसे की गई।

1.5 शब्दावली

ग्रीवा	-	गर्दन
वरुण	-	जल के प्रधान देवता
अमेध्य	-	अपवित्र
अनृत	-	झूठ
अप	-	जल
राजतम् -	चाँदी का (कलश)	
उत्सेध	-	ऊँचाई
प्राचीमुख	-	पूर्व दिशा की ओर मुख
वक्त्रं	-	मुख
ज्ञात्वा	-	जानकर

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. गणेश पूजन के बाद कलश पूजन होता है।
2. जल के प्रधान देवता वरुण हैं।
3. जल अत्यन्त पवित्र होता है, पुरुश झूठ बोलने के कारण अपवित्र होता है, इसीलिए अनृत से (मनुष्यभाव से देवभाव को प्राप्त करना) सत्य की ओर आचमन करने से प्रवृत्त होता है।
4. समुद्रमंथन से चौदह रत्न निकले।
5. पौराणिक दृष्टि से कलश की उत्पत्ति समुद्र से हुई है

6. समुद्र से अमृत कलश लिए श्रीधन्वन्तरि जी (वैद्य) प्रकट हुए।

बोधप्रश्न 2 के उत्तर

1. मृन्मयजं का अर्थ मिट्टी से बना हुआ।
2. कलश का मुख आठ अंगुल का होना चाहिए।
3. पूजन में काले वर्ण का कलश नहीं होना चाहिए।
4. उत्सेध का अर्थ ऊँचाई है।
5. नीचे की ओर कलश का मुख रखने से अपने षत्रुओं की वृद्धि होती है।
6. सूखे नारियल का उपयोग पूर्णाहुति में होता है।

1.7 सन्दर्भग्रन्थसूची

1. निरुक्त - आचार्य यास्क
2. भगवन्तभास्कर - श्रीषंकरभट्ट
3. अमरकोश - श्रीअमरसिंह
4. ग्रहषान्ति - श्रीवायुनन्दनमिश्र
5. संस्कारदीपक - श्रीनित्यानन्दपर्वतीय

1.8 निबन्धात्मक प्रश्न

क. पौराणिक दृष्टि से कलश के उत्पत्ति का निरूपण करें।

ख. कलश के परिमाण एवं नारियल स्थापन की विधि, शास्त्रीय दृष्टि से विवेचित करें।

इकाई – 2 कलश स्थापन विधि

इकाई की रुप रेखा

2.1 - प्रस्तावना

2.2 - उद्देश्य

2.3 कलशस्थापनविधि

2. 4- सारांश

2.5 - शब्दावली

2.6 -अभ्यासार्थ प्रश्न उतर

2.7- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.8 -उपयोगी पुस्तके

2.9- निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई से पूर्व की इकाई में कलश पूजन क्यों किया जाता है तथा इसका आध्यात्मिक एवं वर्तमान सन्दर्भ में वैज्ञानिक महत्त्व क्या है ? इन बातों को आप अच्छी तरह समझ गये होंगे । इसके साथ ही इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है ? कलश का परिमाण एवं कलश पर नारियल स्थापन की विधि क्या है ? यह भी आप जान गये होगे।

आप देखें । वर्तमान युग विज्ञापन का युग है। किसी भी वस्तु के महत्त्व ज्ञान के अथवा आवश्यकता के बिना वह वस्तु लोगों द्वारा ग्राह्य नहीं होती है। इसीलिए इसके पूर्व खण्ड में कलश के महत्त्व को सविधि बताया गया।

इसके बाद आपको कलश पूजन की विधि को हम बताने जा रहे है । क्योंकि कर्मकाण्ड प्रयोग प्रधान है। केवल सैद्धान्तिक ज्ञान से काम नहीं चलता अपितु उसके प्रयोग का भी ज्ञान आवष्यक है। इसीलिए आपको कलश पूजन की शास्त्रीय विधि को बताने जा रहा हूँ।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप कहीं भी, कभी भी कलश पूजन शास्त्रीय विधि से करा सकते है।

एक बात आप अवश्य यहाँ ध्यान दें कि कर्मकाण्ड को बढ़ाया भी जा सकता है तथा कम भी किया जा सकता है । अब आप पूछेंगे कि कम करने पर विधि का लोप होने का डर है जिससे पाप का भागी बनना पडेगा परन्तु ऐसी बात नहीं है। एक ही देवता के 50 स्तोत्र हैं, क्या 50 स्तोत्र पढेंगे तभी भगवान प्रसन्न होंगे? ऐसी बात नहीं है। देखें! आचार दो प्रकार के होते है, एक शास्त्रीय आचार तथा दूसरा लोकाचार । लोकाचार स्थान भिन्न भिन्न होने पर परिवर्तन हो सकता है परन्तु 'शास्त्रीय आचार सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक होता है, इसमें कोई परिवर्तन नही होता है। जैसे पूरे भारत में ''गणानां त्वा'' मन्त्र से ही श्रीगणेश जी का आवाहन होता है। षोडशोपचार की विधि सब जगह एक ही तरह से सम्पन्न होती है। किसी भी देश में या स्थान में आवाहन के बाद ही आसन एवं पाद्य आदि दिये जाते हैं न कि पहले प्रदक्षिणा एवं वस्त्र, स्नान आदि विलोम क्रम से।

अतः आपको यहाँ शास्त्रानुसार की ही विधि बतलायी जा रही है। यह सर्वत्र एक ही समान होगी। हाँ! जहाँ पर लोकाचार, विवाह आदि उत्सवों में देखा जाता है वहाँ वह आवष्यक होगा, लेकिन कोई कहे कि संकल्प या वैदिक स्वस्तिवाचन मन्त्रो में कोई परिवर्तन हो, नये मंत्र हो ऐसी बात बिलकुल ध्यान से हटा दीजिए। यह मेरा निवेदन है। इसे आप भी जानते हैं। यहाँ जितनी विधि

कलश पूजन में आवष्यक है उन्हीं शास्त्रीय प्रयोगों को बताया जायेगा। अर्थात् अपेक्षित अंश ही यहाँ ग्राह्य है। अनपेक्षित नही। जैसा कि आचार्य मल्लिनाथ ने अपनी व्याख्या के लिए कहा है - ''नामूलं लिख्यते किंचित् नानपेक्षितमुच्यते''।

2.3 कलश स्थापन विधि

सबसे पहले कलश को जल से पवित्र करना चाहिए। इसके बाद यदि सर्वतोभद्र-मण्डल या किसी भी मंडल के ऊपर जो छोटी चौकी पर बने हों उस पर यदि कलश स्थापन करना हो तो मण्डल के बीच में पर्याप्त चावल रखकर जिससे कलश स्थिर रहे गिरे, न इस प्रकार रखना चाहिए। जो बड़े बड़े यागों मे आप देखते भी है। यदि पृथ्वी पर कलश स्थापन करना हो तो कलश के नीचे पर्याप्त मिट्टी रखकर उस पर कुंकुम या रोली आदि से अष्टदल कमल बनाकर, कलश मे स्वस्ति का चिन्ह बनाकर उसमे कलाबा (रक्षासूत्र) तीन बार लपेटकर बाँध देना चाहिए। कलश के ऊपर भी रखने के लिए एक कसोरे मे चावल भरकर उस पर अष्टदल या स्वस्ति का चिन्ह बनाकर नारियल में लाल रंग का वस्त्र लपेटकर पहले से ही तैयार रखना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि पूजा की तैयारी पूजन से पहले ही कर लेनी चाहिए। सभी आवश्यक उपचारों को पहले से ही व्यवस्थित तरीके से रखकर तब पूजन प्रारम्भ करना या कराना चाहिये । इससे पूजन में व्यग्रता नहीं होती है। शान्ति बनी रहती है । अस्तु

यजमान कलश के नीचे की भूमि का स्पर्श करे इस मन्त्र को पढ़ते हुए-

ॐ महीद्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञ मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।

एक बात अवश्य यहाँ ध्यान दें कि सम्पूर्ण मन्त्र पढ़ने के बाद ही क्रिया करनी चाहिए । क्योंकि मन्त्र द्रव्य एवं देवता के स्मारक होते हैं, जैसा कि लिखा है - ''प्रयोग समवेतार्थस्मारकाः मन्त्रा'' अतः मन्त्र के प्रारंभ में या आधे में क्रिया न करें मन्त्र पूरा हो जाने के बाद ही क्रिया करनी चाहिए। यही शास्त्रीय विधि है। इसके बाद -

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन्पारयामसि॥

उपरोक्त इस मन्त्र को पढ़कर कलश के नीचे की मिट्टी पर सप्तधान्य रखें । अब आप पूछेगे कि सप्तधान्य क्या होता है ? मैं बताता हूँ-

(सप्तधान्य)

(यव गोधूम धान्यानि तिलाः कंगुस्तथैव च।
श्यामकाश्चणकाष्चैव सप्तधान्यानि संविदुः।।)

अर्थात् यव, गेहूँ, धान, तिल, कंगु, (एक प्रकार का धान्य विशेष), सावाँ (धान्य विशेष), चना ये सप्त धान्य होते है। इन्हें कलश के नीचे रखना चाहिए। उपलब्ध न होने पर उस द्रव्य के अभाव में अक्षत (चावल) छोड़ना चाहिए।

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर सप्तधान्य के ऊपर कलश रखें।

ऊँ आजिघ्र कलशं मह्यात्वाव्विशन्त्विन्दवः।

पुनरुर्जानिवर्तस्वसानः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारापयस्वती पुनर्म्माविषताद्रयिः।''

इसके बाद नीचे-लिखे मन्त्र को पढ़कर कलश में जल डाले। यहाँ जल डालने से अभिप्राय कलश को जल से भरने से है।

ऊँ वरुणस्योत्तम्भ नमसिव्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऽऋत- सदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर कलश मे चन्दन छोड़ें-

ऊँ त्वांगन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।

त्वामोषधे सोमोराजाव्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर सर्वौषधी कलश के भीतर छोड़े-

ऊँ याऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।

मनैनुबभ्रूणामह षतन्धामानि सप्त च।।

यहाँ सर्वौषधी किसे कहते हैं आपको बताया जा रहा है-

(मुरा माँसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनी द्वयम्।
सठी चम्पकमुस्ता च सर्वौषधि गणः स्मृतः।।)

इसके बाद कलश में हरी दूर्वा छोड़ें-

ऊँ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण षतेन च।।

दूर्वा (दूब) छोड़ने के बाद पंचपल्लव को कलश में नीचे लिखे मत्र से छोड़ें-

ऊँ अश्वत्थे निषदनम्पर्णेवोव्वसतिष्कृता।

गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्।।

पंचपल्लव में वट, गूलर, पीपल, आम तथा पाकड के पल्लव (पत्ते) लिए जाते है। जैसा कि लिखा

है-

''न्यग्रोधोदुम्बरोऽष्वत्थष्चूतः पलक्षस्तथैव च''।

पंचपल्लव छोड़ने के बाद कलश में सप्तमृत्तिका निम्न मंत्र से छोड़े-

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेषनी यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।

सात जगह की मिट्टी को सप्तमृत्तिका कहते है। जैसे-

(अश्वस्थानाद्गजस्थानादवल्मीकात्संगमाध्र्रदात्

राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदऽआनीय निःक्षिपेत्।।)

अर्थात् घोड़े के स्थान की, हाथी के, स्थान की, दीमक, संगम, तालाब राजद्वार तथा गोशाले की मिट्टी को लाकर कलश में छोड़ना चाहिए।

सप्तमृत्तिका के बाद पूगीफल (सोपाड़ी) कलश में नीचे लिखे मत्र से छोड़ें-

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽपुष्पायाष्चपुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुंचत्व हसः।।

इसके बाद नीचे लिखे मंत्र को पढ़कर पंचरत्न कलश में छोड़ दे-

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत।

दधद्रत्नानि दाषुषे।।

पंचरत्नों के नाम निम्नलिखित है-

(कनकं कुलिषं भुक्ता पद्मरागं च नीलकम् ।

एतानि पंचरत्नानि सर्वकार्येषु योजयेत् ।।)

पंचरत्न के बाद सुवर्ण या चाँदी का सिक्का कलश में नीचे के मंत्र से छोड़े-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।

स दाधारपृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

इसके बाद कलश के उपरि भाग में वस्त्र से लपेटकर कलावे से बाँध दें-

ॐ सुजातो ज्योतिषासहषर्म्मव्वरुथमासदत्स्वः।

व्वासोऽग्नेव्विष्वरूपं संव्ययस्वव्विभावसो।।

इसके बाद नीचे लिखे मंत्रों से कलश पर पूर्णपात्र अर्थात् पहले से एक कसोरे या ताम्रपात्र में कलश को ढकने के लिए चावल भरकर उस पर स्वस्ति या अष्टदल बनाकर रखें, तथा नारियल को उस पर रखकर कलश पर रखें

ॐ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्णापुनरापत।

व्वस्न्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जं षतक्रतो।।

कलश पर स्वात्माभिमुख नारिकेल सहित पूर्णपात्र रखकर नीचे के मंत्र से कलश पर वरुण देवता का आवाहन करें।

ऊँ तत्त्वायामि ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाषास्ते यजमानोहविर्भिः।

अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुषं समानऽआयुः प्रमोषीः।।

अस्मिन् कलषे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सषक्तिकमावाहयामि। स्थापयामि। अपांपतये वरुणाय नमः। इसके बाद पंचोपचार से (गन्ध, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य) से वरुण का पूजन करके कलश में गंगादि नदियों का आवाहन करें। आवाहन करते समय, अक्षत बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से दो दो दाना कलश पर छोड़ें-

कला कला हि देवानां दानवानां कलाःकलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलषस्तेन कथ्यते।।
कलषस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।।
कावेरी कृष्णवेणा च गंगा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।
नदाष्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलषस्थानि तानि वै।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः।
आयान्तु मम षान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽह्यथर्वणः।
अंगैष्च सहिताः सर्वे कलषं तु समाश्रिताः।।
अत्र गायत्री सावित्री षान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम षान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

(इमान् श्लोकान् पठेत्। ततो यजमानः स्वहस्ते पुनरक्षतान् गृहीत्वा-)

इन श्लोको को पढ़कर नीचे लिखे मंत्र के द्वारा कलश में वरुणादि-देवताओं का तथा पृथिवी पर स्थित समस्त तीर्थों एवं पवित्र पुण्यसलिला नदियों की कलश में प्रतिष्ठा करे।

ऊँ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु।
विष्वेदेवासऽइहमादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।।
अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमचार्यै मामहेति च कष्चन।।
''अस्मिन् कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।
ऊँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः।

प्राणप्रतिष्ठा के बाद कलश पर आवाहित वरुणदेवता के साथ अन्य आवाहित देवों का भी विधि एवं श्रद्धा के साथ षोडषोपचार पूजन करें।

आसन -
ऊँ पुरुषऽएवेदं सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्व्यम्।
उतामृतत्वस्येषानो यदन्नेनातिरोहति।।
(विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजितम्।।)
ऊँ कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। (आसन देने के लिए कलश पर अक्षत पुष्प चढावें)

पाद्य -

ऊँ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँष्च पूरुषः।
पादोऽस्यव्विष्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।
(सर्वतीर्थ समुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
जलाध्यक्ष! गृहाणेदं भगवन्! भक्तवत्सल!।)
कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि (पैर धोने के लिए एक आचमनी जल कलश पर छोड़ें)

अर्घ्य -

ऊँ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः।
ततोव्विष्वङ्व्यक्रामत्साषनानषने ऽअभि।।
(जलाध्यक्ष! नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर!
अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्।।)

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। (यहाँ एक छोटे से पात्र में गन्ध पुष्प अक्षत लेकर अर्घ्य प्रदान करें)

आचमन -

ॐ ततो व्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः।
सजातोऽअत्यरिच्यतपष्चाद्भूमिमथोपुरः।।
(जलाध्यक्ष! नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दितः ।
गंगोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो!।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि। (एक आचमनी कलश पर जल छोड़ें)

स्नान -

तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूँस्ताँष्चक्रेव्वायव्व्यानारण्याग्राम्याष्चये।।
(मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। स्नानीयं जलं समर्पयामि। (स्नान के लिए एक आचमनी जल कलश पर छोड़ें)

पंचामृत -

पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सोदेषे भवत्सरित्।।
(पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयोदधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, मिलितपंचामृतस्नानं समर्पयामि।

(ध्यान दें पंचामृत में गाय का दूध, गाय की दधि, गाय का घृत, षहद तथा चीनी (षर्करा) मिली हुई होती है। कभी-कभी भगवान् षिव के अभिषेक या विषेषानुष्ठानों में अलग अलग द्रव्य जैसे पहले दूध से इसके बाद दधि से इस प्रकार से देवताओं को स्नान कराया जाता है। अतः अलग-

अलग द्रव्य से भी स्नान के मंत्र आपके ज्ञानवृद्धि के लिए यहाँ बताया जा रहा है। जिसे आप अच्छी तरह अलग-अलग द्रव्यों (दूध, घी आदि) से करा सकते हैं) आप देश काल द्रव्य के अनुसार अलग-अलग द्रव्यों से एवं मिलित द्रव्यों से भी सुविधानुसार स्नान करा सकते हैं।

पयः (दूध) स्नानम् -

ऊँ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।
(कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुष्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयः स्नानं समर्पयामि। पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

दधिस्नानम् -

ऊँ दधिक्राब्णोऽअकारिषं जिष्णोरष्वस्यव्वाजिनः।
सुरभि नो मुखाकरत्प्रणऽआयूंषितारिषत ।।
(पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

घृतस्नानम् -

ऊँ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतं वृषभव्वक्षिहव्यम्।।
(नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

मधुस्नानम् -

ऊँ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवंरजः मधुद्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नोव्वनस्पतिर्मधुमाँऽस्तु सूर्य्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

(पुष्परेणु समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शर्करास्नानम् -

ऊँ अपा रसमुद्वयस सूर्य्ये सन्तं समाहितम्।
अपांरसस्ययोरसस्तं व्वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येश ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।

(इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः षर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम् -

ऊँ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तआष्विनाः श्येत: श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पषुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्ज्जन्याः।

(गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम् -

सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्मव्वरुथमासदत्स्वः।
व्वासोऽअग्ने विष्वरूपं संव्ययस्वव्विभावसो।।

(शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जायाः रक्षणं परम्।
देहालंकरणं वस्त्रमतः षान्तिं प्रयच्छ मे।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि। तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रम् -

ऊँ युवा सुवासा परिपीतऽआगात्सउश्रेयान्भवतिजायमानः।
तन्धीरासऽकवयऽउन्नयन्तिसाध्योमनसा देवयन्तः।।

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रार्थे मांगलिकसूत्रं (मौली) समर्पयामि। तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम् -

ऊँ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।
(नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेष्वर।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवीतं (जनेऊ) समर्पयामि। तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

चन्दनम् -

ऊँ त्वांगन्धर्व्वाऽअखनँस्तवामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमोराजा व्विद्वान्यक्षमादमुच्यत।।
(श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलंकारार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि (फूल एवं माला) -

ऊँ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अष्वाऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्वः।।
(माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पाणि पुष्पमालां च समर्पयामि।

ऊँ अहिरिव भोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिम्परिबाधमानः।
हस्तघ्नो व्विष्वाव्वयुनानिव्विद्वान्पुमान्पुमां सम्परिपातु व्विष्वतः।।
(नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारुप्रगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

ऊँ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेषूघनासोव्वातप्रमियःपतयन्तियहवाः घृतस्य धाराऽअरुषोनव्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।

(सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम् -

ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सुगन्धिद्रव्यम् अनुलेपयामि। (सुगन्धिद्रव्य का अर्थ यहाँ इत्र एवं सुगन्धित तैल से है)

''नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूप-दीपौ च देयौ''

धूपम् -

ऊँ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यः कृतः।

ऊरुतदस्ययद्वैष्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत।।

(वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।)

आवाहितदेवताभ्यो नमः। धूपमाघ्रापयामि।

दीपम् -

ऊँ चन्द्रमामनसो जातष्चक्षोः सूय्योऽअजायत।

श्रोत्राद्वायुष्च प्राणष्चमुखादग्निरजायत।।

(साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।

त्राहि मां निरयाद्घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपं दर्षयामि हस्तप्रक्षालनम्।

नैवेद्यम् -

ऊँ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिश: श्रोत्रात्तथालोकाँ2ऽअकल्पयन्।।

(नैवेद्यं गृह्यतां देव! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
इप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्करा खण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्य-भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। नैवेद्यं निवेदयामि नैवेद्यान्ते, ध्यानं, ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। प्रणायस्वाहा, अपानायस्वाहा, व्यानायस्वाहा, उदानायस्वाहा समानायस्वाहा। इति ग्रासमुद्रां प्रदर्ष्य नैवेद्यं निवेदयेत्।

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, आचमनीयं जलं मध्ये पानीयं उत्तरापोषनं च समर्पयामि।

करोद्वर्तनम् -

ऊँ अ षुना तेऽअं षुः पृच्यतां परुषापरुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽच्युतः।।
(चन्दनं मलयोद्भूतं केसरादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव! गृहाण परमेष्वर!।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, करोद्वर्तनार्थे गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

(ध्यान दें! करोद्वर्तन का अर्थ दोनों हाथों के अनामिका एवं अंगुष्ठ में केसरयुक्त चन्दन लगाकर देवताओं पर छिड़कें)

ऋतुफलम् -

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।
(ऊँ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाष्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुंचन्त्वं हसः।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इमानि ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूलम् -

यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः षरद्धविः।।
(पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, मुखवासार्थे ताम्बूलपत्रं पूगीफलं एलालवंगानि च समर्पयामि।

दक्षिणा -

हिरण्गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।

स दाधार पृथ्वीन्द्यामुते मांकस्म्मै देवाय हविषा विधेम।।

(हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदभतः षान्तिं प्रयच्छ मे।।)

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा -

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि सर्वाणि नष्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे।।

प्रदक्षिणां समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनम् (आरती) -

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।

सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

(कदलीगर्भसम्भूतं कपूरं तु प्रदीपितम्।

आरार्तिकमहं कुर्वे पष्य मे वरदो भव।।)

ऊँ इदं हविः प्रजननम्मेऽस्तु दषवीरं सर्व्वगणं स्वस्तये

आत्मसनिप्रजासनि पषुसनिलोकसन्यभयसनि अग्निः।

प्रजां बहुलाम्मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽअस्मासु धत्त।।

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

हस्तौ प्रक्षाल्य मंत्रपुष्पांजलिः -

यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन्।

ते ह नाकम्महिमानः सचन्तयत्र पूर्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाणपरमेश्वर।।

वरुणाद्यावाहितं देवताभ्यो नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।

प्रार्थना हस्ते पुष्पाणि गृहीत्वा -

देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।

उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्यवम्।।

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।

षिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।

आदित्या वसवो रुद्रा विष्वेदेवाः सपैतृकाः।।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।

त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहं जलोद्भव।।

सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय

सुष्वेतहाराय सुमंगलाय।

सुपाषहस्ताय झषासनाय

जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।

यावत् कर्म करिष्येऽहं तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। प्रार्थनापूर्वकनमस्कारान् समर्पयामि। हस्ते जलमादाय अनेन यथालब्धोपचारपूजनाख्येन कर्मणा वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।

यहाँ एक बात आपको अवश्य ध्यान देना है कि षोडशोपचार से सविधि वरुण (कलशपूजन) पूजन की विधि बताई गई है जो अत्यन्त षुद्ध एवं शास्त्रीय है।

दूसरी बात यह है कि आपकी सुविधा के लिए वैदिक मन्त्रों के साथ साथ पौराणिक मन्त्र भी कोष्ठ में दिये गये हैं। जिनका उपयोग आप पूजन के समय कर सकते हैं। जहाँ तक वैदिक मन्त्रों का उच्चारण एवं उनका स्वरज्ञान है वह अत्यन्त कठिन है उस अवस्था में अर्थात् पूजन के समय वैदिक मंत्रोच्चारण न करके दिये गये पौराणिक मंत्रों का भी आप पाठ कर सकते हैं । पुण्य फल दोनों का समान ही होगा। अतः अपने सुविधानुसार यथाज्ञान के अनुसार पौराणिक या वैदिक मंत्रों का उच्चारण आप पूजन के समय करने में स्वतंत्र है।

तीसरी बात यह है कि कलश पूजन के क्रम में जहाँ पंचरत्न या सर्वौषधि की चर्चा की गई है वहाँ कोष्ठ में बताये गये श्लोक को पढ़ना नहीं है, ये केवल आपके जानकारी के लिए है। इतना यदि ध्यान दें तो कलशपूजन निर्विघ्नरूप से आप सर्वत्र करा सकते हैं तथा इसमें बताये गये मंत्रों का अक्षरश: प्रयोग आप अन्य पूजन में भी कर सकते हैं।

आशा है अब आप कलशपूजन की विधि अच्छी तरह समझ गये होंगे, तो क्यों न आपसे

कुछ प्रश्न किया जाय, तो लीजिए कुछ नीचे बोध प्रश्न आपके लिए दिए जा रहे हैं, जिनका उत्तर आप को देना है।

2.4 बोधात्मक प्रश्न

1. पाद्य शब्द का क्या अर्थ है?
2. पंचरत्न का प्रयोग कहाँ किया जाता है?
3. कौन सा आचार (विधि) सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक होता है?
4. अश्वत्थ शब्द का क्या अर्थ है?
5. रुद्र कितने होते हैं?
6. परिमल द्रव्य किसे कहते हैं?

2.5 सारांश

प्रस्तुत ''कलशपूजनविधि'' नामक इस इकाई में कलशस्थापन की विधि एवं उसमें छोड़े जाने वाले पदार्थों की चर्चा सप्रमाण की गई। इसके साथ ही कलश पूजन कैसे करें? एवं इसके षोडशोपचार की विधि क्या है? इसे वैदिक एवं पौराणिक मन्त्रों के साथ आपको बताई गयी। आप कलशपूजन अपनी सुविधानुसार देश काल परिस्थिति को देखते हुए पंचोपचार से भी कर सकते हैं। साथ ही वैदिक मन्त्रों के उच्चारण एवं स्वर ज्ञानाभाव के कारण पौराणिक मंत्रों से भी पूजन करा सकते हैं जिसका संकेत यथाप्रसंग किया गया है। अथवा जो विज्ञ हैं, वैदिक मन्त्रों को सस्वर पढ़ने में समर्थ हैं वे तो वैदिक मन्त्रों से ही करावें।

2.6 शब्दावली

अनपेक्षित	-	अनावश्यक
आचार	-	विधि
मांगलिक सूत्र	-	कलावा (कलाई में बांधने वाला लाल रंग का)
यज्ञोपवीत	-	जनेऊ
शुद्धोदक	-	शुद्धजल
न्यग्रोध	-	वट (वृक्ष)
प्लक्ष	-	पाकड़ का वृक्ष

चूत	-	आम का वृक्ष
औदुम्बर	-	गूलर का वृक्ष
मृत्तिका	-	मिट्टी

2.7 बोधात्मक प्रश्नों के उत्तर

1. देवताओं के पैर धोने के लिए प्रयुक्त जल को पाद्य कहते हैं।
2. पंचरत्न का प्रयोग कलशपूजन में करते हैं।
3. शास्त्रीय आचार (विधि) सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक होता है।
4. अश्वत्थ का अर्थ पीपल होता है।
5. रुद्र ग्यारह होते हैं।
6. अबीर गुलाल आदि को परिमल द्रव्य कहते हैं।

2.8 सन्दर्भग्रन्थसूची

ग्रन्थ	**-**	**लेखक**
अर्थसंग्रह	-	श्रीलौगाक्षिभास्कर
ग्रहषान्ति	-	श्रीवायुनन्दन मिश्र
कर्मसमुच्चय	-	पं. श्री रामजीलाल षास्त्री
संस्कारदीपक	-	महामहोपाध्याय श्री नित्यानन्दपर्वतीय

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

क. कलश स्थापन का प्रयोग लिखें।

ख. षोडशोपचार कलश पूजन कैसे किया जाता है लिखें।

इकाई – 3 पुण्याहवाचन एवं अभिषेक

इकाई की रुप रेखा

3.1 - प्रस्तावना

3.2 - उद्देश्य

3.3.1 पुण्याहवाचन

3.3.2 अभिषेक

3.3.3 बोध प्रश्न

3. 4- सारांश

3.5 - शब्दावली

3.6 -अभ्यासार्थ प्रश्न उतर

3.7- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.8 -उपयोगी पुस्तके

3.9- निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

इससे पूर्व की इकाई में आपको कलश पूजन की शास्त्रीय विधि वैदिक एवं पौराणिक मंत्रों के साथ बताई गयी जो अत्यन्त प्रमाणिक है । आगे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप इसके अध्ययन के बाद कलश पूजन अच्छी तरह सम्पन्न करा सकते हैं।

इस इकाई में आपको जिज्ञासा होगी कि प्रारम्भ में स्वस्तिवाचन एवं संकल्प नहीं है लेकिन आप तो गणेश पूजन के पहले ही स्वस्तिवाचन एवं संकल्प अच्छी तरह जान चुके हैं, बार-बार स्वस्तिवाचन एवं संकल्प नहीं होता है। प्रधान संकल्प एक बार ही होता है, इसीलिए यहाँ संकल्पादि नहीं दिये गये हैं। अस्तु।

प्रस्तुत इकाई में आप पुण्याहवाचन एवं अभिषेक की विधि का अध्ययन करेंगे जो पंचांगपूजन का अंग है, तथा सभी यागों में या धार्मिक अनुष्ठानों में प्रायः आचार्यों द्वारा सम्पन्न कराया जाता है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद पुण्याहवाचन एवं अभिषेक की शास्त्रीय विधि क्या है? इसका अच्छी तरह ज्ञान आपको हो जायेगा। इसके साथ ही आपकी सुविधा के लिए महर्षि बौधायनोक्त संक्षिप्त पुण्याहवाचन का भी ज्ञान आपको कराया जायेगा जो कम समय में ही सम्पन्न होता है एवं फल दोनों का समान होता है।

3.3.1 पुण्याहवाचन

पुण्याहवाचन कलश पूजन के ठीक बाद में होता है। इसीलिए यहाँ भी कलश पूजन के ठीक बाद में पुण्याहवाचन दिया गया है, क्योंकि पूजन का शास्त्रीय क्रम इस प्रकार है-

क. गणेशाम्बिका पूजन

ख. कलश पूजन

ग. पुण्याहवाचन

घ. अभिषेक

ङ. षोडशमातृकापूजन

च. सप्तघृतमातृकापूजन

छ. आयुष्यमंत्रजप

ज. नान्दीश्राद्ध

झ. आचार्यादिवरण

खण्ड-1

ग्रहतत्त्वदीपिका ग्रन्थ में कहा गया है-

पुण्याहवाचने विप्राः युग्मा वेदविदः शुभाः।

यज्ञोपवीतिनः षस्ताः प्राङ्मुखाः स्युः पवित्रिणः।।

इस कर्म में कम से कम दो ब्राह्मण अवश्य रहते हैं। जैसा कि उपरोक्त वचन से ज्ञात होता है। इसमें ब्राह्मणों का हस्तपूजन एवं उनसे आशीर्वाद के लिए यजमान प्रार्थना करता है। पुण्याहवाचन के लिए एक ताम्बे या पीतल का कमण्डलु होना चाहिए। जिसमें टोंटी लगी हो, जल गिरने के लिए।

विधि - यजमान दोनों घुटनों को पृथिवी पर मोड़कर अर्थात् वज्रासन में बैठे, तथा दोनों हाथों को उपर करके खिले हुए कमल के समान बनाये जिसमें आचार्य तीन बार पुण्याहवाचन-कलश को उठाकर यजमान के सिर पर रखते हैं तथा मंत्रपाठ करते हैं।

‘‘ततो यजमानः अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृश मंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना (उभाभ्यां कराभ्याम्) पूर्णकलषं स्वांजलौ धारयित्वा स्वमूर्ध्ना संयोज्य च आशिषः प्रार्थयेत्।

ऊँ दीर्घानागा नद्यो गिरयस्त्रीणिविष्णुपदानि च।

तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

विप्राः - ‘‘अस्तु दीर्घमायुः’’

ऊँ त्रीणि पदाव्विचक्रमेव्विष्णुर्गोपाऽअदाब्भ्यः।

अतो धर्माणि धारयन्।।

तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु। (इति यजमानो ब्रूयात्)।

विप्राः - ‘‘अस्तु दीर्घमायुः। इस प्रकार तीन बार इस मंत्र का पाठ एवं क्रिया करनी चाहिये ।

ततो यजमानः ब्राह्मणानां हस्ते जलं दद्यात् -

अपां मध्ये स्थिता तोयाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।

ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः षिवा आपो भवन्तु ते।।

‘‘ऊँ शिवा आपः सन्तु’’ इति जलं दद्यात्। ‘‘सन्तु शिवा आपः’’ इति विप्रा वदेयुः।

यजमानः -

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।

सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तु नः।।

''सौमनस्यमस्तु'' (इति विप्रहस्तेषु पुष्पं दद्यात्)

विप्राः - ''अस्तु सौमनस्यम्''।

यजमानः -

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ।।

''अक्षतंचारिष्टं चास्तु'' (इति विप्रहस्तेषु अक्षतान् दद्यात्)

विप्राः - अस्त्वक्षतमरिष्टं च।

यजमानः - ''गन्धाः पान्तु'' इति विप्रहस्तेषु गन्धं दद्यात्।

विप्राः - सुमंगल्यं चास्तु।

यजमानः - ''पुनरक्षताः पान्तु'' इति विप्रहस्तेषु अक्षतान् दद्यात्।

विप्राः - ''आयुष्यमस्तु''

यजमानः - ''पुष्पाणि पान्तु''

विप्राः - ''सौश्रियमस्तु''

यजमानः - ''सफलताम्बूलानि पान्तु''

विप्राः - ''ऐश्वर्यमस्तु''

यजमानः - दक्षिणाः पान्तु

विप्राः - बहुधनमस्तु

यजमानः - ''पुनरत्रापः पान्तु।

विप्राः - सकलाराधने स्वर्चितमस्तु

यजमानः - दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यषोविद्याविनयोवित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु। (इति वाक्येन विप्रान् प्रार्थयेत्)

विप्राः - तथास्तु।

यजमानः - यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते, तमहमोंकारमादिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिसंमतं भवद्भिरनुज्ञातं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्राः - वाच्यताम्।

यजमानः - ऊँ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोतप्रचतिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत।।1।।

सवितात्वा सवानां सुवतामग्निर्गृहपतीनां सोमोव्वनस्पतीनाम् । बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्योव्वरुणो धर्मपतीनाम् ।।2।।

न तद्रक्षां सि न पिषाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजं ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः। स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।।3।।

उच्चा ते जातमन्धसो दिविसद्भूम्याददे। उग्रं षर्म्ममहिश्रवः ।।4।।

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँ2इयक्षते ।5।।

व्रत-जप-नियम-तप-स्वाध्याय-क्रतु-षम-दम-दया-दान-विषिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् । (इति विप्रान् प्रार्थयेत्)

विप्राः - समाहितमनसः स्मः ।

यजमानः - प्रसीदन्तु भवन्तः ।

विप्राः - प्रसन्नाः स्मः

यजमानः - ऊँ शान्तिरस्तु। ऊँ पुष्टिरस्तु। ऊँ तुष्टिरस्तु। ऊँ वृद्धिरस्तु। ऊँ अविघ्नमस्तु। ऊँ आयुष्यमस्तु। ऊँ आरोग्यमस्तु। ऊँ शिवमस्तु। ऊँ शिवं कर्मास्तु। ऊँ कर्मसमृद्धिरस्तु। ऊँ धर्मसमृद्धिरस्तु। ऊँ वेदसमृद्धिरस्तु। ऊँ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ऊँ इष्टसम्पदस्तु। बहिः ऊँ अरिष्टनिरसनमस्तु। ऊँ यत्पापं रोगोऽषुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

अन्तः ऊँ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ऊँ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ऊँ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। ऊँ उत्तरोत्तराः क्रियाः षुभाः षोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ऊँ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ऊँ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ऊँ तिबकरणे समुहूर्ते-सनक्षत्रे-सग्रहे-सलग्ने-साधिदैवते प्रीयेताम्। ऊँ दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम्। ऊँ अग्निपुरोगा विश्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ऊँ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ऊँ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ऊँ विष्णुपुरोगाः एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ऊँ ब्रह्म च ब्राह्मणाष्च प्रीयन्ताम्। ऊँ श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ऊँ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ऊँ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ऊँ भगवती माहेष्वरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ऊँ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ऊँ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ऊँ सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्। बहिः ऊँ हताष्च ब्रह्मद्विषः। ऊँ हताष्च परिपन्थिनः। ऊँ हताष्च विघ्नकर्तारः। ऊँ षत्रवः पराभवं यान्तु। ऊँ षाम्यन्तु घोराणि। ऊँ षाम्यन्तु पापानि। ऊँ षाम्यन्त्वीतयः। ऊँ षाम्यन्तूपद्रवाः। अन्तः ऊँ षुभानि वर्द्धन्ताम्। ऊँ षिवा आपः सन्तु। ऊँ षिवा ऋतवः सन्तु। ऊँ षिवा अग्नयः सन्तु। ऊँ षिवा आहुतयः सन्तु। ऊँ षिवा वनस्पतयः सन्तु। ऊँ षिवा ओषधयः सन्तु। ऊँ षिवा अतिथयः सन्तु।

ऊँ अहोरात्रे षिवे स्याताम्। ऊँ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। ऊँ षुक्रांगारकबुधबृहस्पतिषनैष्चरराहुकेतुसोमसहितादिव्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ऊँ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ऊँ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ऊँ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ऊँ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। ऊँ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

यजमानः - एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्राः - वाच्यताम्।

यजमानः -

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाण (अमुक) कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः पुण्याह भवन्तो ब्रुवन्तु। (इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेण त्रिर्ब्रूयात्।) ऊँ पुण्याहं, ऊँ पुण्याहं, ऊँ पुण्याहम् इति त्रिर्विप्राः ब्रूयुः। ऊँ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विष्वाभूतानिजातवेदः पुनीहि मा।

यजमानः -

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाण (अमुक) कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रवुन्तु।

विप्राः - ऊँ कल्याणं! ऊँ कल्याणं। ऊँ कल्याणम्।

ऊँ यथेमां व्वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्ब्रह्मराजन्याभ्यां षूद्राय चार्याय च स्वायचारणाय च। प्रियो देवानान्दक्षिणायै दातुरिहभूयासमयम्मेकामः समृद्ध्यतामुपमादोनमतु।।

यजमानः -

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाण (अमुक) कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रवुन्तु।

विप्राः -

ऊँ कर्म ऋध्यताम्। ऊँ कर्म ऋध्यताम्। ऊँ कर्म ऋध्यताम्। ऊँ

सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽभूम। दिवम्पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदामदेवान्त्स्वर्ज्योतिः।

यजमानः -

स्वस्तिस्तु याऽविनाषाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।

विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रवन्तु नः।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाण (अमुक) अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रवुन्तु।

विप्राः -

ऊँ आयुष्मते स्वस्ति। ऊँ आयुष्मते स्वस्ति। ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।

ऊँ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विष्ववेदाः।

स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमानः -

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।

हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च बुवन्तु नः।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाण (अमुक) कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रवुन्तु।

विप्राः -

ऊँ अस्तु श्रीः। ऊँ अस्तु श्रीः। ऊँ अस्तु श्रीः।

श्रीष्चतेलक्ष्मीष्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरुपमश्विनौ व्यात्तम्।

इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ।।

यजमानः -

मृकण्डसूनोरायुर्यद्ध्रुवलोमषयोस्तथा।

आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम षरदः षतम्।।

विप्राः -

शतं जीवन्तु भवन्तः। शतं जीवन्तु भवन्तः। शतं जीवन्तु भवन्तः।

ऊँ शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवायत्रानष्चक्राजरसन्तनूनाम्।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः।।

यजमानः -

शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।

धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि।।

भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे श्रियं भवन्तो ब्रुवन्तु। श्रियं भवन्तो ब्रुवन्तु। श्रियं भवन्तो ब्रवुन्तु।

विप्राः -

अस्तु श्रीः। अस्तु श्रीः। अस्तु श्रीः।

मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमषीय।

पशूनां रुपमन्नस्यरसो यश: श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा।।

यजमानः -

प्रजापतिर्लोकपालो धाताब्रह्मा च देवराट्।

भगवांछाष्वतो नित्यं नो रक्षन्तु च सर्वतः।।

विप्राः -

ऊँ भगवान्प्रजापतिः प्रीयताम्।

ऊँ प्रजापते न त्वदेतान्यन्योव्विष्वारूपाणिपरितो बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु व्वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।

यजमानः -

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।

श्रिये दत्ताषिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।

विप्राः -

ऊँ आयुष्मते स्वस्ति। ऊँ आयुष्मते स्वस्ति। ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।

ऊँ प्रतिपन्थामपद्महिस्वस्तिगामनेहसम्।

येन व्विश्वा: परिद्विषो व्वृणक्ति व्विन्दते व्वसु।।

ऊँ स्वस्तिवाचन समृद्धिरस्तु।

ततो यजमानः हस्ते जलाक्षत द्रव्यं चादाय संकल्पं कुर्यात् -

कृतस्य स्वस्तिवाचनकर्मणः सांगतासिध्यर्थं तत् सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

पुनर्हस्ते जलमादाय अनेन पुण्याहवाचनेन भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।

(इस पुण्याहवाचन का मूल प्रयोग पारस्करगृह्यसूत्र 1 कण्डिका के गदाधर भाष्य में किया गया है)

(किसी कारणवश या समयाभाव के कारण इस बृहद् पुण्याहवाचन को यदि न कर सकें तो

बौधायनोक्त संक्षिप्त पुण्याहवाचन कर सकते हैं। जो अधोलिखित है)

बौधायनोक्त पुण्याहवाचन

यजमानः -

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रवुन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य (अमुकाख्यस्य) कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मण पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः -

ऊँ पुण्याहम्। ऊँ पुण्याहम्। ऊँ पुण्याहम्।

ऊँ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु व्विष्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमानः -

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं बुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः -

ऊँ कल्याणम्। ऊँ कल्याणम्। ऊँ कल्याणम्।

ऊँ यथेमां व्वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां षूद्रायचार्याय च स्वायचारणाय च।।
प्रियोदेवादक्षिणायै दातुरिहभूयासमयम्मेकामः समृध्यताभुपमादो नमतु।।

यजमानः -

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृताः।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तांच ऋद्धिं ब्रवुन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुकाख्य कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः -

ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विष्ववेदाः
स्वस्तिनस्ताक्ष्योंऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।

यजमानः -

वैधृतौ च व्यतीपाते संक्रान्तौ राहुपर्वणि।
यादृग्वृद्धिमवाप्नोति तां च वृद्धिं ब्रवुन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः वृद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः वृद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः वृद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ॐ ज्यैष्ठ्यंच मऽआधिपत्यंचमे मन्युष्च मे भामश्च मेऽमष्चमेऽभश्च मे जेमा च मे महिमा च मे व्वरिमा च मे प्रथिमा च मे व्वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

यजमानः -

सरित्पतेश्च या कन्या या श्रीर्विष्णुर्गृहेस्थिता।
सर्वसौख्यवती लक्ष्मीस्तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः -

अस्तु श्रीः। अस्तु श्रीः। अस्तु श्रीः।

ॐ मनसः काममाकूतिम्व्वाचः सत्यमषीय।
पषूनांरूपमन्यस्य रसो यषः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा।।

यजमानः -

शंखासुरविपत्तौ च यथाशान्तिर्धरातले।
यथा च देव देवानां तां च शान्तिं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणे अस्मिन् कर्मणि मम गृहे च शान्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मिन् कर्मणि मम गृहे च शान्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्मिन् कर्मणि मम गृहे च शान्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः -

ॐ शान्तिः। ॐ शान्तिः। ॐ शान्तिः।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः व्वनस्पतयः
शान्तिर्व्विष्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ॐ

विष्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्नऽआसुव।
मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तथा।।
भद्रमस्तु षिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु।
रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा।।
सपत्ना दुर्ग्रहा पापा दुष्टसत्वाद्युपद्रवाः।
पुण्याहं च समालोक्य निष्प्रभावा भवन्तु ते।।
(अन्ते च ब्राह्मणाः यजमान भाले तिलकं कृत्वा, हस्ते आशीर्वादं दद्युः।
इति बौधायनोक्तं पुण्याहवाचनम्।)

(यह पुण्याहवाचन प्रयोग ‘‘संस्कारदीपक’’ (महामहोपाध्यायश्रीनित्यानन्दपर्वतीयजी द्वारा लिखित ग्रन्थ) प्रथमभाग पृ. सं. 124 से लिया गया है)

बोधप्रश्न -

1. कलशपूजन के बाद कौन सा पूजन होता है?
2. पुण्याहवाचन में कम से कम कितने ब्राह्मण होते हैं?
3. पुण्याहवाचन में छोटे-छोटे वाक्यों की संख्या कितनी है?
4. स्वस्ति के योग में कौन सी विभक्ति होती है?
5. ‘‘शान्तिरस्तु’’ इत्यादिवाक्यों में हम क्या करते हैं?
6. आचार्य बौधायन किस षाखा के विद्वान् थे?
7. माध्यन्दिनशाखा के अनुसार पुण्याहवाचन का मूल प्रयोग कहाँ लिखा गया है?

3.3.2 अभिषेकः

आचार्यः पुण्याहवाचनकलशात् किंचित् जलं पात्रे गृहीत्वा वामे पत्नीं चोपवेष्य चतुर्भिर्ब्राह्मणैः सह दूर्वायुतेनाम्रपल्लवैः कलशोदकेन सकुटुम्बं यजमानमभिषिंचेत्।

(पुण्याहवाचन कलश से थोड़ा जल, एक पात्र में लेकर पत्नी को वाम भाग में बिठाकर, आचार्य चार ब्राह्मणों के द्वारा दूर्वा आम्रपल्लव के साथ पुण्याहवावचन कलश के जल से सपरिवार यजमान का अभिषेक करें)

मन्त्राः -

1. ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽष्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्वै व्वाचोयन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ।

2. ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽष्विनोर्ब्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि।

3. ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽष्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम्। अष्विनोर्मैषज्ज्येन तेजसे व्ब्रह्मवर्चसायाभिषिंचामि सरस्वत्यै भैषज्जेन व्वीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलायश्रिये यषसेऽभिषिंचामि।

4. ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे।

5. ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उषतीरिवमातरः।

6. ॐ तस्माऽअरं गमामवो यस्ययक्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा चनः।

7. ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सोदेषे भवत्सरित्।।

8. ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्यसिव्वरुणस्य ऋत-सदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद

9. ॐ पुनन्तुमा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु व्विष्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा।

10. ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः पयस्वतीः प्रदिषः सन्तु मह्यम्।

11. ॐ विष्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्नऽआसुव।

12. ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो व्विष्वेदेवा यज्ञम्प्रावन्तुनः षुभे।

13. ॐ त्वं ययविष्ठदाषुषो नॄँ हे पाहि श्रृणुधीगिरः। रक्षातोकमुतत्मना।

14. ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य षुष्मिणः। प्रप्रदातारन्तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

15. ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विष्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

16. ॐ यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयंकुरुः। शन्नः कुरुप्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।

ॐ शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः। अमृताभिषेकोऽस्तु।

पौराणिकाभिषेकश्लोका: -

सुरास्त्वामभिषिंचन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा: ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः।।

प्रद्युम्नष्चानिरुद्धष्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोग्निर्भगवान् यमो वै नैर्ऋतिस्तथा।।
वरुणः पवनष्चैव धनाध्यक्षस्तथा षिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु त्वां सदा।।
कीतिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जावपुः षान्तिस्तुष्टिः कान्तिस्तु मातरः।।
एतास्त्वामभिषिंचन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यः चन्द्रमा भौम बुधजीवसितार्कजाः।।
ग्रहास्त्वामभिषिंचन्तु राहुकेतुष्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याष्चाप्सरसांगणाः।।
अस्त्राणि सर्वषस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाष्च ये।।
सरितः सागराः सर्वे तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिंचन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये।।

इत्यभिषिच्य 'अमृताऽभिषेकोऽस्तु' इति ब्राह्मणा वदेयुः। ततो यजमानः द्विराचामेत्। पत्नी च सकृदाचम्य पत्युर्दक्षिणत उपविषेत्।

इस प्रकार अमृताभिषेकोऽस्तु यह वाक्य ब्राह्मण बोलते हैं। इसके बाद यजमान दो बार षुद्ध जल से आचमन करें उसकी धर्मपत्नी एक बार आचमन कर पति के दक्षिण भाग में बैठें।

यजमान अभिषेक दक्षिणा का संकल्प करें -

कृतैतदभिषेककर्मणः सांगतासिध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

ऐसा संकल्प कर ब्राह्मणों को दक्षिणा देनी चाहिए।

इत्यभिषेकविधिः

3.3.3 बोधप्रश्न

1. अभिषेक में पत्नी, पति के किस भाग में बैठती है?
2. किस जल से अभिषेक सम्पन्न होता है?

3. पौराणिक अभिषेक श्लोक कहाँ से उद्धृत किये गये हैं?
4. संकर्षण किसे कहा गया है?
5. अर्कजः किसे कहते हैं?
6. धनाध्यक्ष किसे कहते हैं?
7. आपो हिष्ठामयोभुवः किस वेद का मंत्र है?

3.4 सारांश

इस इकाई में पुण्याहवाचन एवं अभिषेक की विधि बताई गयी है। पुण्याहवाचन में आचार्य के अलावा दो विप्रों का हस्तपूजन होता है। हस्तपूजन का तात्पर्य उनके हाथ में मंत्र पढ़ते हुए जल गन्ध, अक्षत, दक्षिणा आदि देते हैं तथा वे प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं। यह एक प्रकार से ब्राह्मणपूजन ही है। इसमें यजमान अपने सकुटुम्ब एवं सपरिवार के लिए कल्याण, स्वस्ति, लक्ष्मीप्राप्ति, यशोवृद्धि, आयुवृद्धि, आदि की कामना करता है। जिसमें ब्राह्मण शास्त्रोक्तविधि से उसे आशीर्वाद देते हैं।

यह पुण्याहवाचन बड़े बड़े यागों में चारों वेदों के द्वारा भी सम्पन्न होता है, परन्तु यहाँ प्रयोजनाभाव के कारण नहीं दिया गया। वस्तुतः इसमें चारों वेदों के विद्वानों की आवष्यकता होती है जो अपनी अपनी षाखा के अनुसार मंत्र पाठ करते हैं। इसकी विधि स्पष्टरूप से देखना हो तो महामहोपाध्याय नित्यानन्दपर्वतीय कृत संस्कारदीपक प्रथम भाग आप देख सकते हैं।

पुण्याहवाचन में लगभग 72 वाक्य हैं। कुछ वेदमंत्र तथा श्लोक हैं जो शास्त्रोक्त हैं। इस प्रकार पुण्याहवाचन का प्रयोग आपको बताया गया है

अभिषेक में पुण्याहवाचन कलश से थोड़ा जल निकालकर एक पात्र में रखकर उसमें दूर्वा आम्रपल्लव आदि मांगलिक द्रव्य से युक्त जल से सपरिवार यजमान का चार ब्राह्मण मंत्रपाठ करते हुए अभिषेक करते हैं।

3.5 शब्दावली

प्रसीदन्तु भवन्तः - आप प्रसन्न हों।
सन्तु शिवा आपः - ये जल कल्याणकारी हों
गिरयः - पर्वत
सौमनस्यमस्तु - आपका मन सद्भाव युक्त हो

अक्षतं चारिष्टं चास्तु - आपका सुतिकागृह विघ्नों से रहित हो अर्थात् स्वस्थ- सन्तान युक्त आपका घर हो।

दक्षिणेन पाणिना - दाहिने हाथ से

मूर्ध्ना संयोज्य - शिर से लगाकर

3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. कलशपूजन के बाद पुण्याहवाचन होता है।
2. पुण्याहवाचन में कम से कम दो ब्राह्मण अवश्य रहते हैं। या फिर चार ब्राह्मण।
3. पुण्याहवाचन में छोटे छोटे वाक्य लगभग 72 हैं।
4. स्वस्ति के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।
5. शान्तिरस्तु इत्यादि वाक्यों में कलश के ऊपर अक्षत छोड़ते हैं।
6. आचार्यबौधायन कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीयशाखा के विद्वान् थे।
7. पुण्याहवाचन का मूल प्रयोग पारस्करगृह्यसूत्र के प्रथम काण्ड के द्वितीय कण्डिका के ऊपर गदाधरभाष्य में है।

3.7 द्वितीय अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. अभिषेक में पत्नी पति के वाम भाग में बैठती है।
2. पुण्याहवाचन कलश के जल से अभिषेक से सम्पन्न होता है।
3. अभिषेक में पौराणिक श्लोक कर्मसमुच्चय नामक ग्रन्थ से उद्धृत है।
4. संकर्षण श्रीबलराम जी की संज्ञा है।
5. अर्कजः शनि को कहा जाता है।
6. धनाध्यक्ष कुबेर को कहते हैं।
7. आपोहिष्ठा मयोभुवः यजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा का मंत्र है।

3.8 सन्दर्भग्रन्थसूची

ग्रन्थनाम	लेखक	प्रकाशन
क. संस्कारदीपक	महामहोपाध्यायनित्यानन्दपर्वतीय	वाराणसी
ख. कर्मसमुच्चय	श्रीरामजीलालशास्त्री	वाराणसी
ग. ग्रहशान्ति	श्रीवायुनन्दनमिश्र	वाराणसी
घ. पारस्करगृह्यसूत्र	महर्षि पारस्कर	वाराणसी

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

क. अभिषेक की विधि समन्त्रक लिखें।

ख. बौधायनोक्त पुण्याहवाचन की विधि (प्रयोग) लिखें।

खण्ड 3
मातृका पूजन एवं नान्दी श्राद्ध प्रयोग

इकाई - 1 षोडशमातृका एवं सप्तघृतमातृका का आवाहन पूजन

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 षोडशमातृका का आवाहन पूजन

1.4 सप्तघृतमातृका का आवाहन पूजन

बोध प्रश्न

1.5 सारांश

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.8 सहायक ग्रन्थ सूची

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई बी0ए0के0के – 202 के तृतीय खण्ड की पहली इकाई षोडशमातृका एवं सप्तघृतमातृका आवाहन पूजन से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने कलश पूजन का अध्ययन कर लिया है। अब आप षोडशमातृका एवं सप्तघृतमातृका पूजन का अध्ययन करने जा रहे है।

षोडश का अर्थ सोलह होता है, अत: नाम से ही स्पष्ट है – षोडशमातृका अर्थात् सोलह मातृका। षोडशमातृका में सोलह कोष्ठक बनें होते है। इसमें गौरी गणेश, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, मातर, लोकमातर, धृति, पुष्टि, तुष्टि, आत्मन: कुल देवता की स्थापना की जाती है। सप्तघृतमातृका में सात मातृकायें होती है। इसमें श्री, लक्ष्मी, धृति,मेधा,पुष्टि, श्रद्धा एवं सरस्वती की स्थापना की जाती है।

इस इकाई में आपके पाठनार्थ षोडशमातृका एवं सप्तघृतमातृका का आवाहन पूजन की विधि बताई जा रही है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ षोडशमातृका क्या है। समझा सकेंगे।
- ❖ षोडशमातृका के आवाहन पूजन को जान लेंगे।
- ❖ सप्तघृतमातृका को बता सकेंगे।
- ❖ सप्तघृतमातृका के आवाहन पूजन को समझ लेंगे।
- ❖ षोडशमातृका एवं सप्तघृतमातृका पूजन महत्व को समझा सकेंगे।

1.3 षोडशमातृका का आवाहन पूजन

मातृका पूजन पंचांग पूजन का अंग है गणेश पूजन के अनन्तर मातृकाओं का पूजन होता है। सर्वप्रथम पूजन के पूर्व संकल्प का विधान है। संकल्प करें ------

ऊँ विष्णःविष्णुःविष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे

कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे श्रीसूये अमुकायने अमुकऋतौ महामांगल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे एवं ग्रहगुण - विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा सपत्निकोऽहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सर्वपापक्षयपूर्वक- दीर्घायुर्विपुल - धन-धान्य- पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न- सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-कीर्तिलाभ शत्रु पराजय सदभीष्टसिद्ध्यर्थं .... गणेशपूजनं, षोडशमातृका पूजन, सप्तघृतमातृका पूजनं च संकल्प: अहं करिष्ये।

स्थापना -

षोडशमातृकाओं की स्थापना के लिये पूजक दाहिनी ओर पॉच खड़ी पाइयों और पॉच पड़ी पाइयों का चौकोर मण्डल बनायें। इस प्रकार सोलह कोष्ठक बन जायेंगे। पश्चिम से पूर्व की ओर मातृकाओं का आवाहन और स्थापन करें। कोष्ठकों में रक्त चावल, गेहूँ या जौ रख दे। पहले कोष्ठक में गौरी का आवाहन होता है, अत: गौरी के आवाहन के पूर्व गणेश का भी आवाहन पुष्पाक्षतों द्वारा कोष्ठक में करे । इसी प्रकार अन्य कोष्ठकों में भी निम्नांकित मन्त्र पढ़ते हुए आवाहन करे -

षोडशमातृका - चक्र

आत्मन: कुलदेवता १६	लोकमातर: १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टि: १५	मातर: ११	जया ७	शची ३
पुष्टि १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृति १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी गणेश १

आवाहन एवं स्थापन मन्त्र –

ॐ गणपतये नम:, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ गौर्ये नम:, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पद्मायै नम:, पद्मावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ शच्यै नम:, शचीमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मेधायै नम: मेधामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सावित्र्यै नम:, सावित्रीमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ विजयायै नम:, विजयामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ जयायै नम: , जयामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ देवसेनायै नम:, देवसेनामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ स्वधायै नम:, स्वधामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ स्वाहायै नम:, स्वाहामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मातृभ्यों नम:, मातृ: आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ लोकमातृभ्यो नम: लोकमातृ: आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ धृत्यै नम:, धृतिमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पुष्टयै नम: पुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि

ॐ तुष्टयै नम: तुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि

ॐ आत्मन: कुलदेवतायै नम:, आत्मन: कुलदेवतामावाहयामि, स्थापयामि।

इस प्रकार षोडशमातृकाओं का आवाहन, स्थापना कर **ॐ मनोर्जूति जुषतामा... 0 ,** मंत्र से अक्षत छोड़ते हुए मातृका मण्डल की प्रतिष्ठा करनी चाहिये। तत्पश्चात् निम्नलिखित नाम मन्त्र से गन्धादि उपचारों द्वारा पूजन करनी चाहिये –

ॐ गणेशसहितगौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नम: ।

विशेष : - मातृकाओं को यज्ञोपवीत नही चढ़ाना चाहिये।

नैवेद्य के साथ - साथ घृत और गुड़ का भी नैवेद्य लगाना चाहिये।

विशेष अर्घ्य दे।

फल का अर्पण - नारियल आदि फल अंजलि में लेकर प्रार्थना करे –

ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरूध्वं सगणाधिपा:।।

इस तरह प्रार्थना करने के पश्चात् नारियल आदि फल चढ़ाकर हाथ जोड़कर बोले –

गेहे वृद्धिशतानि भवन्तु, उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु ।

इसके बाद –

अनया पूजया गणेशसहितगौर्यादिषोडशमातर: प्रीयन्ताम् न मम।

इस वाक्य का उच्चारण कर मण्डल पर अक्षत छोड़कर प्रणाम करना चाहिये -

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।।

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।

गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ।।

1.4 सप्तघृतमातृका आवाहन पूजन

आग्नेय कोण में किसी वेदी अथवा काष्ठपीठ पर प्रादेशमात्र स्थान में पहले रोली या सिन्दूर से स्वस्तिक बनाकर 'श्रीः' लिखे। इसके नीचे एक बिन्दु और इसके नीचे दो बिन्दु दक्षिण से करके उत्तर की ओर दे। इसी प्रकार सात बिन्दु क्रम से चित्रानुसार बनाना चाहिये -

पूर्व

।। श्रीः ।।

0

0 0

0 0 0

0 0 0 0

0 0 0 0 0

0 0 0 0 0 0

0 0 0 0 0 0 0

वसोर्धारा

इसके पश्चात् नीचे वाले सात बिन्दुओं पर घी या दूध से प्रादेश मात्र सात धाराऍं निम्नलिखित मन्त्र से दे –

घृत धाराकरण –

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ।

देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ।।

इसके बाद गुड़ के द्वारा बिन्दुओं की रेखाओं को उपर्युक्त मन्त्र पढ़ते हुए मिलाये। तदनन्तर निम्नलिखित वाक्यों का उच्चारण करते हुए प्रत्येक मातृका का आवाहन और स्थापना करे –

आवाहन स्थापन –

ऊँ भूर्भुव: स्व: श्रियै नम:, श्रियमावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ भूर्भुव: स्व: लक्ष्म्यै नम:, लक्ष्मीमावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ भूर्भुव: स्व: धृत्यै नम:, धृतिमावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ भूर्भुव: स्व: मेधायै नम:, मेधामावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ भूर्भुव: स्व: पुष्ट्यै नम:, पुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ भूर्भुव: स्व: श्रद्धायै नम:, श्रद्धामावाहयामि, स्थापयामि।

ऊँ भूर्भुव: स्व: सरस्वत्यै नम:, सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा - इस प्रकार आवाहन - स्थापन के पश्चात् एतं ते देव .... 0 मन्त्र से प्रतिष्ठा करने, तत्पश्चात् ऊँ भूर्भुव:स्व: सप्तघृतमातृकाभ्यो नम: इस नाम मन्त्र से यथालब्धोपचार पूजन करे -

प्रार्थना- तदनन्तर हाथ जोड़कर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर प्रार्थना करे -

ऊँ यदङ्गत्वेन भो देव्य: पूजिता विधिमार्गत: ।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ।।

अनया पूजया वसोर्धारादेवता: प्रीयन्ताम् न मम। ऐसा उच्चारण कर मण्डल पर अक्षत छोड़ दे। पूजक अंजलि में पुष्प ग्रहण करे तथा ब्राह्मण आयुष्य मन्त्र का पाठ करें।

आयुष्य मन्त्र –

ऊँ आयुष्यं वर्चस्य गूँ रायस्पोषमौद्भिदम्। इद गूँ हिरण्यं वर्चस्वजैत्रायाविशतादु माम्।
ऊँ न तद्रक्षा गूँ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोज: प्रथमज गूँ ह्येतत् ।।
यो विभर्ति दाक्षायण गूँ हिरण्य गूँ स देवेषु कृणुते दीर्घमायु: स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायु:।

ऊँ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य गूँ शतानीकाय सुमनस्यमाना: । तन्म आ बध्नामि
शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ।।
यदायुष्यं चिरं देवा: सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरद: शतम् ।।
दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ता: सप्तार्णवा दिश: ।

सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च।

अविनाश्यायुषा जद्वज्जीवेम शरद: शतम्॥

पुष्पार्पण - आयुष्यमन्त्र के श्रवण के बाद अंजलि के पुष्पों को सप्तघृतमातृका मण्डल पर अर्पण कर दें।

बोध प्रश्न -

१. निम्नलिखित में मातृका पूजन किसका अंग है –

क. पंचांग पूजन का ख. गणेश पूजन का ग. श्राद्ध पूजन का घ. षोडशमातृका पूजन का

२. षोडशमातृका में कितने कोष्ठक होते हैं –

क. १५ ख. १६ ग. १७ घ. ८

३. षोडशमातृका में सातवॉ स्थान हैं –

क. मेधा ख. जया ग. विजया घ. पद्मा

४. सप्तघृतमातृका काष्ठपीठ के किस कोण में बनाना चाहिये –

क. ईशान कोण ख. वायव्य कोण ग. आग्नेय कोण घ. नैर्ऋत्य कोण

५. सप्तघृत मातृका में कितनी मातृकायें होती है।

क. ८ ख. १० ग. ७ घ. ९

1.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि मातृका पूजन पंचांग पूजन का अंग है गणेश पूजन के अनन्तर मातृकाओं का पूजन होता है। षोडश का अर्थ सोलह होता है, अत: नाम से ही स्पष्ट है – षोडशमातृका अर्थात् सोलह मातृका। षोडशमातृका में सोलह कोष्ठक बनें होते है। इसमें गौरी गणेश, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, मातर, लोकमातर, धृति, पुष्टि, तुष्टि, आत्मन: कुल देवता की स्थापना की जाती है। सप्तघृतमातृका में सात मातृकायें होती है। इसमें श्री, लक्ष्मी, धृति,मेधा,पुष्टि, श्रद्धा एवं सरस्वती की स्थापना की जाती है। मातृकाओं में षोडशमातृका एवं सप्तघृतमातृका प्रधान है। पूजन में इनका महत्व भी पण्डित समाज को सर्वविदित है। अत: इस इकाई के अध्ययन से आपने जान लिया है कि षोडशमातृका एवं स्पतघृतमात्का पूजन का क्या महत्व है। उनका आवाहन पूजन कैसे किया जाता है।

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

षोडश – सोलह

सप्त – सात

पूजक – पूजन करने योग्य

कोष्ठक – खाने

जयायै – जय के लिए

श्री- लक्ष्मी

आवाहयामि – आवाहन करता हूँ।

स्थापयामि – स्थापना करता हूँ।

यथोपलब्ध - जितना उपलब्ध हो।

अनन्त – जिसका अन्त न हो।

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

१. क

२. ख

३. ख

४. ग

५. ग

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

नित्यकर्मपूजाप्रकाश

कर्मकाण्ड प्रदीप

संस्कार प्रदीप

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

१.षोडशमातृका का आवाहन पूजन मन्त्र सहित लिखिये।

२. सप्तघृतमातृका पूजन का चक्र द्वारा समझाते हुए आवाहन पूजन लिखिये।

३. कर्मकाण्ड में षोडशमातृका एवं सप्तघृतमातृका पूजन का महत्व बतलाइए।

इकाई - 2 नान्दी श्राद्ध परिचय एवं प्रयोग विधि

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 नान्दी श्राद्ध परिचय
बोध प्रश्न
2.4 सारांश
2.5 पारिभाषिक शब्दावली
2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.7 सहायक ग्रन्थ सूची
2.8 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई बी0ए0के0के – 202 की तृतीय खण्ड की दूसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई के पूर्व आपने षोडशमातृका एवं सप्तघृतमातृका का आवाहन पूजन का अध्ययन कर लिया है। अब इस इकाई में आप नान्दी श्राद्ध का अध्ययन करने जा रहे हैं ।

नान्दी श्राद्ध सभी शुभ कार्यों में भी किया जाता है। इसके पूजन की विधि क्या है। विवाह में इसे किस प्रकार किया जाता है, इसे करने हेतु शुभ समय कौन सा होता है आदि इत्यादि का ज्ञान आप प्रस्तुत इकाई में करने जा रहे है।

श्रद्धापूर्वक पितरों की शान्ति हेतु किया गया कार्य 'श्राद्ध' कहलाता है। श्राद्ध का सम्बन्ध वस्तुत: पितरों से है। नान्दी श्राद्ध अशुभ के साथ शुभ कार्यों में भी किया जाता है। आइये इस इकाई में हम नान्दी श्राद्ध का अध्ययन करते हैं।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ नान्दी श्राद्ध को परिभाषित कर सकेंगे।
- ❖ नान्दी श्राद्ध पूजन को जान जायेंगे।
- ❖ कर्मकाण्ड में इसके महत्व निरूपण कर सकेंगे।
- ❖ विवाह में नान्दी श्राद्ध को समझा सकेंगे।
- ❖ नान्दी श्राद्ध का प्रयोजन समझा सकेंगे।

2.3 नान्दी श्राद्ध

'श्रद्धया दीयते यत् तत् श्राद्धम्' पितरों की तृप्ति के लिए जो सनातन विधि से जो कर्म किया जाता है उसे **'श्राद्ध'** कहते हैं। किसी भी कर्म को यदि श्रद्धा और विश्वास से नहीं किया जाता तो वह निष्फल होता है। महर्षि पाराशर का मत है कि देश-काल के अनुसार यज्ञ पात्र में हवन आदि के द्वारा, तिल, जौ, कुशा तथा मंत्रों से परिपूर्ण कर्म श्राद्ध होता है। इस प्रकार किया जाने वाला यह पितृ यज्ञ कर्ता के सांसारिक जीवन को सुखमय बनाने के साथ परलोक भी सुधारता है। साथ ही जिस

दिव्य आत्मा का श्राद्ध किया जाता है उसे तृप्ति एवं कर्म बंधनों से मुक्ति भी मिल जाती है। अनेक धर्मग्रंथों के अनुसार नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि और पार्वण **पाँच प्रकार के श्राद्ध** बताए गए हैं जिनमें प्रतिदिन पितृ और ऋषि तर्पण आदि द्वारा किया जाने वाला श्राद्ध **नित्य श्राद्ध** कहलाता है। इसमें केवल जल प्रदान करने से भी कर्म की पूर्ति हो जाती है। इसी प्रकार, एकोद्दिष्ट श्राद्ध को नैमित्तिक, **किसी कामना की पूर्ति हेतु काम्य श्राद्ध, पुत्र प्राप्ति, विवाह आदि मांगलिक कार्यों में जिनसे कुल वृद्धि होती है, के पूजन के साथ पितरों को प्रसन्न करने के लिए वृद्धि श्राद्ध किया जाता है जिसे 'नान्दी श्राद्ध भी कहते हैं।** इसके अलावा पुण्यतिथि, अमावस्या अथवा पितृ पक्ष (महालय) में किया जाने वाला श्राद्ध कर्म पार्वण श्राद्ध कहलाता है। भादों की पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक के सोलह दिन पितरों की जागृति के दिन होते हैं जिसमें पितर देवलोक से चलकर पृथ्वी की परिधि में सूक्ष्म रूप में उपस्थित हो जाते हैं तथा भोज्य पदार्थ एवं जल को अपने वंशजों से श्रद्धा रूप में स्वीकार करते हैं। आज के प्रगतिवादी युग में प्रायः लोगों के पास इस विज्ञान के रहस्य को जानने की अपेक्षा नकारने की हठधार्मिता ज्यादा दिखाई देती है।
यदि हम विचार करें तो सामान्य सांसारिक व्यवहारों में भी दावत या पार्टियों में इष्ट मित्रों की उपस्थिति से कितनी प्रसन्नता होती है। यदि हम अपने पूर्वजों की स्मृति में वर्ष में एक-दो बार श्राद्ध पर्व मनाते हुए स्वादिष्ट भोज्य पदार्थों का पितृ प्रसाद मिल बाँट कर खाएँ तो उससे जो आत्मीय सुख प्राप्त होता है वह शायद मौज-मस्ती के निमित्त की गई पार्टियों से कहीं आगे होगा।
कुछ लोग यह भी सोचते होंगे कि श्राद्ध में प्रदान की गई अन्न, जल, वस्तुएँ आदि सामग्री पितरों को कैसे प्राप्त होती होगी। यहाँ यह भी तर्क दिया जाता है कि कर्मगति के अनुसार जीव को अलग-अलग गतियाँ प्राप्त होती हैं। कोई देव बनता है तो कोई पितर, कोई प्रेत तो कोई पशु पक्षी। अतः श्राद्ध में दिए गए पिण्डदान एवं एक धारा जल से कैसे कोई तृप्त होता होगा? इन प्रश्नों के उत्तर हमारे शास्त्रों में सूक्ष्म दृष्टि से दिए गए हैं। 'नाम गोत्र के आश्रय से विश्वदेव एवं अग्निमुख हवन किए गए पदार्थ आदि दिव्य पितर ग्रास को पितरों को प्राप्त कराते हैं। यदि पूर्वज देव योनि को प्राप्त हो गए हों तो अर्पित किया गया अन्न-जल वहाँ अमृत कण के रूप में प्राप्त होगा क्योंकि देवता केवल अमृत पान करते हैं। पूर्वज मनुष्य योनि में गए हों तो उन्हें अन्न के रूप में तथा पशु योनि में घास-तृण के रूप में पदार्थ की प्राप्ति होगी। सर्प आदि योनियों में वायु रूप में, यक्ष योनियों में जल आदि पेय पदार्थों के रूप में उन्हें श्राद्ध पर्व पर अर्पित पदार्थों का तत्व प्राप्त होगा।
श्राद्ध पर अर्पण किए गए भोजन एवं तर्पण का जल उन्हें उसी रूप में प्राप्त होगा जिस योनि में जो उनके लिए तृप्ति कर वस्तु पदार्थ परमात्मा ने बनाए हैं। साथ ही वेद मंत्रों की इतनी शक्ति होती है कि

जिस प्रकार गायों के झुंड में अपनी माता को बछड़ा खोज लेता है उसी प्रकार वेद मंत्रों की शक्ति के प्रभाव से श्रद्धा से अर्पण की गई वस्तु या पदार्थ पितरों को प्राप्त हो जाते हैं। वस्तुतः श्रद्धा एवं संकल्प के साथ श्राद्ध कर्म के समय प्रदान किए गए पदार्थों को भक्ति के साथ बोले गए मंत्र पितरों तक पहुँचा देते हैं। मनुष्य और परमात्मा के बीच की कड़ी चन्द्रलोक में स्थित पितर ही होते है। जब मनुष्य श्रद्धापूर्वक पितर को याद करता है, तो पितर भी उसकी बात परमात्मा तक शीघ्र पहॅुचा देते है। जिससे मनुष्य का जीवन सुखमय हो जाता है। जो मनुष्य अपने पितरों का श्राद्धादि कर्म करते हैं, नि:शंसय ही उनका कल्याण होता है।

नान्दी श्राद्ध आरम्भ का मन्त्र –

देवताभ्यः देवताभ्य महायोगिभ्य एव च
नमः स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः वार च
सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगा कालज्जरे गिरौ
चक्रवाकाः शरदिद्वपे हंसाः सरीस मानसे
तेऽपि जाताः कुरूक्षेत्र ब्रह्मणा वेद पारणाः
प्रस्थितादीर्य मध्वान धूयं किमवासीदथ
श्राद्धकाले गयां ध्यात्वदेव गदाधरम-
मनसा च पितितन्ध्त्वा नान्दीश्रादं समारभे ॥

वृद्धावस्था प्राप्त हो जाने पर पुत्रवान कुटुम्बी, आस्तिक धनी काशीवास कर लेते थे, अथवा अन्यत्र कहीं गंगातट पर- निवास करके ईश्वर भजन करते थे-। पर अब लोग पुत्रादि के समीप रहना आवश्यक समझते हैं। मृत्यु के समय गीता और श्रीमद्भागवतादि का पाठ सुनना, रामनाम का जप करना स्वर्गदायक समझा जाता है। गोदान और दशदान कराके-, होश रहतेरहते मृतक को चारपाई से - उठाकर जमीन में लिटा दिया जाता है। प्राण रहते गंगा जल डाला जाता है। प्राण निकल जाने पर मुखछिद्रादि में-नेत्र- सुवर्ण के कण ड़ाले जाते हैं। फिर स्नान कराकर चंदन व यज्ञोपवीत पहनाये जाते हैं। शहर व गाँव के मित्र, बांधव तथा पड़ोसी उसे श्मशान ले जाने के लिए मृतक के घर पर एकत्र होते हैं। मृतक के ज्येष्ठ पुत्र, उसके अभाव में कनिष्ठ पुत्र, भाईभतीजे या बांधव को मृतक का दाह - तथा अन्य संस्कार करने पड़ते हैं। जौ के आटे से पिंडदान करना होता है। नूतन वस्त्र के गिलाफ (खोल) में प्रेत को रखते हैं, तब रथी में वस्त्र बिछाकर उस प्रेस को रख ऊपर से शाल, दुशाले या अन्य वस्त्र ड़ाले जाते हैं। मार्ग में पुन: पिंड़दान होता है। घाट पर पहुँचकर प्रेत को स्नान कराकर चिता में रखते हैं। श्मशानघाट- ज्यादातर दो नदियों के संगम पर होते हैं। पुत्रादि कर्मकर्ता अग्नि देते

हैं। कपाल क्रिया करने के पश्चात् चिता की शांति दुग्ध आदि से करते है। कपूतविशेष कपोत) यानि कबूतक के तुल्य सिर पर बाँधना होता है। इस 'छोपा' कहते हैं। मुर्दा फूँकनेवाले सब लोगों को स्नान करना पड़ता है। पहले कपड़े भी धोते थे। अब शहर में कपड़े कोई नहीं धोता। हाँ, देहातों में कोई धोते हैं। गोसूत्र के छींटे देकर सबकी शुद्धि होती है। देहात में बारहवें दिन मुर्दा फूँकनेवालों का 'कठोतार' के नाम से भोजन कराया जाता या सीधा दिया जाता है। नगर में उसी समय मिठाई, चाय या फल खिला देते हैं। कर्मकर्ता को आगे करके घर को लौटते हैं। मार्ग में एक काँटेदार शाखा को पत्थर से दबाकर सब लोग उस पर पैर रखते हैं। श्मशान से लौटकर अग्नि छूते हैं, खटाई खाते हैं।

कर्मकर्ता को एक बार हविष्यान्न भोजन करके ब्रह्मणचर्यपूर्वक रहना पड़ता- है। पहले, तीसरे, पाँचवे, सातवें या नवें दिन से दस दिन तक प्रेत को अंजलि दी जाती है, तथा श्राद्ध होता है। मकान के एक कमरे में लीपपोतकर गोबर की बाढ़ लगाकर दीपक जला देते हैं।- कर्मकर्ता को उसमें रहना होता है। वह किसी को छू नहीं सकता। जलाशाय के समीप नित्य स्नान करके तिलाञ्जलि के बाद पिंडदान करके छिद्रयुक्त मिट्टी की हाँड़ी को पेड़ में बाँध देते हैं, उसमें जल व दूध मिलाकर एक दंतधावन (दतौन) रख दिया जाता है और एक मंत्र पढ़ा जाता है, जिसका आशय इस प्रकार है - "शंखरायण प्रेतके मेक्ष देवें। आकाश में वायुभूतधारी ना-चक्र गदा- निराश्रय जो प्रेत है, यह जल मिश्रित दूध उसे प्राप्त होवे। चिता की अग्नि से भ किया हुआ, बांधवों से परिव्यक्त जो प्रेत है, उसे सुखशान्ति मिले-, प्रेतत्व से मुक्त होकर वह उत्तम लोक प्राप्त करे।के सात पुश्तके भीतर " बांधव- वर्गों को क्षौर और मुंडन करके अञ्जलि देनी होती है। जिनके मातापिता होते हैं-, वे बांधव मुंडन नहीं करते, हजामत बनवाते हैं। दसवें दिन कुटुम्बी बांधव सबको घर की लीपापोती व शुद्धि करके - सब वस्त्र धोने तथा बिस्तर सुखाने पड़ते हैं। तब घाट में स्नान व अञ्जलिदान करने जाना पड़ता है। १० वें दिन प्रेत कर्म करने वाला हाँड़ी को फोड़ दंड व चूल्हे को भी तोड़ देता है, तथा दीपक को जलाशय में रख देता है। इस प्रकार दस दिन का क्रियाकर्म पूर्ण होता है। कुछ लोग दस दिन तक - नित्य दिन में गरुड़पुराण सुनते हैं।

ग्यारहवें दिन का कर्म एकादशाह तथा बारहवें दिन का द्वादशाह कर्म कहलाता है। ग्यारहवें दिन दूसरे घाट में जाकर स्नान करके मृतशय्या पुन: नूतन शय्यादान की विधि पूर्ण करके वृषोत्सर्ग होता है, यानि एक बैल को दाग देते हैं। बैल न हुआ, तो आटे गा बैल बनाते हैं। ३६५ दिन जलाये जाते हैं। ३६५ घड़े पानी से भरकर रखे जाते हैं। पश्चात् मासिक श्राद्ध तथा आद्य श्राद्ध का विधान है द्वादशाह के दिन स्नान करके सपिंडी श्राद्ध किया जाता है। इससे प्रेतमंडल से प्रेत का हटकर पितृमंडल में - पितृगणों के साथ मिलकर प्रेत का बसुहै। इसके न होने से प्रेत का निकृष्ट स्वरुप होना माना जाता-

योनि से जीव नहीं छूट सकता, ऐसा विश्वास बहुसंख्यक हिन्दुओं का है। इसके बाद पीपलवृक्ष की - पूजा, वहाँ जल चढ़ाना, फिर हवन, गोदान या तिल पात्रदान करना होता है। इसके अनन्तर- शुक शान्ति तेरहवीं का कर्म ब्रह्मभोजनादि इसी दिन कुमाऊँ में करते हैं। देश में यह तेरहवीं को होता है। श्राद्ध तिथि पर मृतक का मासिक-प्रतिमास मृत्यु -श्राद्ध किया जाता है। शुभ कर्म करने के पूर्व मासिक श्राद्ध एकदम कर दिए जाते हैं, जिन्हें "मासिक चुकाना कहते हैं। "साल भर तक ब्रह्मचर्य पूर्वकस्व-पाकी रहकर वार्षिक नियम मृतक के पुत्र को करने होते हैं। बहुत सी चीजों को न खाने व न बरतने का आदेश है । साल भर में जो पहला श्राद्ध होता है, उसे 'वर्षा' कहते हैं । प्रतिवर्ष मृत्यु- श्राद्ध किया जाता है। आश्विन तिथि को एकोदिष्ट कृष्णपक्ष में प्रतिवर्ष पार्वण श्राद्ध किया जाता है। काशी, प्रयाग, हरिद्वार आदि तीर्थों में तीर्थश्राद्ध किया जाता है। तथा गयाधाम में - गयाश्राद्ध- करने की विधि है। गया में मृतकश्राद्ध करने के बाद श्राद्ध न भी करे-, तो कोई हर्ज नहीं माना जाता। प्रत्येक संस्कार तथा शुभ कर्मों में आभ्युदयिक "नान्दी श्राद्धपूजन -करना होता है। देव " पूजन भी होना चाहिए।-के साथ पितृ कर्मेष्ठी लोग नित्य तपंण, कोईकोई नित्य श्राद्ध भी करते हैं। - हर अमावस्या को भी तपंण करने की रीति है। घर का बड़ा ही प्रायइन कामों को : करता है। शिल्पकार हरिजन जो सनातनधर्मी हैं, वे अमंत्रक क्रियाकर्म तथा मुंडन करते- हैं, और श्राद्ध ज्यादातर आश्विन कृष्ण अमावस्या को करते है। जमाई या भांजे ही उनके पुरोहित होते हैं।

नान्दी श्राद्ध कर्म तो सभी शुभ कार्यों में भी किया जाता है। यहॉ विवाह में नान्दी श्राद्ध का क्या औचित्य है इसको समझियें -

1. विवाह मे अशौच आदि की सभावना हो तो 10 दिनो पहले नान्दी मुख श्राद्ध करना चाहिये नान्दी मुख श्राद्ध के बाद विवाह सम्पन्न अशौच होने पर भी वर- वधु को और श्राद्ध करना चाहिये। नान्दी श्राद्ध करने के पश्चात् वर – वधू एवं उनके माता – पिता को अशौच नहीं लगता है।

2. "कुष्माण्ड सूक्तके अनुसार नान्दी् श्राध्द के पहले भी विवाह के लिए " सामग्री तैयार होने पर आशौच प्राप्ति हो तो प्रायश्चित करके विवाह कार्यक्रम होता है. प्रायश्चित के लिए हबन , गोदान और पञ्चगव्य प्राशन करें।

3. विवाह के समय हवन में पूर्व अथवा मध्य में या अन्त में कन्या यदि रजस्वला हो जाने पर कन्या को स्नान करा कर ``युञ्जान``इस मंत्र से हवन करके अवशिष्ट कर्म करना चाहिये

4. वधु या वर के माता को रजोदर्शन की संभावना हो तो नान्दी श्राद्ध दस दिनो के पूर्व कर लेना चाहिये। नान्दी श्राद्ध के बाद रजोदर्शनजन्य दोष नहीं होता।

5. नान्दी श्राद्ध के पहले रजोदर्शन होने पर " शुद्ध होकर श्राद्ध करना चाहिये।

6. वर या वधू की माता के रजस्वला अथवा सन्तान प्राप्ति होने पर विवाह करके श्रीशांति कर सकता है।

7. विवाह में आशौच की संभावना हो तो, आशौच के पूर्व अन्न का संकल्प कर देना चाहिये। फिर उस संकल्पित अन्न का दोनों पक्षों के मनुष्य भोजन कर सकते हैंउसमें कोई दोष नहीं होता है.। परिवेषण असगोत्र के मनुष्य को करना चाहिये।

8. विवाह में वरवधू को- "ग्रन्थिबन्धन.शास्त्र विहित है कन्यादान के पूर्व " .कन्यादान के बाद नहीं कन्यादाता को अपनी स्त्री के साथ ग्रन्थिबन्धन कन्यादान के पूर्व होना चाहिये।

9. दो कन्या का विवाह एक समय हो सकता है परन्तु एक साथ नही। लेकिन एक कन्या का वैवाहिक कृत्य समाप्त होने पर द्वार. भी हो सकता है भेद और आचार्य भेद से-

10. एक समय में दो शुभ कर्म करना उत्तम नहीं है। उसमें भी कन्या के विवाह के अनन्तर पुत्र का विवाह हो सकता है। परन्तु पुत्र विवाह के अनन्तर पुत्री का विवाह छ: महिने तक नहीं हो सकता।

11. समान गोत्र और समान प्रवर वाली कन्या के साथ विवाह निषिध्द है।

12. विवाह के पश्चात एक वर्ष तक पिण्डदान, मृत्तिका स्नान, तिलतर्पण, तीर्थयात्रा,मुण्डन, प्रेतानुगमन आदि नहीं करना चाहिये।

13. विवाह में छिंक का दोष नहीं होता है।

14. वैवाहिक कार्यक्रम में स्पर्शास्पर्श का दोष नहीं होता।

15. वैवाहिक कार्यक्रम में चतुर्थ, द्वादश, चन्द्रमा ग्राहय है।

16. विवाह में छट, अष्टमी, दशमी तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा रिक्ता आदि तिथि निषेद्ध है।

17. विवाह के दिन या पहले दिन अपनेअपने घरों में कन्या के पिता और वर के पिता- को स्त्री,कन्या.स्नानकरना चाहिये पुत्र सहित मंगल- और शुद्ध नवीन वस्त्र -तिलकआभूषण आदि से -करना (नान्दी श्राद्ध) विभूषित होकर गणेश मातृका पूजन चाहिये।

18. श्रेष्ठ दिन में सौलह या बारह या दस या आठ हाथ के परिमाण का मण्डप चारौं द्वार सहित बनाकर उसमें एक हाथ की चौकौर हवनकरती हुई बनावें उसे हल्दी वेदी पूर्व को नीची-, गुलाल, गोघुम तथा चूने आदि से सुशोभित करें. वेदी के चारों ओर काठ की चार-हवन खुंठी निम्नप्रकार से रोपे, उन्हीं के बाहर सूत लपेटे कन्या, सिंह और तुला राशियां संक्राति में तो ईशान कोण में प्रथम वृश्चक, धनु, और मकर ये राशियां संक्राति में तो वायव्य कोण में प्रथम मीन, मेष और कुम्भ ये राशियां संक्रांति में तो नऋर्त्य कोण में प्रथम. वृष , मिथुन और कर्क ये राशियां संक्राति में तो नान्दी श्राद्ध करना चाहिए।

प्रयोग विधि –

नान्दी श्राद्ध पंचांग पूजन का अंग है सभी संस्कारो से और शुभ कर्मो से पूर्व आभ्युदयिक करना अनिवार्य है।

सर्वप्रथम एक पुष्प लेकर हाथ जोड़ें और मन्त्र बोलें

यं ब्रता वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरूषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ।।
अभीप्सितार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ।।

पुष्प गणेश जी में चढायें। अपने दायी और कर्म पात्र स्थापन करें भूमि का स्पर्श करें।

स्वदक्षिण भागे कर्म पात्रस्था पनम्- ऊँ भूरीरस्यदितिरसि विश्वधाया व्विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री पृथिवीं अच्छ पृथिवी दृ ह पृथिवीं मा हि सीः ।।

भूमि में गन्धादि से शंखचक्र लिखें आसन के लिये तीन दूर्वा रखें फिर पात्र और पात्र के ऊपर दूर्वा की पवित्री रखें।

भूमौ गन्धारिना शंखचक्र लिखित्वा आसनंदूर्वात्रय आसने पात्रं पवित्रीकरणं दूर्वात्रयेण -

ऊँ पवित्रे स्थे बैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यीच्छद्रेण पीकोण सूर्यस्य रश्मिभिः।।

तत्पश्चात् अर्धा में जल चढ़ाये और मन्त्र बोलें-

ऊँ शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः ।

अब कर्म पात्र में जौ गन्ध अक्षत पुष्प चढ़ायें

यवान-ऊँ यवोऽसि यवयास्मद् देषो यवयारातीः

ऊँ यवोऽसि सोम देवत्यो गोसवो देवनिर्मितः प्रत्नमद्भिःपृष्टया नान्दीमुखाँन्नोकान्प्रीणाहिनःस्वहा।।

यव गन्धाक्षत पुष्पादितूष्णी निक्षित्य

तेन जलेन आत्मानं नान्दीमुखश्राद्धं सामग्रीं च सम्प्रीक्ष्य अपवित्र............।

दूर्वा और जौ लेकर हाथ जोडें मन्त्र बोलें--

देवताभ्यः देवताभ्य महायोगिभ्य एवं च
नमः स्वाहायै नित्यमेव नमोनमः बार
सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगा कालज्जरे गिरौ
चक्रवाकाः शरदिद्वपे हंसाः सरीस मानसे
तेडप जाताःकुरूक्षेत्र ब्रह्मणा वेद पारणाः

प्रस्थितादीर्य मध्वान धूयं किमवासीदथ

श्राद्धकाले गयां ध्यात्वदेव गदाधरम-

मनसा चपितततन्ध्त्वा नान्दीश्रादं समारभे।।

इसके बाद जौ और दूर्वा दाई कमर में धोती में दबा लें और मन्त्र बोलें--

ऊँ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्म्मासि शर्म-षजमानस्य योनिरीस सुसस्याः कृपीकृधी ।।

दिखन्धनम्- दूर्वा और जौ लेकर चारों दिशाओं में छोडें मन्त्र बोलें--

ऊँ अग्निष्वाताः पितृगणाः प्राचींक्षन्तुमेदिशम्

तथा बार्हिषदः पान्तु याम्यां यक पितरस्तथा ।

प्रतीचीमाज्यस्तद्वदुदीचीमापि सोमपाः

विदिशष्च गणाः सर्वे रक्षन्तूर्ध्वमधोपि वा

रक्षोभूमश्चाधिपस्तेषां यगो रक्षां करोतु मे।।

यवा रक्षन्तु दितिजात दर्भा रक्षन्तु राक्षसात्

पांत्ति वै श्रेत्रियो रक्षेदीतीथिः,

अब गायत्री मन्त्र का स्मरण करके कर्म पात्र के जल को अभिमन्त्रित करें

गायत्रा कर्मपात्रोदभं अभिमन्त्रय तेन जलेनशुद्दि दृष्टिदोष निपातादामात्रा दीनां पकितास्तु इति अन्नं संप्रोक्ष

तत्पश्चात् पतिज्ञा संकल्प करें --

प्रतिज्ञासंकल्पः- अद्येहेत्यादि देशकालो संकोर्त्य अमुक गोत्राणामस्मन्मातृपिता महीप्रपितामहीनाम अमुकामुक देर्वानां वसुरूप्रादित्यस्वरूपाणां नान्दीमुखीनां तथ्सस मुक गोत्राणामस्मत्पतृपितामह प्रपितामहानां अमुकामुक देवानां वसुरूद्रदित्यस्वरूपाणां नान्दीमुखानां तथा अमुक गोत्राणामस्मन्मातमहप्रतामह्त्ववृद्धप्रमातामहानाम अमुकामुक देवानां सपत्नीकानां वसुरूद्रदित्यस्वरूपाणां नान्दीमुखानां प्रीतये अमुककर्म्मनिमित्तकं सत्यवसुसंज्ञक विश्वेदेव पूर्वकं संक्षिप्त संकल्पाविधिना नान्दी मुचखश्राद्धमहं करिष्ये।।

आसनदान संकल्प --

पहला आसन विश्वेदेव का होगा 1- अद्येह नान्दीमुखा अमुकगोत्रास्मन्मात्रादित्रय तथा पित्रादित्रय तथाऽमुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनां सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां अदमासनं वो नमो वृद्धिश्रियै।।

दूसरा आसन माता दादी परदादी के लिये होगा -

2-अद्येह अमुकगोत्राणामस्मन्मातृमाहिप्रपीतामहानाम् इदमासनं वो नमो वृद्धि श्रियै।।

तीसरा आसन पिता दादा परदादा के लिये होगा---

3-अद्येह अमुकगोत्राणा मस्मपितृपितामानाम् अमुकामुक देवानां वसुस्द्रदित्यस्वरूपाणां नान्दीमुर्खीनी इदमासनं वो नमो वृद्धि2 श्रियै।।

चौथा आसन नाना परनाना वृद्धनाना के लिये होगा--

4-अद्येह अमुकामुकदेवानां सपत्नीकानां वसुरूद्रदित्यस्वरूपाणी नान्दीमुखानाम् अदमासनं वो नमो विद्ध रश्रियै।।

आसन दान के बाद आसनों का पूजन करें--

आसनपूजनम्-सप्तऋषयः प्रपिहिताः शरीरे सप्तरक्षीन्त सदमप्रांद सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतौ अरचप्नजौ सत्रसदौ चदेवौ।।

ऊँ सत्यवसुसंज्ञेकेभ्यो विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः

'' मातृपितामहि प्रपीतहीभ्यो नमः

'' पितृपितामह प्रपितामहेभ्यो नमः

'' मातामहप्रमाताम प्रमातामहेभ्योभ्यो नमः

धूपदीपसंकल्पः- अद्येह अमुकगोत्रास्मन्मात्रदित्रय तथा मुकगोत्रास्मन्मातामहादियश्राद्ध-सम्बन्धिनःसत्यवसुज्जक विश्वेदेवा बासनार्चनविधौ-तथा अमुकामुकी देव्यःनान्दीमुख्यः तथाऽमुकगोत्रा अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहा अमुकामुकदेवा-वसुरूद्रादित्यस्वरूपाः नान्दीमुखाः तथाऽमुकदेवा अस्मन्मातामममहप्रमातामहबृद्धप्रमातामहा अमुकामुकदेवा सपत्नीका वसुरूद्रादित्यस्वस्पा नान्दीमुखाः आसनार्चनविधाविमानिगंधाक्षतपुष्पधूपदीप नैवेद्य भूषणदीनि यथा विभागं वो नमो बृद्धि 2 श्रिये।।

आमान्न (कच्चा भोजन सामाग्री) के चार भाग करें

आमान्नं चतुर्धाविभज्य-

पहला भाग विश्वेदेव का होगा 1- अद्येहअमुकगोत्रास्मन्मात्रादित्रय तथा पित्रादित्रय तथाऽमुकगोत्रास्मन्मातामहादित्रसश्राद्धसम्बन्धिभ्यः त्यवसुसंज्ञकेभ्योविश्वेभ्योदेवेभ्य बमासनं दधिधृतजलसहितं यथाषैन वो नमो बृद्धिरश्रियै।।

दूसरा भाग माता दादी परदादी के लिये होगा -

2-तथा मुकगोत्राभ्यः अरमन्मातपितामहि प्रसिता महीभ्यः अमुकामुकदेवीभ्यो वसुरयादित्य स्वरूपाभ्यो नान्दी मुखीभ्यः इदमासाभं दीपवृत जलसहिते यथाविभागं वो नमो वृद्धि2श्रिपै।।

तीसरा भाग पिता दादा परदादा के लिये होगा---

3-तथाऽमुकगोत्रेभ्योऽस्मनपिता पितामहेभ्योऽमुकासुक देवेभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदमामान्नं दधिघृजजलसहितं यथाविभागं वो नमो बृद्धिर श्रियै।।

चैाथा आसन नाना परनाना वृद्धनाना के लिये होगा--

4-तथाऽमुकगोत्रेभ्योऽमन मातामहप्रमाताभहबृद्धप्रभातमेहेइयो अमुकामुकदेवेभ्यो सपत्निकभ्यो वसुरूद्रदित्यस्वरूपभ्यो नान्दीमुखेभ्यः-इदमामान्नं दधिघृतजल सहितं यथाविभागं वो नमो बृद्धि रश्रियै।

अन्नपूजनम्- अन्नका पूजन करें-यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ब्रह्मरायाभ्या œ शूद्राय चार्याय च स्वायचारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूया œ समयम्मे कामः समृद्ध्यताम्।।

तत्पश्चात् दक्षिणा संकल्प करें- दक्षिणासंकल्पःअस्मन्यातृपितामहीप्रपितामहीनी अमुकामुकदेवानां वसुरूद्रदित्यस्वरूपाणां नान्दीमुखीनां तथाऽमुकगोत्राणां अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाम् अमुकामुकदेवानां वसुरूद्रदित्यस्वपाणी नान्दीमुखानां तथाऽमुकगोत्राणाम् अस्मन्मातामहप्रमातामहबृमातामहानाम् अमुकामुकदेवानांसवत्नीकाना वसुरूद्रदित्यस्वरूपाणां नान्दीमुखानां

प्रीतयेऽमुककर्मनिमितकसत्यवसंज्ञक विश्वे देवपूर्वक नान्दीमुखश्राद्धकर्मणः साइफलप्राप्तये साद्गुण्यार्थ च मातृणां पितृणां मातामहानां विश्वेषां देवानां चप्रितये इमां दधिद्राक्षामलकनिष्क्रयिणीं दक्षिणी यथा विभागं वो नमो वृद्धि 2 श्रियै।।

स्वयं को तिलक करें स्वतिलकम्- सत्यानुष्ठानसम्पन्नाः सर्वदायज्ञबृद्धयः

पितृमातृपराश्चैव सन्त्वस्मत्कुलजराः।।

पुष्प लेकर हाथ जोडें विशेष पूजन करें - आयुः प्रजां धनं विद्या स्वर्गं मोक्षं सुखानिच

प्रयच्छन्तु तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः।।

आयुः पुत्रान यशःस्वर्ग कीर्ति पुष्टिं बलं श्रियम्।

पशून्सुखं धर्म धान्यं प्राप्नुयां पितृजूननात।।

हाथ में जल लें और कहें- अमुककर्मणःपूर्वाइवेन कूतं नान्दीमुखाभ्युदीयक राद्धं विसर्जये। इदं श्राद्धं मथा देशहीनं श्रद्धाहीनं दक्षिणाहीनं भावनाहीनं वाक्याहीनं यत्कृतं तत्सुकृमस्तु यन्नकृतं तत् श्रीविष्णोः प्रसादात ब्राहनण वचनात सर्व परिपूर्णमिस्तु अस्तुपरिपूर्णम-।।

कर्मपात्र को हाथ में लें और एक परिक्रमा करें-

कर्मपात्रं भ्रातयित्वा- ऊँ आमा व्वाजस्य प्रसवोजगम्या देवे द्यावापृथिवी विश्वरूपे आमा गन्तां पितरा मातरा चामा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्।

पुनः आचमन करके अच्युताय नमः तीन बार कहें।

बोध प्रश्न -

१. श्रद्धया दीयते यत् तत् .... ।

क. पूजनम् ख. श्राद्धम् ग. नान्दी श्राद्धम् घ. श्रद्धा

२. धर्मग्रन्थानुसार श्राद्ध कितने प्रकार के होते है ।

क. ५ ख. ६ ग. ७ घ. ८

३. कुल वृद्धि हेतु पितरों को प्रसन्न करने वाला श्राद्ध होता है –

क. नित्य ख. नान्दी श्राद्ध ग. काम्य घ. वृद्धि

४. विवाह में यदि अशौच की सम्भावना हो तो कितने दिन पूर्व श्राद्ध करना चाहिए –

क. ९ ख. २ ग. १० घ. १२

५. श्राद्ध में तर्पण किससे दिया जाता है –

क. कुशा से ख. जल से ग. तिल से घ. तीनों से

2.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि 'श्रद्धया दीयते यत् तत् श्राद्धम्' पितरों की तृप्ति के लिए जो सनातन विधि से जो कर्म किया जाता है उसे श्राद्ध कहते हैं। किसी भी कर्म को यदि श्रद्धा और विश्वास से नहीं किया जाता तो वह निष्फल होता है। महर्षि पाराशर का मत है कि देश-काल के अनुसार यज्ञ पात्र में हवन आदि के द्वारा, तिल, जौ, कुशा तथा मंत्रों से परिपूर्ण कर्म श्राद्ध होता है। इस प्रकार किया जाने वाला यह पितृ यज्ञ कर्ता के सांसारिक जीवन को सुखमय बनाने के साथ परलोक भी सुधारता है। साथ ही जिस दिव्य आत्मा का श्राद्ध किया जाता है उसे तृप्ति एवं कर्म बंधनों से मुक्ति भी मिल जाती है। अनेक धर्मग्रंथों के अनुसार नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि और पार्वण पाँच प्रकार के श्राद्ध बताए गए हैं जिनमें प्रतिदिन पितृ और ऋषि तर्पण आदि द्वारा किया जाने वाला श्राद्ध नित्य श्राद्ध कहलाता है। इसमें केवल जल प्रदान करने से भी कर्म की पूर्ति हो जाती है। इसी प्रकार, एकोद्दिष्ट श्राद्ध को नैमित्तिक, किसी कामना की पूर्ति हेतु काम्य श्राद्ध, पुत्र प्राप्ति, विवाह आदि मांगलिक कार्यों में जिनसे कुल वृद्धि होती है, के पूजन के साथ पितरों को प्रसन्न करने के लिए वृद्धि श्राद्ध किया जाता है जिसे नान्दी श्राद्ध भी कहते हैं। इसके अलावा पुण्यतिथि, अमावस्या अथवा पितृ पक्ष (महालय) में किया जाने वाला श्राद्ध कर्म पार्वण श्राद्ध कहलाता है।

2.5 पारिभाषिक शब्दावली

तृप्ति – पूर्ण इच्छा

श्रद्धया – श्रद्धा पूर्वक

काम्य – काम करने योग्य

पितृपक्ष – महालया आश्विन कृष्णपक्ष के प्रतिपदा से अमावस्या पर्यन्त

पुण्यतिथि – देहावसान की तिथि

तर्पण- अंजलि द्वारा जलार्पण

आवाहयामि – आवाहन करता हूँ।

नित्य – प्रतिदिन

नैमित्तिक – निमित्त वाला

वृद्धि – बढ़ना

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

१. ख

२. क

३. ख

४. ग

५. घ

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

नित्यकर्मपूजाप्रकाश

कर्मकाण्ड प्रदीप

संस्कार प्रदीप

2.8 निबन्धात्मक प्रश्न

१. नान्दी श्राद्ध से आप क्या समझते है। स्पष्ट कीजिये।

२. पूजन में नान्दी श्राद्ध का महत्व निरूपण कीजिये।

३. नान्दी श्राद्ध पूजन मन्त्र लिखिए।

खण्ड – 4

नवग्रह मण्डल पूजन

ईकाई - 1 नवग्रहमण्डल निर्माण

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 नवग्रह मण्डल
1.3.1 नवग्रह मण्डल का परिचय
1.3.2 नवग्रह वेदी एवं मण्डल निर्माण का परिमाण
1.4 नवग्रह मण्डल निर्माण विधान
1.4.1 नवग्रह मण्डल रचना प्रकार
1.4.2 नवग्रह मण्डल पर ग्रहों की प्रतिमा, आकार एवं विशेष विचार
1.5 सारांशः
1.6 पारिभाषिक शब्दावली
1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.8 बोधप्रश्नों के उत्तर
1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

इस इकाई में नवग्रह मण्डल निर्माण संबंधी प्रविधि का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व शान्ति प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया होगा। कोई भी जातक यदि कोई शान्ति कराता है तो प्रायः शान्ति प्रविधियों में नवग्रह मण्डल का निर्माण करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में नवग्रह मण्डल का निर्माण आप कैसे करेगें, इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

किसी भी पौरोहित्यिक कर्म में नवग्रह मण्डल का निर्माण प्रायः किया जाता है। ग्रहाधीनं जगत्सर्वं कहते हुये आचार्यों ने बतलाया है कि ग्रहों के अधीन ही सारा संसार चलता है। इसलिये ग्रहों की कृपा व्यक्ति के ऊपर होनी आवश्यक है। मानव जीवन का सम्पूर्ण काल किसी न किसी ग्रह की दशा में व्यतीत होता है। इसलिये भी वह काल शुभ रहे इसकी अपेक्षा व्यक्ति करता है। इसके साथ- साथ ही सामान्य रूप से पौरोहित्य कर्म में भी नवग्रह मण्डल का निर्माण किया जाता है । ग्रहों के नाम पर सामान्य लोगों में यही धारणा बनी रहती है कि नौ ग्रह है उनका नाम ले लो, बश, हो गई शान्ति । लेकिन जब आप नवग्रह मण्डल का विधान देखेंगे तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि नवग्रह मण्डल पर तो कुल चौवालीश 44 देवता होते हैं। इनका कहाँ - कहॉं स्थापन किया जाता है ? इनका वर्ण क्या होता है? इत्यादि विविध ज्ञान की प्राप्ति आपको इस ईकाई से होगी।

इस इकाई के अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल निर्माण करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे संबंधित व्यक्ति का संबंधी दोषों से निवारण हो सकेगा जिससे वह अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं संवर्धित हो सकेगा। इसके अलावा आप अन्य योगदान दें सकेगें, जैसे - कल्पसूत्रीय विधि के अनुपालन का सार्थक प्रयास करना, समाज कल्याण की भावना का पूर्णतया ध्यान देना, इस विषय को वर्तमान समस्याओं के समाधान सहित वर्णन करने का प्रयास करना एवं वृहद् एवं संक्षिप्त दोनों विधियों के प्रस्तुतिकरण का प्रयास करना आदि, इस शान्ति के नाम पर ठगी, भ्रष्टाचार, मिथ्या भ्रमादि का निवारण हो सकेगा।

1.2 उद्देश्य-

उपर्युक्त अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल निर्माण की आवश्यकता को समझ रहे होगें। इसका उद्देश्य भी इस प्रकार आप जान सकते है।

- नवग्रह मण्डल निर्माण कर समस्त कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।
- नवग्रह मण्डल निर्माण की शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।
- इस कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।
- समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।

1.3 नवग्रह मण्डल

1.3.1 नवग्रह मण्डल का परिचय

यह सर्व विदित है कि जब भी हम कोई शान्ति करते हैं तो नवग्रह मण्डल का निर्माण अवश्य करते हैं। न केवल शान्ति अपितु यज्ञों में भी नवग्रह मण्डल बनाना पड़ता है। नवग्रह मण्डल के निर्माण के बिना हम किसी भी अनुष्ठानिक प्रक्रिया का सम्पादन नही कर सकते इसलिये नवग्रह मण्डल का ज्ञान अति आवश्यक है। ईशाने ग्रह वेदिका कहते हुये यह बतलाया गया है कि नवग्रह मण्डल का स्थान ईशान कोण में होता है। किसी भी यज्ञ के सम्पादन में अग्नि कोण में योगिनी मण्डल, नैर्ऋत्य कोण में वास्तु मण्डल , वायव्य कोण में क्षेत्रपाल मण्डल एवं ईशान में नवग्रह मण्डल बनाने का नियम है। नवग्रह मण्डल पर कुल 44 चौवालीस देवता होतें है। जिसमें नवग्रह के रूप में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु होते है। प्रत्येक ग्रहों के एक-एक अधिदेवता एवं एक-एक प्रत्यधि देवता होते है। अधि देवता का स्थान ग्रह के दक्षिण भाग में तथा प्रत्यधि देवता का स्थान ग्रह के वाम भाग में होता है।

शिवः शिवा गुहो विष्णु ब्रह्मेन्द्र यमकालकाः।
चित्रगुप्तो अथ भान्वादि दक्षिणे चाधिदेवताः।।

अर्थात् शिव, शिवा, स्कन्द, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, यम, काल, एवं चित्रगुप्त को अधिदेवता तथा अग्नि, आप, धरा, विष्णु, शक्र, इन्द्राणी, प्रजापति, सर्प एवं ब्रह्मा प्रत्यधि देवता के रूप में जाने जाते है। तदनन्तर पंचलोकपालों के रूप गणेश, अम्बिका, वायु, आकाश एवं अश्विनी कुमार माने जाते है। इसके अलावा वास्तु एवं क्षेत्रपाल का भी स्थान होता है। दशदिक्पाल इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, पश्चिम, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा एवं अनन्त होते हैं। इस प्रकार से कुल 44 देवताओं का स्थान नवग्रह मण्डल पर होता है।

इस प्रकार इस प्रकरण में आपनें नवग्रह मण्डल का परिचय आपने जाना । इसकी जानकारी से आप नवग्रह मण्डल पर कितने देवता होते हैं इनके बारे में आप पुष्टता से बता सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1-नवग्रह मण्डल कहां बनाया जाता है?

क-अग्नि कोण में, ख- नैर्ऋत्य कोण में, ग- बायव्य कोण में, घ- ईशानकोण में।

प्रश्न 2- नवग्रह मण्डल पर कुल कितने देवता होते हैं?

क- 44, ख- 45, ग- 46, घ- 47।

प्रश्न 3-नवग्रह के अधिदेवताओं की संख्या कितनी होती है?

क- 7, ख-8, ग-9, घ-10।

प्रश्न 4-नवग्रह के प्रत्यधिदेवताओं की संख्या कितनी होती है?

क-7, ख- 8, ग-9, घ-10।

प्रश्न 5- आकाश क्या है?

क- नवग्रह, ख- अधिदेवता, ग-प्रत्यधि देवता, घ- पंचलोकपाल।

प्रश्न 6- अश्विनी कुमार क्या है?

क- नवग्रह, ख- अधिदेवता, ग-प्रत्यधि देवता, घ- पंचलोकपाल।

प्रश्न 7- शिव क्या है?

क- नवग्रह, ख- अधिदेवता, ग-प्रत्यधि देवता, घ- पंचलोकपाल।

प्रश्न 8- धरा क्या है?

क- नवग्रह, ख- अधिदेवता, ग-प्रत्यधि देवता, घ- पंचलोकपाल।

प्रश्न 9- स्कन्द क्या है?

क- नवग्रह, ख- अधिदेवता, ग-प्रत्यधि देवता, घ- पंचलोकपाल।

प्रश्न 10- शुक्र क्या है?

क- नवग्रह, ख- अधिदेवता, ग-प्रत्यधि देवता, घ- पंचलोकपाल।

इस प्रकरण में आपने नवग्रह मण्डल का सामान्य परिचय जाना। अब हम आपका ध्यान नवग्रह वेदी उवं नवग्रह मण्डल निर्माण के व्यासादि परिमाण की ओर आकर्षित करना चाहते हैं जिसका सम्पूर्ण विवरण अग्रिम अंक में इस प्रकार है-

1.3.2. नवग्रह वेदी एवं मण्डल निर्माण का परिमाण-

इस प्रकरण में आप इस बात का ज्ञान प्राप्त करेगें कि नवग्रह वेदी एवं मण्डल बनाते समय वेदी एवं ग्रह का कितना व्यास होना चाहिये अर्थात् कितने अंगुल की वेदी होगी तथा उस पर निर्मित किये जाने वाले सूर्यादि ग्रहों का क्या परिमाण होगा इत्यादि। इस ज्ञान के अभाव में किया गया वेदी निर्माण या नवग्रह मण्डल का निर्माण पूर्णतया शुद्ध एवं प्रामाणिक नही होता है इसलिये इसका ज्ञान प्रत्येक कर्मकाण्ड करने वाले को अवश्य होना चाहिये अन्यथा उसका कर्मकाण्ड सफलता दायक नही हो सकता है।

मत्स्य पुराण एवं कोटि होम पद्धति में लिखा गया है कि-

द्वादशांगुलक सूर्यः सोमे तु द्विगुणो भवेत्।
त्र्यंगुलस्तु भवेद्भौमे बुधे च चतुरंगुलः।
गुरौ षडंगुलः प्रोक्तः शुक्रे चैव नवांगुलः।
द्वयंगुलस्तु शनेश्चैव राहौ च द्वादशांगुलः।
केतौ षडंगुलो व्यासो मण्डलेति कथितो बुधैरिति।

अर्थात् उपरोक्त श्लोक से यह सिद्ध होता है कि नवग्रह मण्डल में सूर्य का निर्माण बारह अंगुल का किया जाना चाहिये। चन्द्रमा को सूर्य का दुगूना यानी चौबीस अंगुल का बनाना चाहिये। मंगल को तीन अंगुल का, बुध को चार अंगुल का, बृहस्पति को छः अंगुल का, शुक्र को नव अंगुल का, शनि को दो अंगुल का, राहु को बारह अंगुल का एवं केतु को छः अंगुल का निर्माण करना चाहिये। आचार्य वसिष्ठ ने ग्रह पीठ की चर्चा करते हुये यह बतलाया है कि नवग्रह का पीठ कुण्ड के रुद्र भाग यानी ईशान कोण में दो हाथ की वेदी पर होना चाहिये। इस वेदी का मध्य भाग किंचित् उन्नत होना चाहिये। इस वेदी की ऊचाई बारह अंगुल की होनी चाहिये तथा कुण्ड एवं पीठ से तीस अंगुल का अन्तराल होना चाहिये। इस अवसर पर वेदी किस प्रकार बनाना चाहिये इसका भी ज्ञान कर्मकाण्ड के लिये आवश्यक है इसलिये हम वेदी के निर्माण के विषय पर आवश्यक विन्दुओं को इस प्रकार आत्मसात कर सकते हैं।

वेदी की रचना का प्रमाणिक ग्रन्थ कुण्डमण्डपसिद्धि स्वीकार किया गया है। इस ग्रन्थ के

रचयिता प्राचीन आचार्य बूव शर्मा जी के पुत्र विठ्ठल जी दीक्षित है। इनके अनुसार सबसे पहले हस्तादिमान तैयार करना चाहिये। किसी भी प्रकार के वेदी मण्डप इत्यादि के निर्माणार्थ कर्ता समतल भूमि पर सीधा खड़ा होकर अपनी दोनों भुजायें आकाश की ओर यानी ऊपर की ओर फैलायें। हाथ के अंगुलियों के छोर यानी मध्यमा अंगुलि के सबसे ऊपरी तल से पैर की अंगुलियों तक माप लेना चाहिये। उस सम्पूर्ण माप का शरांश निकालना चाहिये। शरांश का मतलब पंचमांश मानना चाहिये। यह पंचमांश एक हाथ कहलाता है। तात्पर्यार्थ यह भी निकाला जा सकता है कि हर ऊर्ध्व बाहु किये हुये व्यक्ति के पंचमाश का मान उसके हाथ से एक हाथ होता है। कुण्डमण्डप सिद्धि नामक ग्रन्थ में इस प्रकार का श्लोक देखने को मिलता है-

कृतोर्ध्वबाहोः समभूगतस्य कर्तुः शरांशो प्रवदोच्छ्रितस्य।
यो वा सहस्तो अस्य जिनांशकोपि स्यादंगुलं तत्तदिभांशका ये।
यवो यूका चलिक्षा च वालाग्रं चैवमादयः।
कृतमुष्टिः करो रत्निररत्निरकनिष्ठिका।।

इसके अनुसार शरांश द्वारा निकाला गया हस्त मान एक प्रकार का है। दूसरे प्रकार का हाथ अपने अंगुल से चौबीस अंगुल का होता है। एक प्रकार का हाथ , हाथ की कोहनी से मध्यमा अंगुलि तक के मान तक होता है। मुष्टि बनाकर भी एक प्रकार का हाथ होता है। अकिनिष्ठिका वाला हाथ भी एक प्रकार का हाथ होता है। इस प्रकार उपरोक्त प्रकरण से स्पष्ट हुआ कि पांच प्रकार का हस्त मान होता है। हस्तमान के निर्धारण हो जाने के बाद हमें अंगुल का निर्धारण करना चाहिये। एक हाथ के चौबीसवें भाग को अंगुल कहते हैं। अर्थात् हस्तमान निर्धारित हो जाने पर अंगुल का निधारण आसान हो जाता है। अंगुल का इभांश यव होता है। इभांश का मतलब इभ अंश होता है। इभ मतलब होता है आठ यानी आठवां अंश इभांश कहलाता है । अंगुल का आठवॅा भाग यव होता है, यव का आंठवां भाग यूका होता है। यूका का आठवां भाग लिक्षा होता है। लिक्षा का आठवां भाग बालाग्र होता है। अर्थात् इसका पैमाना इस प्रकार है-

आठ बालाग्र - एक लिक्षा।
आठ लिक्षा - एक यूका।
आठ यूका - एक यव।
आठ यव - एक अंगुल।
चौबीस अंगुल - एक हाथ।

इसके अलावा एक बात और विचारणीय है कि ग्रह वेदिका ईशान में तब बनेगी जब ईशान

निधारित हो जायेगा। इस बात को कुण्डदर्पण नामक ग्रन्थ में लिखा गया है कि बिना दिक्साधन किये कुण्ड मण्डपादि का निर्माण मृत्युभय प्रदायक होता है। वृद्ध नारद के वचन के अनुसार दिशाओं की सम्यक् जानकारी न होने पर कुण्डमण्डपादि का निर्माण कुल नाशक होता है। कुण्ड प्रदीप नामक ग्रन्थ में लिखा है कि आचार्य एवं यजमान के दिशा ज्ञान के अभाव में किया गया कर्म धनक्षय का कारक होता है। वहां स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि यदि यज्ञ कर्ता दिशाओं की स्थिति के विषय में भ्रान्त है तो उस दिंभ्रान्त वेदी पर पूजन का फल भी भ्रान्तिदायक होता है। परन्तु यदि होमस्थान पर्वत, नदीतट, गृह या रुद्रायन की भूमि हो तो दिक्साधन की आवश्यकता नही है। परन्तु वर्तमान में दिक्सूचक यन्त्र की सहायता से किसी भी स्थान में दिशाओं की सही जानकारी की जा सकती है।

अब प्रश्न उठता है कि जहां दिक्सूचक यन्त्र नही है वहां कैसे दिशा का निर्धारण किया जा सकेगा? या दिक्सूचक यन्त्र के आविष्कार के पहले यदि यज्ञीय गतिविधियां होती थी तो कैसे होती थी? इस प्रश्न का उत्तर जब हम आध्यात्मिक शास्त्रों में खोजते हैं तो प्राप्त होता है कि पहले दिक्साधन की विधि थी उसके अनुसार दिशा का साधन किया जाता था। उस पूर्व प्राचीन विधि के ज्ञानार्थ संक्षेप में प्राचीन दिक्साधन विधि का वर्णन करना उचित समझता हूं।

ज्ञात्वा पूर्वं धरित्रीं दहनखननं सप्लावनैः संविशोध्य ।
पश्चात् कृत्वा समानां मुकुरजठरवद्वाचयित्वा द्विजेन्द्रैः ।
पुण्याहं कूर्मशेषौ क्षितिमपि कुसुमाद्यैः समाराध्यशुद्धे ।
वारे तिथ्यां च कुर्यात् सुरपतिककुभः साधनं मण्डपार्थम् ।।

सर्वप्रथम जिस स्थान पर हमें वेदी या मण्डप या कुण्ड बनाना हो उस स्थान का ज्ञान कर यानी यह स्थान उपयुक्त होगा ऐसा जानकर भूमि को जलाना चाहिये। तदनन्तर उसका खनन किया जाता है । तदनन्तर उसमें जल डालकर जल प्लवन किया जाता है। उसके बाद उस भूमि का सम्यक् विशोधन किया जाता है यानी उसमें अनुपयुक्त चीजें हो तो निकाल देना चाहिये। आज कल लोगों के अन्दर एक धारणा काम कर रही है कि भूमि के अन्दर क्या है इसको मत सोचो । कहते हैं प्लास्टिक वगैरह जितने हैं इनको भूमि में दबा दो लेकिन यह उचित नही है । अनुपयुक्त चीजें भूमि में गाड़ने से उसका प्रभाव भूमि के तत्वों पर पड़ेगा और उस भूमि के जो आवश्यक गुण है जिसे विज्ञान की भाषा में तत्व कहते हैं का ह्रास होने लगेगा। जिससे उस पर रहने वालों लोगों की क्रियाये एवं प्रक्रियायें प्रभावित होती रहती है। वास्तु शास्त्र भी इसी ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहता है कि यदि तुम अशुद्ध भूमि पर रहोगे तो उस भूमि पर तुम्हारा विकास अवरुद्ध हो जायेगा। आप अपना निधारित कार्य करने का लक्ष्य पूरा नही कर सकेगें। इस बात को लोक में भी प्रायः देखा जता है कि लोग कहते हैं हमारी

यह भूमि जिस पर मेरा घर बना है शायद अशुद्ध है क्योकि जब से मैने अपना आवास यहां बनाया है तब से हमारा कार्य अवरुद्ध हो रहा है। लोग पण्डितों से पूछते रहते हैं कि थोड़ा विचार कर लीजिये इस भूमि पर मै घर बनाना चाहता हूं बनाना उचित होगा कि नही। कृषि विज्ञान भी इसको प्रमाणित करते हुये कहता है कि अपने मिट्टी की जांच कराइये उसके बाद उसके अनुसार उत्पादन लीजिये। जो भूमि शुद्ध एवं सही हो उस भूमि पर किसी भी प्रकार से प्रक्षेपित किया गया बीज जम जाता है और अच्छा उत्पादन होता है लेकिन ठीक इसके विपरीत जिस भूमि को ऊषर बतलाया गया है उसमें कितना ही परिश्रम क्यों न किया जाय, डाले गये बीज की लागत भी वापस नही आ पाती है। इसलिये भूमि का बहुत बड़ा प्रभाव उस व्यक्ति के ऊपर पड़ता है। ठीक इसी बात को सिद्ध करने के लिये इस ग्रन्थकार ने भी वेदी बनाने से पूर्व मिट्टी को दहन, खनन ,संप्लावन एवं संविशोधन की बात की है। इस प्रकार उस भूमि को दर्पण के समान चिकना एवं समतल बना देना चाहिये। तदनन्तर आचार्यों को बुलाकर पुण्याह वाचन कराया जाता है।

पुण्याह वाचन क्या है? यह कर्मकाण्ड का अत्यन्त महत्वपूर्ण अंश है। जो गणेशाम्बिका पूजन के अनन्तर कलश स्थापन से प्रारम्भ होता है। इसका प्रयोग तो आप उसके इकाई में देखेगें परन्तु सामान्यतया यही अवधेय है कि पुण्याह वाचन में पुण्यों का वाचन वैदिक विद्वानों द्वारा किया जाता है। इसमें यजमान यह कामना करता है कि हम जिस उद्देश्य को लेकर इस वेदी का निर्माण करने जा रहे है वह हमारा उद्देश्य शान्ति करने वाला हो, पुष्टि प्रदान करने वाला हो, तुष्टि यानी संतुष्टि प्रदान करने वाला हो, वृद्धि करने वाला हो, अविघ्नता प्रदान करने वाला हो, आरोग्य प्रदान करने वाला हो, कल्याणकारी हो, हमारे सारे कर्म कल्याणकारी हो, कर्म मेरी समृद्धि हो यानी मेरे में कर्म करने की क्षमता बनी रहे, धर्म में समृद्धि बनी रहे, ज्ञान में हमारी समृद्धि बनी रहे, शास्त्र में हमारी समृद्धि बनी रहे। जो अनुशासन दे उसे शास्त्र कहते है। शास्त्र एक नियम देता है उस नियम से नियमित प्राणी पुण्य का भागी होता है। आज कल एक उक्ति अत्यन्त चरितार्थ होती है कि पुण्य लोग करना नही चाहते लेकिन पुण्य के फल को अवश्य लेना चाहते है। पाप करतें हैं लेकिन पाप के फल को नही लेना चाहते। ऐसा सम्भ्व नही है, यदि आप पुण्य के फल को भोगने की आशा रखते हों तो आपको पाप के फल को भोगने के लिये भी तैयार रहना चाहिये यदि आप पाप करते हैं तो। इष्टसम्पदस्तु अर्थात् इष्ट सम्पत्तियां मिलती रहें। आज लोगों का बश यही सोचना है कि सम्पत्ति मिलती रहे। यदि उनसे पूछा जाय कि कैसी सम्पति मिलती रहे? तो वे कहते हैं कैसी भी मिले, सम्पत्ति तो सम्पत्ति है, लेकिन पुण्याहवाचन में यजमान यह कामना करता है कि हमें जो भी सम्पत्तियां मिले वे इष्ट सम्पत्तियां ही हों क्योंकि सुख तो इष्ट संपंत्तियों से ही सम्भव है। अनिष्ट सम्पत्तियों को दूर ही नष्ट हो जाने की कामना

पुण्याहवाचन में की गई है। जो पाप है, रोग है, अशुभ है, अकल्याण है वह दूर ही प्रतिहत हो जाय यानी स्वयं नष्ट हो जाय। ऐसा तब सम्भव होगा जब वेदी निर्माण का संकल्प लोक हितकारी होगा। संकल्प शुद्ध होगा। इस प्रकार अन्य भी पुण्य विषयों का वाचन करना चाहिये । तदनन्तर कूर्म एवं शेष का पूजन भी वहां शुभ वारों एवं तिथियों में किया जाता है। कूर्म यानी कच्छप एवं शेष अर्थात् नागराज। यहीं दो आधार है जिन पर यह पृथ्वी टिकी हुई है ऐसा पुराणों का कथन है। इसलिये कूर्म एवं शेष का पूजन अनिवार्य बतलाया गया है। तदनन्तर दिशाओं का साधन करना चाहिये।

नृपांगुलैः सम्मितकर्कटेन सूत्रेण वा वृत्तवरं विलिख्य ।
रव्यंगुलशंकुममुष्यमध्ये निवशयेत्खाक्षिमितांगुलीभिः ।।
चतस्रृभिश्चापि ऋजूत्तमाभिः संस्पृष्टशीर्षं तु समेषिताभिः ।
तच्छंकुभा यत्र विशेदपेयाद् वृत्ते क्रमात् स्तो वरुणेन्द्रकाष्ठैः ।।

इसका अर्थ यह है कि सोलह अंगुल के परिमित कर्कट से या सूत्र से एक श्रेष्ठ वृत्त बनाना चाहिये । बारह अंगुल का एक शंकु इस वृत्त के बीच में गाड़ना चाहिये । बीस - बीस अंगुल के चार शंकुओं को चार स्थानों पर समान दूरी पर गाड़ना चाहिये । सूर्योदय कालीन छाया जिस से बाहर निकले वह पश्चिम दिशा तथा उससे विपरीत पूर्व दिशा का निर्धारण करना चाहिये । कहा गया है कि कर्क , वृश्चिक, वृष, मकर इन राशियों के सूर्य में पूर्व दिशा की छाया को जब सूर्य उत्तरायण में रहे तो उत्तर की तरफ दो यूका का चालन और सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ, मीन, मेष इन राशियों के सूर्य हो तो दो यूका का चालन करें। यानी उस चिन्ह से दो यूका हटकर चिन्ह दें । मिथुन एवं धन के सूर्य रहे तो जहां पर छाया का चिन्ह है वही पर वास्तविक चिन्ह जानें। यानी वही पूर्व पश्चिम की दिशा होगी ।

अब उत्तर दक्षिण दिशा का साधन कहते हुये कहा गया है कि जैसे पूर्व पश्चिम का साधन करके कील दिया गया है उसी कील से उत्तर दक्षिण का साधन करते है। जितना बड़ा मण्डप बनाना हो उसकी दूनी रस्सी ले। उसके मध्य में गॉठ दे और दोनों कोर पर फन्दा बना दें । एक फन्दा पूरब की कील में फैलावे दूसरा फन्दा पश्चिम की कील में फसावें । तदनन्तर मध्य की गठ्ठी थाम कर बुद्धिमान् पुरुष दक्षिण एवं उत्तर की तरफ खीचे । जहां तक वह रस्सी जाय वहां पर एक - एक कील गाड़ दें। इस प्रकार दक्षिण उत्तर की दिशा सिद्ध होती है।

अब रात्रि में पूर्व दिशा के साधन हेतु कहा गया है कि श्रवण नक्षत्र का जहां पर उदय हो या पुष्य नक्षत्र का उदय हो या कृत्तिका नक्षत्र का उदय हो वहां पूर्व जानना चाहिये । अथवा चित्रा एवं

स्वाती नक्षत्र के मध्य में पूर्व दिशा जानना चाहिये। पूर्व, पश्चिम दिशा का साधन हो जाने पर पूर्वोक्त तरीके से उत्तर, दक्षिण दिशा का साधन करना चाहिये। अन्य उपायों का वर्णन करते हुये कहा गया है कि एक शलाका से चित्रा नक्षत्र की तारा को वेधन करे। फिर मध्य चिन्ह से युक्त एक तीसरी शलाका दें और उसके मध्य चिन्ह को पूर्व जाने। यह भी कहा गया है कि दिनमान के दल यानी मध्यान्ह में सात अंगुल शंकु को गाड़े। जमीन में उस शंकु की छाया का अग्र जहां आवे वहां पर शंकु की जड़ से एक रेखा खीचें वही दक्षिणोत्तर दिशा होती है।

दिक्साधन की अन्य विधियों का वर्णन करते हुये कहा गया है कि जिस दिन दिक् साधन करना हो उसके दिनमान को परमदिन से घटा देना चाहिये। जो अंक शेष आवे उसको पांच से गुणन करके छः से भाग देना चाहिये। तब छाया प्राप्त होती है। उदाहरण हेतु जैसे परम दिन 34.5, दिक्साधन दिवस का दिनमान 25.55 को परम दिन में घटाया तो 8.10 शेष आया। इसको पांच से गुणा करने पर 40.50 हुआ। इसको छः से भाग दिया तो छ अंगुल छ यव तीन यूका की छाया जहां पर आवे उसके अग्र भाग पर चिन्ह करें। वही उत्तर दिशा जाने। पूर्व, पश्चिम को पूर्ववत् साधना चाहिये।

वेदी चतुरस्र होती है। अभी हमने वृत्त बनाया। अब हम यह जानेगें कि वृत्त से चतुरस्र कैसे बनाया जाता है क्योंकी वेदी तो चतुरस्रा ही होगी। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण क्रम से जो-जो चिन्ह हैं, उन-उन चिन्हों के शंकु में जितने हाथ की वेदी बनानी हो उतने हाथ रस्सी में फन्दा लगावें। पूर्व, दक्षिण के शंकु में फन्दा लगाकर अग्नि कोण की तरफ खीचें। फिर दक्षिण पश्चिम के शंकु में फन्दा लगाकर नैर्ऋत्य की तरफ खीचें। फिर पश्चिम, उत्तर के शंकु में फन्दा लगाकर वायव्य कोण की तरफ खीचें। फिर उत्तर, पूर्व की शंकु में फन्दा लगाकर ईशान कोण की तरफ खीचें। इस प्रकार से चौकोर सिद्ध होता है।

इस प्रकार दिक्साधन की अन्य सारी विधियों का वर्णन मिलता है , परन्तु यहां इतना ही करना उचित प्रतीत हो रहा है।

इस प्रकार दिक्साधन करके वेदी का निर्माण करना चाहिये। नवग्रह वेदी को त्रिवप्र वाली बनाने का निर्देश हैं। अर्थात् तीन सीढ़ियों वाली वेदी बनाना चाहिये। जिसका परिमाण प्रथम सीढ़ी 2 अंगुल चौड़ी, 2 अंगुल ऊंची, दूसरी सीढ़ी दो अंगुल चौड़ी तीन अंगुल ऊंची, तीसरी सीढ़ी 2 अंगुल चौड़ी तीन अंगुल ऊंची बनानी चाहिये।

इस प्रकार से निर्मित वेदी को वस्त्र से आच्छादित करके प्रमाण के अनुसार बुद्धिमान पुरुष को नवग्रह

मण्डल का निर्माण करना चाहिये।

प्रायोगिक प्रकिया में प्रायः यह देखने को मिलता है कि वेदी की व्यवस्था न होने पर लोग छोटी चौकी का प्रयोग करते हैं। चौकी का प्रयोग वेदी के विकल्प के रूप में माना जाना चाहिये मुख्य नियम के रूप में नही। क्योकि वेदी निर्माण से संबंधित प्रमाण को बतलाते हुये कुण्ड मण्डप सिद्धि में यह स्पष्ट उल्लेख है कि वेदी त्रिवप्रा होनी चाहिये। त्रिवप्रा का मतलब तीन वप्रों वाली। वप्र का अर्थ सीढ़ी माना जाता है। वेदी या कुण्ड में हम वप्र रखते हैं। कुण्ड में उसी वप्र का नाम मेखला हो जाता है। इसका निर्माण वेदी रचना में ही हो जाता है। जब हम चौकी पर नवग्रह मण्डल का निर्माण करते हैं उसी पर तीन मेखला सत्व, रज एवं तम के रूप में बना देते है। यह भी वप्र का ही विकल्प होता है।

नवग्रह मण्डल में ग्रहों की आकृति किस प्रकार निर्मित की जायेगी इसके बारे में आचार्य वसिष्ठ का कथन है कि सूर्य का मण्डल वृत्ताकार होता है। सोम का मण्डल चतुष्कोण, मंगल का मण्डल त्रिकोण, बुध का बाण का आकार, बृहस्पति का पट्ट का आकार, शुक्र का पंचकोण, शनि का धनुष, राहु का शूर्प एवं केतु का ध्वजा का आकार वाला मण्डल बनाना चाहिये।

इस प्रकार इस प्रकरण में आपनें नवग्रह वेदी एवं नवग्रह मण्डल के परमाण का परिचय आपने जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रह वेदी का परिमाण बता सकते है एवं नवग्रह मण्डल पर किस ग्रह की क्या आकृति होती हैं तथा उनका परिमाण क्या है इसके बारे में भी आप पुष्टता से बता सकते हैं। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1-नवग्रह मण्डल में सूर्य का परिमाण कितना होता है?

क- बारह अंगुल, ख- तीन अंगुल, ग- छ अंगुल, घ- नव अंगुल।

प्रश्न 2-नवग्रह मण्डल में मंगल का परिमाण कितना होता है?

क- बारह अंगुल, ख- तीन अंगुल, ग- छ अंगुल, घ- नव अंगुल।

प्रश्न 3-नवग्रह मण्डल में बृहस्पति का परिमाण कितना होता है?

क- बारह अंगुल, ख- तीन अंगुल, ग- छ अंगुल, घ- नव अंगुल।

प्रश्न 4-नवग्रह मण्डल में शुक्र का परिमाण कितना होता है?

क- बारह अंगुल, ख- तीन अंगुल, ग- छ अंगुल, घ- नव अंगुल।

प्रश्न 5-नवग्रह मण्डल में बुध का परिमाण कितना होता है?

क- बारह अंगुल, ख- तीन अंगुल, ग- चार अंगुल, घ- नव अंगुल।

प्रश्न 6-नवग्रह मण्डल में शनि का परिमाण कितना होता है?

क- बारह अंगुल, ख- तीन अंगुल, ग- छ अंगुल, घ- दो अंगुल।

प्रश्न 7-नवग्रह मण्डल में राहु का परिमाण कितना होता है?

क- बारह अंगुल, ख- तीन अंगुल, ग- छ अंगुल, घ- नव अंगुल।

प्रश्न 8-नवग्रह मण्डल में केतु का परिमाण कितना होता है?

क- बारह अंगुल, ख- तीन अंगुल, ग- छ अंगुल, घ- नव अंगुल।

प्रश्न 9-नवग्रह मण्डल में सूर्य का आकार कैसा होता है?

क- वृत्त, ख- चतुरस्त्र, ग- पंचकोण, घ- त्रिकोण।

प्रश्न 10-नवग्रह मण्डल में मंगल आकार कैसा होता है?

क- वृत्त, ख- चतुरस्त्र, ग- पंचकोण, घ- त्रिकोण।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण नवग्रह मण्डल में नवग्रहों की आकृति तथा उसके व्यासादि परिमाण को जाना। अब आप ठीक ढंग से नवग्रह मण्डल का निर्माण कर सकते है। अग्रिम प्रकरण में हम नवग्रह मण्डल की रचना विधान प्रतिपादित करेगें।

1.4 नवग्रह मण्डल निर्माण विधान-

1.4.1 नवग्रह मण्डल रचना प्रकार

इससे पूर्व का प्रकरण आपको समझ में आ गया होगा । अब हम आपको रचना का विधान बतलाने जा रहे है-

सर्वप्रथम नवग्रह मण्डल की रचना के लिये उपयुक्त स्थान का चयन कर लेते है। उस स्थान पर यदि वेदी निर्माण कर नवग्रह मण्डल बनाना हो तो वेदी का निर्माण कर लेते हैं अन्यथा किसी चौकी पर नवग्रह मण्डल बनाना हो तो उसको प्रक्षालित कर उस पर सफेद वर्ण वाला वस्त्र बिछाकर रेखा-आरेख किया जाता है । रेखा-आरेख करके कुल नव वर्ग बनाये जाते है। इसके लिये पूर्वा-पर पांच-पांच रेखायें खीची जाती है। इस प्रकार रेखा-आरेख करने से कुल नव प्रकोष्ठ बनकर तैयार हो जाता है। इन नव प्रकोष्ठों में एक-एक प्रकोष्ठ चारों दिशाओं यानी पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में तथा एक-

एक प्रकोष्ठ चारो कोनों अर्थात् अग्नि कोण, नैर्ऋत्य कोण, वायव्य कोण एवं ईशान कोण में होता है। इन सबके बीच में एक प्रकोष्ठ हो जाता है। इस प्रकार कुल नव प्रकोष्ठ बनकर तैयार हो जाता है। ऊपर जो हमने दिशाओं और कोणों की बात की वह उस चौकी या वेदी की दिशा एवं कोण से संबंधित समझना चाहिये।

इस प्रकार प्रकोष्ठ निर्माण करके उन प्रकोष्ठों में ग्रहो का वर्ण इस प्रकार दर्शाया जाता है। आचार्य वसिष्ठ ने कहा है कि-

भास्करांगारकौ रक्तौ शुक्लौ शुक्र निशाकरौ।
बुधजीवसुवर्णाभौ कृष्णौ राहु शनैश्चरौ।
केतवो धूम्रवर्णा च सर्वे तेजोमया ग्रहाः।

अर्थात् सूर्य एवं मंगल को रक्त वर्णीय बनाना चाहिये। शुक्र एवं चन्द्रमा को श्वेतवर्णीय बनाना चाहिये। बुध एवं बृहस्पति को सुवर्ण की आभा वाले वर्ण से बनाना चाहिये। राहु एवं शनि को कृष्ण वर्ण का तथा केतु को धूम्र वर्ण का बनाना चाहिये । इन ग्रहों को इन्ही वर्ण का क्यों बनाना चाहिये इसका कारण बताते हुये आचार्य लोग कहते है कि इसी-इसी वर्ण के ये ग्रह होते हैं इसलिये इनका यही वर्ण होना चाहिये। इसके अलावा एक प्रकारान्तर और मिलता है जिसमें केवल दो ग्रहों के वर्ण में अन्तर पूर्वोक्त प्रकरण से दिखलाई देता है। पूर्व श्लोक में बुध को सुवर्ण की आभा वाला एवं केतु को धूम्र वर्णीय माना गया है। लेकिन नीचे दिये गये श्लोक के अनुसार बुध को हरित वर्णीय एवं केतु को कृष्णवर्णीय बतलाया गया है। दोनो विधियों में से किसी भी विधि से किया नवग्रह मण्डल का निर्माण शास्त्रीय है। इसमें संशय नही है। अतः इस विधि को प्रकारान्तर से इस प्रकार बतलाया गया है-

अरुणौ सूर्यभौमो च श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ।
हरितवर्णो बुधश्चैव पीतवर्णो गुरुस्तथा।
कृष्णवर्णाः शनिराहुकेतवस्तु तथैव च।।

अर्थात् सूर्य एवं मंगल का वर्ण लाल, शुक्र एवं चन्द्रमा का वर्ण श्वेत,
बुध का वर्ण हरा, गुरू का वर्ण पीला तथा शनि, राहु एवं केतु का वर्ण काला होता है। वर्ण निर्धारण के अनन्तर स्थान निर्धारण इस प्रकार किया गया है-

मध्ये तु भास्करं विंद्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे।

दक्षिणे लोहितं विंद्याद्बुधं पूर्वोत्तरे स्मृतः।
उत्तरे तु गुरुं विंद्यात्पूर्वे चैव तु भार्गवं।
पश्चिमे तु शनिं विंद्याद्राहुं दक्षिणपश्चिमे।
पश्चिमोत्तरः केतून्स्थाप्यावाशुक्लतण्डुलैरिति।

अर्थात् जो नव प्रकोष्ठ बनाये गये थे उन नव प्रकोष्ठों में मध्य प्रकोष्ठ में भास्कर यानी सूर्य का स्थान होगा। पूर्व एवं दक्षिण के मध्य यानी अग्निकोण वाले प्रकोष्ठ में शशि का स्थान दिया जायेगा। दक्षिण में रक्त वर्णीय मंगल का स्थान दिया जायेगा। पूर्व एवं उत्तर के मध्य वाले यानी ईशान कोण वाले प्रकोष्ठ में बुध का स्थान होगा। उत्तर वाले प्रकोष्ठ में देव गुरू बृहस्पति का स्थान होगा। पूर्व प्रकोष्ठ में शुक्र का स्थान होगा। पश्चिम में शनि का स्थान होगा। दक्षिण एवं पश्चिम के मध्य यानी नैर्ऋत्य कोण वाले प्रकोष्ठ में राहु का तथा पश्चिम एवं उत्तर यानी वायव्य कोण में केतु नामक ग्रह का स्थान होगा। इन ग्रहों का मुख किधर होगा इस विषय में विचार करते हुये कहा गया है कि-

शुक्रार्कौ प्रांगमुखो ज्ञेयौ गुरुसौम्या उदंगमुखः ।
प्रत्यंगमुखो सोम शनि शेषाः दक्षिणतो मुखाः ।।

अर्थात् शुक्र एवं सूर्य का मुख पूर्व की ओर होता है। बुध एवं गुरु का मुख उत्तर की ओर होता है। सोम एवं शनि का मुख पश्चिम की ओर तथा शेष ग्रहों का मुख दक्षिण की ओर होता है। इसके अलावा एक और भी विधान शास्त्रों में देखने को मिलता है-

आदित्याभिमुखाः सर्वेसाधिप्रत्यधिदेवताः।।
अधिदेवता दक्षिणे वामे प्रत्यधिदेवताः।।

अर्थात् यह भी विधान मिलता है कि अधि प्रत्यधि देवताओं के सहित सभी ग्रहों का मुख सूर्य की ओर होता है। प्रत्येक ग्रह के दक्षिण भाग में अधि देवता एवं वाम भाग में प्रत्यधि देवता होते है।
मुख के साथ-साथ नवग्रह मण्डल पर इन ग्रहों की आकृति क्या होनी चाहिये इसका विचार आवश्यक है। इस सन्दर्भ में कहा गया है कि-

ईशाने मण्डलं कृत्वा ग्रहाणां स्थापनं ततः।
वृत्तमण्डलमादित्यमर्ध- चन्द्रं निशाकरम्।
त्रिकोणं मगलं चैव बुधं वै धनुषाकृतिम्।
गुरुमष्टदलं प्रोक्तं चतुष्कोणं च भार्गवम्।
नराकृतिं शनिं विद्याराहुं च मकराकृतिम्।
केतुं खड्गसमं ज्ञेयं ग्रहमण्डलके शुभे।।

नवग्रह मण्डल में देवताओं की स्थापना ईशान कोण में करने का
विधान है। सूर्य गोल आकार तथा चन्द्रमा अर्ध चन्द्र के आकार के होते हैं। मंगल की आकृति त्रिकोण की एवं बुध की धनुष की आकृति होती है। गुरु की आकृति अष्टदल और शुक्र की आकृति चतुष्कोण होती है। शनि की आकृति मनुष्य की, राहु की मकर की एवं केतु की खड्ग की आकृति होती है। परन्तु इस सन्दर्भ में दो विचार मिलते है। इन दोनों विचारों को जानना इसलिये आवश्यक है कि उसका ज्ञान होने पर ही किसी भी आचार्य के द्वारा बनाई गयी दूसरी विधि वाली आकृति को भी हम शास्त्रीय मान सकेगे। अन्यथा भ्रम का उपपादन होने लगेगा। इसलिये यहां प्रकारान्तर का भी उल्लेख करना मै उचित समझत हूं। अतः प्रकारान्तर का वर्णन इस प्रकार है-

प्रकारान्तरम् (अधोलिखित प्रमाण भी मिलता है)

वृत्तमण्डलमादित्यं चतुरस्रं निशाकरम् ।
त्रिकोणं म¯लं चैव बुधं वै बाण सन्निभम् ।।
गुरवेपट्टिशाकारं पंचकोणं भृगुन्तथा ।
मन्दे च धनुषाकारं सूर्पाकारन्तु राहवे ।।
केतवे च ध्वजाकारं मण्डलानि क्रमेण तु ।।

ग्रहों की आकृति के सन्दर्भ में शास्त्रों में प्रकारान्तर से कुछ और भी विधान मिलता है जिसका वर्णन यहाँ किया जा रहा है। सूर्य को वृत्त, चन्द्रमा को चतुरस्र, मंगल को त्रिकोण, बुध को बाण, गुरु को पट्टी, शुक्र को पंचकोण, शनि को धनुष, राहु को सूप एवं केतु को ध्वज के आकार का बतलाया गया है।

नवग्रह मण्डल के निर्माण में दो प्रकार की विधायें आचार्यों द्वारा प्रतिपादित होती दिखती है। प्रथम विधा तो यह है कि सफेद रंग का चावल ले लेते है। तदनन्तर उसमें विभिन्न प्रकार के रंग यानी लाल, पीला, हरा एवं काला रंग मिला देते है जिससे वह चावल उस रंग का हो जाता है और उसका प्रयोग बताये गये वर्णो के प्रयोग के लिये किया जाता है। दूसरी विधा यह है कि उस वर्ण के लिए उस प्रकार की दालों का प्रयोग देखने को मिलता है। जैसे हरित वर्ण के हरी मूंग या उसका छिलका, रक्त वर्ण के लिये छिलका रहित सबूत लाल मसूर, पीत वर्ण के लिये चने की दाल, कृष्ण वर्ण के लिये काली उड़द या काली उड़द का छिलका तथा सफेद वर्ण के लिये सफेद चावल का प्रयोग। इस प्रकार से आचार्य के निर्धारण के अनुसार जिस विधि की उपयुक्तता हो उस विधि का प्रयोग करके नवग्रह मण्डल का निर्माण किया जाता है। दालों में थोड़ा घी रगड़ देने से उसमें तेज की वृद्धि हो जायेगी

जिससे देखने में वह मण्डल चमकीला होगा और आकर्षक भी। कर्मकाण्ड में इस बात पर जोर दिया गया है कि जो भी हम काम करे सुव्यवस्थित करें और तदनुसार रचना करें। तदनुसार रचना का मतलब यह है कि किसी भी कार्य का सम्पादन उस कार्य के वास्तविक स्वरूप के अनुसार होना चाहिये। कर्मकाण्ड का एक सहज सूत्र है देवं भूत्वा देवं यजेत्। यानी देवता बनकर देवता की पूजा करो। इससे क्या तात्पर्य है? इससे तात्पर्य यह है कि जितना शुद्ध और पवित्र आप होगें उतना शुद्ध एवं पवित्र वह सामग्री एवं स्थान इत्यादि भी होना चाहिये। पवित्रता में ईश्वर का निवास होता है इसलिये पवित्रता पर ध्यान देना आवश्यक है। वेदी का निर्माण स्वछता से करना चाहिये। सामग्रियों का संग्रह भी स्वच्छता से होना चाहिये। यह नही होना चाहिये कि नवग्रह बनाने के लिये दालें ली गयी परन्तु दालों में धूल, कंकड़ इत्यादि मिला हुआ हो। आज बाजारों में भी स्वच्छता अभाव देखने को मिलता है ऐसी स्थिति में वस्तुओं को शुद्ध एवं पवित्र करने का जिम्मा उसी व्यक्ति का होगा जो इस अनुष्ठान से लाभ उठाने वाला है । इसलिये बार-बार निर्देश है कि येन केन प्रकारेण वाली स्थिति से बचते हुये कर्मकाण्डीय प्रक्रियाओं का अनुपालन कल्याणकारी होता है।

इस प्रकार इस प्रकरण में आपनें नवग्रह मण्डल के रचना प्रकार के परिचय आपने जाना । इसकी जानकारी से आप नवग्रह मण्डल पर किस ग्रह की क्या आकृति होती हैं तथा उनका वर्ण, मुख आदि क्या है इसके बारे में आप पुष्टता से बता सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1-नवग्रह मण्डल में प्रकोष्ठ संख्या कितना होता है?

क- दो, ख- तीन , ग- चार, घ- नव।

प्रश्न 2- सूर्य को किस वर्णीय बनाना चाहिये?

क- सफेद, ख- रक्त, ग- हरित, घ- कृष्ण।

प्रश्न 3- मंगल को किस वर्णीय बनाना चाहिये?

क- सफेद, ख- रक्त, ग- हरित, घ- कृष्ण।

प्रश्न 4- शुक्र को किस वर्णीय बनाना चाहिये?

क- सफेद, ख- रक्त, ग- हरित, घ- कृष्ण।

प्रश्न 5- चन्द्रमा को किस वर्णीय बनाना चाहिये?

क- सफेद, ख- रक्त, ग- हरित, घ- कृष्ण।

प्रश्न 6- राहु को किस वर्णीय बनाना चाहिये?

क- सफेद, ख- रक्त, ग- हरित, घ- कृष्ण।

प्रश्न 7- शनि को किस वर्णीय बनाना चाहिये?

क- सफेद, ख- रक्त, ग- हरित, घ- कृष्ण।

प्रश्न 8- बुध को किस वर्णीय बनाना चाहिये?

क- सफेद, ख- रक्त, ग- हरित, घ- कृष्ण।

प्रश्न 9- केतु को किस वर्णीय बनाना चाहिये?

क- सफेद, ख- रक्त, ग- हरित, घ- कृष्ण।

प्रश्न 10- बृहस्पति को किस वर्णीय बनाना चाहिये?

क- सफेद, ख- पीत, ग- हरित, घ- कृष्ण।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण नवग्रह मण्डल का रचना प्रकार को जाना। अब आप ठीक ढंग से नवग्रह मण्डल का निर्माण कर सकते है। अग्रिम प्रकरण में हम नवग्रह मण्डल में ग्रहों के प्रतिमा एवं आकार पर विचार करेगें।

1.4.2 नवग्रह मण्डल पर ग्रहों की प्रतिमा, आकार एवं विशेष विचार-

आशा है नवग्रह मण्डल के विषय में पूर्व में बतायी गयी समस्त बातों को आपने आत्मसात किया होगा। अब हम नवग्रह मण्डल के नवग्रहों की प्रतिमा किस धातु की बनायी जायेगी ? तथा नवों ग्रहों का आकार किस प्रकार का होगा। इस पर विचार किया जायेगा।

ग्रहों की प्रतिमा पर विचार करते हुये आचार्य याज्ञवल्क्य ने कहा है कि-

ताम्रिकात्स्फाटिकाद्रक्तचन्दनात्स्वर्णकावुभौ ।
राजतादयसः सीसकात्कांस्यात्कार्याग्रहाः क्रमात् ।।
स्ववर्णैर्वापटे लेख्या गंधैर्मंडलकेषुवेति ।

अर्थात् ताम्र का सूर्य, स्फटिक का चन्द्रमा, रक्त चन्दन का मंगल, स्वर्ण का बुध, स्वर्ण के बृहस्पति, चन्द्रमा के शुक्र, लोहे का शनि, सीसे का राहु एवं कांसे का केतु बनाया जा सकता है। नवग्रह मण्डल

के ऊपर ग्रहों को उनके वर्णों के अनुसार उनका लेखन किया जा सकता है। ग्रहों के प्रतिमाओं के आकारों का वर्णन करते हुये मत्स्य पुराण में यह बतलाया गया है कि-

पद्मासनः पद्माकरः पद्मगर्भसमद्युति।

सप्ताश्वरथसंस्थोपिद्विभुजः स्यात्सदा रविः।।

सूर्य की आकृति का वर्णन करते हुये इस श्लोक में बतलाया गया है कि सूर्य पद्मासन युक्त यानी कमल के आसन पर विराजमान, हाथ में कमल लिये हुये, कमल के गर्भ के समान आभा निकल रही हो ऐसे आभा यानी तेज पुंज वाले, सात अश्वों वाले रथ पर सवार होने वाले एवं दो भुजाओं वाले भगवान भास्कर है।

श्वेतः श्वेताम्बरधरोदशाश्वः श्वेतभूषणः।

गदापाणिर्द्विबाहुश्चकर्तव्यो वरदः शशी ।।

चन्द्रमा का आकार सफेद, श्वेत वस्त्रधारी, दश अश्वों वाले रथ पर आरूढ़, श्वेत आभूषण धारण करने वाले, हाथ में गदा लिये हुये, दो बाहुओं वाले एवं वर देने वाले है।

रक्तमाल्यांबरधरः शक्तिशूलगदाधरः।

चतुर्मुखो मेषगमोवरदः स्याद्धरासुतः।।

मंगल की आकृति का वर्णन करते हुये कहा गया है कि मंगल लाल वर्ण की माला धारण करते हैं और लाल रंग का वस्त्र भी धारण करते है। भुजाओं में शक्ति, शूल एवं गदा धारण किये रहते है। चार मुखों वाले तथा मेष से यात्रा करने वाले तथा वरद मुद्रा से सदैव भक्तों को आशीर्वाद देने वाले है।

पीतमाल्यांबरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।

खड्गचर्मगदापणिः सिंहस्थो वरदो बुधः।।

बुध के आकार का वर्णन करते हुये बतलाया गया है कि पीले माला एवं पीत वस्त्र धारण करने वाले तथा कर्णिकार के समान आभा वाले, अपनी भुजाओं में खड्ग यानी तलवार, चर्म यानी ठाल और गदा जो प्रसिद्ध है को धारण करने वाले, सिंह की सवारी पर विराजमान एवं सदैव वर देने वाले मुद्रा में व्याप्त चन्द्रमा के पुत्र बुध महाराज का इस प्रकार का स्वरूप है।

देवदैत्यगुरू तद्वत् पीतश्वेतौ चतुर्भुजौ।

दण्डिनौ वरदौ कार्यौ साक्षसूत्रकमण्डलू।।

इस श्लोक में देव गुरू एवं दैत्य गुरू यानी बृहस्पति एवं शुक्र के स्वरूप का वर्णन किया है। बृहस्पति का स्वरूप पीला और शुक्र का स्वरूप सफेद है। दोनों चार भुजाओं वाले है। दोनों बृहस्पति

एवं शुक्र दण्ड धारण करने वाले एवं वर देने वाले है। साथ ही ये दोनों अक्ष, सूत्र एवं कमण्डलु धारण करने वाले है।

इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदौ गृध्रवाहनः।
बाणबाणासनधरः कर्तव्योर्कसुतः सदा।।

इस श्लोक में शनि के स्वरूप का वर्णन करते हुये यह कहा गया है कि इन्द्र नील के समान इनकी आभा है, ये शूल लिये हुये है, वर देने वाले रूप में है, गृध्र का वाहन है, बाण का आसन धारण करने वाले सूर्य के पुत्र शनि है।

करालवदनः खंगचर्मशूलीवरप्रदः।
नीलसिंहासनस्थश्चराहुरत्रप्रशस्यते।।

इस श्लोक मे राहु के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा है कि कराल वदन वाले, खड्ग, ठाल, शूल धारण करने वाले तथा वर देने वाले राहु है। नीले सिंहासन पर स्थित हैं राहु।

ध्रूमाद्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृतानना।
गृधासनगतानित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः।

इस श्लोक में केतु के स्वरूप का वर्णन करते हुये बतलाया गया है कि केतु नील सिंहासन पर विराजमान है, धूम्र वर्ण है, दो भुजाओं वाले, गदा धारण करने वाले , विकृत आनन वाले एवं ग्रृध्र आसन वाले है।

सर्वे किरीटिनः कार्याग्रहालोकहितावहाः।
स्वांगुले नोच्छ्रिताः सर्वेशतमष्टोत्तरंसदेति।।

इन ग्रहों को लोक हित के लिये मुकुट धारण किये हुये माना जाना चाहिये।

विशेष विचार-ग्रहों के विषय में तत्तद ग्रहों का ग्रह देश भी बतलाया गया है। यह वर्णन मत्स्य पुराण एवं कोटि होम पद्धति में किया गया है।

उत्पन्नो अर्कः कलिंगेषु यमुनायां च चन्द्रमा।
अंगारकस्त्ववन्त्यां मगधायां हिमांशुजः।
सैन्धवेषुगुरुर्जातः शुक्रोभोजकटे तथा।
शनैश्चरस्तु सौराष्ट्रे राहु वैराठिनापुरे।
अन्तर्वेद्या तथा केतुः ग्रहदेशाः प्रकीर्तिताः।।

इस सन्दर्भ में यह बतलाया गया कि सूर्य का उद्भवस्थान कलिंग देश है। चन्द्रमा का उद्भवस्थान यमुना है। अंगारक यानी मंगल का उद्भव स्थान अवन्ती देश है। हिमांशुज अर्थात् चन्द्रमा से जन्म

लिया यानी पुत्र बुध का उद्भव स्थान मगध देश है। देव गुरु बृहस्पति का उद्भवस्थान सैन्धव देश है। शुक्र का उद्भव स्थान भोजकट देश है। शनैश्चर का उद्भव स्थान सौराष्ट्र है। राहु का उद्भव स्थान वैराठिनापुर है। केतु का उद्भव स्थान अन्तर्वेदि है इस प्रकार ग्रहों के देश स्थान का वर्णन किया गया है।

ग्रहों के गोत्र इत्यादि का ज्ञान भी नवग्रह मण्डल निर्माणक को होना चाहिये। जिससे वह रचना करते समय उस बातों को ध्यान रख सके जो उस ग्रह से संबंधित है।

आदित्यः काश्यपेयस्तु आत्रेयः चन्द्रमा भवेत्।
भारद्वाजो भवेद्भौमस्तथात्रेयश्च सोमजः।
गुरुश्चैवागिंरोज्ञेयः शुक्रो वै भार्गवस्तथा।
शनिः काश्यपएवाथराहुः पैठिनसः स्मृतः।
केतवो जैमिनीयाश्च ग्रहगोत्राणि कीर्तयेत्।।

सूर्य के गोत्र का नाम कश्यप है, चन्द्रमा के गोत्र का नाम अत्री है। मंगल के गोत्र का नाम भारद्वाज है। बुध के गोत्र का नाम अत्री है। बृहस्पति के गोत्र का नाम अंगिरा है। शुक्र के गोत्र का नाम भार्गव है। शनि के गोत्र का नाम कश्यप है। राहु के गोत्र का नाम पैठिनसि है तथा केतु के गोत्र का नाम जैमिनी है।

आचार्य वसिष्ठ ने कहा है कि-

जन्मभूर्गोत्रमग्निवर्णस्थानमुखानि च।
यो अज्ञात्वा कुरुते शान्ति ग्रहास्तेनावमानिता।।

अर्थात् किसी भी ग्रह के जन्म भूमि, गोत्र, वर्ण, स्थान, मुख को बिना जाने यदि ग्रह की शान्ति करते है तो वह ग्रह शान्ति से शान्त नही होता है। इसलिये संबंधित सारे विषयों का ज्ञान होना चाहिये।

ग्रहों के लिये विशेष रूप से धूप बतलाया गया है-

रवे कुन्दूरुकं धूपं शशिनस्तु घृताक्षताः।
भौमे सर्जरसं चैव अगरुं च बुधे स्मृतः।
सिंहल्कं गुरवे दद्यात् छुक्रे विल्वागरुं तथा।
गुग्गुलं मन्दवारे तु लाक्षाराहोश्चकेतवे।।

सूर्य के लिये कुन्दूरु का धूप बनाकर जलाना है। चन्द्रमा के लिये घी एवं अक्षत का धूप देना चाहिये। सर्जरस के पौधे से मंगल का धूप तैयार करना चाहिये। बुध के लिये अगरु का धूप जलाना चाहिये। गुरु के लिये सिहल्क का धूप देना चाहिये। शुक्र के लिये विल्वागरु का धूप जलाना चाहिये। शनि के

लिये गुग्गुल तथा राहु एवं केतु के लिये लाक्षा का धूप देना चाहिये।

इसी प्रकार दीप के विषय में मिलता है कि-

नववर्तियुतंदीपं घृतेन परिपूरित।
ग्रहाणामग्रहः कुर्यात्तेजोसीतिप्रकल्पयेदिति।।

इस विषय में आचार्य वशिष्ठ का कथन है कि घी से परिपूरित नव वत्तियों को ग्रहों के प्रसन्नार्थ तेजोसीति मन्त्र से देना चाहिये।

आचार्य याज्ञवल्क्य ने प्रत्येक ग्रह के लिये अलग से नैवेद्य समर्पित करने का विधान किया है।

गुडोदनं पायसं च हविष्यं क्षीरं षाष्टिकम्।
दध्योदनं हविश्चूर्णं मांसंचित्रान्नमेव च।।
दद्याद् ग्र्रहक्रमादेवविप्रेभ्योभोजनं बुधः।
शक्तितोवायथालाभं सत्कृत्यविधिपूर्वकम्।।

अर्थात् क्रमशः वर्णन करते हुये कहा है कि- सूर्य के लिये गुडोदन अर्थात् गुड़ और भात देना चाहिये। ओदन का अर्थ चावल से है परन्तु कुछ आचार्य गण कहते है तण्डुल शब्द का प्रयोग यदि यहां होता तो चावल का अर्थ ठीक होता। ओदन का अर्थ पका हुआ चावल समझना चाहिये। पके हुये चावल को लोक में भात के नाम से जाना जाता है। पायस का नैवेद्य चन्द्रमा के लिये लगाना चाहिये। मंगल हेतु हविष्य नैवेद्य का विधान किया गया है। हविष्य का मतलब ऐसा पदार्थ जो हवन के योग्य हो। हविष्य पदार्थ से तात्पर्य प्रायः पायस से ही होता है। पायस से हवन करने का विधान है। अतः मंगल के लिये हविष्य देना चाहिये। बुध को नैवेद्य हेतु क्षीर देना चाहिये । क्षीर का अर्थ लोग दुग्ध भी करते हैं और खीर भी करते है। बृहस्पति हेतु षाष्टिक देने का विधान है। षष्टिक एक प्रकार का चावल होता है जिसे फलाहार में स्वीकृत किया गया है। शुक्र के लिये दधि एवं ओदन का नैवेद्य लगाना चाहिये। शनि के लिये हविश्चूर्ण, राहु के लिये मांस एवं केतु के लिये चित्र विचित्र अन्न देना चाहिये। अथवा शक्ति के अनुसार जो भी उपलब्ध हो सके उसका नैवेद्य लगाया जा सकता है।

ग्रहों से संबंधित फलों का भी विचार किया गया है।

द्राक्षेक्षुपूगनारिंगजंबीरंबिजपूरकं।
उत्ततिनालिकेरं स्याद्दाडिमानियथाक्रमम्।।
अलाभे तु यथालाभं तद्ग्रहेभ्यः प्रदापयेत्।

यह मत आचार्य वसिष्ठ का है। आचार्य वसिष्ठ ने समझाया है कि सूर्य द्राक्षा यानी खजुर का फल देना चाहिये। चन्द्रमा के लिये इक्षु यानी ईख प्रदान करने का नियम बतलाया गया है। मंगल के लिये

पूंगीफल, बुध के लिये नारंग, बृहस्पति के लिये जंबीर का फल यानी जामुन, शुक्र के लिये बीजपूर, शनि राहु के लिये नरियल तथा केतु के लिये अनार प्रदान करना चाहिये। अलाभ की स्थिति में जो भी फल मिले उसे नवग्रहों के लिये चढ़ाया जा सकता है। ग्रहों के लिये तांबूल का विचार करते हुये कहा गया कि-

खेचराणां तु तांबूलमेकैकंसंप्रदापयदिति

अर्थात् ग्रहों को एक-एक तांबूल प्रदान करना चाहिये।

ग्रहों की दक्षिणा के विषय में आचार्य याज्ञवल्क्य का विचार है कि-

धेनुः शंखस्तथानड्वान् हेमवासोहयः क्रमात्।
कृष्णागौरायसछाग एतावैदक्षिणाः स्मृताइति।।

अर्थात् सूर्य के लिये दक्षिणा धेनु होती है। चन्द्रमा की दक्षिणा शंख होता है। ंमंगल की दक्षिणा अनड्वान है। बुध की दक्षिणा हेम है। बृहस्पति की दक्षिणा वस्त्र है। शुक्र की दक्षिणा घोड़ा हैं। शनि की दक्षिणा काली गाय है। राहु की दक्षिणा आयस यानी लोहा है। केतु की दक्षिणा छाग यानी बकरा या बकरी है।

ग्रहों के होम में हवन द्रव्य का वर्णन करते हुये कहा गया है कि समिधा, आज्य, चरु, तिल इत्यादि से हवन करना चाहिये चाहिये। ग्रहों के लिये पृथक्-पृथक् समिधाओं का वर्णन किया गया है लेकिन उनके अभाव में पलाश की समिधाओं से हवन करने का भी विधान दिया गया है। हवन की संख्या का विचार करते हुये एक-एक ग्रह के लिये एक सौ आठ बार या अठ्ठाइस बार हवन करने का विधान पाया जाता है। हवनीय पदार्थ में मधु, घी या दधि और पायस मिलाकर हवन करना ग्रह शान्ति हेतु अत्यन्त प्रभावकारी माना गया है। ग्रहों के पूजन के सन्दर्भ में हेमाद्रि में वर्णन मिलता है कि एक-एक ग्रह का पृथक्-पृथक् पूजन करना चाहिये । इसके अभाव में एक तन्त्रेण पूजन कर सकते है।

इस प्रकार ग्रहों के स्वरूप के बारे में विचार विमर्श किया गया। इस प्रकरण में आपनें नवग्रह मण्डल पर ग्रहों के स्वरूप एवं प्रतिमा के बारे में आपने जाना । इसकी जानकारी से आप नवग्रह मण्डल पर किस ग्रह की प्रतिमा किसकी तथा उनका स्वरूप आदि क्या है इसके बारे में आप पुष्टता से बता सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित

प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1-सूर्य की प्रतिमा किसकी बननी चाहिये?

क- ताम्र का, ख- स्फटिक का, ग- रक्त चन्दन का, घ- स्वर्ण का।

प्रश्न 2-चन्द्रमा की प्रतिमा किसकी बननी चाहिये?

क- ताम्र का, ख- स्फटिक का, ग- रक्त चन्दन का, घ- स्वर्ण का।

प्रश्न 3-मंगल की प्रतिमा किसकी बननी चाहिये?

क- ताम्र का, ख- स्फटिक का, ग- रक्त चन्दन का, घ- स्वर्ण का।

प्रश्न 4-बुध की प्रतिमा किसकी बननी चाहिये?

क- ताम्र का, ख- स्फटिक का, ग- रक्त चन्दन का, घ- स्वर्ण का।

प्रश्न 5- बृहस्पति की प्रतिमा किसकी बननी चाहिये?

क- ताम्र का, ख- स्फटिक का, ग- रक्त चन्दन का, घ- स्वर्ण का।

प्रश्न 6-शुक्र की प्रतिमा किसकी बननी चाहिये?

क- ताम्र का, ख- स्फटिक का, ग- चांदी का, घ- स्वर्ण का।

प्रश्न 7- शनि की प्रतिमा किसकी बननी चाहिये?

क- लोहे का, ख- स्फटिक का, ग- रक्त चन्दन का, घ- स्वर्ण का।

प्रश्न 8- राहु की प्रतिमा किसकी बननी चाहिये?

क- ताम्र का, ख- सीसे का, ग- रक्त चन्दन का, घ- स्वर्ण का।

प्रश्न 9- केतु की प्रतिमा किसकी बननी चाहिये?

क- ताम्र का, ख- स्फटिक का, ग- रक्त चन्दन का, घ- कांसे का।

प्रश्न 10- पद्मासनः किसका स्वरूप है?

क- सूर्य का, ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

इस प्रकरण में आपने नवग्रह मण्डल बनाने की प्रविधि के बारे में जाना। आशा है अब आप नवग्रह मण्डल का निर्माण आप कर सकेगें।

1.5 सारांश

इस ईकाई में आपने नवग्रह मण्डल के निर्माण का विधान जाना है। वस्तुतः किसी भी प्रकार की शान्ति के लिये या पौरोहित्यिक कर्मकाण्ड के लिये नवग्रह मण्डल का निर्माण एक अत्यन्त आवश्यक अंग होता है। मण्डल का निर्माण बिना वेदी रचना के सम्भव नही है। किसी भी प्रकार के वेदी मण्डप इत्यादि के निर्माणार्थ कर्ता समतल भूमि पर सीधा खड़ा होकर अपनी दोनों भुजायें आकाश की ओर यानी ऊपर की ओर फैलायें। हाथ के अंगुलियों के छोर यानी मध्यमा अंगुलि के सबसे ऊपरी तल से पैर की अंगुलियों तक माप लेना चाहिये। उस सम्पूर्ण माप का शरांश निकालना चाहिये। शरांश का मतलब पंचमांश मानना चाहिये। यह पंचमांश एक हाथ कहलाता है। तात्पर्यार्थ यह भी निकाला जा सकता है कि हर ऊर्ध्व बाहु किये हुये व्यक्ति के पंचमाश का मान उसके हाथ से एक हाथ होता है।हस्तमान निर्धारित हो जाने के बाद उस हाथ से नापकर वेदी का निर्माण किया जाता है। वेदी निर्माण के अननतर मण्डल निर्माण का कार्य किया जाता है। इस मण्डल पर हम नवों ग्रहों को स्थान देते है। तथा उनका अर्चन करते है। इसके अलावा अन्य स्थलों पर यह भी पाया जाता है कि किसी एक ग्रह की शान्ति में उसका आकार बनाकर मुख्य पूजन किया जाता है । कहीं-कहीं पर नवग्रह मण्डल निर्माण हेतु सम्पूर्ण विधि व्यवस्थायें नही उपलब्ध हो पाती है ऐसी स्थिति में सांकेतिक रूप से आम्र पल्लवों के ऊपर या अक्षत पुंजो के ऊपर ही ग्रहों को आवाहित कर पूजित किया जाता है। कभी-कभी उतना बृहद् आयोजन नही होता या समय का अभाव होता है तो नवग्रहों का पृथक्-पृथक् नाम से आवाहन न करके केवल ध्यान कर लेते है।

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्चशुक्रः शनिराहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकराः भवन्तु।।

इस श्लोक से ध्यान कर और आगे का उपक्रम करते हैं।नवग्रह मण्डल के आरम्भ में सर्वप्रथम रेखा आरेख किया जाता है। रेखा आरेख करके कुल नव वर्ग बनाये जाते है। इसके लिये पूर्वा पर पांच-पांच रेखायें खीची जाती है। इस प्रकार रेखा आरेख करने से कुल नव प्रकोष्ठ बनकर तैयार हो जाता

है। इन नव प्रकोष्ठों में एक-एक प्रकोष्ठ चारो दिशाओं यानी पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में तथा एक-एक प्रकोष्ठ चारो कोनांे अर्थात् अग्नि कोण, नैर्ऋत्य कोण, वायव्य कोण एवं ईशान कोण में होता है। इन सबके बीच में एक प्रकोष्ठ हो जाता है। इस प्रकार कुल नव प्रकोष्ठ बनकर तैयार हो जाता है। इन नवों प्रकोष्ठों में मध्य प्रकोष्ठ में भास्कर यानी सूर्य का स्थान होगा। पूर्व एवं दक्षिण के मध्य यानी अग्निकोण वाले प्रकोष्ठ में शशि का स्थान दिया जायेगा। दक्षिण में रक्त वर्णीय मंगल का स्थान दिया जायेगा। पूर्व एवं उत्तर के मध्य वाले यानी ईशान कोण वाले प्रकोष्ठ में बुध का स्थान होगा। उत्तर वाले प्रकोष्ठ में देव गुरू बृहस्पति का स्थान होगा। पूर्व प्रकोष्ठ में शुक्र का स्थान होगा। पश्चिम में शनि का स्थान होगा। राहु का दक्षिण एवं पश्चिम के मध्य यानी नैर्ऋत्य कोण वाले प्रकोष्ठ में तथा पश्चिम एवं उत्तर यानी वायव्य कोण में केतु नामक ग्रह का स्थान होगा। सूर्य एवं मंगल को रक्त वर्णीय बनाना चाहिये। शुक्र एवं चन्द्रमा को श्वेतवर्णीय बनाना चाहिये। बुध एवं बृहस्पति को सुवर्ण की आभा वाले वर्ण से बनाना चाहिये। राहु एवं शनि को कृष्ण वर्ण का तथा केतु को धूम्र वर्ण का बनाना चाहिये । इस प्रकार नवग्रह मण्डल का निर्माण करके पूजन करने का विधान मिलता है।

1.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

प्रकोष्ठ- घर या खाना, अर्चन- पूजन, हरित- हरा, कराल- विकराल, शूली- शूल धारण किये हुये, गदी- गदा लिये हुये, चर्म- ठाल, खड्ग- तलवार, सर्षप- सरसों, मण्डल- धेरा, रेखा- आरेख-रेखा खीचना, सम्भार- सामग्री, पीड़ा- कष्ट, ताम्र- तांबा, रजत- चांदी, आयस- लोहा समित्- समिधा, तिल- तिल्ली, आज्य- घृत्, ओदन- भात, यमल- जुड़वा, क्षीर- दुग्ध, पंचत्वक्- पांच पेड़ों की छालें, हिरण्य- सुवर्ण, रजत- चांदी, कांस्य- कांसा, पायस- खीर, पंचगव्य- गौ से निकले पांच पदार्थ, सप्त धान्य- सात प्रकार का अनाज, सप्तमृत्तिका- सात स्थानों की मिट्टी, श्वेत सर्षप- सफेद सरसों, अर्क- मदार, पलाश- पलाश, खदिर- खैर, गोमय- गोबर, पल्लव- वृक्ष का पत्ता, द्राक्षा- खर्जूर, अपामार्ग- चिचिड़ी, उदुम्बर- गूगल, कृसर- खिचड़ी, वृषभ- बैल, निष्क्रय- क्रय करने के लिये, व्याधि- रोग, छाग- बकरी, खड्ग- तलवार, मृद- मिट्टी, महिषी- भैंस, योजनीय- जोड़ने योग्य, वर्जनीय- त्यागने योग्य, अश्व- घोड़ा, लौह- लोहा, मुक्ताफल- मोती, विद्रुम- मूंगा, गारुत्मक- पन्ना, पुष्पक- पुखराज, वज्र- हीरा, कुलित्थ- कुलथी, रक्त- लाल, पीत- पीला, कृष्ण- काला, वर्ण- रंग, आमलक- आंवला, माष- उड़द, तंडुल- चावल, पूंगीफल- सुपारी, मुखवलोकन- मुख का अवलोकन करना, भुर्जपत्र- भोजपत्र, तण्डुल-चावल, शक्कर- देशी चीनी, चड़क- चना, मुद्ग- मूंग, श्यामक- सांवा, गोधूम- गेहूं,

कंगु- ककून, बल्मीक- चीटी का स्थान, संगंम- दो या दो से अधिक नदियों का मिलन, पद्म- कमल, कर- हाथ, वज्री- वज्र धारण करने वाला, किरीट- मुकुट, परिमाण- मात्रा ।

1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इस उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

1.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-घ, 2-क, 3-ग, 4-ग, 5-घ, 6-घ, 7-ख, 8-ग, 9- ख, 10- क।

1.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-ग, 6-घ, 7-क, 8-ग, 9- क 10-घ।

1.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-घ, 2-ख, 3-ख, 4-क, 5-क, 6-घ, 7-घ, 8-ग, 9-घ, 10-ख।

1.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-घ, 6-ग, 7-क, 8-ख, 9- घ, 10-क ।

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-कुण्डमण्डपसिद्धिः।

2- कुण्डार्क।

3- कुण्ड- प्रदीपः।

4-शान्ति- विधानम्।

5-संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

6-यजुर्वेद- संहिता।

7- ग्रह- शान्तिः।

8- कुण्ड दर्पण।

9- अनुष्ठान प्रकाश।

10- कर्मजभवव्याधि दैव चिकित्सा।

11- संस्कार-भास्करः । वीणा टीका सहिता।

12- मनोभिलषितव्रतानुवर्णनम्- भारतीय व्रत एवं अनुष्ठान।

1.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- मुहूर्त्त चिन्तामणिः।

2- श्री काशी विश्वनाथ पंचांग।

3- पूजन विधानम्।

4- रत्न एवं रुद्राक्ष का धारण।

5- संस्कार- विधानम्।

1.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- नवग्रह मण्डल का परिचय दीजिये।

2- नवग्रहों के स्वरूप की प्रासंगिकता बतलाइये।

3- नवग्रहों के आकृति के बारे में आप क्या जानते है? वर्णन कीजिये।

4- नवग्रह मण्डल निर्माण में वर्ण विधान वर्णित कीजिये।

5- नवग्रह रचना प्रकार की विधि का वर्णन कीजिये।

6- ग्रहों का प्रतिमा विचार सविधि लिखिये।

7- सूर्य एवं चन्द्र के स्वरूपो का वर्णन कीजिये।

8- मंगल एवं बुध के स्वरूपों का वर्णन कीजिये।

9- गुरू एवं शुक्र के स्वरूप संबंधी श्लोकों को लिखिये।

10- शनि एवं राहु के स्वरूपों के बारे में बतलाइये।

ईकाई – 2 नवग्रह स्थापन

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 नवग्रह
2.3.1 नवग्रहों की प्रकृति
2.3.2 नवग्रहों का स्वरूप एवं काल पुरुष से संबंध
2.4 नवग्रह स्थापन
2.4.1 वैदिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन
2.4.2 पौराणिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन
2.4.3 नाम मन्त्रों से नवग्रह स्थापन
2.4.4 तान्त्रिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन
2.5 सारांशः
2.6 पारिभाषिक शब्दावली
2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.8 बोधप्रश्नों के उत्तर
2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में नवग्रहों की स्थापना संबंधी प्रविधि का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व नवग्रह मण्डल निर्माण सहित अन्य शान्ति प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया होगा। कोई भी जातक यदि कोई शान्ति कराता है तो प्रायः शान्ति प्रविधियों में नवग्रहों का स्थापन करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में नवग्रहों की स्थापना आप कैसे करेगें, इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

किसी भी पौरोहित्यिक कर्म में नवग्रहों का स्थापन प्रायः किया जाता है। '**ग्रहाधीनं जगत्सर्वं** कहते हुये आचार्यो ने बतलाया है कि ग्रहों के अधीन ही सारा संसार चलता है। इसलिये ग्रहों की कृपा व्यक्ति के ऊपर होनी आवश्यक है। मानव जीवन का सम्पूर्ण काल किसी न किसी ग्रह की दशा में व्यतीत होता है। इसलिये भी वह काल शुभ रहे इसकी अपेक्षा व्यक्ति करता है। इसके साथ -साथ ही सामान्य रूप से पौरोहित्य कर्म में भी नवग्रह मण्डल का निर्माण करके नवग्रहों का स्थापन किया जाता है। ग्रहों के नाम पर सामान्य लोगों में यही धारणा बनी रहती है कि नौ ग्रह है उनका नाम ले लो बश हो गई शान्ति। लेकिन जब आप नवग्रह मण्डल पर ग्रहों का स्थापन विधान देखेंगे तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि नवग्रह मण्डल पर तो कुल चौवालीश 44 देवता होते है। अभी हम केवल नवग्रहों का कहां कहा स्थापन किया जाता है ? इसपर चर्चा करेगे। इन नवग्रहों का जन्मस्थान एवं गोत्रादि क्या होता है? साथ ही इससे संबंधित विविध ज्ञान की प्रप्ति आपको इस ईकाई से होगी।

इस इकाई के अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल पर नवग्रह स्थापना करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे संबंधित व्यक्ति का संबंधी दोषों से निवारण हो सकेगा जिससे वह अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित होते हुये लोकोपकारक हो सकेगा। इसके अलावा आप अन्य योगदान दें सकेगें, जैसे - कल्पसूत्रीय विधि के अनुपालन का सार्थक प्रयास करना, समाज कल्याण की भावना का विकास करना, इस विषय को वर्तमान समस्याओं के समाधान सहित वर्णन करने का प्रयास करना एवं वृहद् एवं संक्षिप्त दोनों विधियों के प्रस्तुतिकरण का प्रयास करना आदि, इस शान्ति के नाम पर समाज में व्याप्त कुरीतिओं, कुप्रथाओं, ठगी, भ्रष्टाचार, मिथ्या भ्रमादिकों का निवारण हो सकेगा।

2.2 उद्देश्य-

इस ईकाई के अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल पर नवग्रहों के स्थापन की आवश्यकता को समझ रहे होगें। अतः इसका उद्देश्य तो वृहद् है परन्तु संक्षिप्त में इस प्रकार आप जान सकते है।

- नवग्रहों की स्थापना से समस्त कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।
- नवग्रह स्थापन की शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।
- इस कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।
- समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।
- संदर्भित शिक्षा के विविध तथ्यों को प्रकाश में लाना।

2.3 नवग्रह

2.3.1 नवग्रहों की प्रकृति

यह सर्व विदित है कि जब भी हम कोई शान्ति करते हैं तो नवग्रह मण्डल का निर्माण कर नवग्रहों की स्थापना अवश्य करते हैं। न केवल शान्ति अपितु यज्ञों में भी नवग्रहों की स्थापना करनी पड़ती है। नवग्रहों की स्थापना के बिना हम किसी भी अनुष्ठानिक प्रक्रिया का सम्पादन नही कर सकते इसलिये नवग्रहों का ज्ञान अति आवश्यक है। ईशाने ग्रह वेदिका कहते हुये यह बतलाया गया है कि नवग्रह वेदी का निर्माण ईशान कोण में करके नवग्रहों की स्थापना करनी चाहिये। किसी भी यज्ञ के सम्पादन में अग्नि कोण में योगिनी मण्डल, नैर्ऋत्य कोण में वास्तु मण्डल , वायव्य कोण में क्षेत्रपाल मण्डल बनाने एवं ईशान में नवग्रह मण्डल पर नवग्रह स्थापन का नियम है। नवग्रहों के रूप में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु होते हैं।

इन नवग्रहों में सूर्य को सभी ग्रहों में प्रधान ग्रह माना गया है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य को अखिल ब्रह्माण्ड का केन्द्र कहा गया है। इसे ब्रह्माण्ड नायक भी कहा जाता है। वेदों में सूर्य को जगदात्मा सूर्य आत्मा जगतस्तुश्च कहकर किया गया है। सूर्य सम्पूर्ण सौर मण्डल का पिता एवं ग्रहों के अधिपति के रूप में जाना जाता है। यह सृष्टि की जीवनी शक्ति एवं गति का कारक है। उपनिषदों और पुराणों में सूर्य का वर्णन सृष्टि के उत्पादन एवं हिरण्यगर्भ के रूप में मिलता है। गायत्री छन्द के उपास्य देव यही भगवान् सविता है।

दूसरे ग्रह के रूप में चन्द्रमा को जाना जाता है। चन्द्रमा मनसो जातः शुक्लयजुर्वेद के इस मन्त्र से स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में ऋषियों ने चन्द्र का मन से घनिष्ठ संबंध प्रत्यक्ष कर लिया था।

कालान्तर में इस पर विचार करते हुये आचार्यों ने चन्द्रमा को मन के रूप में स्वीकार किया है। चन्द्रमा को ज्योतिष में कालपुरुष का मन मानते हुये व्यक्ति की मानसिकता का कारक एवं नियामक माना गया है। संक्षेपतः यह कहा जा सकता है कि बलवान चन्द्रमा स्वस्थ्य मानसिकता तथा निर्बल चन्द्रमा संकुचित मानसिकता का संसूचक होता है। व्यक्ति के जीवन में इस बात को ध्यान देने की जरूरत है कि लग्न शरीर का तथा चन्द्रमा मन का प्रतिनिधित्व करता है। शरीर ही वह क्षेत्र है जहां हम कृत कर्मों का फल भोगते है। यदि लग्न एवं चन्द्रमा दोनों ही पापग्रह से आक्रान्त हों तो दूषित मस्तिष्क चन्द्रमा की स्थिति को स्पष्ट करता है और जातक को बुरे कामों में लगाता है।

तीसरे ग्रह के रूप में मंगल की चर्चा की गयी है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के अनुसार मंगल की माता का नाम पृथ्वी एवं पिता का नाम श्री विष्णु है। मंगल की उत्पत्ति भगवान विष्णु के पसीने की बूंद को पृथ्वी द्वारा धारण किये जाने के कारण मानी गयी है। वामन पुराण में वर्णन मिलता है कि भगवान् शिव के द्वारा अन्धकासुर का वध कर दिये जाने के कारण उनके शरीर से उत्पन्न पसीने से मंगल का जन्म हुआ। पद्म पुराण के अनुसार जब भगवान शंकर ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस किया तब उनके पसीने की बूंद से वीरभद्र उत्पन्न हुये एवं उनको पृथ्वी से दूर मंगल ग्रह के रूप में रहने का आदेश प्राप्त हुआ। सभी कथानकों के अनुसार मंगल का जन्म शिव या विष्णु के पसीना को पृथ्वी द्वारा धारण करने पर माना गया है। मंगल को काल पुरुष का सत्व कहा गया है। यह अत्यधिक क्रियात्मक एवं तामसिक ग्रह है तथा व्यक्ति के शारीरिक शक्ति, क्रिया और पाश्व प्रवृत्तियों का सूचक है।

चौथे ग्रह बुध को काल पुरुष की वाणी कहा गया है। व्यक्ति के स्नायु मण्डल एवं बुद्धि पर इसका विशेष प्रभाव रहता है। वाणी एवं भावाभिव्यक्ति के कारक इस ग्रह के पाप पीड़ित होने के कारण बुद्धि एवं बोलने में गतिरोध होता है। यह सौम्य एवं नपुंसक ग्रह है। शुभग्रह के साथ शुभ एवं पाप ग्रह के साथ पापी हो जाता है। सूर्य के साथ बैठकर भी उससे आक्रान्त नही होता अपितु बुधादित्य नामक विशिष्ट कल्याणकारी योग बनाता है।

पांचवें ग्रह के रूप में बृहस्पति को माना गया है। बृहस्पति सौर मंडल का सबसे बड़ा एवं सर्वाधिक शुभग्रह है। इसे काल पुरुष के ज्ञान के रूप में स्वीकार किया गया है। ज्ञान एवं सुख का प्रधान कारक बृहस्पति को माना गया है। यह जिस भाव में उपस्थित रहता है उसके कारकत्व के लिये बाधक रहता है परन्तु इसकी दृष्टि परम शुभ मानी गयी है। यह जिस भाव को देखता है उस भाव के शुभता में वृद्धि कर देता है। ग्रहों में यह प्रधान मंत्री और आध्यात्मिक ग्रह के रूप में जाना जाता है ।

छठवें ग्रह के रूप में शुक्र को स्वीकार किया गया है। शुक्र को दैत्यों का आचार्य माना गया है। शुक्रवार को देवी की उपासना हेतु अच्छा माना गया है। जातक के भौतिक व्यक्तित्व का यह प्रतीक

माना जाता है। व्यक्ति में आकर्षण का कारण शुक्र को माना गया है। ज्येतिष में शुक्र को शुभग्रह के रूप में स्वीकार किया गया है।

सातवे ग्रह के रूप में शनि का स्थान आता है। नवग्रहों में से सबसे क्रूर, कठोर एवं प्रभावशाली पापग्रह शनि को माना गया है। ऐसा नही है कि शनि सभी भावों में स्थित होने पर पाप फल ही देता है। कुछ भावों में शनि की स्थिति परम लाभप्रद भी होती है। किन्तु ऐसा अपवाद स्वरूप ही देखने में आता है। अधिकांश जातक शनि के प्रभाव से पीड़ा ही पाते है। दुष्ट, दुर्भाग्यशाली, अमंगल, हानिकारक एवं भयानक रूप वाले व्यक्ति को बोलचाल की भाषा में लोग शनिचर कह दिया करते है। इसका तात्पर्य यह है कि शनि अमंगल, हानि एवं दुर्भाग्य का प्रतीक माना जाता है। एक बात और सत्य है कि जिस प्रकार जीवन के साथ मृत्यु का संयोग अवश्यम्भावी है उसी प्रकार सृष्टि का प्रत्येक प्राणी किसी न किसी रूप में शनि से अवश्य प्रभावित होता है।

आठवें ग्रह के रूप में राहु तथा नवें ग्रह के रूप में केतु को माना गया है। पौराणिक कथाओं के अनुसार राहु एक चतुर तथा धूर्त्त राक्षस था। जो समुद्र मन्थन से निकले अमृत वितरण के समय, मोहिनी रूपधारी भगवान विष्णु के छल को उसी क्षण समझकर अमृत पान के लिये रूप बदल कर देवताओं की पंक्ति में बैठ गया था। सूर्य एवं चन्द्रमा ने भगवान विष्णु को उसके इस कृत्य के बारे में बतलाया। राहु की सत्यता का ज्ञान होने पर भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से उसके शिर को काट दिया किन्तु वह अमृत पान कर चुका था इसलिये उसकी मृत्यु नही हो पायी। फलतः वह दो रूपों में सामने आया जिसमें शिर भाग का नामकरण राहु के रूप में एवं शरीर भाग का नामकरण केतु के रूप में किया गया। इसलिये राहु को सूर्य एवं चन्द्रमा का शत्रु माना जाता है तथा ग्रहण का कारण बनता है।

इस प्रकार इस प्रकरण में आपनें नवग्रहों की प्रकृति एवं कालपुरुष से संबंध का विचार जाना । इसकी जानकारी से आप नवग्रहों बारे में आप पुष्टता से बता सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1-नवग्रहों में प्रधान ग्रह किसे माना गया है?

क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।

प्रश्न 2- नवग्रहों में आत्मा का कारक कौन हैं ?

क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।

प्रश्न 3-नवग्रहों में मन का ग्रह किसे माना गया है?

क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।

प्रश्न 4- पृथ्वी किसकी माता है?

क-सूर्य की, ख- चन्द्रमा की, ग- मंगल की, घ- बुध की।

प्रश्न 5- काल पुरुष का सत्व किसे माना गया है?

क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।

प्रश्न 6-काल पुरुष की वाणी किसे माना गया है?

क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।

प्रश्न 7-नवग्रहों में नपुंसक ग्रह किसे माना गया है?

क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।

प्रश्न 8-नवग्रहों में प्रधान मंत्री किसे माना गया है?

क-बृहस्पति को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।

प्रश्न 9-नवग्रहों में काल पुरुष का ज्ञान किसे माना गया है ?

क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बृहस्पति को।

प्रश्न 10-नवग्रहों में दैत्याचार्य किसे माना गया है?

क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- शुक्र को, घ- बुध को।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में नवग्रहों का परिचय प्राप्त किया। आशा आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम इन नवग्रहों का स्वरूप कैसा है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है, जो इस प्रकार है-

2.3.2 नवग्रहों का स्वरूप एवं काल पुरुष से संबंध

पूर्व प्रकरण में आपने नवग्रहों की प्रकृति को जाना। अब हम इस प्रकरण में आपसे नवग्रहों के स्वरूप की चर्चा करेगें जिससे आपको आगे नवग्रहों के स्थापन को समझने में अत्यन्त सुख की अनुभूति होगी।

नवग्रहों में प्रथम ग्रह सूर्य के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि सूर्य पुरुष, उग्र एवं अग्नि प्रधान ग्रह है। यह क्रूर ग्रह है। इसका वर्ण रक्त श्याम है, नेत्र शहद के समान कुछ पीला लिये हुये, दृष्टि तीक्ष्ण, अल्प केश तथा शरीर चौकोर है। उष्ण एवं तीक्ष्ण होने के कारण इसकी प्रकृति पित्त प्रधान है। सूर्य ग्रह सत्व गुणी है । इसकी दिशा पूर्व एवं स्थान देवालय है। इस ग्रह की धातु ताम्र एवं स्वर्ण है। यह क्षत्रिय वर्ण का ग्रह है। सूर्य की ऋतु ग्रीष्म एवं रत्न माणिक्य है। सूर्य उत्तरायन एवं मध्यान्ह में बली होता है। इसके अधिदेवता रुद्र एवं प्रत्यधि देवता अग्नि है। सूर्य ग्रह व्यक्ति के आत्मिक शक्ति एवं तेजस का परिचायक है। जन्म कुण्डली में पिता, नेत्र, आरोग्यता, राज्य, राजनैतिक पद, शासन, जीवनी शक्ति, क्षात्र कर्म, अधिकार, महत्वाकांक्षा, नियामक क्षमता, राजसी वैभव, यश, स्पष्टता, उष्णता, उग्रता, उत्तेजना, प्रभाव, रुचि, आत्मज्ञान, शरीर की बनावट, शिवोपासना आदि का विचार सूर्य से करने के लिये बतलाया गया है।

चन्द्रमा के स्वरूप की चर्चा करते हुये बतलाया गया है कि फलित ग्रन्थों के अनुसार इसका शरीर वर्तुल यानी गोल एवं दुर्बल, नेत्र मराल के समान सुन्दर, प्रकृति कफ वायु प्रधान, वर्ण गौर एवं मृदु वाणी है। इसे अत्यन्त चंचल, बुद्धिमान्, दयालु, कामी तथा प्रभावी वक्ता के रूप में स्वीकार किया गया है। चन्द्रमा जल तत्व प्रधान एवं स्त्री ग्रह है। चन्द्रमा तरुण, सत्वगुणी एवं वैश्य वर्ण का ग्रह है। चन्द्रमा की धातु रक्त, रस लवण, दिशा वायव्य, ऋतु वर्षा एवं मणि मोती है। यह ग्रह रात्रि बली होता है। शुक्ल पक्ष की पंचमी से कृष्णपक्ष की दशमी तक चन्द्र को पूर्ण बली माना गया है। जन्म कुण्डली में सुगन्ध, पुष्प, बुद्धि, मन, मानसिक भाव एवं संरचना, लावण्य, कान्ति, जलीय पदार्थ, चांदी, मोती, माता का दुग्ध, मासिक रजोदर्शन, आलस्य, कफ, सर्दी, दया, लता, क्रोध, अश्रु, कल्पना, चावल, कपास, सफेद वस्त्र इत्यादि का विचार चन्द्रमा नामक ग्रह से किया जाता है। रात्रि में जन्म होने पर चन्द्रमा माता का कारक तथा दिन में जन्म होने पर चन्द्रमा मौसी का कारक माना जाता है। चन्द्रमा का वाम नेत्र पर विशेष अधिकार होता है।

मंगल के स्वरूप की चर्चा करते हुये बतलाया गया है कि मंगल पुरुष, अग्नि तत्व प्रधान एवं पापग्रह है। तैजस तत्व की प्रधानता के कारण यह पित्त प्रकृति तथा उग्र बुद्धि वाला है। मंगल की दृष्टि में कूररता है। मंगल का रंग गोरापन लिये हुये लाल, केश चमकीले एवं घुंघराले, कमर पतली, कच्छ ऊंचा, दृढ़ प्रकृति तमोगुणी हिंसक, गर्वीला, उग्र किन्तु उदार तिक्त रस प्रिय एवं तरुण अवस्था वाला है। यह रात्रि बली तथा रति क्रिया में कामी माना गया है। शरीर में मज्जा भाग पर तथा हड्डियों पर विशेष रूप से इसका अधिकार है। मंगल का वर्ण क्षत्रिय, दिशा दक्षिण, ऋतु ग्रीष्म, पदार्थ कटु, रत्न मूंगा एवं इसके देवता षडानन है। जन्म कुण्डली में इस ग्रह से बल, पराक्रम, संघर्ष, युद्ध विजय,

कू्ररता, हिंसक अपराध, अधिकार की भावना, आतंक, धैर्य, काम वासना, कामोन्माद, मनोविकार, आवेश, ऋण, पाश्विक वृत्तियां, सेनापति, सर्जन, चोर, हत्यारा, डकैत, मिथ्याभाषण, विश्वासघात, परस्त्रीगमन, क्रोध, द्वेष, उग्र वाद विवाद, पौरुषशक्ति, महत्वाकांक्षा, कार्य निपुणता, स्वतंत्रता, भूमि, बाग, वंश, देवता, लाल पदार्थ, अग्नि, उष्णता, व्रण, शस्त्र, दुर्घटना, आग्नेयास्त्र, रक्त, घाव, रक्त जमना एवं भाइयों का विचार किया जाता है। प्रथम, चतुर्थ, अष्टम एवं द्वादश भावों में यह मांगलिक दोष कारी माना गया है जो पापग्रहों के प्रभाव के कारण जीवन में विष घोल देता है। पुत्रहीनता एवं ऋणग्रस्तता भी दूषित मंगल की ही देन है।

बुध के स्वरूप की चर्चा करते हुये बतलाया गया है कि इसका रंग नवीन दूर्वा के समान, नेत्र विशाल और आरक्त वाणी, मधुर एवं परिहासशील, त्वचा स्वस्थ्य, शरीर हृष्ट पुष्ट, प्रकृति त्रिदोष मिश्रित एवं अवस्था कुमार मानी जाती है। रजोगुणी प्रवृत्ति वाले, बुद्धिमान, स्पष्ट वक्ता, रूपवान्, आकर्षक, पृथ्वी तत्व वाला, रत्न पन्ना, ऋतु शरद और दिशा उत्तर है। इसकी दृष्टि तिरछी है अर्थात् कटाक्ष पात करने वाला है। बुध शुक्र से पराजित होता है तथा राहु दोष का शमन करने वाला है। जन्मकुण्डली में वाणी, विद्या, विवेक, बुद्धिमत्ता, गणित ज्योतिष एवं वैद्यक कलाओं में निपुणता, उपासना आदि में पटुता, भाषण चातुर्य शिल्प, चमत्कार पूर्ण भाषा विज्ञान, वाणिज्य, तर्कशास्त्र, हास्य, लेखन, गोत्र, समृद्धि, यज्ञ, विष्णु भक्ति विहार स्थल, बंधु, मामा, मित्र, दत्तक पुत्र, हरे पत्ते वाले पेड़, रत्न संशोधक आदि का विचार बुध से किया जाता है। उच्च शिक्षा, अन्तर्ज्ञान, पत्रकारिता एवं अभिचार का बुध कारक माना जाता है।

बृहस्पति के स्वरूप का वर्णन करते हुये यह पाया जाता है कि बृहस्पति सत्वगुणी, पुरुष ग्रह, बड़े स्थूल शरीर तथा उदर के स्वामी, पीत वर्ण, नेत्र एवं शिर के बाल कुछ भूरा लिये हुये, कफात्मक वाणी शंख की तरह गंभीर तथा बुद्धि श्रेष्ठ एवं धार्मिक होता है। ग्रह के गुण एवं प्रकृति के अनुसार ही जातक का रूप एवं स्वभाव होता है। विनीत, निपुण, सर्वशास्त्राधिकारी, क्षमाशील एवं प्रसन्न रहना गुरु का स्वभाव है।यह धन का प्रधान कारक ग्रह है। पाप पीड़ित या निर्बल होकर विपन्नता प्रदान करता है। जन्मकुण्डली में इससे गुर्दे, व्यक्ति की सौम्यता, धर्म आध्यात्म नैतिक मूल्यों का विचार, परमार्थिक चित्त, श्वेत या पवित्र पदार्थों का व्यवसाय, शिक्षा का क्षेत्र, धार्मिक क्षेत्रों से संबंधित कार्य एवं व्यवसाय आदि का विचार बृहस्पति से किया जाता है।

शुक्र के स्वरूप का वर्णन विशद रूप से नही ज्ञात होता है। इसके स्वरूप के बारे में पुराणों में बतलाया गया है कि तपस्वी का स्वरूप, साधना प्रिय, दैत्यों के गुरु, जटायें बढ़ी हुयी, अपने कार्य

सिद्धि हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ एवं स्वभिमान प्रिय हैं। जन्म कुण्डली में शुक्र से सुन्दरता, भोग विलास, कला रोमांस, गीत, संगीत, चित्रकारी, मूर्तिकला, ऐश्वर्य, स्त्री सुख, सौन्दर्य प्रसाधन, घर, वाहन सुख, वीर्य, काम वासना की विशेषता या दोष, कामजनित पीड़ा, खाद्य पदार्थ, रस, विलास सामग्री से संबंधित व्यवसाय आदि विषय शुक्र के अधिकार क्षेत्र में आते है।

शनि के स्वरूप का संक्षेप में वर्णन करते हुये यह प्राप्त होता है कि नराकृति, विकराल आंखे, भयानक चेहरा, न्याय प्रिय, कुरर, हठी, कृष्ण शरीर वाला शनि का स्वरूप है। जन्म कुण्डली में तृष्णा, अभाव, दरिद्रता, परीक्षा, प्रतियोगिता, किसी भी कार्य में विलम्ब, दुख, भटकाव, धैर्य, मतिभ्रम, कष्टों की श्रृंखला, उच्च शिक्षा, गहन अध्यात्म, वैराग्य मोक्ष प्राप्ति के प्रयास, राजनीति में प्रवेश, जनता का समर्थन, घर में वृद्ध जनों से प्राप्त सुख या दुख, लोहा, कोयला, लकड़ी, तेल, आटो पार्ट्स, लौह उद्योग, वाहन उद्योग, पुरानी वस्तुओं का व्यवसाय या संग्रह आदि का विचार शनि से किया जाता है।

राहु के स्वरूप का विचार करते हुये बतलाया गया है कि इसका रंग काला, वस्त्र काला एवं चित्र विचित्र, जाति शूद्र, आकार दीर्घ और भयानक, तीक्ष्ण स्वभाव, नीची दृष्टि, तामसी गुण , वात प्रकृति एवं अतिवृद्ध अवस्था मानी जाती है। गारुणी एवं मायाचारी विद्या के कारक इस ग्रह की दिशा नैर्ऋत्य, भूमि ऊषर, धातु लोहा, स्थान साप का बिल, अस्थि रोग तथा ऋतु शिशिर है। यह ग्रह एक राशि में अट्ठारह महीने भ्रमण करता है। सदा वक्री रहता है यानी उल्टा ही चलता है। कुण्डली में झूठ, कुतर्क, दुष्ट अथवा अन्त्यज स्त्री गमन, नीच जनों का आश्रय, गुप्त एवं षड़यंत्रकारी कार्य, धोखेबाजी, विश्वासघात, जुआ, अधार्मिकता, चोरी, पशु मैथुन, रिश्वत लेना, भ्रष्ट आचार, निन्द्य एवं गुप्त पाप कर्म, कठोर भाषण, विदेश गमन, विषम स्थान भ्रमण, दुर्गा की उपासना, राजवैभव, पितामह एवं आकस्मिक विपत्तियों का कारक माना जाता है।

केतु के स्वरूप का विचार करते हुये बतलाया गया है कि केतु का वर्ण धूयें के समान, स्वभाव तामस एवं प्रभाव से कुछ आध्यात्मिक रुझान लिये हुये, आकार पूंछ जैसा, शरीर दीर्घ एवं वृद्ध, वस्त्र पुराने तथा फटे हुये, तत्व तेजस मंगल के समान, दिशा उत्तर पश्चिम तथा जाति अन्त्यज माना जाता है। गुप्त तन्त्र मन्त्र, छुद्र विद्या, विदेशी भाषा आदि में प्रवीण इस ग्रह की धातु अष्ट धातु, द्रव्य कांसा, रत्न लहसुनिया एवं रस फीका है। जन्मकुण्डली में इस ग्रह से आकस्मिक बाधायें, विपत्ति, क्षय, रोग, पीड़ा, भूख, दुर्भिक्ष, बंधन, दरिद्रता, शारीरिक एवं मानसिक मलीनता, बालारिष्ट, मातामह, परदादा, गणेशादि देवोपासना आदि का विचार किया जाता है।

इस प्रकार इस प्रकरण में आपनें नवग्रहों के स्वरूप को जाना । इसकी जानकारी से आप नवग्रहों बारे में आप पुष्टता से बता सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- सबसे अधिक अग्नि तत्व प्रधान ग्रह किसे माना गया है?
क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।
प्रश्न 2- नवग्रहों में जल तत्व प्रधान ग्रह किसको कहते हैं ?
क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।
प्रश्न 3- पित्त प्रकृति एवं उग्र तत्व वाला ग्रह किसको कहा जाता हैं ?
क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।
प्रश्न 4- पृथ्वी तत्व वाला, रत्न पन्ना, ऋतु शरद और दिशा उत्तर वाला ग्रह किसे कहा जाता है?
क-सूर्य को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।
प्रश्न 5-विनीत, निपुण, सर्वशास्त्राधिकारी, क्षमाशील एवं प्रसन्न रहने वाला ग्रह किसे माना जाता है?
क-बृहस्पति को, ख- चन्द्रमा को, ग- मंगल को, घ- बुध को।
प्रश्न 6- तपस्वी का स्वरूप, साधना प्रिय, दैत्यों के गुरु किसको कहा जाता है?
क-बृहस्पति को, ख- शुक्र को, ग- मंगल को, घ- बुध को।
प्रश्न 7- नराकृति, विकराल आंखे, भयानक चेहरा, न्याय प्रिय किस ग्रह को कहा जाता है?
क-बृहस्पति को, ख- शुक्र को, ग- शनि को, घ- राहु को।
प्रश्न 8-तीक्ष्ण स्वभाव, नीची दृष्टि, तामसी गुण, वात प्रकृति एवं अतिवृद्ध अवस्था किसको व्यक्त करता है?
क-बृहस्पति को, ख- शुक्र को, ग- शनि को, घ- राहु को।
प्रश्न 9- ग्रह की धातु अष्ट धातु, द्रव्य कांसा, रत्न लहसुनिया से किसको व्यक्त किया गया है?
क-केतु को, ख- शुक्र को, ग- शनि को, घ- राहु को।
प्रश्न 10- विश्वासघात, जुआ, अधार्मिकता, चोरी इत्यादि का कारक किसको माना जाता है?

क-केतु को, ख- शुक्र को, ग- शनि को, घ- राहु को।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में नवग्रहों के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया। आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम इन नवग्रहों की स्थापना कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है, जो इस प्रकार है-

2.4 नवग्रह स्थापन

नवग्रहों का स्थापन विविध प्रकारों से बतलाया गया है। उन विधियों में चार विधियां मुख्य है जिनकी यहा मैं चर्चा करूंगा जिसमें वैदिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन, पौराणिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन, नाम मन्त्रों से नवग्रह स्थापन एवं तान्त्रिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन है।

2.4.1 वैदिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन-

इस विधि में हम नवग्र्रहों के स्थापन हेतु बताए गए वैदिक मन्त्रों का प्रयोग करने जा रहे है। इस सन्दर्भ में याज्ञवल्क्य स्मृतिः के आचाराध्याय के ग्रह शान्ति प्रकरण में दिया गया है कि-

आकृष्णेन इमं देवा अग्निर्मूधा दिवः ककुत्।
उद्बुध्यस्वेति च ऋचो यथासंख्यं प्रकीर्तिताः ।।
बृहस्पते अतियदर्यस्तथैवान्नात्परिस्रुतः।
शं नो देवीस्तथा काण्डात्केतुं कृण्वन्निमांस्तथा ।।

इस श्लोक में नवग्रहों के लिये वैदिक मन्त्रों का संकेत किया गया है कि आप किस मन्त्र से किसका स्थापन करेगें। इसका विशद विवरण इस प्रकार है-

नवग्रहों के आवाहन में सर्वप्रथम सूर्य का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में सूर्य का स्थान मध्य प्रकोष्ठ में वृत्ताकार होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर सूर्य के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही सूर्य का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

1- ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयाति भुवनानिपश्यन्।। ॐ भूर्भुवः स्वः कलिदेशोव काश्यपसगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः। सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ।।

सूर्य के आवाहन स्थापन के अनन्तर चन्द्रमा का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में चन्द्रमा का स्थान मण्डल के अग्नि कोण वाले प्रकोष्ठ में अर्ध चन्द्राकार के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर चन्द्र के ऊपर अक्षत

चढ़ाना होता है। साथ ही चन्द्र का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

2- ॐ इमंदेवा ऽ असपत्न गुं सुबद्धम्महतेक्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।। इमममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यै व्विशऽएषवोमी राजा सोमो ऽ अस्माकं ब्राह्मणाना गुं राजा।। ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोöव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः।। सोममावाहयामि स्थापयामि।।

चन्द्र के आवाहन स्थापन के अनन्तर मंगल का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में मंगल का स्थान मण्डल के दक्षिण वाले रक्त वर्णीय प्रकोष्ठ में त्रिकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर मंगल के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही मंगल का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

3- ॐ अग्निमूर्मुर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् । अपा गुं रेता गुं सी जिन्वति ।। ॐ भूर्भुवः स्वः अवंतिकापुरोव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि।।

मंगल के आवाहन स्थापन के अनन्तर बुध का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में बुध का स्थान मण्डल के ईशान कोण वाले हरित वर्णीय प्रकोष्ठ में बाण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर बुध के उप ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही बुध का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

4- ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजाग्रहित्वमिष्टापूर्त्ते स गुं सृजेथामयं च।। अस्मिन्सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवायजमानश्चसीदत।। ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोöव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ इह तिष्ठ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि ।।

बुध के आवाहन स्थापन के अनन्तर बृहस्पति का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में बृहस्पति का स्थान मण्डल के उत्तर वाले पीत वर्णीय प्रकोष्ठ में अष्टकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर

बृहस्पति के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही बृहस्पति का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

5- ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽ ऋतप्रजाततदस्मासुüविणन्धेहि चित्रम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः

सिंधुदेशोव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

बृहस्पति के आवाहन स्थापन के अनन्तर शुक्र का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में शुक्र का स्थान बुध एवं चन्द्रमा के बीच श्वेत वर्णीय प्रकोष्ठ में पंचकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर शुक्र के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही शुक्र का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

6- ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्üयं व्विपान गुं शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु।। ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकट देशोöव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।।

शुक्र के आवाहन स्थापन के अनन्तर शनि का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में शनि का स्थान पश्चिम तरफ राहु एवं केतु के बीच कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में मनुष्य की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर शनि के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही शनि का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

7- ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तुनः।। ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोöव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि ।।

शनि के आवाहन स्थापन के अनन्तर राहु का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में राहु का स्थान पश्चिम तरफ नैर्ऋत्य कोण की ओर कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में मकर की आकृति के रूप में दिया

होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर राहु के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही राहु का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

8- ॐ कयानश्चित्र ऽआभुवदूतीसदावृधः सखा। कयाशचिष्ठयाव्वृता।। ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोöव पैठिनस गोत्र कृष्णवर्ण भो राहो इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः राहुं आवाहयामि स्थापयामि ।।

राहु के आवाहन स्थापन के अनन्तर केतु का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में केतु का स्थान पश्चिम तरफ वायव्य कोण की ओर कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में खड्ग की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर केतु के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही केतु का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

9- ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्याऽअपेशसे।। समुष रजायथाः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुöव जैमिनीसगोत्र कृष्णवणर भो केतो इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि।

इस प्रकार इस प्रकरण में आपनें नवग्रहों के स्थापन के वैदिक विधि को जाना । इसकी जानकारी से आप नवग्रहों का स्थापन वैदिक मन्त्रों से करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- आकृष्णेन मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 2- इमं देवा मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 3- अग्निर्मूद्धा मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 4- उद्बुध्यस्वाग्ने मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 5- बृहस्पते मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- बृहस्पति का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 6- अन्नात्परिस्रुत मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- शुक्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 7- शं नो देवी मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- शनि का, घ- बुध का।

प्रश्न 8- कया नश्चित्र मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- राहु का।

प्रश्न 9- केतु कृण्वन्न मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- केतु का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 10- नर आकृति से किसका ज्ञान किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- शनि का, घ- बुध का।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में नवग्रहों का वैदिक विधि से स्थापन के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया। आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम इन नवग्रहों के स्थापन की पौराणिक मन्त्रों से स्थापना कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है, जो इस प्रकार है-

2.4.2 पौराणिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन

इससे पूर्व आपने वैदिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन की विधि को जाना। लेकिन वैदिक मन्त्रों का प्रयोग उसे ही करना चाहिये जो गृरुमुखोच्चारण परम्परा से मन्त्रों को पढ़ा है, सुना है और देखा है। अन्यथा इसके अभाव में अशुद्धि होने का भय हो सकता है। कर्मकाण्ड में अशुद्ध मन्त्रों का उच्चारण यानी संकल्प का सिद्ध न होना और गलत मन्त्रों के उच्चारण का दोष उच्चारण कर्ता को लग जाना है। इसलिये समस्त आचार्य गणो ने इसके मौलिक स्वरूप की रक्षा होती रहे तथा पूजन विधि का सम्पादन भी होता रहे इसके लिये पौराणिक मन्त्रों का सृजन किया है। आप स्वतः पौराणिक मन्त्रों को देखेगें तो वे मन्त्र वैदिक मन्त्रों से सरल प्रतीत होगें। इस प्रकार यहां पौराणिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन की विधि बतलायी जा रही है।

नवग्रहों के आवाहन में सर्वप्रथम सूर्य का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में सूर्य का स्थान मध्य प्रकोष्ठ में वृत्ताकार होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि

स्थापयामि कहकर सूर्य के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही सूर्य का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उचचारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

1- **जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।**

तमोऽरिं सर्वपाघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलि देशोव काश्यपसगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः। सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।।

सूर्य के आवाहन स्थापन के अनन्तर चन्द्रमा का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में चन्द्रमा का स्थान मण्डल के अग्नि कोण वाले प्रकोष्ठ में अर्ध चन्द्राकार के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर चन्द्र के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही चन्द्र का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

2- **दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्।**

ज्योत्स्नापतिं निशानाथ सोममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोöव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः।। सोममावाहयामि स्थापयामि।।

चन्द्र के आवाहन स्थापन के अनन्तर मंगल का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में मंगल का स्थान मण्डल के दक्षिण वाले रक्त वर्णीय प्रकोष्ठ में त्रिकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर मंगल के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही मंगल का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

3- **धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेज समप्रभम्।**

कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्।।

 ॐ भूर्भुवः स्वः अवंतिकापुरोöव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि।।

मंगल के आवाहन स्थापन के अनन्तर बुध का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में बुध का स्थान मण्डल के ईशान कोण वाले हरित वर्णीय प्रकोष्ठ में बाण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर बुध के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही बुध का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

4- **प्रियंगुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमंबुधम्।**

सौम्यंसौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्।।

 ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोöव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ इह तिष्ठ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि ।।

बुध के आवाहन स्थापन के अनन्तर बृहस्पति का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में बृहस्पति का स्थान मण्डल के उत्तर वाले पीत वर्णीय प्रकोष्ठ में अष्टकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर बृहस्पति के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही बृहस्पति का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

5- **देवानां च मुनीनां च गुरुं कांचनसन्निभम्।**

वंद्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिंधुदेशोöव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

बृहस्पति के आवाहन स्थापन के अनन्तर शुक्र का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में शुक्र का स्थान बुध एवं चन्द्रमा के बीच श्वेत वर्णीय प्रकोष्ठ में पंचकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर शुक्र के

ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही शुक्र का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

6- **हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम् ।**

सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकट देशोöव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।।

शुक्र के आवाहन स्थापन के अनन्तर शनि का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में शनि का स्थान पश्चिम तरफ राहु एवं केतु के बीच कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में मनुष्य की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर शनि के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही शनि का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

7- **नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।**

छायामार्तण्ड सम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोöव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि ।।

शनि के आवाहन स्थापन के अनन्तर राहु का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में राहु का स्थान पश्चिम तरफ नैर्ऋत्य कोण की ओर कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में मकर की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर राहु के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही राहु का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

8- **अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।**

सिंहिका गर्भ संभूतं राहुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोöव पैठिनस गोत्र कृष्णवर्ण भो राहो इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः राहुं

आवाहयामि स्थापयामि ।।

राहु के आवाहन स्थापन के अनन्तर केतु का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में केतु का स्थान पश्चिम तरफ वायव्य कोण की ओर कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में खड्ग की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर केतु के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही केतु का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

9- पालास धूम्र संकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।

रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुöव जैमिनीसगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि।

इस प्रकार इस प्रकरण में आपनें नवग्रहों के स्थापन के पौराणिक विधि को जाना । इसकी जानकारी से आप नवग्रहों का स्थापन पौराणिक मन्त्रों से करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- जपा कुसुम संकाशं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?
क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।
प्रश्न 2- दधि शंख मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?
क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।
प्रश्न 3- धरणी गर्भ मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?
क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।
प्रश्न 4- प्रियंगु कलिका मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 5- देवानां च मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- बृहस्पति का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 6- हिमकुन्द मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- शुक्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 7- नीलाम्बुज समाभासं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- शनि का, घ- बुध का।

प्रश्न 8- अर्धकायं से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- राहु का।

प्रश्न 9- पालाश धुम्र मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- केतु का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 10- वृत्त आकृति से किसका ज्ञान किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- शनि का, घ- बुध का।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में नवग्रहों का पौराणिक विधि से स्थापन के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्ठी तरह समझ गये होगें। अब हम इन नवग्रहों का नाम मन्त्रों से स्थापना कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है, जो इस प्रकार है-

2.4.3 नाम मन्त्रों से नवग्रह स्थापन

इससे पूर्व आपने पौराणिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन की विधि को जाना। लेकिन पौराणिक मन्त्रों के प्रयोग में कभी-कभी समय ज्यादा लग रहा है ऐसा प्रतीत होने लगता है।विभिन्न प्रकार के कर्मकाण्डों में प्रधान कार्य अधिक होने के कारण नवग्रहादि सहायक कार्यो से समय निकाल कर बचाना पड़ता है नही तो मुख्य कार्य सम्पादन हेतु समयाभाव होने लगता है। ऐसी स्थिति में शीघ्र मन्त्रों के उच्चारण के कारण अशुद्ध उच्चारण का दोष उच्चारण कर्ता को लग जाता है। प्रधान कार्य के सम्यक् सम्पादन नही होने से भी संकल्प सिद्धि नही हो पाती है। इसलिये नाम मन्त्र से आवाहन में मन्त्र छोटा होने के करण समय भी कम लगता है।

अतः नाम मन्त्रों से नवग्रह स्थापन इस प्रकार करना चाहिये-

नवग्रहों के आवाहन में सर्वप्रथम सूर्य का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में सूर्य का स्थान मध्य प्रकोष्ठ में वृत्ताकार होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि

स्थापयामि कहकर सूर्य के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही सूर्य का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उचचारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

1- ॐ घृणिः सूर्याय नमः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः कलिदेशोöव काश्यपसगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः। सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।।

सूर्य के आवाहन स्थपन के अनन्तर चन्द्रमा का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में चन्द्रमा का स्थान मण्डल के अग्नि कोण वाले प्रकोष्ठ में अर्ध चन्द्राकार के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर चन्द्र के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही चन्द्र का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

2- ओं सों सोमाय नमः।। ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोöव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः।। सोममावाहयामि स्थापयामि।।

चन्द्र के आवाहन स्थापन के अनन्तर मंगल का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में मंगल का स्थान मण्डल के दक्षिण वाले रक्त वर्णीय प्रकोष्ठ में त्रिकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर मंगल के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही मंगल का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

3- ओं अं अंगारकाय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः अवंतिकापुरोöव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि।।

मंगल के आवाहन स्थापन के अनन्तर बुध का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में बुध का

स्थान मण्डल के ईशान कोण वाले हरित वर्णीय प्रकोष्ठ में बाण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर बुध के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही बुध का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

4- ओं बुं बुधाय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोöव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ इह तिष्ठ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि ।।

बुध के आवाहन स्थापन के अनन्तर बृहस्पति का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में बृहस्पति का स्थान मण्डल के उत्तर वाले पीत वर्णीय प्रकोष्ठ में अष्टकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर बृहस्पति के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही बृहस्पति का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

5- ॐ बृं बृहस्पतये नमः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः

सिंधुदेशोöव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिं आवाहयामि स्थापयामि ।। बृहस्पति के आवाहन स्थापन के अनन्तर शुक्र का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में शुक्र का स्थान बुध एवं चन्द्रमा के बीच श्वेत वर्णीय प्रकोष्ठ में पंचकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर शुक्र के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही शुक्र का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

6- ॐ शुं शुक्राय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकट देशोöव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।।

शुक्र के आवाहन स्थापन के अनन्तर शनि का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में शनि का स्थान पश्चिम तरफ राहु एवं केतु के बीच कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में मनुष्य की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर शनि के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही शनि का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

7- ॐ शनैश्चराय नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोöव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि ।।

शनि के आवाहन स्थापन के अनन्तर राहु का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में राहु का स्थान पश्चिम तरफ नैर्ऋत्य कोण की ओर कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में मकर की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर राहु के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही राहु का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी

उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

8- ॐ रां राहवे नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोöव पैठिनस गोत्र कृष्णवर्ण भो राहो इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः राहुं आवाहयामि स्थापयामि ।।

राहु के आवाहन स्थापन के अनन्तर केतु का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में केतु का स्थान पश्चिम तरफ वायव्य कोण की ओर कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में खड्ग की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर केतु के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही केतु का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

9- ॐ कें केतवे नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुöव जैमिनीसगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि।

इस प्रकार इस प्रकरण में आपनें नवग्रहों के स्थापन के नाम मन्त्र की विधि को जाना । इसकी जानकारी से आप नवग्रहों का स्थापन नाम मन्त्रों से करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा । अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- ओं घृणिः सूर्याय नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 2- ओं सों सोमाय नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 3- ओं अं अंगारकाय नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 4- ओं बुं बुधाय नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 5- ओं बृं बहस्पतये नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- बृहस्पति का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 6- ओं शुं शुक्राय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- शुक्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 7- ओं शं शनैश्चराय नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- शनि का, घ- बुध का।

प्रश्न 8- ओं रां राहवे से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- राहु का।

प्रश्न 9- ओं कें केतवे नमः से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- केतु का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 10- त्रिकोण आकृति से किसका ज्ञान किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- मंगल का, ग- शनि का, घ- बुध का।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में नवग्रहों का नाम मन्त्र की विधि से स्थापन के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम इन नवग्रहों का तांत्रिक मन्त्रों से स्थापना कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है, जो इस प्रकार है-

2.4.4 तांत्रिक मन्त्रों से नवग्रह स्थापन

इससे पूर्व आपने नाम मन्त्रों से नवग्रह स्थापन की विधि को जाना। लेकिन कोई कोई आचार्य

तांत्रिक विधि से नवग्रह स्थापन को अत्यधिक प्रभावशाली मानते है। इसलिये छात्रों के सम्यक् ज्ञान हेतु तांत्रिक मन्त्रों द्वारा स्थापन विधि की भी चर्चा करना आवश्यक समझता हूं। इसलिये तांत्रिक विधि से नवग्रह स्थापन की विधि का वर्णन यहां किया जा रहा है।

नवग्रहों के आवाहन में सर्वप्रथम सूर्य का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में सूर्य का स्थान मध्य प्रकोष्ठ में वृत्ताकार होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर सूर्य के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही सूर्य का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

1- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः कलिदेशोöव काश्यपसगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः। सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।।

सूर्य के आवाहन स्थपन के अनन्तर चन्द्रमा का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में चन्द्रमा का स्थान मण्डल के अग्नि कोण वाले प्रकोष्ठ में अर्ध चन्द्राकार के रूप् में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर चन्द्र के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही चन्द्र का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

2- ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।। ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोöव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः।। सोममावाहयामि स्थापयामि।।

चन्द्र के आवाहन स्थापन के अनन्तर मंगल का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में मंगल का स्थान मण्डल के दक्षिण वाले रक्त वर्णीय प्रकोष्ठ में त्रिकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर मंगल के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही मंगल का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

3- ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः अवंतिकापुरोöव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि।।

मंगल के आवाहन स्थापन के अनन्तर बुध का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में बुध का स्थान मण्डल के ईशान कोण वाले हरित वर्णीय प्रकोष्ठ में बाण की आकृति के रूप में दिया होता है।

आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर बुध के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही बुध का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

4- ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोöव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ इह तिष्ठ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि ।।

बुध के आवाहन स्थापन के अनन्तर बृहस्पति का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में बृहस्पति का स्थान मण्डल के उत्तर वाले पीत वर्णीय प्रकोष्ठ में अष्टकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर बृहस्पति के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही बृहस्पति का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

5- ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः

सिंधुदेशोöव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

बृहस्पति के आवाहन स्थापन के अनन्तर शुक्र का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में शुक्र का स्थान बुध एवं चन्द्रमा के बीच श्वेत वर्णीय प्रकोष्ठ में पंचकोण की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर शुक्र के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही शुक्र का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

6- ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकट देशोöव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।।

शुक्र के आवाहन स्थापन के अनन्तर शनि का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में शनि का स्थान पश्चिम तरफ राहु एवं केतु के बीच कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में मनुष्य की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर शनि के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही शनि का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

7- ॐ प्रां प्रीं प्रौं शनये नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोöव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि ।।

शनि के आवाहन स्थापन के अनन्तर राहु का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में राहु का स्थान पश्चिम तरफ नैर्ऋत्य कोण की ओर कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में मकर की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर राहु के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही राहु का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

8- ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोöव पैठिनस गोत्र कृष्णवर्ण भो राहो इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः राहुं आवाहयामि स्थापयामि ।।

राहु के आवाहन स्थापन के अनन्तर केतु का आवाहन किया जाता है। नवग्रह मण्डल में केतु का स्थान पश्चिम तरफ वायव्य कोण की ओर कृष्ण वर्णीय प्रकोष्ठ में खड्ग की आकृति के रूप में दिया होता है। आवाहन करने वाले अक्षत को मन्त्र पढ़ लेने के बाद आवाहयामि स्थापयामि कहकर केतु के ऊपर अक्षत चढ़ाना होता है। साथ ही केतु का उद्भव स्थान, उनका गोत्र एवं उनका वर्ण भी उच्चारित करना पड़ता है। नीचे ठीक उसी प्रकार लिखा गया है-

9- ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुöव जैमिनीसगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि।

इस प्रकार इस प्रकरण में आपनें नवग्रहों के स्थापन के तान्त्रिक मन्त्र की विधि को जाना । इसकी जानकारी से आप नवग्रहों का स्थापन तांत्रिक मन्त्रों से करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- ओं ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 2- ओं श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 3- ओं क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 4- ओं ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 5- ओं ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- बृहस्पति का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 6- ओं द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- शुक्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 7- ओं प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- शनि का, घ- बुध का।

प्रश्न 8- ओं भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- राहु का।

प्रश्न 9- ओं स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः से किसका आवाहन किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- केतु का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 10- नराकृति से किसका ज्ञान किया जाता है?

क- सूर्य का , ख- मंगल का, ग- शनि का, घ- बुध का।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में नवग्रहों का तान्त्रिक मन्त्र की विधि से स्थापन के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्ठी तरह समझ गये होंगे।

2.5 सारांश

इस ईकाई में आपने नवग्रह स्थापन का विधान जाना है। वस्तुतः किसी भी प्रकार की शान्ति के लिये या पौरोहित्यिक कर्मकाण्ड के लिये नवग्रह मण्डल का निर्माण करके नवग्रहों की स्थापना करते है। क्येंकि बिना स्थापना के वह ग्रह या देवता वहां आकर विराजमान नही होता जिसकी हम पूजा करना चाहते है। नवग्रह मण्डल का केवल निर्माण करने से पूजन करना आप प्रारम्भ नही कर सकते है। क्योकि बिना स्थापन के ग्रह वहां विराजमान ही नही होगें तो पूजा किसकी की जायेगी ? इसलिये ग्रह स्थापन अति आवश्यक है।

ग्रहों या देवताओं की स्थापना कैसे की जायेगी इस सन्दर्भ पर हम विचार करते हैं तो हम पाते है कि

दैवाधीनं जगत्सर्वं,
मन्त्राधीना तु देवता ।
ते मन्त्रा ब्राह्मणा धीना,
तस्मात् ब्राह्मण देवता ।।

अर्थात् देवताओं के अधीन सारा संसार होता है। देवता मन्त्रों के अधीन होते हैं। मन्त्र ब्राह्मण के आधीन होते हैं इसलिये ब्राह्मण देवता होता है। कहने का मतलब यह है कि नव ग्रहों का स्थापन करना हो तो मन्त्रों के उच्चारण से उनको आवाहित किया जा सकता है। मन्त्रों को नवग्रहों के स्थापनार्थ चार प्रकारों में बांटा गया है। जिसे वैदिक मन्त्रों द्वारा आवाहन, पौराणिक मन्त्रों क्षरा आवाहन, नाम मन्त्रों द्वारा आवाहन एवं तांत्रिक मन्त्रों द्वारा आवाहन के रूप में जाना जाता है।

वैदिक मन्त्रों के सन्दर्भ में याज्ञवल्क्य स्मृतिः के आचाराध्याय के ग्रह शान्ति प्रकरण में दिया गया है कि-

आकृष्णेन इमं देवा अग्निर्मूधा दिवः ककुत् ।
उद्बुध्यस्वेति च ऋचो यथासंख्यं प्रकीर्तिताः ।।
बृहस्पते अतियदर्यस्तथैवान्नात्परिस्रुतः।

शं नो देवीस्तथा काण्डात्केतुं कृण्वन्निमांस्तथा ।।

इन-इन मन्त्रों से क्रमशः नवग्रहों को आवाहित एवं स्थापित करना चाहिये। जैसे आकृष्णेन 0 मन्त्र से सूर्य का स्थापन करना चाहिये। इमं देवा मन्त्र से चन्द्रमा का स्थापन करना चाहिये। अग्निर्मूधा मन्त्र से मंगल का आवाहन करना चाहिये। उद्बुध्य मन्त्र से बुध का स्थापन करना चाहिये। बृहस्पते मन्त्र से बृहस्पति का आवाहन करना चाहिये। शं नो देवी मन्त्र से शनि का आवाहन, काण्डात् मन्त्र से राहु तथा केतु कृण्वन् मन्त्र से केतु को स्थापित करना चाहिये।

इसी प्रकार पौराणिक मन्त्रों से या समयाभाव हो तो नाम मन्त्र या तांत्रिक मन्त्रों से नवग्रहों का स्थापन किया जाता है। आवाहन स्थापन के उपरान्त नवग्रहों का यथालब्धोपचार या षोडशोपचार से पूजन किया जाता है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

अनुष्ठानिक- अनुष्ठान के, मण्डल- घेरा, जगदात्मा- जगत की आत्मा, घनिष्ठ- गहरा, प्रत्यक्ष- साक्षात्, कालान्तर- समयान्तर, नियामक- नियन्त्रक, संसूचक- सम्यक सूचित करने वाला, प्रतिनिधित्व- नेतृत्व, कृत- किया हुआ, पाश्व- पशु, स्नायु- धमनियां, भावाभिव्यक्ति- भाव की अभिव्यक्ति, अनुभूति- अनुभव किया हुआ, हिंसक- हिंसा करने वाला, गर्वीला- गर्व करने वाला, कटु- कड़वा, आनन- मुख, कामोन्माद- काम का उन्माद, मनोविकार- मन का विकार, सर्जन- सृजन करने वाला, मिथ्या भाषण- झूठ बोलने वाला, विश्वासघात- विश्वास पर आघात पहुचाने वाला, आग्नेयास्त्र- ज्वलनशील अस्त्र, ऋणग्रस्त- ऋण से ग्रसित, परिहासशील- परिहास युक्त, पटुता- चतुराई, नराकृति- मनुष्य की आकृति, मति भ्रम- बुद्धि का भ्रमित हो जाना, मायाचारी- माया का आचरण करने वाला, बालारिष्ट- बाल्य काल का अरिष्ट, मातामह- नाना, रक्त- लाल, पीत- पीला, कृष्ण- काला, वर्ण- रंग, उद्भव- उत्पत्ति, काश्यपेय- कश्य के पुत्र, महाद्युति- महान तेज वाले, निशा नाथ- रात्रि के पति, ज्योत्स्नापति-चन्द्रमा, धरणी गर्भ संभूत- पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न, विद्युत्तेज- विद्युत के समान तेज, कांचन के समान आभा, नीलाम्बुज- नीले कमल के समान, यमाग्रज- यमराज के अग्रज।

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको

सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

2.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-क, 3-ख, 4-ग, 5-ग, 6-घ, 7-घ, 8-क, 9- घ, 10- ग।

2.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9- क 10-घ।

2.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग।

2.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-क ।

2.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ख ।

2.4.4 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग ।

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-नित्य कर्म पूजा प्रकाशः।

2-व्रतोद्यापन- प्रकाशः।

3-बृहद् ब्रह्म नित्य कर्म समुच्चय।

4- शान्ति- विधानम्।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-यजुर्वेद- संहिता।

7- कर्मजव्याधिदैवी चिकित्सा।

8- फलदीपिका

9- अनुष्ठान प्रकाश।

10- सर्व देव प्रतिष्ठा प्रकाशः।

11- संस्कार-भास्करः । वीणा टीका सहिता।

12- मनोभिलषितव्रतानुवर्णनम्- भारतीय व्रत एवं अनुष्ठान।

13- संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

2.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- पूजन विधानम्।

2- श्री काशी विश्वनाथ पंचांग।

3- भारतीय रत्न सिद्धान्त।

4- याज्ञवल्क्य स्मृतिः।

5- संस्कार- विधानम्।

2.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- नवग्रहों की प्रकृति समझाइये दीजिये।

2- सूर्य का स्वरूप एवं काल पुरुष से संबंध बतलाइये।

3- नवग्रह स्थापन की वैदिक विधि बतलाइये।

4- नवग्रह स्थापन की पौराणिक विधि वर्णित कीजिये।

5- नवग्रह स्थापन की नाम मन्त्र की विधि का वर्णन कीजिये।

6- नवग्रह स्थापन की तांत्रिक विधि सविधि लिखिये।

7- चन्द्रमा का स्वरूप एवं काल पुरुष से संबंध का वर्णन कीजिये।

8- मंगल का स्वरूप एवं काल पुरुष से संबंध का वर्णन कीजिये।

9- गुरू का स्वरूप एवं काल पुरुष से संबंध का वर्णन कीजिये ।

10- शनि का स्वरूप एवं काल पुरुष से संबंध का वर्णन कीजिये।

ईकाई – 3 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपाल आवाहन एवं पूजन

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का परिचय
3.3.1 अधिदेवता एवं प्रत्यधि देवताओं का परिचय
3.3.2 पंचलोकपालों का परिचय
3.4 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन
3.4.1 वैदिक मन्त्रों के अधिदेवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों का आवाहन
3.4.2 पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन
3.4.3 नाम मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन
3.4.4 तान्त्रिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन
3.5 सारांशः
3.6 पारिभाषिक शब्दावली
3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.8 बोधप्रश्नों के उत्तर
3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में अधिदेवता प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपाल का आवाहन एवं पूजन संबंधी प्रविधि का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व नवग्रह स्थापन सहित अन्य शान्ति प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया होगा। कोई भी जातक यदि कोई शान्ति कराता है तो प्रायः शान्ति प्रविधियों में नवग्रहों का स्थापन एवं अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपाल का आवाहन पूजन करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों की स्थापना आप कैसे करेगें, इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

किसी भी कर्मकाण्ड में नवग्रहों का स्थापन प्रायः किया जाता है। ग्रह स्थापन के नाम पर सामान्य लोगों में यही धारणा बनी रहती है कि नौ ग्रह है उनका नाम लिया जाता है। लेकिन जब आप नवग्रह मण्डल पर ग्रहों का स्थापन विधान देखेंगे तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि नवग्रहों के अलावा उनके अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का भी आवाहन स्थापन करना पड़ता है इनके अभाव में नवग्रह मण्डल के देवताओं का पूजन हो ही नही पाता क्योकि मण्डल पर तो कुल चौवालीश 44 देवता होते है। अभी हम केवल नवग्रहों का कहां -कहां स्थापन किया जाता है ? इसको हमने जाना है। लेकिन अब उन नवग्रहों के कौन-कौन से अधि देवता है? कौन-कौन प्रत्यधि देवता है एवं कौन-कौन पंलोकपाल है? उनका स्थान कहां-कहां होता है? इस पर विचार करेंगें। इस प्रकार इस ईकाई के अध्ययन से आपको संबंधित समस्त विषयों का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

इस इकाई के अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल पर अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों की स्थापना करने की विधि एवं पूजन करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे अंग सहित नवग्रहों के स्थापन का ज्ञान हो जायेगा जिसका प्रयोग आप संबंधित व्यक्ति के दोषों से निवारण में कर सकेगें जिससे वह अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित होते हुये लोकोपकारक हो सकेगा। इसके अलावा आप अन्य योगदान दें सकेगें, जैसे - कल्पसूत्रीय विधि के अनुपालन का सार्थक प्रयास करना, समाज कल्याण की भावना का विकास करना, इस विषय को वर्तमान समस्याओं के समाधान सहित वर्णन करने का प्रयास करना एवं वृहद् एवं संक्षिप्त दोनों विधियों के प्रस्तुतिकरण का प्रयास करना आदि, इस शान्ति के नाम पर समाज में व्याप्त कुरीतिओं, कुप्रथाओं, ठगी, भ्रष्टाचार, मिथ्या भ्रमादिकों का निवारण हो सकेगा।

3.3 उद्देश्य-

इस ईकाई के अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल पर नवग्रहों के स्थापन की आवश्यकता को समझ रहे होगें। अतः इसका उद्देश्य तो वृहद् है परन्तु संक्षिप्त में इस प्रकार आप जान सकते है।

- ❖ अधि देवता प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों की स्थापना से समस्त कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।
- ❖ अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के स्थापन की शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।
- ❖ इस कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- ❖ प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- ❖ लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।
- ❖ समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।
- ❖ संदर्भित शिक्षा के विविध तथ्यों को प्रकाश में लाना।

3.3 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का परिचय

3.3.1 अधिदेवता एवं प्रत्यधि देवताओं का परिचय

यह सर्व विदित है कि जब भी हम कोई शान्ति करते हैं तो नवग्रह मण्डल का निर्माण कर नवग्रहों की स्थापना अवश्य करते हैं। न केवल शान्ति अपितु यज्ञों में भी नवग्रहों की स्थापना करनी पड़ती है। नवग्रहों की स्थापना के बिना हम किसी भी अनुष्ठानिक प्रक्रिया का सम्पादन नही कर सकते इसलिये नवग्रहों का ज्ञान अति आवश्यक है। ईशाने ग्रह वेदिका कहते हुये यह बतलाया गया है कि नवग्रह वेदी का निर्माण ईशान कोण में करके नवग्रहों की स्थापना करनी चाहिये। नवग्र्रहों के रूप में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एव केतु होते हैं। इन नवों ग्रहों के दक्षिण अधि देवता एवं बाम भाग में प्रत्यधि देवता विराजित होते हैं। कहा गया है-

अधि देवता दक्षिणे वामे प्रत्यधि देवता।

इसमें दक्षिण एवं वाम का विचार उन ग्रहों से करना चाहिये। प्रायः इस बात को समझने में भूल हो जाती है कि दक्षिण और बाम तो एक ओर होगा लेकिन ऐसा नही है। क्योकि लिखा गया-

शुक्रार्कौ प्रांगमुखो ज्ञेयौ गुरुसौम्या उदंगमुखः।

प्रत्यंगमुखो सोम शनि शेषाः दक्षिणतो मुखाः।।

अर्थात् शुक्र एवं सूर्य का मुख पूर्व की ओर होता है। बुध एवं गुरु का मुख उत्तर की ओर होता है। सोम एवं शनि का मुख पश्चिम की ओर तथा शेष ग्रहों का मुख दक्षिण की ओर होता है। इस स्थिति पर विचार करना चाहिये। कोई व्यक्ति यदि पूर्व की ओर मुख करके खड़ा है तो उसका दाहिना जिधर होगा उधर पश्चिम की ओर मुख करके खड़े हुये व्यक्ति का नही होगा। ठीक उसी प्रकार उत्तर की ओर मुख करके खडे हुये व्ययक्ति का दहिना बाया भाग जिस ओर होगा दक्षिण की ओर मुख किये व्यक्ति का दायां बाया भाग उससे विपरीत होगा। इस लिये अधि देवता एवं प्रत्यधि देवता के स्थापन में हमें सावधानी पूर्वक ग्रहों के मूख का ज्ञान रखना होगा तभी अधि एवं प्रत्यधि देवताओं की स्थापना सम्यक् तरीके से हो पायेगी। इसके अलावा एक और भी विधान शास्त्रों में देखने को मिलता है-

आदित्याभिमुखाःसर्वेसाधिप्रत्यधिदेवताः ।

अधिदेवता दक्षिणे वामे प्रत्यधिदेवताः ।।

यहां भी उसी प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो रही है। सूर्य सभी ग्रहों के मध्य में विराजमान है। अब सारे ग्रह सूर्य को देख रहे हैं ऐसी स्थिति में उनके मुख की दिशा अलग-अलग होगी जिसके कारण उनका दायां एवं बायां भाग बदल जायेगा और अधि-प्रत्यधि देवताओं का स्थान उसके अनुरूप होगा।

अब यहां विचारणीय होगा कि अधि देवता कौन-कौन है? इसके उत्तर के सन्दर्भ में मत्स्य पुराण एवं कोटि होम पद्धति में लिखा गया है कि-

ईश्वरश्च उमा चैव स्कन्दो विष्णुस्तथैव च। ब्रह्मेन्द्रौ यमकालाश्च चित्रगुप्ताधिदेवताः।

अर्थात् ईश्वर, उमा, स्कन्द्र, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, यम, काल एवं चित्रगुप्त ये अधि देवता कहे गये है। इसको और अच्छी तरह हम इस प्रकार समझ सकते है। सूर्य के दक्षिण भाग में ईश्वर का स्थान होता है। चन्द्रमा के दक्षिण भाग में उमा का स्थान होता है। मंगल के दक्षिण भाग में स्कन्द का स्थान होता है। बुध के दक्षिण भाग में विष्णु का स्थान होता है। बृहस्पति के दक्षिण भाग में ब्रह्मा का स्थान होता है। शुक्र के दक्षिण भाग में इन्द्र का स्थान होता है। शनि के दक्षिण भाग में यम का स्थान होता है। राहु के दक्षिण भाग में काल का स्थान होता है एवं केतु के दक्षिण भाग में चित्रगुप्त का स्थान होता है।

इसी प्रकार प्रत्यधि देवताओं के बारे में विचार करते हुये कहा गया है कि-

अग्निरापो धरा विष्णुः इन्द्रश्चैन्द्री प्रजापतिः। सर्पाब्रह्मा च निर्दिष्टा प्रत्यधिदेवा यथाक्रमम्।।

अर्थात् अग्नि, अप, धरा, विष्णु, इन्द्र, ऐन्द्री, प्रजापति, सर्प एवं ब्रह्मा प्रत्यधि देवता होते हैं। इसको इस प्रकार सरलता से समझा जा सकता है। सूर्य के वाम भाग में अग्नि का स्थान होता है। चन्द्रमा के वाम भाग में अप का स्थान होता है। मंगल के वाम भाग में धरा का स्थान होता है। बुध के वाम भाग में विष्णु का स्थान होता है। बृहस्पति के वाम भाग में इन्द्र का स्थान होता है। शुक्र के वाम भाग में ऐन्द्री का स्थान होता है। शनि के वाम भाग में प्रजापति का स्थान होता है। राहु के वाम भाग में सर्प का स्थान होता है एवं केतु के वाम भाग में ब्रह्मा का स्थान होता है।

इस प्रकार से आपने अधि देवता एवं प्रत्यधि देवताओं का परिचय जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों का स्थापन अधि देवता प्रत्यधि देवता सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- ईश्वर किसका अधि देवता है ?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 2- उमा किसकी अधिदेवता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 3- स्कन्द किसका अधिदेवता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 4- विष्णु किसका अधिदेवता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 5- इन्द्र किसका प्रत्यधि देवता है?

क- बृहस्पति का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 6- ऐन्द्री किसका प्रत्यधि देवता है?

क- सूर्य का , ख- शुक्र का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 7- प्रजापति किसके प्रत्यधि देवता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- शनि का, घ- बुध का।

प्रश्न 8- सर्प किसके प्रत्यधि देवता है?

क- सूर्य का , ख- चन्द्र का, ग- मंगल का, घ- राहु का।

प्रश्न 9- ब्रह्मा किसके प्रत्यधि देवता है?

क- सूर्य का , ख- केतु का, ग- मंगल का, घ- बुध का।

प्रश्न 10- काल किसके अधि देवता है?

क- सूर्य का , ख- मंगल का, ग- शनि का, घ- राहु का।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में अधिदेवता एवं प्रत्यधि देवताओं का नाम स्थान सहित परिचय का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम पंचलोकपालों की स्थापना कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है, जो इस प्रकार है-

3.3.2 पंचलोकपालों का परिचय-

नवग्रह मण्डल पर पंच लोकपालों की स्थापना की जाती है। पंचलोकपालों के विषय में लिखा है कि

ग्रहाणामुत्तरे पंच लोकपालाः व्यवस्थिताः। अर्थात् ग्रहों के उत्तर में पंच लोकपालों की व्यवस्था की गयी है। इन पंचलोकपालों के नाम के सन्दर्भ में प्राप्त होता है कि गणेशश्चाम्बिका वायु आकाशश्चाश्विनौ तथा। अर्थात् गणेश, अंबिका, वायु, आकाश एवं अश्विनी कुमार ये पॉच लोकपाल है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार प्राप्त होता है-

1- श्री गणेश का स्वरूप-

चतुर्भुजस्त्रिनेत्रश्च कर्तव्योत्र गजाननः। नागयज्ञोपवीतश्च शशांक कृतशेखरः ।
दक्षे दन्तं करे दद्यात् द्वितीये चाक्षसूत्रकम्। तृतीये परशुं दद्याच्चतुर्थे मोदकं तथा ।।

उपरोक्त श्लोक में श्री गणेश जी के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि पंचलोकपाल के रूप में व्यवस्थित गणेश जी चार भुजा वाले हैं, तीन नेत्रों वाले हैं तथा उनका मुख गज का बना हुआ है। नाग के यज्ञोपवीत धारण करते है तथा उनके शिखर पर चन्द्रमा विराजमान रहता है। दाहिने हाथ में दांत धारण किये हुये है। ऐसी किंवदन्ती है कि गणेश जी के हाथी वाले मुख में दो दांत थे। एक दांत उन्होने स्वयं ही तोड़ दिया इसलिये अब केवल एक दांत ही बचा रह गया जिसके कारण वे एकदन्त हो गये। वहीं कहा गया एक दांत उनका कहां चला गया ? जिसे उन्होने तोड़ा तो बतलाया गया उसी

को दाहिने हाथ में अस्त्र के रूप में धारण कर लिये। इसलिये श्री गणेश जी एकदन्त हो गये। दूसरे हाथ में अक्ष एवं सूत्र लिये हुये है। तीसरे हाथ में परशु लिये हुये है तथा चौथे हाथ में मोदक लिये हुये है। इस प्रकार का स्वरूप श्रीगणेश लाकपाल का है।

2- अम्बिका का स्वरूप-

शक्तिं बाणं तथा शूलं खड्गं चक्रं च दक्षिणे। चन्द्रबिम्बमधो वामे खेटमूर्ध्वे कपालकम्।
सुकंकटं च विभ्राणा सिंहारूढ़ा तु दिग्भुजा। एषा देवी समुद्दिष्टा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।

इस श्लोक में दूसरे लोकपाल अम्बिका का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार अम्बिका नाम की दुर्गा देवि शक्ति, बाण, शूल, खड्ग, एवं चक्र दाहिनी ओर धारण की हुई है। वाम भाग में चन्द्र बिम्ब, ग्रह, कपाल एवं सुकंकट धारण की हुयी सिंह पर आरूढ़ दश भुजाओं वाली दुर्गा देवि का स्वरूप इस प्रकार है।

3- **वायु का स्वरूप**-

तीसरे लोकपाल के रूप में वायु को स्वीकार किया गया है। वायु के स्वरूप का वर्णन करते हुये दानमयूख में इस प्रकार कहा गया है।

धावद्धरणिपृष्ठस्थो ध्वजधारी समीरणः।
वरदानकरो धूम्रवर्णः कार्यो विजानता।

वायु के स्वरूप के बारे में कहा गया है कि वायु लोकपाल धरणिपृष्ठ यानी भूमि के पृष्ठ पर दौड़ रहे है। ये वायु देवता ध्वज धारण किये हुये है। एक हाथ से वरदान वाली मुद्रा बनाये हुये है। इनका वर्ण धूम्र है। इस प्रकार वायु लोकपाल का स्वरूप बतलाया गया है।

4-**आकाश का स्वरूप**-

चौथे लोकपाल के रूप में आकाश को स्वीकार किया गया है। आकाश नामक लोकपाल के स्वरूप का वर्णन करते हुये पाया गया है कि-

नीलोत्पलाभं गगनं तद्वर्णाम्बरधारि च।
चन्द्रार्क हस्तं कर्तव्यं द्विभुजं सौम्यखण्डवत्।

आकाश के स्वरूप के बारे में कहा गया है कि नीले उत्पल यानी कमल के समान गगन नामक दिग्पाल की आभा है। और उसी वर्ण का अम्बर भी धारण किया हुआ है। आकाश जी की दो भुजायें है इन दोनों भुजाओं में चन्द्रमा एवं सूर्य को धारण किये हुये है। आकाश अखण्ड स्वरूप में एवं सौम्य स्वरूप में विराजमान है।

5- **अश्विनी कुमार का स्वरूप**-

पॉचवे लोकपाल के रूप में अश्विनी कुमार को जाना जाता है। अश्विनी कुमार के स्वरूप की चर्चा करते हुये दानमयूख में कहा गया है कि-

द्विभुजौ सौम्य वरदौ कर्तव्यो रूपसंयुता। तयोरोषधयः कार्या दिव्या दक्षिण हस्तयोः।

वामयोः पुस्तकौ कार्यौ दर्शनीयौ तथा द्विजाः। एकस्य दक्षिणे पार्श्वे वामे चास्य च यादवः।

नारी युगं प्रकर्तव्यं सुरूपं चारुदर्शनम्। रत्नभाण्डकरे कार्ये चन्द्रशुक्लाम्बरे तथा।

अश्विनी कुमार की विशेषता यह है कि ये देवता तो एक है लेकिन ये दो कुमारों के स्वरूप में रहते है। दो भुजायें धारण करने वाले उन भुजाओं से वर देने वाले तथा औषधि का काम करने वाले है। दक्षिण एवं वाम पार्श्व के रूप में विराजमान है। इनका दर्शन अत्यन्त मनोहर है। नारिओं जैसा ये दिखाई देते है। रत्न भाण्ड यानी पात्र लिये हुये होते है।

इस प्रकार से आपने पंच लोकपालों का परिचय जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों का स्थापन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- नवग्रह मण्डल पर कितने लोकपाल होते है?

क- 2, ख- 3, ग- 4, घ- 5।

प्रश्न 2- प्रथम लोकपाल कौन है?

क- गणेश, ख- अम्बिका, ख- वायु, ग- आकाश।

प्रश्न 3- द्वितीय लोकपाल कौन है?

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न 4- तृतीय लोकपाल कौन है?

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न 5- चतुर्थ लोकपाल कौन है?

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न 6- पंचम लोकपाल कौन है?

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- अश्विनी कुमार, घ- आकाश।

प्रश्न 7- चतुर्थे मोदकं तथा किस लोकपाल के लिये है?

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न 8- सिंहारूढ़ा कौन लोकपाल है?

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न 9- ध्वजधारी लोकपाल कौन है?

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

प्रश्न 10- नीलोत्पलाभ लोकपाल कौन है?

क- गणेश, ख- अम्बिका, ग- वायु, घ- आकाश।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में पंचलोकपालों के परिचय का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्ठी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों की स्थापना कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है, जो इस प्रकार है-

3.4. अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन-

अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के विविध तरीके है। उनमें से हम वैदिक मन्त्रों से आवाहन, पौराणिक मन्त्रों से आवाहन एवं नाम मन्त्रों से आवाहन की विधि पर विचार करेगें जो इस प्रकार है-

3.4.1 वैदिक मन्त्रों के अधि देवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों का आवाहन-

आप अधि देवताओं, प्रत्यधि देवताओं एवं पंचलोकपालों के बारे परिचय प्राप्त कर लिये है। अब इनका आवाहन इस प्रकार है-

अधिदेवता स्थापनम्

1-सूर्य के दक्षिण में ईश्वर का आवाहन- ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्ध-नान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्। ओं भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः। ईश्वरं आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के दक्षिण में उमा का आवाहन- श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि

रुपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म ऽ इषाण सर्व्वलोकम्म ऽइषाण।। ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के दक्षिण में स्कन्द का आवाहन- ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात्। श्येनस्य पक्षाहरिणस्यबाहू उपस्तुत्यम्महिजातन्ते ऽ अर्व्वन्।। ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के दक्षिण में विष्णु का आवहन- ॐ विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसिव्विष्णोर्ध्रुवोसि। व्वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा ।। ओं भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।

5- बृहस्पति के दक्षिण में ब्रह्मा का आवाहन- ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणोब्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर ऽ इषव्योतिव्याधीमहारथोजायतांदोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरंधिर्योषाजिष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। ओं भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के दक्षिण में इन्द्र का आवाहन- ॐ सयोषा ऽ इन्द्र सगणो मरु सोमंपिबव्वृत्रहा शूर विद्वान्। जहिशत्रूँ2 रपमृधोनुदस्वाथाभ्यङ्कृणुहि विश्वतो नः।। ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ।।

7- शनि के दक्षिण में यम का आवाहन- ओं यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे।। ओं भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के दक्षिण में काल का आवाहन- ॐ कार्षिरसि समुüस्य त्वाक्षित्या ऽ उन्नयामि समापो ऽ अरग्मतसमोषधीभिरोषधीः।। ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः कालं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- केतु के दक्षिण में चित्रगुप्त का आवाहन- ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

1-सूर्य के वाम भाग में अग्नि का आवाहन- ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यावाहमुपब्रुवे। देवाँ आसादयादिह । ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के वाम भाग में अप का आवाहन- ओं आपो हिष्ठामयोभुवस्तान ऽउर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।। ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के वाम भाग में पृथ्वी का आवाहन-ओ स्योनापृथिवी नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म्म शप्प्रथाः।। ओं भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के वाम भाग में विष्णु का आवाहन- ओं इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा गुं सुरे स्वाहा।। ओं भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि।।

5-बृहस्पति के वाम में इन्द्र का आवाहन- ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुर ऽ एतु सोमः। देवसेनानामभिभंजतीनांजयन्तीनांमरुतोयंत्वग्रम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के वाम में इन्द्राणी का आवाहन- ॐ आदित्यै रास्ना सीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व।। ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- शनि के वाम में प्रजापति का आवाहन- ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्योव्विश्वारुपाणि परिताबभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽ अस्तु व्वय गुं स्यामपतयोरयीणाम् ।। ओं भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः प्रजापतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के वाम भाग में सर्प का आवाहन- ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः सर्प्पेभ्यो नमः सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि

9- केतु के वाम भाग में ब्रह्म का आवाहन- ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमितः सुरुचोव्वेन ऽ आवः। स बुध्न्याऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।। ¬ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि ।।

विनायकादिपंचलोकपालानामावाहनम्

1- गणेश का आवाहन- ॐ गणान्त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गुं हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भ्भधम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।।

2- अम्बिका का आवाहन- ॐ अम्बे ऽ अम्बिके अम्बालिके न मा मयति कश्चन। ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्। ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ।।

3- वायु का आवाहन- ॐ व्वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये ।। ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- आकाश का आवाहन-ओं घृतं घृतपावानः पिबतव्वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्यहविरसि स्वाहा ।। दिशः प्रदिश ऽ आदिशो व्विदिशिऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा।। ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः आकाशं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5-अश्विनी कुमार का आवाहन- ओं यावांकशामधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार से आपने वैदिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का स्थापन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- नवग्रह मण्डल पर कितने अधिदेवता होते है?

क- 7, ख- 8, ग- 9, घ- 10।

प्रश्न 2- त्र्यम्बकं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 3- यदक्रन्दः प्रथमं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 4- इदं विष्णु मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 5- सयोषा इन्द्र मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 6- अग्निं दूतं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- अग्नि का, ख-अप का, ग- विष्णु का, घ- पृथ्वी का।

प्रश्न 7- आपो हिष्ठा मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- अप का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 8- विष्णो रराट मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- अग्नि का, ख-अप का, ग- विष्णु का, घ- पृथ्वी का।

प्रश्न 9- स्योना पृथ्वी मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- अग्नि का, ख-अप का, ग- विष्णु का, घ- पृथ्वी का।

प्रश्न 10-घृतं घृतपावानः से किसका आवाहन करते है?

क- गणेश का, ख- अम्बिका का, ग- वायु का, घ- आकाश का?

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों को वैदिक मन्त्रों से आवाहन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों की स्थापना पौराणिक मन्त्रों से कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है। इस सन्दर्भ में हमने एक निवेदन पूर्व में भी किया है कि वैदिक मन्त्रों का उच्चारण वे ही कर सकते जिन्होने गुरुमुखोच्चारण पद्धति मन्त्रों से पढ़ा है अन्यथा वे मन्त्र अशुद्ध ही पढ़ जायेगें। इसलिये इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जाय कि जो शुद्ध रूप से वेद मन्त्रों का उच्चारण न कर सकते हो वे पौराणिक मन्त्रों से आवाहन कर सकते है। पौराणिक मन्त्र वैदिक मन्त्र की अपेक्षा काफी सरल एवं सुगम है। अतः पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन इस प्रकार है-

3.4.2 पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन

1-सूर्य के दाहिने भाग में ईश्वर का स्थान होता है। इनका आवाहन इस प्रकार है-

एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूल कपालखड्वांगधरेण सार्धम्।
लोकेश यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजा भगवन्नमस्ते।।
ओं भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः। ईश्वरं आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के दक्षिण में उमा का स्थान होता है । इनका आवाहन इस प्रकार है-

हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के दक्षिण में स्कन्द का स्थान है उनका आवाहन इस प्रकार है-

रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम्।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दं आवाहयाम्यहम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के दक्षिण में विष्णु का स्थान है। अतः आवहन इस प्रकार है-

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्
ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।

5- बृहस्पति के दक्षिण में ब्रह्मा का स्थान होता है जिनका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ कृष्णाजिनांबरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूभुर्वः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के दक्षिण में इन्द्र का स्थान है इनका आवाहन इस प्रकार किया जाता है-

ओं देवराजं गजारूढ़ं शुनासीरं शतक्रतुम्।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ।।

7- शनि के दक्षिण में यम का सथान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ओं धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्।।
ओं भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के दक्षिण में काल का स्थान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ओं अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्।।
ओं भूर्भुवः स्वः कालाय नमः कालं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- केतु के दक्षिण में चित्रगुप्त का स्थान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ओं धर्मराजसभासंस्थं कृताकृतविवेकिनम्।
आवाहये चित्रगुप्तं लेखनी पत्रहस्तकम्।।

ओं भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

1-सूर्य के वाम भाग में अग्नि का आवाहन-

ॐ रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।

वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ओं भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के वाम भाग में अप का आवाहन-

ओं आदिदेवसमुद्भूत जगत्छुद्धिकराः शुभाः।

औषध्याप्यायनकरा अप आवाहयाम्यहम्।।

ओं भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के वाम भाग में पृथ्वी का आवाहन-

ॐ शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।

सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के वाम भाग में विष्णु का आवाहन-

ॐ शंखचक्रगदापद्महस्तं गरुड़वाहनम्।

किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि।।

5-बृहस्पति के वाम में इन्द्र का आवाहन-

ॐ ऐरावत गजारूढ़ं सहस्राक्षं शचीपतिम्।

वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के वाम में इन्द्राणी का आवाहन-

ॐ प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।

नानालंकारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- शनि के वाम में प्रजापति का आवाहन-

ॐ आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।

अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः प्रजापतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के वाम भाग में सर्प का आवाहन-

ओं अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्।

आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्प्पेभ्यो नमः सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि ।।

9- केतु के वाम भाग में ब्रह्मा का आवाहन-

ओं हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम्।

आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि ।।

विनायकादिपंचलोकपालानामावाहनम्

1- गणेश का आवाहन-

ॐ लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।

आवाहयामयहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।।

2- अम्बिका का आवाहन-

ॐ पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।

नानाजाति कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ।।

3- वायु का आवाहन-

ॐ आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्।

सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- आकाश का आवाहन-

ॐ अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्।

आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः आकाशं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5-अश्विनी कुमार का आवाहन-

ॐ देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषक्वरौ।

आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार से आवाहन करके प्रतिष्ठा करनी चाहिये। क्योंकि बिना प्रतिष्ठा के पूजन नही हो पायेगा। इसलिये हाथ में अक्षत लेकर अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुये प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिये।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चनः।।

इस प्रकार से आपने पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का स्थापन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- नवग्रह मण्डल पर कितने प्रत्यधिदेवता होते है?

क- 7, ख- 8, ग- 9, घ- 10।

प्रश्न 2- एह्येहि विश्वेश्वर मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 3- रुद्रतेजः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 4- देव देव जगन्नाथ मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 5-देवराजं गजारूढ़ं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 6- धर्मराजं महावीर्यं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-यम का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 7- धर्मराज सभासंस्थं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क-चित्रगुप्त का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 8-रक्तमाल्यम्बरधरः मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- अग्नि का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 9- शुक्लवर्णां विशालाक्षीं मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- पृथ्वी का।

प्रश्न 10- ऐरावत गजारूढ़ मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों को पौराणिक मन्त्रों से आवाहन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों की स्थापना नाम मन्त्रों से कैसे की जाती है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है। इस सन्दर्भ में हमने एक निवेदन पूर्व में भी किया है कि वैदिक मन्त्रों का उच्चारण वे ही कर सकते हैं जिन्होने गुरुमुखोच्चारण पद्धति से मन्त्रों को पढ़ा है अन्यथा वे मन्त्र अशुद्ध ही पढ़े जायेगें। इसलिये इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जाय कि जो शुद्ध रूप से वेद मन्त्रों का उच्चारण न कर सकते हो वे पौराणिक मन्त्रों से आवाहन कर सकते है। पौराणिक मन्त्र वैदिक मन्त्र की अपेक्षा काफी सरल एवं सुगम है। परन्तु पौराणिक मन्त्रों से भी आवाहन करने में काठिन्य हो रहा हो तो नाम मन्त्रों से आवाहन करना चाहिये लेकिन किसी भी हालत में अशुद्धि नही होनी चाहिये। अतः पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन इस प्रकार है-

3.4.3 नाम मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन

1-सूर्य के दाहिने भाग में ईश्वर का स्थान होता है। इनका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः। ईश्वरं आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के दक्षिण में उमा का स्थान होता है । इनका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के दक्षिण में स्कन्द का स्थान है उनका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के दक्षिण में विष्णु का स्थान है। अतः आवहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।

5- बृहस्पति के दक्षिण में ब्रह्मा का स्थान होता है जिनका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के दक्षिण में इन्द्र का स्थान है इनका आवाहन इस प्रकार किया जाता है-

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ।।

7- शनि के दक्षिण में यम का स्थान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के दक्षिण में काल का स्थान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः कालं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- केतु के दक्षिण में चित्रगुप्त का स्थान होता है जिसका आवाहन इस प्रकार है-

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

1-सूर्य के वाम भाग में अग्नि का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।।

2- चन्द्रमा के वाम भाग में अप का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि स्थापयामि।।

3- मंगल के वाम भाग में पृथ्वी का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।।

4- बुध के वाम भाग में विष्णु का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि।।

5-बृहस्पति के वाम में इन्द्र का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि।।

6- शुक्र के वाम में इन्द्राणी का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- शनि के वाम में प्रजापति का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः प्रजापतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- राहु के वाम भाग में सर्प का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्प्पेभ्यो नमः सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि ।।

9- केतु के वाम भाग में ब्रह्मा का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि ।।

विनायकादिपंचलोकपालानामावाहनम्

1- गणेश का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।।

2- अम्बिका का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ।।

3- वायु का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- आकाश का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः आकाशं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5-अश्विनी कुमार का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार से आवाहन करके प्रतिष्ठा करनी चाहिये। क्योंकि बिना प्रतिष्ठा के पूजन नही हो पायेगा। इसलिये हाथ में अक्षत लेकर अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुये प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिये।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चनः।।

इस प्रकार से आपने नाम मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का स्थापन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- नवग्रह मण्डल पर कितने पुरुष प्रत्यधिदेवता होते है?

क- 7, ख- 8, ग- 9, घ- 10।

प्रश्न 2- ओं भूर्भुवः स्वः ईश्वराय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 3- ओं भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 4- ओं भूर्भुवः स्वः विष्णवे मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 5-ओं भूर्भुवः स्वः इन्द्राय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 6- ओं भूर्भुवः स्वः यमाय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-यम का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 7- ओं भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क-चित्रगुप्त का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 8-ओं भूर्भुवः स्वः अग्नये मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- अग्नि का, घ- इन्द्र का।

प्रश्न 9- ओ भूर्भुवः स्वः पृथीव्यै मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- पृथ्वी का।

प्रश्न 10- ओं भूर्भुवः स्वः इन्द्राय मन्त्र से किसका आवाहन किया जाता है?

क- ईश्वर का, ख-स्कन्द का, ग- विष्णु का, घ- इन्द्र का।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों को नाम मन्त्रों से आवाहन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का पूजन कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

3.4.4 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का वैदिक विधि से पूजन

अब आप अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवाहन किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये वैदिक मन्त्र को पढ़ते है और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

ओं पुरुषऽएवेद गुं सर्व्वं यद भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल, हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य, मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल, स्नान हेतु स्नानीय जल एवं पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

ततः पादयोः पाद्यं हस्तयोरर्घ्यं आचमनीयं जलं -देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीय पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्- ओं पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पंचधा सो देशेभवत्सरित्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्- शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रानभो रूपाः पार्ज्जन्न्याः।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्- ओ युवा सुवासाः परिवीतऽ आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयंतः।। शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्- ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंचशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमःयज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्- ओं सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरुथ मासदत्स्वः।। व्वासो ऽअग्ने विश्वरूप गुं संव्ययस्व व्विभावसो।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्- ओं त्वांगन्धर्वाऽ अँखनसूँत्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधे सोमोराजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्चत।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्- ओं अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा न विष्ठया मतीयोजान्विद्रतेहरी।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्- ओं ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः अश्वा इव सजीत्वरीर्व्विरुधः पारयिष्ण्वः। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-ओं काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।। सौभाग्य सिन्दूरम्-ओ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्तियह्वाः। घृतस्यधाराऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है। नानापरिमलद्रव्याणि- ओं अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमा गुं सं परिपातु विश्वतः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये। नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्- ओं धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्वतं योऽस्मान्धूर्वतितं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वन्हितम् गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमन्देव हूतमम्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-ओं अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्नि र्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योति र्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् - ओं नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽ अकल्पयन् ।। नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-ओं अ गुं शुनाते अ गुं शुः पृच्यतां परुषांपरुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः।। चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-ओं याः फलिनीर्य्याऽ अफलाऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं हसः।। इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकं च-ओं यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। व्वसन्तो स्यासी दाज्यङ्ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः।। मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-ओं हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्या मुतेमां कस्¬¬मै देवाय हविषा विधेम।। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् - इद गुं हविः प्रजननम्मे ऽअस्तु दशव्वीर गुं सर्व्वगण गुं स्वस्तये । आत्मशनि प्प्रजाशनि पशुशनि लोकसन्न्यभयसनि। अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽ अस्मासु धत्त।। आ रात्रि पार्थिव गुं रजः पितुर प्रायिधामभिः। दिवः सदा गुं सि वृहती व्वितिष्ठस ऽआत्वेषं वर्त्तते तमः।। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः- ¬ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः।। मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा- ¬ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषंगिणः।। तेषा गुंसहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।। प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपाल देवता प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने वैदिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का पूजन पंच

लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- पुरुष एवेद मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 2- पंचनद्यः मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 3- ओषधीः मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 4- अहिरिव भोगैः मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 5- धूरसि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 6-अग्निर्ज्योति मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 7- नाभ्या मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 8- यत् पुरुषेण मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न 9- याः फलिनीर्या मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 10- यज्ञेन मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पांजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों को वैदिक मन्त्रों से पूजन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता,

प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का पूजन पौराणिक विधि से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

3.4.5 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का पौराणिक विधि से पूजन-

अब आप अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का पौराणिक विधि से पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवान किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये पौराणिक मन्त्र को पढ़ते है और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

ओं अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। भावितं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल इस श्लोक को पढ़कर दें।

ओं गंगोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य का जल इस श्लोक से देना चाहिये-

ओं गंधपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः अर्घ्यार्थे जलं समर्पयामि।।

मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल इस प्रकार देना चाहिये-

ओं कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं गृहाण वरदो भव।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।,

स्नान हेतु स्नानीय जल इस मन्त्र से देना चाहिये-

ओं मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्-

ओं पयो दधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्-

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुध वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्-

ॐ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्-

ओं नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्-

ओं उवपस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्-

ओं श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाठ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिग्रह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्-

ओं अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण सर्वदेवता।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्-

ओं माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-

ओं दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-

ओ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरम् प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि-

ओं अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्। नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्-

ओं वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाठयो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां धूपो अयं प्रतिगृह्यताम्।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-

ओं साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् -

ओं शर्कराखण्डखाद्यादि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-

ओं चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्। करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।

चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-

ओं इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ।।

इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच-

ओं पूंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-

ओं हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् -

कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः-

ॐ नाना सुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानिच। पुष्पांजलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा-

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदेपदे। प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपाल देवता प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने पौराणिक मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का पूजन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु

विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- अनेक रत्न संयुक्तं मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 2- पयो दधि घृतं चैव मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 3- माल्यादीनि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 4- अबीरं च गुलालं च मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 5- वनस्पति रसो मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 6-साज्यं च मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 7- शर्कराखण्ड मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 8- पूंगीफल महद्दिव्यं मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न 9- इदं फलं मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 10- नाना सुगन्धि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पंाजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों को पौराणिक मन्त्रों से पूजन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का पूजन नाम मन्त्र की विधि से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

3.4.6 अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का नाम मन्त्र की विधि से पूजन-

अब आप अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का नाम मन्त्र की विधि से पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवाहन किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये नाम मन्त्र को पढ़ते है और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल इस मन्त्र को पढ़कर दें।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य का जल इस श्लोक से देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः अर्घ्यार्थे जलं समर्पयामि।।

मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल इस प्रकार देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।,

स्नान हेतु स्नानीय जल इस मन्त्र से देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है ।

पंचामृतस्नानम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।। आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्-

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् -

नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य

ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-

चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-

इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच-

मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-

कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् -

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः-

मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा-

प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपाल देवता प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने नाम मन्त्रों से अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंच लोकपालों के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ अधि देवता, प्रत्यधि देवता का पूजन पंच लोकपालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- आसनं समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 2- पंचामृतं समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 3- पुष्पमालां समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 4- नाना परिमलद्रव्याणि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 5- धूपं आघ्रापयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 6-दीपं दर्शयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 7- नैवेद्यं निवेदयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 8- ताम्बूल पत्राणि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न 9- इमानि फलानि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 10- मन्त्र पुष्पांजलि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पांजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालो का पूजन नाम मन्त्र की विधि से जाना । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होंगे। अब हम इसका सारांश वर्णित करने जा रहे है।

3.5 सारांश

इस ईकाई में आपने नवग्रह मण्डल पर अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के स्थापन का विधान जाना है। वस्तुतः किसी भी प्रकार की शान्ति के लिये या पौरोहित्यिक कर्मकाण्ड के लिये नवग्रह मण्डल का निर्माण करके नवग्रहों की स्थापना करके पूजन करते है। क्येंकि बिना स्थापना के वह ग्रह या देवता वहां आकर विराजमान नही होता जिसकी हम पूजा करना चाहते है। इसलिये स्थापन जानना आवश्यक है और पूजन भी जानना अति आवश्यक है।

इस ईकाई में यह बात स्पष्ट की गयी की प्रत्येक ग्रह के अधिदेवता होते हैं और प्रत्येक ग्रह के प्रत्यधि देवता भी होते हैं। अर्थात् नवग्रह यदि नव है तो उनके अधिदेवता भी नव तथा प्रत्यधि देवता

भी नव ही होगें। नवग्रहों की संख्या तथा उनके नामों का वर्णन करते हुये मत्स्य पुराण कहता है कि- सूर्यः सोमो महीपुत्रः सोमपुत्रो बृहस्पतिः। शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति ग्रहा नव।। अर्थात् सूर्य , चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु को नवग्रह कहा गया है। अब इन नवग्रहों के दाहिने अधिदेवता एवं बाम भाग में प्रत्यधि देवता रहते हैं। अब प्रश्न उठता है कि इनके क्या-क्या नाम है? इस सन्दर्भ में कहा गया है कि ईश्वरश्च उमा चैव स्कन्दो विष्णुस्तथैव च।ब्रह्मेन्द्रौयमकालाश्चचित्रगुप्ताधिदेवता।। यानी क्रमशः सूर्यादि नवग्रहों के दक्षिण में ईश्वर, उमा, स्कन्द, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, यम, काल, चित्रगुप्त ये अधिदेवता है। इन्ही सूर्यादि ग्रहों के बाम भाग में क्रमशः देवता विराजमान रहते हें जिन्हे प्रत्यधि देवता के रूप में जाना जाता है। इनके नाम क्रमशः अग्निरापोधराविष्णुशक्रेन्द्रणिपितामहाः। पन्नगाकः क्रमाद्वामे ग्रह प्रत्यधि देवता।। अर्थात् अग्नि, आप, धरा, विष्णु , शक्र, इन्द्राणि, पितामह, पन्नग और ब्रह्मा क्रम से ग्रहों के वाम में प्रत्यधि देवता होते है। इसके अलावा नवग्रह मण्डल पर पंचलोकपाल होते है जिनके बारे में कहा गया है कि गणेशश्चाम्बिकावायुआकाशश्चाश्विनौ तथा। अर्थात् गणेश, अम्बिका, वायु, आकाश एवं अश्विनी कुमार ये पंच लोकपाल के रूप में जाने जाते है।

इन सभी ग्रहों और देवताओं के आवाहन को तीन प्रकारों में बांटा गया है। जिसे वैदिक मन्त्रों द्वारा आवाहन, पौराणिक मन्त्रों द्वारा आवाहन एवं नाम मन्त्रों द्वारा आवाहन के रूप में जाना जाता है। न केवल आवाहन स्थापन अपितु इनका पूजन भी तीन ही विधाओं में बांटा गया है जिन्हे वैदिक मन्त्रों द्वारा, पौराणिक मन्त्रों द्वारा एवं नाम मन्त्रों द्वारा बतलाया गया है। इसमें वैदिक मन्त्रों से यदि नही करना हो तो पौराणिक मन्त्रों करना चाहिये या इसी प्रकार पौराणिक मन्त्रों से या समयाभाव हो तो नाम मन्त्रों से नवग्रहों का स्थापन किया जाता है। आवाहन स्थापन के उपरान्त नवग्रहों का यथालब्धोपचार या षोडशोपचार से पूजन किया जाता है।

3.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

विश्वेश्वर- विश्व के ईश्वर, अप- जल, लोकेश- लोक के स्वामी, यज्ञेश्वर- यज्ञ के इश्वर, हेमाद्रि- हिमालय, शंकरप्रियाम्- शंकर की प्रिया, देवसेनाग्रगं- देवसेना के आगे चलने वाले। षण्मुख- छः मुख, कुत्तिका सूनु- कृत्तिका के पुत्र, जगन्नाथ- जगत् के स्वामी, चतुर्भुज- चार भुजाओं वाले, रमानाथ- रमा के पति, अम्बर- वस्त्र, पद्मसंस्थ- कमल पर स्थित, चतुर्मुख- चार मुख, वेदाधार- वेद का आधार, निरालम्ब- बिना सहारा के, देवराज- देवताओं के राजा, गजारूढ़- हाथी पर सवार, शतक्रतु- सौ यज्ञ करने वाला, वज्र हस्त- हाथ में वज्र, धर्म राज- धर्म के स्वामी, महावीर्य- महा बलवान, दिक्पति- दिशा के पति, अनाकार- बिना आकार के, कृताकृत- किया या न किया,

शुक्लवर्णा- सफेद वर्ण, विशालाक्षी- विशाल आंख वाली, सर्व शस्याश्रया- सभी प्रकार के अन्नों का आश्रय, गरुड़वाहन- गरुड़ का वाहन, कुण्डलधर- कुण्डल धारण करने वाले, सहस्राक्ष- सहस्रों आंखे, शचीपति- शची के पति इन्द्र, सुराधीश- देवताओं के अधिपति, प्रसन्न वदनाः- प्रसन्न मुख वाली, महाकाय- विशाल शरीर, गजवक्त्र- हाथी का मुख, सिद्धिदायक- सिद्धि देने वाले, विपिन- वन, सर्वग- सभी जगह जाने वाले।

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

3.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-ध, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-घ।

3.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-घ, 2-क, 3-ख, 4-ग, 5-घ, 6-ग, 7-क, 8-ख, 9- ग, 10-घ।

3.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-ग, 2-क, 3-ख, 4-ग, 5-घ, 6-क, 7-क, 8-ग, 9-घ, 10-घ।

3.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-ग, 2-क, 3-ख, 4-ग, 5-घ, 6-ख, 7-क, 8-ग, 9-घ, 10-घ ।

3.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-क, 3-ख, 4-ग, 5-घ, 6-ख, 7-क, 8-ग, 9-घ, 10-घ ।

3.4.4 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग ।

3.4.5 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग ।

3.4.6 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग ।

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-दान मयूख।

2-प्रतिष्ठा मयूख।

3-बृहद् ब्रह्म नित्य कर्म समुच्चय।

4- शान्ति- विधानम्।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-उत्सर्ग मयूख।

7- कर्मजव्याधिदैवी चिकित्सा।

8- फलदीपिका

9- अनुष्ठान प्रकाश।

10- सर्व देव प्रतिष्ठा प्रकाशः।

11- संस्कार-भास्करः । वीणा टीका सहिता।

12- मनोभिलषितव्रतानुवर्णनम्- भारतीय व्रत एवं अनुष्ठान।

13- संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

3.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- पूजन विधानम्।

2- श्री काशी विश्वनाथ पंचांग।

3- भारतीय रत्न सिद्धान्त।

4- याज्ञवल्क्य स्मृतिः।

5- संस्कार- विधानम्।

3.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- अधिदेवताओ एवं प्रत्यधि देवताओं का परिचय दीजिये।

2- पंच लोकपालों का स्वरूप बतलाइये।

3- अधिदेवता स्थापन की वैदिक विधि बतलाइये।

4- प्रत्यधि देवता स्थापन की पौराणिक विधि वर्णित कीजिये।

5- पंचलोकपाल स्थापन की नाम मन्त्र की विधि का वर्णन कीजिये।

6- अधिदेवताओं का वैदिक मन्त्रों से पूजन सविधि लिखिये।

7- प्रत्यधि देवताओं का पौराणिक मन्त्रों से पूजन लिखिये।

8- पंचलोकपालों का पूजन नाम मन्त्रों से लिखिये।

9- गणेश लोकपाल के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

10- वायु लोकपाल के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

ईकाई – 4 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पाल का आवाहन एवं पूजन

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का परिचय

4.3.1 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का परिचय

4.3.2 दश दिक्पालों का परिचय

4.4 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का आवाहन

4.4.1 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का वैदिक मन्त्रों से आवाहन

4.4.2 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन

4.4.3 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का नाम मन्त्रों से आवाहन-

4.4.4 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का वैदिक मन्त्रों से पूजन -

4.5 सारांशः

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.8 बोधप्रश्नों के उत्तर

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

इस इकाई में वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पाल का आवाहन एवं पूजन संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व नवग्रह स्थापन सहित अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का आवाहन पूजन सहित अन्य शान्ति प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया है। कोई भी व्यक्ति यदि कोई शान्ति कराता है तो प्रायः शान्ति प्रविधियों में नवग्रहों का स्थापन एवं अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपाल का आवाहन पूजन करना पड़ता है। इसके अलावा नवग्रह मण्डल पर ही वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पाल का आवाहन एवं पूजन भी करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पाल का आवाहन एवं पूजन आप कैसे करेगें, इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

प्रायः कर्मकाण्डीय प्रक्रियाओं में नवग्रहों का स्थापन किया जाता है। ग्रह स्थापन के नाम पर सामान्य लोगों में यही धारणा बनी रहती है कि नौ ग्रह है उनका नाम लिया जाता है। लेकिन जब आप नवग्रह मण्डल पर ग्रहों का स्थापन विधान देखेंगे तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि नवग्रहों के अलावा उनके अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों सहित वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पाल का भी आवाहन स्थापन करना पड़ता है इनके अभाव में नवग्रह मण्डल के देवताओं का पूजन हो ही नही पाता क्योकि मण्डल पर तो कुल चौवालीश 44 देवता होते है। अभी हमने केवल नवग्रहों का तथा अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों का कहां -कहां स्थापन किया जाता है ? इसको जाना है। लेकिन अब वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पाल का आवाहन स्थान कहां-कहां होता है? कैसे किया जाता है? पूजन की विधि क्या है इस पर विचार करेंगें। इस प्रकार इस ईकाई के अध्ययन से आपको संबंधित समस्त विषयों का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

इस इकाई के अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल पर वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पाल का आवाहन एवं पूजन करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे अंग सहित नवग्रहों के स्थापन का ज्ञान हो जायेगा जिसका प्रयोग आप संबंधित व्यक्ति के दोषों से निवारण में कर सकेगें जिससे वह अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित होते हुये लोकोपकारक हो सकेगा।

4.2 उद्देश्य-

इस ईकाई के अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल पर नवग्रहों के स्थापन की आवश्यकता को समझ रहे होगें। अतः इसका उद्देश्य तो वृहद् है परन्तु संक्षिप्त में इस प्रकार आप जान सकते है।

- वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पाल का आवाहन एवं पूजन से समस्त कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।
- वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पाल का आवाहन एवं पूजन की शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।
- इस कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।
- समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।
- संदर्भित शिक्षा के विविध तथ्यों को प्रकाश में लाना।

4.3 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का परिचय

4.3.1 वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का परिचय

यह सर्व विदित है कि जब भी हम कोई शान्ति करते हैं तो नवग्रह मण्डल का निर्माण कर नवग्रहों की स्थापना अवश्य करते हैं। न केवल शान्ति अपितु यज्ञों में भी नवग्रहों की स्थापना करनी पड़ती है। नवग्रहों की स्थापना के बिना हम किसी भी अनुष्ठानिक प्रक्रिया का सम्पादन नही कर सकते इसलिये नवग्रहों का ज्ञान अति आवश्यक है। ईशाने ग्रह वेदिका कहते हुये यह बतलाया गया है कि नवग्रह वेदी का निर्माण ईशान कोण में करके नवग्रहों की स्थापना करनी चाहिये। नवग्र्रहों के रूप में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एव केतु होते है। इन नवों ग्रहों के दक्षिण अधि देवता एवं बाम भाग में प्रत्यधि देवता विराजित होते हैं।

नवग्रह मण्डल पर वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल की स्थापना की जाती है। इन दोनों देवताओं को नवग्रह मण्डल पर अंग देवता के रूप में जाना जाता है। वास्तोष्पति को वास्तु देवता भी कहा जाता है। निरुक्तकार महर्षि यास्क ने इसकी व्याख्या करते हुये कहा है कि वासतुर्वसतेर्निवास कर्मणः। अर्थात् जहां हम निवास करते हैं वहा वास्तु देवता का वास होता है। इसीलिये जब किसी नवीन ग्रह में प्रवेश करते हैं तो वहां वास्तु पूजन कराते है। जब हम किसी नवीन भवन के प्रारम्भ का उद्धाटन करते है तो वहां भी वास्तु पूजन कराने का विधान है। परन्तु इन स्थानों पर जो वास्तु शान्ति करायी जाती है वह नवग्रह के वास्तोष्पति से भिन्न होती है क्योकि वहां अलग से वास्तुमण्डल बनाकर

पूजन किया जाता है। यहां अर्थात् नवग्रह मण्डल पर एक स्थान पर वास्तोष्पति के रूप में अक्षत पुंज को रखा जाता है और उनकी पूजा की जाती है। वास्तु के आवाहन मन्त्र के रूप में वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शं न्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे। मन्त्र को जाना जाता है।

क्षेत्रपाल के परिचय में भी यह बतलाया गया है कि क्षेत्र के स्वामी को क्षेत्राधिपति कहते है। ये देवता समस्त क्षेत्रों से हमारी रक्षा करते है। क्षेत्रपाल के ध्यान का यह श्लोक अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो इस प्रकार है-

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैस्सह। पूजा बलिं गृहाणेम सौम्यो भवति सर्वदा।
पुत्रान्देहिधनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे। आयुरारोग्य मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।।

इसमें यह स्पष्ट रूप से बतलाया गया है कि भूत प्रेत गणों के साथ क्षेत्रपाल जी रहते है इसलिये उनको इन गणों के साथ नमस्कार है। मेरे द्वारा दी गयी पूजा एवं बलि को ग्रहण करें और हमारे प्रति सौम्य रहे। मुझे पुत्र, धन एवं सभी कामनाओं को दे और आयु एवं आरोग्य को प्रदान करे तथा हमारे सारे कार्य निर्विघ्न सम्पन्न करें। वैसे तो क्षेत्रपाल का पृथक् मण्डल बनाया जाता है तो एकोनपंचाशत् यानी उन्चास या एकपंचाशत् अर्थात् इक्यावन देवता होते है। परन्तु यहाँ एक ही स्थान पर अक्षत पुंज रखकर क्षेत्रपाल का आवाहन किया जाता है।

इस प्रकार से वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल देवता को नवग्रह मण्डल पर अंग देवता के रूप में स्वीकार किया गया है। पृथक् मण्डल बनाये जाने पर एवं पूजित होने पर भी इनका नवग्रह मण्डल पर पूजन किया ही जाता है।

इस प्रकार से आपने नाम वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का परिचय जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल के परिचयात्मक ज्ञान को जान सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- वास्तोष्पति को नवग्रह मण्डल पर क्या माना जाता है?

क- प्रधान देवता, ख- अंग देवता, ग- अधि देवता, घ- प्रत्यधि देवता।

प्रश्न 2- क्षेत्रपाल को नवग्रह मण्डल पर क्या माना जाता है?

क- प्रधान देवता, ख- अंग देवता, ग- अधि देवता, घ- प्रत्यधि देवता।

प्रश्न 3- वास्तोष्पति को क्या कहा जाता है?

क- वास्तु देवता, ख- अंग देवता, ग- अधि देवता, घ- प्रत्यधि देवता।

प्रश्न 4- क्षेत्राधिपति को क्या कहा जाता है?

क- प्रधान देवता, ख- अंग देवता, ग- क्षेत्रपाल देवता, घ- प्रत्यधि देवता।

प्रश्न 5- वास्तोष्पते मन्त्र के देवता है?

क- प्रधान देवता, ख- अंग देवता, ग- अधि देवता, घ- वास्तोष्पति देवता।

प्रश्न 6- नमो वै क्षेत्रालस्त्वं के देवता है?

क- प्रधान देवता, ख- क्षेत्रपाल देवता, ग- अधि देवता, घ- प्रत्यधि देवता।

प्रश्न 7- भूत प्रेत गणों के साथ कौन रहता है?

क- क्षेत्रपाल देवता, ख- अंग देवता, ग- अधि देवता, घ- प्रत्यधि देवता।

प्रश्न 8- बलि के आकांक्षी देवता के रूप में किसे जाना जाता है?

क- प्रधान देवता, ख- अंग देवता, ग- क्षेत्रपाल देवता, घ- प्रत्यधि देवता।

प्रश्न 9- एकोनपंचाशत् का अर्थ कितना है?

क- 49, ख- 50, ग- 51, घ- 52।

प्रश्न 10- एकपंचाशत् का अर्थ कितना है?

क- 49, ख- 50, ग- 51, घ- 52।

इस प्रकार अपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का परिचय प्राप्त किया । अब हम दश दिग्पालों का परिचय अग्रिम प्रकरण में प्रदान करने जा रहें हैं जो इस प्रकार है-

4.3.2 दश दिक्पालों का परिचय-

इससे पूर्व में आपने वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल के विषय में परिचय प्राप्त किया। अब हम इस प्रकरण में दश दिक्पालों के विषय में ज्ञान प्राप्त करने जा रहे हैं। दश दिक्पाल को विच्छेदित करने पर तीन भागों में उसका विभाजन देखने को मिलता है जो दश, दिक् और पाल है। दश का अर्थ दश संख्या, दिक् का अर्थ दिशायें एवं पाल का अर्थ है पालने वाला अर्थात् दशों दिशाओं से हमारा

पालन करने वाला दश दिक्पाल कहलाता है। अब प्रश्न उठता है कि ये दशो दिशायें कौन है? क्योंकि चार दिशा पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण को तो हम जानते है। हम यह भी जानते है कि चार विदिशा यानी अग्नि कोण, नैर्ऋत्य कोण, वायव्य कोण एवं ईशान कोण है। लेकिन फिर कुल मिलाकर आठ ही हुआ। अभी दो और दिशायें बाकी हैं जिन्हे ऊपर और नीचे के रूप में जानते है। एक प्रश्न और यहां खड़ा होता है कि ऊपर और नीचे दो दिशायें हैं तो उनके स्वामिओं को नवग्रह मण्डल पर कैसे दिखाया जायेगा? इसका उत्तर देते हुये बतलाया गया है पूर्व एवं ईशान के बीच में आकाश का स्थान एवं नैर्ऋत्य पश्चिम के बीच में पाताल का स्थान नवग्रह मण्डल पर होता है । इस प्रकार उनके स्वामिओं को वहां दिखाया जा सकता है। अब क्रमशः दिशाओं के अधिपतियों का नाम इस प्रकार जाना जा सकता है।

इन्द्रोवह्निपितृपतिनैर्ऋतोवरुणोमरुत्। कुबेरईशोब्रह्मा च अनन्तो दश दिक्पतिः।।

इसको यदि और स्पष्ट किया जाय तो इस प्रकार कहा जा सकता है। पूर्व दिशा का स्वामी इन्द्र हैर्। अिगन कोण का स्वामी अग्नि है। दक्षिण दिशा का स्वामी यम है। नैर्ऋत्य कोण का स्वामी निर्ऋति है। पश्चिम दिशा का स्वामी वरुण है। वायव्य कोण का स्वामी वायु है। उत्तर दिशा का स्वामी कुबेर है। ईशान कोण का स्वामी ईशान है। पूर्व एवं ईशान के बीच का स्वामी ब्रह्मा है तथा पश्चिम एवं नैर्ऋत्य के बीच का स्वामी अनन्त है । अब हम इन दिग्पालों के स्वरूपों की चर्चा करेगें जिससे इनका परिचय और प्रगाढ़ हो जायेगा।

1- इन्द्र का स्वरूप-

चतुर्दन्तगजारूढ़ो वज्री कुलिशभृत्करः। शचीपति प्रकर्तव्यो नानाभरणभूषितः।।

इन्द्र के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि चार दांतों वाले हाथियों पर इन्द्र विराजमान है। इन्द्र के हाथी का नाम ऐरावत है। वज्र एवं ठाल हाथों में लिये हुये हैं। शची के पति हैं तथा विभिन्न प्रकार के आभूषणों से विभूषित है।

2- **अग्नि का स्वरूप**- दूसरे दिक्पाल के रूप में अग्नि को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

पिंगलशमश्रुकेशाक्षः पीनांगोजवरो अरुण। छागस्थः साक्षसूत्रोग्निः सप्तार्चिः शक्तिधारकः।।

अर्थात् पिंगल वर्ण की मूछें, पिंगल वर्ण के केश एवं पिंगल वर्ण की आंखें है। अग्नि का अंग पीनांग

है, इनके अंगों से तीव्र तेज लाल स्वरूप में निकलता रहता है। छाग अग्नि देवता का वाहन हैं। अक्ष माला एवं सूत्र धारण किया हुआ है। सात जिह्वाओं वाला इनका मुख है और शक्ति को धारण करने वाले ये देवता है।

3- यम का स्वरूप- तीसरे दिक्पाल के रूप में यम को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

ईषन्नीलो यमः कार्यो दण्डहस्तो विजानता। रक्तदृक्पाशहस्तश्च महामहिषवाहनः।

अर्थात् थोड़ा नीला लिये हुये काला यम का स्वरूप है। इनको दण्ड हाथ में लिये हुये जाना जाता है। लाल-लाल इनकी आंखे है, हाथों में पाश लिये हुये हैं। इसी पाश से ये मनुष्यों को खीचकर लाते हैं। महा महिष के वाहन पर विराजते है।

4- निर्ऋति का स्वरूप- चौथे दिक्पाल के रूप में निर्ऋति को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

खड्गचर्मधरोबालो निर्ऋतिर्नरवाहनः। ऊर्ध्वकेशो विरूपाक्षः करालः कालिकाप्रियः।।

निर्ऋति के बारे में बतलाया गया कि तलवार और ठाल धारण किये हुये नर के वाहन पर सवार, सदा ऊर्ध्व केश रखने वाले विरूप अक्षों वाले किराल स्वरूप वाले कालिका के प्रिय निर्ऋति देवता है।

5- वरुण का स्वरूप- पांचवें दिक्पाल के रूप में वरुण को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

नागपाशधरो रक्तभूषणः पद्मिनीपतिः। वरुणो अंबुपतिः स्वर्णवर्णो मकरवाहनः।

अर्थात् नागों के पाश को धारण करने वाले, लाल आभूषण धारण करने वाले, पद्मिनी के पति वरुण देवता जल के स्वामी है और स्वर्ण वर्ण वाले है तथा मकर के वाहन पर विराजमान है।

6- वायु का स्वरूप- छठवें दिक्पाल के रूप में वायु को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

धावद्धरणिपृष्ठस्थो ध्वजधारी समीरणः। वरदानकरो धूम्रवर्णः कार्यो विजानता।।

अर्थात् धरणिपृष्ठ यानी भूमि के ऊपर वायु देवता दौड़ते रहते हैं। वायु देवता ध्वज धारण किये रहते हैं। वरदान करने वाले धूम्रवर्ण के रूप में इनको जाना जाता है।

7- कुबेर का स्वरूप- सातवें दिक्पाल के रूप में कुबेर को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

नरयुत पुष्पकविमानस्थं कुण्डलकेयूरहारविभूषितं वरदगदाधरदक्षिणवामहस्तं मुकुटिनं महोदरं स्थूलकायं ह्रस्व पिंगलनेत्रं पीतविग्रहं शिवसखं विमानस्थं कुबेरं ध्यायेत्।

अर्थात् मनुष्य के स्वरूप वाले पुष्पक विमान पर स्थित, कुण्डल एवं केयूर हार से विभूषित, वरद मुद्रा एवं गदा धारण करने वाले, मुकुट पहने हुये, बड़े पेट वाले, स्थूल शरीर वाले, छोटे-छोटे पिंगल नेत्रों वाले, पीले विग्रह को धारण करने वाले शिव के सखा कुबेर का स्वरूप है।

8- ईशान का स्वरूप- आठवें दिक्पाल के रूप में ईशान को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

एह्येहि विश्वेश्वरनस्त्रिशूलकपालखड्वांगधरेणसार्द्धम्।

लोकेन यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते।।

अर्थात् विश्वेश्वर के रूप में जाने जाने वाले, कपाल एवं खट्वांग धारण करने वाले, लोक के यज्ञ के सिद्धि के लिये पूजा ग्रहण करने वाले है। इनको नमस्कार है।

सर्वाधिपो महादेव ईशानो शुक्ल ईश्वरः। शूलपाणिर्विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः।।

इसे भी ईशान का स्वरूप बतलाया गया है।

9- ब्रह्मा का स्वरूप- नवें दिक्पाल के रूप में ब्रह्मा को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

पद्मासनस्थो जटिलो ब्रह्माकार्यश्चतुर्मुखः। अक्षमाला स्रुवं विभ्रत्पुस्तकं च कमण्डलुम्।।

अर्थात् ब्रहमा कमल के आसन पर विराजमान, जटा धारण किये हुये, चार मुखों वाले, रुद्राक्ष की माला धारण किये हुये, स्रुव , पुस्तक एवं कमण्डल धारण किये हुये है।

10- अनन्त का स्वरूप- दसवें दिक्पाल के रूप में अनन्त को जाना जाता है। इनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

अनन्तं शमनासीनं फणसप्तकमण्डितम्।।

योसावनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरं। पुष्पवद्धारयेनमूर्ध्नी तस्मै नित्यं नमो नमः।।

अनन्त सात फणों वाले है। पृथ्वी को इस प्रकार धारण किये रहते है जैसे कोई पुष्प धारण किया रहता है।

इस प्रकार से आपने नाम दश दिक्पतियों का परिचय जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ दिक्पतियों के परिचयात्मक ज्ञान को जान सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- पूर्व दिशा का दिक्पति कौन है?

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 2- अग्नि कोण का दिक्पति कौन है?

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 3- दक्षिण दिशा का दिक्पति कौन है?

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 4- निर्ऋति विदिशा का दिक्पति कौन है?

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 5- पश्चिम दिशा का दिक्पति कौन है?

क- वरुण, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 6- वायव्य विदिशा का दिक्पति कौन है?

क- इन्द, ख- वायु, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 7- उत्तर दिशा का दिक्पति कौन है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- कुबेर, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 8- ईशान विदिशा का दिक्पति कौन है?

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- यम, घ- ईशान।

प्रश्न 9- पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच का दिक्पति कौन है?

क- इन्द, ख- अग्नि, ग- ब्रह्मा, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 10- नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच की दिशा का दिक्पति कौन है?

क- इन्द, ख- अनन्त, ग- यम, घ- निर्ऋति।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का परिचय का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का आवाहन, स्थापन से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

4.4. वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का आवाहन-

अब आप वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों के आवाहन के बारे में जानेगें।इन सभी के आवाहन को कर्मकाण्ड में तीन भागों में बाटा गया है जिसे वैदिक मन्त्रों से आवाहन, पौराणिक मन्त्रों से आवाहन एवं नाम मन्त्रों से आवाहन के रूप में जाना जाता है। जो इस प्रकार है-

4.4.1 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का वैदिक मन्त्रों से आवाहन -

नवग्रह मण्डल पर पंचलोकपालों के आवाहन के अनन्तर वास्तोष्पति का आवाहन किया जाता है। जिसका मन्त्र इस प्रकार है-

1- वास्तोष्पति के आवाहन का मन्त्र-

ओंवास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवोभवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नोभव द्विपदे शं चतुष्पदे ।। ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

2- क्षेत्रपाल के आवाहन का मन्त्र- ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर ऽ एतारमग्नेः।। एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यंवैश्वानरं क्षेत्रजित्यायदेवाः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये नमः ।। क्षेत्राधिपतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

मण्डल से बाहर दश दिक्पालों का आवाहन करना चाहिये जो इस प्रकार है।

मण्डलाद्बाह्ये दशदिक्पिालानामावाहनम्

1- इन्द्र का आवाहन-

ओं त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र गुं हवे हवे सुहव गुं शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र गुं स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः।। ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ।।

2- अग्नि का आवाहन-

ओं त्वं न्नो अग्ने तवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्वश्चवन्द्य। त्रातातोकस्य तनये गवामस्य निमेष गुं रक्षमाणस्तवव्रते ।। ॐ भूर्भुव: स्वः अग्नये नमः ।। अग्निं आवाहयामि स्थापयामि ।।

3- यम का आवाहन-

ॐ यमाय त्वां गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्मः पित्रे। ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- निर्ऋति का आवाहन-

ॐ असुन्वन्त मयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।। ॐ भूर्भवः स्वः निर्ऋृतये नमः निर्ऋृतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5- वरुण का आवाहन-

ओं तत्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहडमानो वरुणेह बोध्युरुश गुं समान आयुः प्रमोषीः।। उँ वरुणाय नमः वरुणं आवाहयामि स्थापयामि ।।

6- वायु का आवाहन-

ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर गुं सहस्त्रिणी भिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायो ऽ अस्मिन्सवने मादयस्वयूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- कुबेर का आवाहन-

ॐ उपयामगृहीतो अस्यश्विभ्यां त्वा सरसवत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ण। एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा।। ¬ भूर्भुवः स्वः कुबेराय नमः कुबेरं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- ईशान का आवाहन-

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियन्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषानो यथा व्वेद सामद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- ब्रह्मा का आवाहन-

ओं अस्मै रुद्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्यै भरहूतौ सजोषाः। यः श गुं सते स्तुवते धायि पज्ज्र ऽ इन्द्र ज्येष्ठा ऽ अस्माऽ 2 ऽ अवन्तु देवाः ।। ¬ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

10- अनन्त का आवाहन-

ॐ स्योनापृथिवीनोभवानृक्षरानिवेशनी। यच्छाः नः शर्म्म सप्रथाः।। ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार आवाहन करके प्राण प्रतिष्ठा अधोलिखित मन्त्रों से करनी चाहिये-

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।। ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमन्दधातु ।। विश्वेदेवास ऽ इहमादयन्तामों 3 प्रतिष्ठ।। ॐ सूर्यादि अनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

इस प्रकार से वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का वैदिक मन्त्रों से आवाहन किया जाता है।

इस प्रकार से आपने वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पतियों का वैदिक मन्त्रों से आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पतियों का वैदिक मन्त्रों से आवाहन कर सकते हैं। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- त्रातारमिन्द्र मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 2- त्वन्नो अग्ने मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 3- यमाय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 4- असुन्वन्त मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 5- तत्वायामि मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- वरुण, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 6- आनोनियुद्भिः मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- वायु, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 7- उपयाम मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- कुबेर, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 8- तमीशानं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- ईशान।

प्रश्न 9 -अस्मै रुद्रा मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- ब्रह्मा, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 10- स्योना पृथ्वी मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- अनन्त, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का वैदिक मन्त्रों से आवाहन विधान का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का आवाहन, स्थापन पौराणिक मन्त्रों से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

4.4.2 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन-

अब हम वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन की विधि बताने जा रहे है। क्योकि वैदिक मन्त्र सर्वगम्य नही है। वैदिक मन्त्रों का उच्चारण वे ही कर सकते है जो इन मन्त्रों का गुरुमुखोच्चारण परम्परा से ज्ञान प्राप्त किये हो। वैदिक मन्त्र जटिल होता है मेरे कहने का अभिप्राय यह है। उच्चारण की अशुद्धि से बचने के लिये पौराणिक मन्त्रों का प्रयोग श्रेयष्कर माना गया है। अतः पौराणिक मन्त्रों से वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का आवाहन इस प्रकार है-

1- वास्तोष्पति के आवाहन का मन्त्र-

ओंवास्तोष्पतिं विदिक्कायं भुशय्याभिरतं प्रभुम्।
आवाहयाम्यहं देव सर्वकर्मफलप्रदम् ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

2- क्षेत्रपाल के आवाहन का मन्त्र-

ॐ भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम्।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये नमः ।। क्षेत्राधिपतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

मण्डल से बाहर दश दिक्पालों का आवाहन करना चाहिये जो इस प्रकार है।

मण्डलाद्वाह्ये दशदिक्पिालानामावाहनम्

1- इन्द्र का आवाहन-

ओं इन्द्रं सुरपतिं श्रेष्ठं वज्रहस्त महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्।।
ओं भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ।।

2- अग्नि का आवाहन-

ओं त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमुर्द्धानं द्विनासिकम्।
षण्नेत्रं चतुः श्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुव: स्वः अग्नये नमः ।। अग्निं आवाहयामि स्थापयामि ।।

3- यम का आवाहन-

ॐ महामहिषमारूढ़ं दण्डहस्तं महाबलम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- निर्ऋति का आवाहन-

ॐ सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।

आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्।।

ॐ भूर्भवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5- वरुण का आवाहन-

ओं शुद्धस्फटिकसंकाशं जलेशं यादसां पतिम्।

आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।

ॐ वरुणाय नमः वरुणं आवाहयामि स्थापयामि ।।

6- वायु का आवाहन-

ॐ मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्।

यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- कुबेर का आवाहन-

ॐ आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।

महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- ईशान का आवाहन-

ॐ सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।

आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- ब्रह्मा का आवाहन-

ओं पद्मयोनिं चतुर्मुर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।

आवाहययामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धि हेतवे ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

10- अनन्त का आवाहन-

ॐ अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।

जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार आवाहन करके प्राण प्रतिष्ठा अधोलिखित मन्त्र से करनी चाहिये-

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ सूर्यादि अनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

इस प्रकार से वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन किया जाता है।

इस प्रकार से आपने वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पतियों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पतियों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन कर सकते हैं। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न- उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- इन्द्रं सुरपतिं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 2- त्रिपादं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 3- महामहिषमारूढ़ं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 4- सर्वप्रेताधिपं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 5- शुद्धस्फटिकसंकाशं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- वरुण, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 6- मनोजवः मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- वायु, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 7- आवाहयामि देवेश धनदं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- कुबेर, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 8- सर्वाधिपं महादेवं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- ईशान।

प्रश्न 9 -पद्मयोनिं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- ब्रह्मा, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 10- अनन्तं मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- अनन्त, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का पौराणिक मन्त्रों से आवाहन विधान का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का आवाहन, स्थापन नाम मन्त्रों से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

4.4.3 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का नाम मन्त्रों से आवाहन-

अब हम वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का नाम मन्त्रों से आवाहन की विधि बताने जा रहे है। क्योकि वैदिक मन्त्र सर्वगम्य नही है। पौराणिक मन्त्र भी कम पढ़े लिखे लोगों के लिये कठिन है। तथा कभी-कभी कार्य की व्यस्तता होने से समयाभाव हो जात है। ऐसी स्थिति में प्रधान कार्य में व्यवधान न हो इसके लिये नाम मन्त्रों का सहारा लेना पड़ता है। जिससे समय की बचत हो जाती है और प्रयोग भी सविधि सम्पन्न हो जाता है।

अतः नाम मन्त्रों से आवाहन इस प्रकार है-

1- वास्तोष्पति के आवाहन का मन्त्र-

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

2- क्षेत्रपाल के आवाहन का मन्त्र-

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये नमः ।। क्षेत्राधिपतिं आवाहयामि स्थापयामि।।

मण्डल से बाहर दश दिक्पालों का आवाहन करना चाहिये जो इस प्रकार है।

मण्डलाद्बाह्ये दशदिक्पिालानामावाहनम्

1- इन्द्र का आवाहन-

ओं भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ।।

2- अग्नि का आवाहन-

ॐ भूर्भुव: स्वः अग्नये नमः ।। अग्निं आवाहयामि स्थापयामि ।।

3- यम का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि।।

4- निर्ऋति का आवाहन-

ॐ भूर्भवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिं आवाहयामि स्थापयामि ।।

5- वरुण का आवाहन-

ॐ वरुणाय नमः वरुणं आवाहयामि स्थापयामि ।।

6- वायु का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

7- कुबेर का आवाहन-

ओं भूर्भुवः स्वः कुबेराय नमः कुबेरं आवाहयामि स्थापयामि।।

8- ईशान का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि स्थापयामि।।

9- ब्रह्मा का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।

10- अनन्त का आवाहन-

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि ।।

इस प्रकार आवाहन करके प्राण प्रतिष्ठा अधोलिखित मन्त्र से करनी चाहिये-

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ सूर्यादि अनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

इस प्रकार से वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का नाम मन्त्रों से आवाहन किया जाता है।

इस प्रकार से आपने वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पतियों का नाम मन्त्रों से आवाहन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पतियों का नाम मन्त्रों से आवाहन कर सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- इन्द्राय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 2- अग्नये मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 3- यमाय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 4- निर्ऋतये मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 5- वरुणाय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- वरुण, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 6- वायवे मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- वायु, ग- यम, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 7- धनदाय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- कुबेर, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 8- ईशानाय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- यम, घ- ईशान।

प्रश्न 9 -ब्रह्मणे मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- इन्द्र, ख- अग्नि, ग- ब्रह्मा, घ- निर्ऋति।

प्रश्न 10- अनन्ताय मन्त्र से किसका आवाहन कर सकते है?

क- अनन्त, ख- अग्नि, ग- यम, घ- निर्ऋति।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का नाम मन्त्रों से आवाहन विधान का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का पूजन कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

4.4.4 वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का वैदिक मन्त्रों से पूजन -

अब हम वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों का वैदिक मन्त्रों से पूजन की विधि बताने जा रहे है। जो इस प्रकार है-

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवाहन किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये वैदिक मन्त्र को पढ़ते है और वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दश दिक्पालों के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

ओं पुरुषऽएवेद गुं सर्व्वं यदभूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल, हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य, मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल, स्नान हेतु स्नानीय जल एवं पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

ततः पादयोः पाद्यं हस्तयोरर्घ्यं आचमनीयं जलं -देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीय पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्- ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पंचधा सो देशेभवत्सरित्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि आचमनीयं जलं समर्पयामि।।शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्- शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रानभो रूपाः पार्ज्जन्न्याः।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्- ओ युवा सुवासाः परिवीतऽ आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयंतः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्- ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंचशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्- ओं सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरुथ मासदत्स्वः।। व्वासो ऽअग्ने विश्वरूप गुं संव्ययस्व व्विभावसो।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्- ओं त्वांगन्धर्वाऽ अँखनसूँत्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधे सोमोराजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्चता।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्- ओं अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा न विष्ठया मतीयोजान्विद्रतेहरी।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्- ओं ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः अश्वा इव सजीत्वरीर्व्विरुधः पारयिष्ण्वः। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-ओं काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-ओ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्तियह्वाः। घृतस्यधाराऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि- ओं अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा व्वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा गुं सं परिपातु विश्वतः।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्- ओं धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्वतं योऽ स्मान्धूर्वतितं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वन्हतम् गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमन्देव हूतमम्।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्- ॐ अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिज्योर्ति: सूर्य्यः स्वाहा। अग्नि र्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योति र्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् - ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽ अकल्पयन् ।। नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य ओं प्राणाय स्वाहा।।ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-ओं अ गुं शुनाते अ गुं शुः पृच्यतां परुषांपरुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः।। चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-ओं याः फलिनीर्य्याऽ अफलाऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं हसः।। इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच-ओं यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। व्वसन्तो स्यासी दाज्यङ्ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः।। मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-ओं हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्या मुतेमां कस्¬¬मै देवाय हविषा विधेम।। कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् - इद गुं हविः प्रजननम्मे ऽअस्तु दशव्वीर गुं सर्व्वगण गुं स्वस्तये । आत्मशनि प्प्रजाशनि पशुशनि लोकसन्न्यभयसनि। अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽ अस्मासु धत्त।। आ रात्रि पार्थिव गुं रजः पितुर प्रायिधामभिः। दिवः सदा गुं सि वृहती व्वितिष्ठस ऽआत्वेषं वर्त्तते तमः।। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलि:- ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्न्। तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः।। मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा- ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषंगिणः।। तेषा गुंसहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।। प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालदेवता प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने वैदिक मन्त्रों से वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालों के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पाल देवता का पूजन करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- पुरुष एवेद मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 2- पंचनद्यः मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 3- ओषधीः मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 4- अहिरिव भोगैः मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 5- धूरसि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 6-अग्निर्ज्योति मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 7- नाभ्या मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 8- यत् पुरुषेण मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न 9- याः फलिनीर्या मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 10- यज्ञेन मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पांजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालें को वैदिक मन्त्रों से पूजन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालों का पूजन पौराणिक विधि से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

4.4.5 वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालों का पौराणिक विधि से पूजन-

अब आप वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालों का पौराणिक विधि से पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवान किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये पौराणिक मन्त्र को पढ़ते है और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते हैं।

ओं अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। भावितं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल इस श्लोक को पढ़कर दें।

ओं गंगोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य का जल इस श्लोक से देना चाहिये-

ॐ गंधपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अर्घ्यार्थे जलं समर्पयामि।।

मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल इस प्रकार देना चाहिये-

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं गृहाण वरदो भव।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान हेतु स्नानीय जल इस मन्त्र से देना चाहिये-

ॐ मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्-

ओं पयो दधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्-

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्-

ॐ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्-

ओं नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्-

ओं उवपस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ाते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्-

ओं श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाठ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरेष्ठ चन्दनं प्रतिग्रह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्-

ओं अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण सर्वदेवता।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्-

ओं माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-

ओं दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-

ओ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरम् प्रतिगृह्यताम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि-

ओं अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्। नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्-

ओं वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाठयो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां धूपो अयं प्रतिगृह्यताम्।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-

ओं साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् -

ओं शर्कराखण्डखाद्यादि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य

ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-

ओं चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्। करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।

चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं

अखण्डऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-

ओं इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ।।

इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकं च-

ओं पूंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-

ओं हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् -

कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः-

ॐ नाना सुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानिच। पुष्पांजलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

प्रदक्षिणा-

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदेपदे। प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पाल देवता प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने पौराणिक मन्त्रों से वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालदेवता के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति क्षेत्रपाल देवता का पूजन दशदिक्पालों सहित करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- अनेक रत्न संयुक्तं मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 2- पयो दधि घृतं चैव मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 3- माल्यादीनि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 4- अबीरं च गुलालं च मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 5- वनस्पति रसो मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 6-साज्यं च मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 7- शर्कराखण्ड मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 8- पूंगीफल महद्दिव्यं मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न 9- इदं फलं मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 10- नाना सुगन्धि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पांजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपने इस प्रकरण में वास्तोष्पति क्षेत्रपाल देवता एवं दशदिक्पालों को पौराणिक मन्त्रों से पूजन का ज्ञान प्राप्त किया । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होगें। अब हम वास्तोष्पति क्षेत्रपाल देवता एवं दशदिक्पालों का पूजन नाम मन्त्र की विधि से कैसे किया जाता है इसकी चर्चा अग्रिम प्रकरण में करने जा रहे है।

4.4.6 वास्तोष्पति क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का नाम मन्त्र की विधि से पूजन-

अब आप वास्तोष्पति क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का नाम मन्त्र की विधि से पूजन का विधान देखेगें।

आसनम्- पूजन में सर्वप्रथम आवाहन किया जाता है जो आप देख चुके है। आवाहन के अनन्तर आसन दिया जाता है। आसन हेतु हाथ में अक्षत लेकर दिये नाम मन्त्र को पढ़ते हैं और अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों के ऊपर अक्षत छोड़ते है।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं जलम्- आसन के बाद पाद्य, अर्घ्य एवं आचमन का जल चढ़ाया जाता है। इसमें पाद्य अर्थात् पाद प्रक्षालनार्थ जल इस मन्त्र को पढ़कर दें।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हस्त प्रक्षालनार्थ अर्घ्य का जल इस श्लोक से देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अर्घ्यार्थे जलं समर्पयामि।।

मुख प्रक्षालन हेतु आचमनीय का जल इस प्रकार देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान हेतु स्नानीय जल इस मन्त्र से देना चाहिये-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

पुनः आचमन का जल इस प्रकार चढ़ाना चाहिये।

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

अब दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर को एक में मिलाकर पंचामृत बनाया जाता है। इससे स्नान कराया जाता है। कहीं-कहीं पृथक्- पृथक् स्नान भी कराया जाता है। आचार्य याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्येक स्नान में आचमनीय जल देना अति आवश्यक है

पंचामृतस्नानम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।। आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान जल से कराया जाता है।

ततः शुद्धोदकस्नानम्-

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

स्नान के अनन्तर वस्त्र चढ़ाया जाता है। वस्त्र में पुरुष देवता के लिये पुरुष वस्त्र एवं स्त्री देवता के लिये स्त्री वस्त्र चढ़ाया जाता है। इसके अभाव में मांगलिक सूत्र ही चढ़ा दिया जाता है।

वस्त्रम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

वस्त्र के अनन्तर आचमनीय जल चढ़ाकर यज्ञोपवीत चढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीतम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उपवस्त्र का मतलब होता है उत्तरीय वस्त्र। उत्तरीय वस्त्र हेतु जो आवश्यक उपवस्त्र हो उसे चढ़ाना चाहिये या रक्षा सूत्र चढ़ाना चाहिये।

उपवस्त्रम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

उवपस्त्र के अनन्तर चन्दन को गन्ध के रूप में चढ़ते है। चन्दन के अभाव में रोली भी चढ़ा सकते है।

गन्धम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि।

गन्ध के बाद अक्षत चढ़ाने का विधान है।

अक्षतान्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

इसके बाद फूलों की गुथी हुयी माला चढ़ाने का विधान मिलता है।

पुष्पमालाम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।।

दूर्वाङ्कुरान्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य अधिदेवता प्रत्यधि देवता पंचलोकपालेभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।।

सौभाग्य सिन्दूरम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः सौभाग्यसिन्दूरं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्य में अबीर गुलाल, अभ्रक, मेहदी चूर्ण, हल्दी चूर्ण इत्यादि को चढ़ाया जाता है।

नानापरिमलद्रव्याणि-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

दिये जाने वाले नैवेद्य प्रसाद को देवता के सामने रखकर धूप एवं दीप घण्टी वादन पूर्वक देना चाहिये।

नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ च देयौ- घण्टीवादनपूर्वकं धूपम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।।

इसके बाद दीपक दिखाना चाहिये-

दीपम्-

श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।। हस्तौ प्रक्षाल्य।

दीप दिखाकर हस्त प्रक्षालन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिये। नैवेद्य चढ़ाकर ध्यान करके आचमनीय का जल पांच बार प्रदान किया जाता है।

नैवेद्यम् -

नैवेद्यं निवेदयामि।। नैवेद्यान्ते ध्यानम्।। ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि मुद्रां च प्रदर्श्य

ओं प्राणाय स्वाहा।। ओं अपानाय स्वाहा।। ओं व्यानाय स्वाहा।। ओं उदानाय स्वाहा।। ओं समानाय स्वाहा।। आचमनीयं मध्येपानीयं उत्तरापोशनं जलं समर्पयामि। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

चन्दन से करोद्वर्तन करने का नियम है।

करोद्वर्तनम्-

चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

इसके बाद फल प्रदान करते है। फल से मतलब सभी प्रकार के फलों से है। इसमें ऋतुफल एवं अखण्ड ऋतुफल दोनों आता है। अखण्ड ऋतुफल का मतलब सभी ऋतुओं में पाया जाने वाला फल है।

फलानि-

इमानि फलानि नारिकेलंच समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

इसके बाद ताम्बूल पत्र लवंग इलायची के साथ मुख सुगन्धी के लिये समर्पित करना चाहिये।

ताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच-

मुखवासार्थे पूंगीफलताम्बूलपत्रं लवंग एलादिकंच समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

इसके अनन्तर पूजनीय द्रव्यों में कोई कमी रह गयी हो तो उस कमी को पूरा करने के लिये दक्षिणा चढ़ाने का विधान है।

ततो द्रव्यदक्षिणा-

कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।। इसके बाद आरती करना चाहिये।

आरार्तिक्यम् -

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुष्पांजलि देना चाहिये-

मन्त्रपुष्पांजलिः-

मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।। श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

प्रदक्षिणा-

प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि श्री नवग्रह मण्डलस्य वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

हस्ते जलमादाय अनया पूजया वास्तोष्पति क्षेत्रपाल दशदिक्पालाः प्रीयन्तां न मम।।

इस प्रकार से आपने नाम मन्त्रों से वास्तोष्पति क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों के पूजन का विधान जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ वास्तोष्पति क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का पूजन करा सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- आसनं समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 2- पंचामृतं समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 3- पुष्पमालां समर्पयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 4- नाना परिमलद्रव्याणि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 5- धूपं आघ्रापयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- धूप, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 6-दीपं दर्शयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- दीप, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 7- नैवेद्यं निवेदयामि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- नैवेद्य, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 8- ताम्बूल पत्राणि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पमाला, घ- ताम्बूल।

प्रश्न 9- इमानि फलानि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- फल, ग- पुष्पमाला, घ- नाना परिमल द्रव्य।

प्रश्न 10- मन्त्र पुष्पांजलि मन्त्र से क्या समर्पित करते है?

क- आसन, ख- पंचामृत, ग- पुष्पांजलि, घ- नाना परिमल द्रव्य।

इस प्रकार आपनें इस प्रकरण में वास्तोष्पति क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का पूजन नाम मन्त्र की विधि से जाना । आशा है आप इसे अच्छी तरह समझ गये होंगे। अब हम इसका सारांश वर्णित करने जा रहे है।

4.5 सारांश

इस ईकाई में आपने नवग्रह मण्डल पर वास्तोष्पति क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों के स्थापन का विधान जाना है। वस्तुतः किसी भी प्रकार की शान्ति के लिये या कर्मकाण्ड के लिये नवग्रह मण्डल का निर्माण करके नवग्रहों की स्थापना करके पूजन करते हैं। क्येंकि बिना स्थापना के वह ग्रह या

देवता वहां आकर विराजमान नही होता जिसकी हम पूजा करना चाहते है। इसलिये स्थापन जानना आवश्यक है और पूजन भी जानना अति आवश्यक है।

इस ईकाई में यह बात स्पष्ट की गयी की प्रत्येक ग्रहमण्डल पर वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पालों का आवाहन किया जाता है तथा उनका पूजन किया जाता है। वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल को अंग देवता के रूप में नवग्रह मण्डल पर स्थान दिया जाता है। इसके अनन्तर नवग्रह मण्डल पर दश दिक्पालों को स्थापित किया जाता है। इसको समझने के लिये दश दिक्पाल को विच्छेदित करने पर तीन भागों में उसका विभाजन देखने को मिलता है जो दश, दिक् और पाल है। दश का अर्थ दश संख्या, दिक् का अर्थ दिशायें एवं पाल का अर्थ है पालने वाला अर्थात् दशों दिशाओं से हमारा पालन करने वाला दश दिक्पाल कहलाता है। अब प्रश्न उठता है कि ये दशा दिशायें कौन है? क्योंकि चार दिशा पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण को तो हम जानते है। हम यह भी जानते है कि चार विदिशा यानी अग्नि कोण, नैर्ऋत्य कोण, वायव्य कोण एवं ईशान कोण है। लेकिन फिर कुल मिलाकर आठ ही हुआ। अभी दो और दिशायें बाकी हैं जिन्हे ऊपर और नीचे के रूप में जानते हैं। एक प्रश्न और यहां खड़ा होता है कि ऊपर और नीचे दो दिशायें हैं तो उनके स्वामिओं को नवग्रह मण्डल पर कैसे दिखाया जायेगा। इसका उत्तर देते हुये बतलाया गया है पूर्व एवं ईशान के बीच में आकाश का स्थान एवं नैर्ऋत्य पश्चिम के बीच में पाताल का स्थान नवग्रह मण्डल पर होता है । इस प्रकार उनके स्वामिओं को वहां दिखाया जा सकता है। अब क्रंमशः दिशाओं के अधिपतियों का नाम इस प्रकार जाना जा सकता है।

इन्द्रोवह्निपितृपतिनैर्ऋतोवरुणोमरुत्। कुबेरईशोब्रह्मा च अनन्तो दश दिक्पतिः।।

इसको यदि और सपष्ट किया जाय तो इस प्रकार कहा जा सकता है। पूर्व दिशा का स्वामी इन्द्र है। अग्नि कोण का स्वामी अग्नि है। दक्षिण दिशा का स्वामी यम है। नैर्ऋत्य कोण का स्वामी निर्ऋति है। पश्चिम दिशा का स्वामी वरुण है। वायव्य कोण का स्वामी वायु है। उत्तर दिशा का स्वामी कुबेर है। ईशान कोण का स्वामी ईशान है। पूर्व एवं ईशान के बीच का स्वामी ब्रह्मा है तथा पश्चिम एवं नैर्ऋत्य के बीच का स्वामी अनन्त है । इस प्रकार इनका आवाहन किया जाता है। जिसे वैदिक मन्त्रों द्वारा आवाहन, पौराणिक मन्त्रों द्वारा आवाहन एवं नाम मन्त्रों द्वारा आवाहन के रूप में जाना जाता है। न केवल आवाहन स्थापन अपितु इनका पूजन भी तीन ही विधाओं में बांटा गया है जिन्हे वैदिक मन्त्रों द्वारा, पौराणिक मन्त्रों द्वारा एवं नाम मन्त्रों द्वारा बतलाया गया है।

4.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

भू शैया- भूमि की शैया, शूलपाणिन- हाथ मे त्रिशूल वाला, सुरपति- देवताओं के स्वामी, शतयज्ञाधिप- सौ यज्ञों के स्वामी, त्रिपाद- तीन पैरों वाला, सप्तहस्त- सात हाथों वाला, द्विमूर्धा- दो शिर, द्विनासिका- दो नाक, षण्नेत्र- छः आखें, चतुः श्रोत्र- चार कान, महिष-भैस, दण्डहस्त- हाथ में दण्ड, सर्वप्रेताधिप- सभी प्रेतों के स्वामी, नीलविग्रह- नीला शरीर, नरारूढ़- मनुष्य पर सवार, वरप्रद- वर देने वाला, जलेश- जल का स्वामी, प्रतीचीशं- पश्चिम दिशा का स्वामी, मनोजव- मन के समान गति करने वाला, महातेज- अत्यन्त तेज से समन्वित, धनद- धन देने वाला, यक्षपूजित- यक्षों से पूजित, दिव्यदेह- दिव्य शरीर, नरयान- मनुष्य का यान, सर्वाधिप- सभी का राजा, अव्यय- जो व्यय न हो, अभयप्रद- अभय देने वाले, पद्मयोनि- कमल से उत्पन्न, चतुर्मुर्ति- चार मुख, सर्वनागानामधिप- सभी नागों के स्वामी, दिक्- दिशायें, पाल- रक्षक, वरेण्य- श्रेष्ठ, विश्वजित- विश्व को जीतने वाला, अर्चक- अर्चा करने वाला, समर्पयामि- समर्पित करता हूं, दर्शयामि- दिखाता हूं, निवेदयामि- निवेदन करता हूं, आघ्रापयामि- सुघाता हूं, पाद्य- पैर प्रक्षालित करने हेतु जल, आराम- बागीचा, मुद्रा- जो प्रसन्न कर दे, द्रवित कर दे, पितृपति- पितरों के स्वामी, मरुत्- वायु, , सर्षप- सरसों, दिवाकर- सूर्य, गजेन्द्र- हाथियों का स्वामी, लम्बोदर- लम्बा उदर, जम्बू- जामुन, चारु- सुन्दर, भव- होवो, पराभव- हार, विभव- धन-सम्पदा।

4.7अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

4.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-ख, 2-ख, 3-क, 4-ग, 5-घ, 6-ख, 7-क, 8-ग, 9-क, 10-ग।

4.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9- ग, 10-ख।

4.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-ध, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ग, 10-क।

4.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ग, 10-क ।

4.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ग, 10-क।

4.4.4 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग।

4.4.5 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग।

4.4.6 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, 2-ख, 3-ग, 4-घ, 5-क, 6-ख, 7-ग, 8-घ, 9-ख, 10-ग।

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-दान मयूख।

2-प्रतिष्ठा मयूख।

3-बृहद् ब्रह्म नित्य कर्म समुच्चय।

4- शान्ति- विधानम्।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-उत्सर्ग मयूख।

7- कर्मजव्याधिदैवी चिकित्सा।

8- फलदीपिका

9- अनुष्ठान प्रकाश।

10- सर्व देव प्रतिष्ठा प्रकाशः।

11- संस्कार-भास्करः । वीणा टीका सहिता।

12- मनोभिलषितव्रतानुवर्णनम्- भारतीय व्रत एवं अनुष्ठान।

13- संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

4.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- पूजन विधानम्।

2- श्री काशी विश्वनाथ पंचांग।

3- भारतीय रत्न सिद्धान्त।

4- याज्ञवल्क्य स्मृतिः।

5- संस्कार- विधानम्।

4.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- क्षेत्रपाल एवं वास्तोष्पति देवताओं का परिचय दीजिये।

2- इन्द्र दिक्पाल का स्वरूप बतलाइये।

3- वास्तोष्पतिदेवता स्थापन की वैदिक विधि बतलाइये।

4- क्षेत्रपाल देवता स्थापन की पौराणिक विधि वर्णित कीजिये।

5- दशदिक्कपाल स्थापन की नाम मन्त्र की विधि का वर्णन कीजिये।

6- क्षेत्रपाल का वैदिक मन्त्रों से पूजन सविधि लिखिये।

7- प्रत्यधि देवताओं का पौराणिक मन्त्रों से पूजन लिखिये।

8- दश दिक्पालों का पूजन नाम मन्त्रों से लिखिये।

9- यम दिक्पाल के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

10- वरुण दिक्पाल के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

ईकाई – 5 असंख्यातरुद्र स्थापन, पूजन एवं नवग्रह स्तोत्र पाठ

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 असंख्यात रुद्र का परिचय एवं नवग्रह स्तोत्र पाठ विधि का महत्त्व

5.3.1 असंख्यात रुद्र का परिचय

5.3.2 नवग्रह स्तोत्र का महत्त्व

5.4 नवग्रहों का मानव जीवन से सम्बन्ध

5.5 सारांशः

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.8 बोधप्रश्नों के उत्तर

5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

इस इकाई में असंख्यात रुद्र स्थापन पूजन एवं नवग्रह स्तोत्र पाठ संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आप करने जा रहे है । इससे पूर्व नवग्रह स्थापन सहित अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपाल, वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल, दश दिक्पाल आदि के आवाहन पूजन सहित अन्य शान्ति प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया है। कोई भी व्यक्ति यदि कोई शान्ति कराता है तो प्रायः शान्ति प्रविधियों में नवग्रहों का स्थापन एवं अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपाल, वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल, दश दिक्पालों का आवाहन पूजन करना पड़ता है। लेकिन इसके अलावा नवग्रह मण्डल के नजदीक ही असंख्यात रुद्र का स्थापन भी करना ही पड़ता है। ऐसी स्थिति में असंख्यात रुद्र का स्थापन , आवाहन एवं पूजन आप कैसे करेगें, इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

प्रायः कर्मकाण्डीय प्रक्रियाओं में नवग्रहों का स्थापन किया जाता है। ग्रह स्थापन के नाम पर सामान्य लोगों में यही धारणा बनी रहती है कि नौ ग्रह है उनका नाम लिया जाता है। लेकिन जब आप नवग्रह मण्डल पर ग्रहों का स्थापन विधान देखेंगे तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि नवग्रहों के अलावा उनके अधि देवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपालों सहित वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं दशदिक्पाल का भी आवाहन स्थापन करना पड़ता है इनके अभाव में नवग्रह मण्डल के देवताओं का पूजन हो ही नही पाता क्योकि मण्डल पर तो कुल चौवालीश 44 देवता होते है। अभी हम केवल नवग्रहों का तथा अधिदेवता, प्रत्यधि देवता एवं पंचलोकपाल, वास्तोष्पति, दिक्पाल का कहां -कहा स्थापन किया जाता है ? इसको हमने जाना है। लेकिन अब असंख्यात रुद्र का आवाहन, स्थापन कहां-कहां होता है? कैसे किया जाता है? पूजन की विधि क्या है इस पर विचार करेंगें। इस प्रकार इस ईकाई के अध्ययन से आपको संबंधित समस्त विषयों का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

इस इकाई के अध्ययन से आप नवग्रह मण्डल पर पूजन सहित असंख्यात रुद्र का आवाहन एवं पूजन करने की विधि का एवं नवग्रह स्तोत्र पाठ का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे अंग सहित नवग्रहों के स्थापन का ज्ञान हो जायेगा जिसका प्रयोग आप संबंधित व्यक्ति के दोषों से निवारण में कर सकेगें जिससे वह अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित होते हुये लोकोपकारक हो सकेगा।

5.2 उद्देश्य-

इस ईकाई के प्रस्तावना में बताये विषयों का अध्ययन करने के बाद आपको यह पूर्णतया बोध हो गया होगा कि नवग्रहों के साथ-साथ असंख्यात रुद्र के स्थापन पूजन संबंधी ज्ञान की परम आवश्यकता है जो आपको इस ईकाई के अध्ययन से प्राप्त हो सकेगी। अतः इसका उद्देश्य तो वृहद् है परन्तु संक्षिप्त में इस प्रकार आप जान सकते है।

- असंख्यात रुद्र के आवाहन एवं पूजन से समस्त कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।

- असंख्यत रुद्र के आवाहन एवं पूजन की शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।

- इस कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।

- प्राच्य विद्या की रक्षा करना।

- लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।

- समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।

- संदर्भित शिक्षा के विविध तथ्यों को प्रकाश में लाना।

5.3 असंख्यात रुद्र का परिचय एवं नवग्रह स्तोत्र पाठ विधि का महत्त्व

5.3.1 असंख्यात रुद्र का परिचय

रुतं हरति पापात् न्यवारयति स रुद्रः के अनुसार रोगों का जो हरण करे और पापों का जो निवारण करता है उसे रुद्र कहते है। रुद्र को भगवान शंकर के रूप में जाना जाता है। कल्याण करने वाले को शिव कहते है। श्रीरामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी तो मानस में लिखते हैं **भाभिहि मेटि सकहि त्रिपुरारी** । अर्थात् दुर्भाग्य को मिटाने में यदि कोई समर्थ है तो वह केवल भगवान शंकर है। शंकर में शं शब्द का अर्थ लोगों ने शान्ति या शुभ बतलाया है। जो शान्ति करे या जो शुभ करे उसे शंकर कहते है। उन्ही का एक स्वरूप है जिन्हे असंख्यात रुद्र के रूप में जाना जाता है। बिना असंख्यात रुद्र की पूजा के कोई भी यज्ञ पूर्ण नही होता है इसलिये समस्त याज्ञिक प्रविधियों

में असंख्यात रुद्र की स्थापना एवं पूजा करनी पड़ती है। इसके पीछे एक घटना है जिसका वर्णन करना मैं यहां उचित समझता हूं।

एक बार दक्ष जी को राजा घोषित किया गया। राजा घोषित होने के बाद दक्ष को राज मद हो गया। अब उन्होने कहा कि सबसे बड़ा मै हूं । मुझसे बड़े केवल ब्रह्मा जी है और विष्णु जी है। शंकर जी तो अपने दामाद है इसलिये वो तो हमारे आशीर्वाद के पात्र है। एक बार प्रजापतियों एवं देवताओं का सम्मेलन हुआ। उसमें समस्त देवता गण पधारे। सबसे अन्त में दक्ष प्रजापति उस सभा में आये। उस सभा में सभी देवताओं ने दक्ष प्रजापति का खड़ा होकर के स्वागत किया लेकिन भगवान भोलेनाथ न ही खड़े होकर उनका स्वागत किया न ही उनको प्रणाम किया। क्योकि वे तो देवों में देव महादेव जो ठहरे। भगवान शंकर अपने ध्यान में लीन थे लेकिन दक्ष ने सोचा कि इस शंकर ने खडा़ न होकर हमारा अपमान किया है। सभा समाप्त हुई। सभी अपने-अपने स्थान को चले गये। कुछ दिनों के पश्चात् प्रजापति दक्ष ने एक बहुत बड़ा यज्ञ करने का निर्णय किया। लेकिन उस यज्ञ में भगवान शंकर को निमंत्रित न करने की प्रतिज्ञा किया। यज्ञ प्रारम्भ हुआ। सभी देवगण सपत्नीक आकाश मार्ग से उस यज्ञ में भाग लेने हेतु जाने लगे। भगवती सती ने पूछा कि आज क्या बात है भगवन् आकाश मार्ग से बहुत विमान जा रहे है। भगवान शिन ने कहा कि तुम्हारे पिता दक्ष जी यज्ञ कर रहें हैं। उस यज्ञ में भाग लेने के लिये ये सभी देवगण जा रहे है। उन्होने कहा, अरे हमारे पिता यज्ञ कर रहे हैं। और हमें उन्होने निमंत्रण तक भी नही भेजा है। शंकर जी ने कहा कि एक बार उनकी सभा मे मैं उठकर खड़ा नही हुआ जिसके कारण वे हमसे नाराज हो गये और उसी कारण तुमसे भी नाराज होकर के निमंत्रण नही दिया होगा। सती ने कहा यदि ऐसी बात है तो आप मुझे आज्ञा दीजिये मैं अपने पिता के यज्ञ में जाऊंगी। भगवान शिव ने कहा कि बिना निमंत्रण के देवि उस यज्ञ में जाना ठीक नही है इसलिये तुम उस यज्ञ में मत जाओ। सती ने कहा कि पिता के घर में बिना आमंत्रण के भी जाने में कोई दोष नही है। भगवान शिव ने कहा-

तदपि विरोध मान जह कोई। तहां गये कल्यान न होई ।

जहां जाने पर विरोध माना जाय वहां जाने से कल्याण नही होता है। इसलिये तुम्हारे पिता का वह घर अवश्य है लेकिन विरोध माने जाने के कारण वहां नही जाना चाहिये। सती ने भगवान शिव की बात नही माना और वह उस यज्ञ में चली गयी। भगवान शिव ने उनके साथ अपने गणों भूत, प्रेत गणों को रक्षार्थ लगा दिया। उस यज्ञ में भगवान शिव का स्थान न देखकर सती अत्यन्त क्रोधित हो गयी और उस यज्ञ में योग बल से अपने शरीर का अन्त कर लिया। फलतः वह यज्ञ विध्वंस हो गया। तबसे ब्रह्मा जी ने घोषणा किया कि बिना भगवान शिव की स्थापना के कोई भी यज्ञ पूर्ण नही हो

सकेगा। इसीलिये सभी यज्ञों में जहाँ नवग्रह वेदी की स्थापना की जाती है उसके उत्तर में असंख्यात रुद्र की स्थापना होती ही है चाहे वह यज्ञ कोई भी हो। असंख्यात रुद्र की स्थापना हेतु अधोलिखित मन्त्र वेद से लिया जाता है।

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषा गुं सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।।

असंख्यात रुद्र में रुद्र के असंख्य स्वरूपों का अर्चन एवं वंदन किया जाता है। वैसे रुद्र से ग्यारह संख्या को समझा जाता है।

इस प्रकार से आपने असंख्यात रुद्र का परिचय जाना। इसकी जानकारी से आप नवग्रहों के साथ असंख्यात रुद्र के ज्ञान को जान सकते है। अब हम संबंधित विषय को आधार बनाकर कुछ अभ्यास प्रश्न बनायेगें जिसका उत्तर आपको देना होगा। अभ्यास प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न 1- रोगों का जो हरण करे वह क्या है?

क- रुद्र, ख- शिव , ग- शंकर, घ- महादेव ।

प्रश्न 2- कल्याण करने वाले को क्या कहते है?

क- रुद्र, ख- शिव , ग- शंकर, घ- महादेव।

प्रश्न 3- शुभ करने वाले को क्या कहा जाता है?

क- रुद्र, ख- शिव , ग- शंकर, घ- महादेव।

प्रश्न 4- देवों में देव को क्या कहा जाता है?

क- रुद्र, ख- शिव , ग- शंकर, घ- महादेव।

प्रश्न 5- असंख्याता मन्त्र के देवता है?

क- रुद्र, ख- अंग देवता, ग- अधि देवता, घ- वास्तोष्पति देवता।

प्रश्न 6- एक बार प्रजापतियों में राजा कौन बना?

क- रुद्र, ख- दक्ष , ग- अधि देवता, घ- प्रत्यधि देवता।

प्रश्न 7- भूत प्रेत गणों के साथ कौन रहता है?

क- रुद्र, ख- ब्रह्मा, ग- विष्णु, घ- इन्द्र।

प्रश्न 8- शिव के मना करने पर भी पिता के यज्ञ में कौन गयीं?

क- सती, ख- सावित्री, ग- सीता, घ- राधा।

प्रश्न 9- ग्रहों के उत्तर में कौन रहता है?

क- रुद्र, ख- ब्रह्मा , ग- विष्णु, घ- इन्द्र।

प्रश्न 10- रुद्र का अर्थ कितना है?

क- 11, ख-12, ग-13, घ-14।

5.3.2 नवग्रह स्तोत्र का महत्त्व -

ग्रहाधीना नरेन्द्राणामुच्छ्रायाः पतनानि च।
भावाभावौ च जगतस्तस्मात्पूज्यतमा ग्रहाः।।
ग्रहाणामादित्यमातिथ्यं कुर्यात्संवत्सरादपि।
आरोग्यबलसंपन्नो जीवेत्स शरदः शतम्।।

उपरोक्त श्लोक याज्ञवल्क्य स्मृति के आचारध्याय के ग्रह शान्ति प्रकरण से लिया गया है। इस श्लोक में कहा गया है कि राजाओं का उत्थान एवं पतन ग्रहों के आधीन होता है। जगत् का भाव या अभाव यानी संसार का अस्तित्व एवं विनाश ग्रहों के आधीन होता है। इसलिये ये ग्रह पूज्यतम है। अर्थात् ग्रहों का पूजन अवश्य करना चाहिये। कहा गया है कि संवत्सर यानी वर्ष में एक बार भी ग्रहों का अर्चन किया जाय तो व्यक्ति आरोग्य एवं बल से संपन्न हो जाता है और सौ शरद ऋतु तक जीता है। अब प्रश्न उठता है कि क्या पूजा किये जाने पर ये ग्रह मान जाते है? या स्तोत्र पाठ करने पर क्या ये ग्रह मान जाते है? इस सन्दर्भ में याज्ञवल्क्य स्मृति के आचारध्याय का 307 वां श्लोक देना उचित समझता हूं जो इस प्रकार है-

यश्च यस्य यदा दुःस्थ स तं यत्नेन पूजयेत्। ब्रह्मणैषां वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ।।

अर्थात् ब्रह्मा जी ने वर दिया है कि जिस व्यक्ति के लिये जो प्रतिकूल हो उस उस ग्रह की विधिपूर्वक पूजा करें। और पूजित सभी ग्रहों का दायित्व है कि पूजक को सुखी एवं प्रसन्न रखे। वैसे ग्रहों की आराधना किसी भी प्रकार की इच्छा रखने वाले को करनी चाहिये। चाहे वह श्री यानी लक्ष्मी का कामना हो, चाहे शान्ति की कामना हो, चाहे वृष्टि, आयु एवं पुष्टि की कामना हो तथा अभिचार संबंधी कामना भी क्यों न हो सभी के लिये ग्रहों की अर्चना करनी चाहिये। ग्रहों के रूप में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु को माना गया है। इनकी संख्या नव होने के कारण इन्हें नवग्रह के रूप में स्वीकार किया जाता है।

5.4 नवग्रहों का मानव जीवन से सम्बन्ध

मानव जीवन का ऐसा कोई क्रिया कलाप नही होगा जिसका संबंध नवग्रहों से नही होगा। अर्थात् समस्त क्रिया कलापों से ग्रहों का संबंध है। इसको जान लेने से मानव जीवन का ग्रहों से संबंध ज्ञात हो जायेगा। मानव जीवन के सम्पूर्ण क्रिया कलापों को बारह भावों में बाटा गया है। जिन्हे प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ आदि भावों के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक भाव में स्थित अंक उसके अधिपति ग्रह के बारे में बताता है जिसका प्रयोग फलादेश में किया जाता है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ के दूसरे अध्याय में बताया गया है कि तांबा, सोना, पिता, शुभ फल, धैर्य, शौर्य, युद्ध में विजय, आत्मा, सुख, प्रताप, राजसेवा, शक्ति, प्रकाश, भगवान शिव संबंधी कार्य, वन या पहाड़ में यात्रा, होम कार्य में प्रवृत्ति, देवस्थान, तीक्ष्णता, उत्साह आदि का विचार सूर्य से करना चाहिये। माता का कुशल, चित्त की प्रसन्नता, समुद्र सनन, सफेद चवर, छत्र, सुन्दर पंखे, फल, पुष्प, मुलायम वस्तु, खेती, अन्न, कीर्ति, मोती, चांदी, कांसा, दूध, मधुर पदार्थ, वस्त्र, जल, गाय, स्त्री प्राप्ति, सुखपूर्वक भोजन, सुन्दरता का विचार चन्द्रमा से किया जाता है। सत्व, पृथ्वी से उत्पन्न होने वाले पदार्थ, भाई बहनों के गुण, क्रूरता, रण, साहस, विद्वेष, रसोंई की अग्नि, सोना, ज्ञाति यानी दायाद, अस्त्र, चोर, उत्साह, दूसरे पुरुष की स्त्री में रति, मिथ्या भाषण, वीर्य, चित्त की समुन्नति, कालुष्य, व्रण, चोट, सेनाधिपत्य आदि का विचार मंगल से करना चाहिये। पाण्डित्य, अच्छी वाक् शक्ति, कला, निपुणता, विद्वानों द्वारा स्तुति, मामा, वाक् चातुर्य, उपासना आदि में पटुता, विद्या में बुद्धि का योग, यज्ञ, भगवान, विष्णु संबंधी धार्मिक कार्य, सत्य वचन, सीप, विहार स्थल, शिल्प, बन्धु, युवराज, मित्र, भानजा, भानजी आदि का विचार बुध से किया जाता है। ज्ञान, अच्छे गुण, पुत्र, मंत्री, अच्छा आचार या अपना आचरण, आचार्यत्व, माहात्म्य, श्रुति, शास्त्र स्मृति का ज्ञान, सबकी उन्नति, सद्गति,

देवताओं और ब्राह्मणों की भक्ति, यज्ञ, तपस्या, श्रद्धा, खजाना , विद्वत्ता, जितेन्द्रियता, सम्मान, दया आदि का विचार बृहस्पति से करना चाहिये। स्त्री के लिये पति का विचार भी बृहस्पति से किया जाना चाहिये। सम्पत्ति, सवारी, वस्त्र, निधि यानी जमीन के अन्दर गड़ा हुआ या संग्रह किया हुआ द्रव्य, नाचाने, गाने एवं बाद्य बजाने का योग,सुगंधित पुष्प, रति, शैया और उससे संबंधित व्यापार, मकान, धनिक होना, वैभव, कविता का सुख, विलास, मंत्रित्व, सरस उक्ति, विवाह या अन्य शुभ कर्म, उत्सव आदि का विचार शुक्र से करना चाहिये। पुरुष के लिये स्त्री सुख का विचार शुक्र से किया जा सकता है। यह कहा जा सकता है कि पति का विचार बृहस्पति से तथा स्त्री का विचार शुक्र से करना चाहिये। आयु, मरण, भय, पतन, अपमान, विमारी, दुख, दरिद्रता, बदनामी, पाप, मजदूरी, अपवित्रता, निन्दा, आपत्ति, कलुषता, मरने का सूतक, स्थिरता, नीच व्यक्तियों का आश्रय, भैंस, तन्द्रा, कर्जा, लोहे की वस्तु, नौकरी, दासता, जेल जाना, गिरफ्तार होना, खेती के साधन आदि का विचार शनि से करना चाहिये।

5.5 सारांशः

इस इकाई में असंख्यात रूद्र एवं नवग्रह स्तोत्र पाठ का विवेचन किया गया है । कर्मकाण्ड की पद्धति में इन दोनों विषयों का विशेष महत्व है । अत: पाठक गण इन विषयों का अध्ययन इस इकाई में करेंगे और आशा है कि आपलोग इन विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लाभान्वित होंगे ।

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

असंख्यात रूद्र

नवग्रह

नवग्रह स्तोत्र

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-दान मयूख।

2-प्रतिष्ठा मयूख।

3-बृहद् ब्रह्म नित्य कर्म समुच्चय।

4- शान्ति- विधानम्।

5-आह्विक सूत्रावलिः।

6-उत्सर्ग मयूख।

7- कर्मजव्याधिदैवी चिकित्सा।

8- फलदीपिका

9- अनुष्ठान प्रकाश।

10- सर्व देव प्रतिष्ठा प्रकाशः।

5.8 बोधप्रश्नों के उत्तर

इकाईयों का अध्ययन कर पाठक बोध प्रश्नों का उत्तर समझे।

5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. असंख्यात् रूद्र से आप क्या समझते है। विस्तार से वर्णन कीजिये।
2. नवग्रह स्तोत्र पाठ का विस्तार से उल्लेख कीजिये।